य शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ❖ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ❖ श्रीसीता... ❖ लक्ष्मीः स्याद्चला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः ❖ गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ❖
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ❖ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ❖ मकरन्दानुसारि ❖ सर्वाभीष्टकरस्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेदं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् ❖ राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा ❖

**शकाब्दः १९२३—२४**

# विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्

**संवत् २०५८—५९**

❋ जगल्लग्नम् ०८।२९।००।०० ❋

❋ वर्षलग्नम् ११।२०।००।०० ❋




## राजा-चन्द्रः

**वर्षा ७**

**धान्यम् ७**

## मन्त्री-गुरुः




| | |
|---|---|
| विक्रमसंवत् | २०५८-५९ |
| लक्ष्मणसंवत् | ८९२-९३ |
| कलिसंवत्सरः | ५१०२ |

| | |
|---|---|
| शालिवाहनशकाब्दः | १९२३-२४ |
| भारतीयस्वतन्त्राब्दः | ५४-५५ |
| अंग्रेजी | २००१-२००२ ई. |

तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम्। योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत्।।
विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये। गिरो निकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विवृद्धिं लभतां सदेदम्।।
अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यन्न नृणां यदिष्टम्। ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु।।

**सन् १४०९ साल**

**कामेश्वरसिंह-दरभङ्गा**

**संस्कृत-विश्वविद्यालय-प्रकाशितम्**


प्रवर्तकः- डॉ. रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः, संरक्षकः- डॉ. काशीनाथ मिश्रः, कुलपतिः
निदेशकः प्रधानसम्पादकश्च- पं०श्रीरामचन्द्र झाः गणितकर्ता सम्पादकश्च पं०श्रीभारतेन्दुनाथ ठक्कुरः


**२००१ — २००२ ई०**

**सन् १४०९ साल**


❖ प्राप्तिस्थानम्- पञ्चाङ्गविभागः, कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयः कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा ८४६००८ ❖ सूचना १९२४–२५ शकाब्दस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्गम् १९२४ शकाब्दस्य ज्येष्ठमासे प्रकाशमेष्यति ❖ मूल्यम् २०.०० रूप्यकाणि ❖ मुद्रकः = शुभम् प्रिन्टर्स वी.१/१५०जे.अस्सी।। दूरभाष–३१४२४५, ३६६६७३

## आनन्दादियोगचक्रम्

| योगनाम | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ | शु | श | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आनन्दः | अश्वि | मृग. | आश्ले | ह. | अनु | उषा | शत | सिद्धिः |
| कालदण्डः | भ. | आ. | म. | चि. | ज्ये | अभि | पूभा | मृत्यु |
| धूम्रः | कृ. | पुन. | पूफ. | स्वा | मू | श्रव | उभा | दुःखम् |
| धाता | रो. | पु | उफ | वि | पूषा | ध | रे | शुभः |
| सौम्यः | मृ. | आश्ले. | ह. | अनु. | उषा | श | अ | सुखम् |
| ध्वांक्षः | आ. | म. | चि. | ज्ये | अभि | पूभा | भ | हानिः |
| केतुः | पुन. | पूफ. | स्वा. | मू | श्रव | उभा | कृ | दुःखम् |
| श्रीवत्सः | पु. | उफ. | वि. | पूषा | ध | रे | रो | सम्पत्तिः |
| वज्रः | आश्ले. | ह. | अनु. | उषा | श | अ | मृ | हानिः |
| मुद्गरः | म. | चि. | ज्ये. | अभि | पूभा | भ | आ | नाशः |
| छत्रम् | पूफ. | स्वा. | मू. | श्रव | उभा | कृ | पुन | सम्मानः |
| मित्रम् | उफ. | वि. | पूषा | ध | रे | रो | पु | पुष्टिः |
| मानसम् | ह. | अनु. | उषा | श | अ | मृ | आश्ले | सुखम् |
| पद्मः | चि. | ज्ये. | अभि. | पूभा | भ | आ | म | लाभः |
| लुम्बः | स्वा. | मू. | श्र. | उभा | कृ | पुन | पूफ | हानिः |
| उत्पातः | वि. | पूषा | ध. | रे | रो | पु | उफ | नाशः |
| मृत्युः | अनु. | उषा. | श. | अ | मृ | आश्ले | ह. | मृत्युः |
| काणः | ज्ये. | अभि | पूभा | भ | आ | म | चि. | क्लेशः |
| सिद्धिः | मू. | श्र. | उभा. | कृ | पुन | पूफ | स्वा | सिद्धिः |
| शुभः | पूषा. | ध. | रे | रो | पु | उफ | वि | शुभः |
| अमृतम् | उषा. | श. | अ. | मृ | आश्ले | ह. | अनु | सम्मानं |
| मुसलः | अभि. | पूभा. | भ. | आ | म | चि. | ज्ये | लाभः |
| गदः | श्र. | उभा. | कृ. | पुन | पूफ | स्वा | मू | हानिः |
| मातंगः | ध. | रे. | रो. | पु | उफ | वि | पूषा | वृद्धिः |
| राक्षसः | श. | अ. | मृ. | आश्ले | ह. | अनु | उषा | कष्टम् |
| चरः | पूभा | भः | आ. | म | चि. | ज्ये | अभि | सिद्धिः |
| सुस्थिरः | उभा. | कृ. | पुन. | पूफ | स्वा | मू | श्रव | शुभः |
| प्रवर्धमानः | रे. | रो. | पु. | उफ | वि | पूषा | ध | सुखम् |

## पंचांग देखने की विधि

इस पंचाग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट,उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशःयोग एवं करणके दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एवं घण्टामिनंट्रात्मक समय, उसके बाद क्रमशः सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रिकालिक) स्पष्टराश्यादि, दण्ड-पलात्मक दिनमान, घण्टामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रीय, सौर (गते) एवं अंग्रेजी तिथियाँ है। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिए गए हैं। यथा—श्रावणकृष्ण १ शुक्र को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मान ३८/५४ (रात घंटा ८ मिनट ४६) तक पूर्वाषाढ़ का दण्डपल ११/२५ (दिन घंटा ९ मिनट ४६) तक आदि सारी बाते इसी तरह जाननी चाहिये। पंचाग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान)कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा— श्रावणकृष्णप्रतिपदा शुक्र को मिश्रमानकालिक स्पष्टमंगल राश्यादि ७।२०।३४।४६ तथा स्पष्ट बुध राश्यादि २।२।४७।०२ आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा—श्रावणकृष्ण प्रतिपदा शुक्र एवं द्वितिया शनि के स्पष्ट मंगल का अन्तर ०४।३३ कलादि दैनिक गति मंगल की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक के लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात् १३,१४आदि घण्टे से दिन के १,२आदि घण्टे तथ शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा—श्रवणकृष्णप्रतिपदा शुक्र को रात्रि ००।२३ बजे से १।४९ तक मेष,१।५० बजे से ३।४५तक वृष,३।४६से ५।५८तक मिथुन, ५।५९से ८।२६ दिन तक कर्क, ८।२७से १०।३२तक सिंह,१०।३३से १२।४७तक कन्या,१२।४८ बजे दिन से १५।०५तक तुला,१५।०६से १७।२३तक वृश्चिक १७।२४से १९।२८ सायं तक धनु, १९।२९से २१।२६रात तक मकर,२१।२५से २२।४५रात्रि तक कुम्भ, एवं २२।४६से ०१।२२ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसीतरह प्रतिदिन समझना चाहिये। पाक्षिक विषयों के साथ–साथ अन्य उपयोगी विषय'अथ विविधविषयाः' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग)लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिए प्रत्येक पक्ष में पंचाग के ऊपरी भाग दाई ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं। ताकि सामान्य जानकारी रखनेवालों को भी सुविधा हो। शमिति।

**मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रहस्पष्टीकरण,** यथा—श्रावणकृष्ण ०२शनि को ३०।२८दण्डादि पर स्पष्ट मंगल बनाना है तो मिश्रमानवारादि ३।४६।५८एवं इष्टकालवारादि ३।३०।२८का अन्तर १६।३०मिश्रेष्टान्तरऋणदण्डादि। तथा (७।२०।३४।४६)—(७।२०।२९।५६) = ०४।५० मंगल की गति कलादि। अतः (१६।३०) x (०४।५०) = ०१।२० कलादि फल। अब (७।२०।२९।५६)+(०१।२०) =७।२०।३१।२६ = इष्टकालिक मंगल। इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहियें।

## समर्थका विद्वांसः

- पं श्री कृष्णानन्द झा, व्याकरण—विभागाध्यक्षः
- पं श्री लक्ष्मीनाथ झा, साहित्य—विभागाध्यक्षः
- पं श्री भगीरथ मिश्र, दर्शन—विभागाध्यक्षः
- पं श्री रामचन्द्र झा, ज्यौतिष—विभागाध्यक्षः
- पं श्री उपेन्द्र झा, वेद—विभागाध्यक्षः
- पं श्री वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी, धर्मशास्त्र—विभागाध्यक्षः

| | | |
|---|---|---|
| पं श्री देवन्द्र झा | पं श्री कीर्त्यानन्द झा | पं श्री दिगम्बर झा |
| पं श्री विधाता मिश्र | पं श्री रतिनाथ झा | पं श्री कालिकादत्त झा |
| पं श्री शशिनाथ झा | पं श्री श्रुतिधर झा | पं श्री श्रीनारायण मिश्र |
| पं श्री सुरेश्वर झा | पं श्री सुरेन्द्र झा | पं श्री किशोर नाथ झा |
| पं श्री शिवकान्त झा | पं श्री प्रभुनारायण शर्मा | पं श्री उमा रमण झा |
| पं श्री रत्नेश्वर झा | पं श्री बौआनन्द झा | पं श्री चन्द्रकिशोर झा |
| पं श्री शिवाकान्त झा | पं श्री कमलेश झा | पं श्री देवनारायण शर्मा |
| पं श्री रतीश झा | पं श्री विकाऊ झा | पं श्री हरिहर झा |
| पं श्री रामजी ठाकुर | पं श्री देवनारायण झा | पं श्री गणेशकान्त झा |
| पं श्री उमाकान्त झा | पं श्रीमती मीना कुमारी | पं श्री त्रिलोकनाथ झा |
| पं श्रीगणेश शर्मा | पं श्री श्रीपति त्रिपाठी | पं श्री पुरुषोत्तम झा |
| पं श्री कमलाकान्त झा | पं श्री शोभाकान्त झा | पं श्री फूलकुमार झा |
| पं श्री रमाकान्त मिश्र | पं. श्री काशीनाथ मिश्र | पं श्री हेमनारायण चतुर्वेदी |
| पं श्री चन्द्रनाथ मिश्र | पं श्री माधव झा | पं श्री वेदानन्द झा |
| पं श्री रामसेवक झा | पं श्री अर्जुन झा | पं श्री ताराकन्त झा |

| | |
|---|---|
| पं श्री वटेश झा | पं श्री गंगाधर झा |
| पं श्री विदेश्वर झा | पं श्री हरिश्चन्द्र झा |
| पं श्री शोभाकान्त मिश्र | पं श्री सूर्यकान्त झा |
| पं श्री विद्यानाथ झा | पं श्री अजबलाल झा |
| पं श्री रामगुलाम मिश्र | पं श्री तारणीश झा |
| पं श्री सर्वनारायण झा | पं श्री बलभद्र झा |
| पं श्री अमरनाथ झा | पं श्री श्रीधर त्रिपाठी |
| पं श्री चतुरानन मिश्र | पं श्री वैद्यनाथ मिश्र |
| पं श्री धनेश्वर झा | पं श्री गंगाधर राय |
| पं श्री शिवकुमार शर्मा | पं श्री नित्यानन्द झा |
| पं श्री रामजीवन मिश्र | पं श्री सच्चिदानन्द मिश्र |
| पं श्री रुद्रकान्त मिश्र | पं श्री शशिधर मिश्र |
| पं श्री रामनारायण झा | पं श्री हेराम शर्मा |
| पं० श्री सत्यनारायण पाठक | पं श्री हरिकान्त झा |
| पं श्री गंगाधर मिश्र | पं श्री देवकान्त झा |
| पं श्री सिंहेश्वर झा | पं श्री पालन झा |
| पं श्री धीरेन्द्र झा | पं श्री नन्दकिशोर पाण्डेय |
| पं श्री चण्डेश्वर झा | पं श्री रामलखन झा |
| पं श्री षडानन मिश्र | पं श्री राजकुमार झा |
| पं श्री अच्युतानन्द झा | पं श्री मनोरंजन दूबे |
| पं श्री शिवनाथ झा | पं श्री राधारमण झा |
| पं श्री गुणानन्द झा | पं श्री कुलानन्द झा |
| पं श्री श्यामनन्दन मिश्र | पं श्री उपेन्द्र झा 'विमल' |
| पं श्री भगवानदत्त मिश्र | पं श्री विद्येश्वर झा |
| पं श्री फूलेन्द्र झा | पं श्री कालीकान्त मिश्र |
| पं श्री कृपाकान्त ठाकुर | पं श्री ब्रह्मदेव मिश्र |
| पं श्री तारकेश्वर त्रिपाठी | पं श्री महेश शर्मा |
| पं श्री विद्याधर मिश्र | पं श्री गोविन्द झा |
| पं श्री विलट झा | पं श्री उग्रानन्द प्रतिहस्त |
| पं श्री शक्तिधर झा | पं श्री रामलखन शर्मा |
| पं श्री श्यामानन्द झा | पं श्री लालन झा |
| पं श्री महेश झा | पं श्री दुर्गानाथ झा |

| | |
|---|---|
| पं श्री शंकरजी झा | पं श्री गणेश झा |
| पं श्री गोलोकनाथ झा | पं श्री वटोही झा |
| पं श्री निरसु झा | पं श्री कमलाकान्त मिश्र |
| पं श्री योगानन्द चौधरी | पं श्री श्रीरामकुमार शर्मा |
| पं श्री हरेन्द्रकिशोर झा | पं श्री भूपनारायण मिश्र |
| पं श्री युक्तिनाथ झा | पं श्री तेजनारायण झा |
| पं श्री कुलानन्द झा | पं श्री राजेन्द्र झा |
| पं श्री कामेश्वर मिश्र | पं श्री रतीशचन्द्र झा |
| पं श्री रामविलास झा | पं श्री विष्णुदेव झा |
| पं श्री भोलानाथ मिश्र | पं श्री दिनेश झा |
| पं श्री रामक ण झा | पं श्री हर्षनाथ झा |
| पं श्री हरिश्चन्द्र झा | पं श्री योगेश्वर झा |
| पं श्री कपिलेश्वर झा | पं श्री दामोदर झा |
| पं श्री लक्ष्मीकान्त मिश्र | पं श्री वैद्यनाथ झा |
| पं श्री मधुकान्त झा | पं श्री कौशलेन्द्र झा |
| पं श्री शिवानन्द झा | पं श्री राजेश्वर झा |
| पं श्री खगेश झा | पं श्री बच्चा झा |
| पं श्री भक्तिनाथ सिंह ठाकुर | पं श्री कृष्णकान्त झा |
| पं श्री शंकर त्रिपाठी | पं श्री भुवनेश्वर झा |
| पं श्री जगन्नाथ मिश्र | पं श्री फूलचन्द्र मिश्र |
| पं श्री सदानन्द झा | पं श्रीउदितनारायण झा |
| पं श्री राधाकान्त ठाकुर | पं श्री श्रीकान्त प्रतिहस्त |
| पं श्री मुनीन्द्र झा | पं श्री कमलाकान्त ठाकुर |
| पं श्री शुकदेव शर्मा | पं श्रीभागवत ठाकुर |
| पं श्री गणेश चौधरी | पं श्री वीरचन्द्र राय |
| पं श्री प्रेमकान्त झा | पं श्री कलाधर झा |
| पं श्री हृषीकेश झा | पं श्री दिवाकर शास्त्री |
| पं श्री खगेन्द्रनाथ झा | पं श्री रघुवीर झा |
| पं श्री जगदीश मिश्र | पं श्री विश्वनाथ झा |
| पं श्री हंसधर झा | पं श्री हरिनारायण ठाकुर |
| पं श्री महानन्द ठाकुर | पं श्री कृष्णमोहन पाठक |
| पं श्री राधाकान्त मिश्र | पं श्री शक्तिनन्दन झा |
| पं श्री चिरंजीव मिश्र | पं श्री इन्दुनाथ ठाकुर |

# श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः ✲ श्रीसरस्वत्यै नमः

शकाब्दः१९२३—२४, विक्रमसंवत्२०५८—५९, सन् १४०९ साल, लक्ष्मणसंवत् ८९२—९३, अंग्रेजी २००१—२००२ ई. तत्र प्रभवादिगताब्दादयः२७।२०।०६।३७।२७, तद्भोग्याब्दादयश्च ३२।०१।२३।२२।३३।। अत्र विद्यमाने गुणनेत्रनवेन्दुमिते शकाब्दे विष्णुविंशतिकायामहिर्बुध्न्यदैवतयुगेऽष्टाविंशतिजयनामा मध्यमगुरुसंवत्सरफलम्—

क्षत्रियाश्च तथा वैश्या शूद्राश्च नटनर्त्तकाः। पीडितास्ते वरारोहे जये सर्वार्थसंपदः।।

## ● वर्षेश (राजा) चन्द्रफलम् ●

वृक्षाःसद्दलतां प्रयान्ति विविधाः स्फीता भवेन्मेदिनी
गावःक्षीरयुता द्विजा बहुधनैरुन्मत्तचित्तोद्धताः।
शस्यानां च विवर्द्धनं जलमयं शीतांशुवर्षाधिपे
रोगानां च विनाशनं नरपतिर्दीर्घायुराण्डले।।

## ● संवाहक (मन्त्री) गुरुफलम् ●

मेघोनेकजलं ददाति बहुशो विप्राःसदा सुस्थिराः
पृथ्वी शस्यसमाकुला च नियतं लोकाः प्रमोदाकुलाः।
राजानः सचिवोपकारनिरताः प्रोद्भूतमोदाकुलाः
कन्दर्पातिकथाप्रवृत्तिमनसःसम्वाहके चेद् गुरौ।।

## ● पालक—शनिफलम् ●

पृथ्वी शस्यसमूहघातविहिता दग्धा रवेर्दीधितेः
मेघा यान्ति च लाघवं जलकृता रोगेन पूर्णा नराः।
सर्पैर्व्याकुलिता हता उपहताश्चौरैर्गृहीतार्थका
गोस्त्रीगर्भविनाशनं भवति वै सूर्यात्मजे पालके।।

मेघेशसूर्यफलम्— किञ्चित्तोयं विमुञ्चन्ति जलदाश्चित्रितं रवौ।
तोयेशचन्द्रफलम्— तोयसंघयुता चन्द्रे सस्यसंघयुता मही।।
शस्येश शनिफलम्— शनौ शस्याधिपे शस्यग्शस्तोयविशोषणम्। दुखैर्व्याकुलिता पृथ्वी गोस्त्रीगर्भविनाशनम्।।
लोकेशकुजफलम्— कुजे कुचैलिनः क्रूराःकुत्सिताश्च कुचेष्टिताः। धनधर्मक्रिया हीना नित्योत्सवरता नराः।।
सांवर्त्तकमेघफलम्— संवर्तके महावृष्टिः शस्यवृद्धिकरी शुभा। जलपूर्णा मही नित्यं जलदैर्वेष्टितं नभः।।
तटगतरोहिणीफलम्— तट्गता यदि सा शुभवृष्टिदा।। तटे वृष्टिस्तु शोभना।।
चैत्रशुक्लप्रतिपच्चन्द्रफलम्— चन्द्रस्य वारो बहुवृष्टिदः स्यात्।
पौषामावास्यारविफलम्— बहुधनैर्धरणी परिपूरिता सकलशस्ययुता मुदितप्रजा।।
आर्द्राप्रवेशफलम्— धान्यखण्डवृष्टिप्रदम्।। होलिकाफलम्—शोभनम्।। दीपावलीफलम्—शुभदम्।।

मेषसंक्रान्तिफलम्— शुभकारकम्।। शकाब्दफलम्—साम्यमतिवृष्टिश्च।।
विक्रमाब्दफलम्— विकलताकरं दुर्भिक्षकरञ्च।। शारदीयनवरात्रफलं—शुभकरम्।।
जलाढकमानम्— १०० तत्र समुद्रे ५०, पर्वते ३० भूमौ २०।।

## ● वर्षादिविश्वाः ●

वर्षा ७ धान्यं ७ शीतं ९ तृणं १५ उष्णं ११ उत्सवः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा १३ तृष्णा ७ निद्रा ५ आलस्यं ९ उद्यमः ९ शान्तिः ५ क्रोधः ११ दण्डः ३ मैत्री १ पुण्यं ११ रसादि ९ उग्रत्वं ९ रसोत्पत्तिः ५ फलोत्पत्तिः १३ रोगः १३ रोगक्षयः ११ आचारः ११ अनाचारः १७ मरणं १५ जननं ७ चौरभयं १३ चौरशान्तिः १९ अग्निभयं ९ अग्निशान्तिः १९।।

## ● मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् ●

| राशिः | मेषः | वृषः | मिथुनं | कर्कः | सिंहः | कन्या | तुला | वृश्चिकः | धनुः | मकरः | कुंभः | मीनः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आयः | १४ | ८ | ११ | ५ | ८ | ११ | ८ | १४ | २ | ५ | ५ | २ |
| व्ययः | २ | ११ | ८ | ८ | २ | ८ | ११ | २ | ११ | ५ | ५ | ११ |
| फलम् | विजयः | सम्मानं | सम्मानं | रोगः | लाभः | सम्मानं | सम्मानं | विजयः | रोगः | लाभः | लाभः | रोगः |

## ● १९२३—२४ शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी ●

श्रावणकृष्णैकादश्यां कुजे ३।५६ यावद् गुर्वादित्यगुरुबाल्यदोषाभ्यामशुद्धस्तन्मानं मासादि ००।२१।०३।५६।। ततो भाद्रकृष्णत्रयोदश्यां भृगौ १६।३२ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।२।२२।३६।। ततः सिंहादित्यमलमासदोषाभ्यां द्वितीयाश्विनकृष्णामायां भौमे ४८।२० यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि २।००।३१।०८।। ततः कार्त्तिककृष्णप्रतिपदि भृगौ ४४।०५ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२६।५५।५५।। ततो गुरुवक्रभृगुक्षैण्यास्तबाल्यधनुरादित्यदोषेभ्यःफाल्गुनकृष्णप्रतिपदि गुरौ ३१।३० यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ३।२७।४७।२५।। ततो ज्येष्ठशुक्लपञ्चम्यां शनौ २५।४७ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ३।२६।५४।२७।। ततो गुर्वादित्यगुरुक्षैण्यास्तदोषेभ्य आषाढीं यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।१९।३४।२३।। अतो वर्षेऽशुद्धसमयना। मासादि ७।२८।५७।२२।। शुद्धसमयमानं मासादि ५।५।२।४८।। तेन वर्षपूर्त्तिदिनानि ३८४ इति।।

## ● १९२३—२४ शकाब्दीयशुद्धादि ●

फाल्गुनादिज्येष्ठान्तमासेषु समयशुद्धिस्तत्रोपनयनविवाहादिशुभमुहूर्त्ता यत्र। गुरुस्तदानीं मिथुनराशौ। कार्त्तिके समयाशुद्धिस्तेनैकादशीकार्त्तिकादिव्रतोद्यापनं नैव। मार्गे पूर्वास्तः शुक्रस्तेन तृतीयादि— विषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि नैव। फाल्गुने वैशाखे च पश्चिमोदितः शुक्रस्तेन पूर्वोत्तरदिशोस्तृतीयादिवर्षीयद्विरागमनदिनानि बहूनि परञ्च पश्चिमदक्षिणदिशोर्द्विरागमनदिनानि शुक्रान्ध (रे.अश्वि.रो.मृग.) नक्षत्रेषु वैशाखे एव।

## ● सन् १४१० साल, १९२४—२५ शकाब्दीयसंक्षिप्तशुद्धादि ●

मार्ग—फाल्गुन—वैशाखेषु पूर्वोदितः शुक्रस्तेन तृतीयादिविषमवर्षीयपश्चिमदक्षिणदिशोर्द्विरागमनदिनानि बहूनि, तदितरदिशोः पूर्वोत्तरयोर्द्विरागमनदिनानि शुक्रान्ध (रे.अश्वि.रो.मृ.) नक्षत्रेषु फाल्गुनवैशाखयोरेव। कार्त्तिके कार्त्तिकादिव्रतोद्यापनम्। मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढेषु विवाहादिमहूर्त्ताः। माघादिज्येष्ठान्तमासेषूपनयनदिनानि। गुरुस्तदानीं कर्के।

## ❁ वर्षफलम् ❁

इस वर्ष के राजा चन्द्रमा, मन्त्री वृहस्पति, पालक—शनि, मेघपति सूर्य, जलपति चन्द्रमा, शस्यपति शनि, लोकपति मंगल, सांवर्त्तक नामक मेघ एवं रोहिणीवास तट में है। वर्षा ७ विश्वा एवं धान्य ७ विश्वा है। जलाढकमान २० एवं परिवहनामक वायु है। वर्षारंभ में जयनामक बार्हस्पत्यवर्ष तथा श्रावणशुक्ल पूर्णिमा शनि ४०।७ दण्डादि से मन्मथनामक बार्हस्पत्य वर्ष प्रारंभ होगा। जगल्लग्न—जगल्लग्नेश, वर्षलग्न—वर्षलग्नेश, राजा—मन्त्री में सम—मित्रभाव, अधिकारियों में शुभग्रहों की अल्पता एवं अन्य ग्रहस्थितियों के आधार पर शासकवर्ग में मत—भेद के बावजूद परिणामतः मतैक्य की स्थिति रहेगी। विकासमूलक जनकल्याण के कार्य होंगें। शिक्षा, विज्ञान, उद्योग, व्यापार, जलसाधन, संचार, वैदेशिक नीति एवं पर्यावरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगतिमूलक कार्य होंगे। आर्थिक स्थिति, खाद्यान्न एवं चिकित्सा के क्षेत्रों में उन्नति होगी। नवीन अनुसन्धानात्मक कार्य में प्रगति होगी। प्रजा में सत्कार्य के प्रति रुचि उत्पन्न होगी। सद्भावना एवं सहयोग के बावजूद विश्वस्तर पर आभ्यन्तर वैमनस्य, द्वन्द्व एवं शस्त्रास्त्र निर्माण में वृद्धि होगी। कहीं कहीं विद्वेष, संघर्ष, तास्करोपद्रव एवं कलहकर स्थिति हो सकती है। महामारी, अग्निभय, हिंसा, हिमपात, दुर्घटना, प्राकृतिक उत्पात, गर्मी की अधिकता एवं रोगाधिक्य से धन—जन की हानि संभव है। वर्षा की स्थिति अच्छी रहेगी किन्तु खण्डवृष्टि एवं बाढ़ से कहीं—कहीं फसल को क्षति हो सकती है। भादो, अगहनी एवं चैत्री फसल की उपज ८५, ६० एवं ८० प्रतिशत होगी। अशुभशान्तिपूर्वक मंगल की कामना से यज्ञ, हरिकीर्त्तन, भगवन्नामस्मरण एवं दानादि धर्मकृत्य करना चाहिए।

## ❁ मासफलम् ❁

**श्रावण—** इस मास में ५ सोमदिन सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ तथा चार ग्रहों का योग है। अतः अन्न, वस्त्र, फल, रस, तेलहन, धातुपदार्थ खनिजपदार्थ, गृहोपकरण एवं काष्ठोपकरण के भाव में तेजी आएगी। मुख्य रूप से श्वेत पदार्थ में तेजी आएगी। वृष्टि, बाढ एवं हिमपात से फसल को आंशिक क्षति होगी। दुर्घटना, उत्पात एवं कलह से धनजन की हानि संभावित है। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**भादव—** इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अतः अन्न, रस पदार्थ, फल, तेलहन एवं वस्त्र आदि के भाव में समता रहेगी। धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ एवं गृहोपकरण मे तेजी के बाद सरती का रुख रहेगा। खण्डवृष्टि एवं बाढ से फसल की क्षति संभावित है। उत्पात, दुर्घटना एवं कलह की स्थिति में कमी आएगी। सत्कार्य होंगे।

**आश्विन–** इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ४५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अत: अन्न, फल, रस, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, वस्त्र एवं गृहोपकरण आदि सभी के भाव में सस्ती का क्रम रहेगा। इस महीने में मलमास भी है। अत: विदेश के लोगों से उपद्रव, चोरभय तथा दक्षिणभाग में दुर्भिक्ष की संभावना रहेगी, शेष भागों में सुभिक्ष एवं कल्याण कर स्थिति रहेगी। बाढ एवं वर्षा से अधिक क्षति हो सकती है। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**कार्तिक–** इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ है। अत: इस महीने में श्वेतपदार्थ, वस्त्र आदि अपेक्षाकृत सस्ता रहेगा किन्तु लाल या काला पदार्थ, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, गृहोपकरण आदि की कीमत में तेजी आएगी। वायु खण्डवृष्टि संभावित है। दुर्घटना एवं उत्पात में वृद्धि हो सकती है, शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**अगहन–** इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। इस महीने में भी गतमास की तरह सभी वस्तुओं के भाव में तेजी का रुख रहेगा। श्वेतपदार्थ अपेक्षाकृत सम रहेगा। घी, शाक एव रसपदार्थ में पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध में कुछ तेजी आ सकती है। उत्पात या दुर्घटना में कमी होगी। विकासोन्मुख कार्य सम्पादित होंगे।

**पौष–** इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० तथा चार ग्रहों का योग है। अत: खाद्यपदार्थ, फल, शाक, धातुपदार्थ, खनिज पदार्थ, गृहोपकरण एवं काष्ठोपकरण आदि सभी चीजों के भाव में साम्य रहेगा। उत्तरार्द्ध में साधारण तेजी आ सकती है। उपल के साथ स्वल्पवृष्टि संभावित है। शीतवृद्धि एवं प्राकृतिक उत्पात या दुर्घटना संभावित है। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**माघ–** इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। खाद्यान्न, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ एवं वस्त्र आदि के भाव में साम्य रहेगा। रसपदार्थ, श्वेतपदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते रहेंगे। शीतवृद्धि, दुर्घटना एवं प्राकृतिक उत्पात संभावित है। उपल के साथ वायु एवं स्वल्पवृष्टि संभावित है। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**फाल्गुन–** इस मास में ५ मंगलदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अत: खाद्यान्न, रसपदार्थ, वस्त्र धातुपदार्थ तथा श्वेतवस्तु प्रभृति पदार्थों का भाव सम रहेगा किन्तु कृष्णपदार्थ या रक्तपदार्थ, फल, शाक आदि के भाव में तेजी आएगी। झंझावात दुर्घटना, उपद्रव एवं प्राकृतिक उत्पात संभावित है। शान्त्यर्थ धर्माचरण श्रेयस्कर होगा।

**चैत्र–** इस मास में ५ वृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ४५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अत: खाद्यान्न, रस पदार्थ, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, काष्ठोपकरण एवं गृहोपकरण के भाव में साम्य–सस्ता का क्रम रहेगा। उत्तरार्द्ध में श्वेतवस्त्र, फल, शाक आदि में अपेक्षाकृत तेजी का रुख रहेगा। मासान्त में झंझावात, तूफान, प्राकृतिक उत्पात एवं दुर्घटना भी संभावित है। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**वैशाख–** इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ है। अत: खाद्यान्न तेलहन, दलहन, वस्त्र, रसपदार्थ, फल, शाक, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, गृहोपकरण एवं काष्ठोपकरण आदि सभी वस्तुओं के भाव में तेजी आएगी। छह ग्रहों के योग झंझावात, प्राकृतिक उत्पात, तूफान, भूकम्प, उपद्रव, युद्ध, रोगभय एव दुर्घटना सूचक है। धर्मकृत्य करना श्रेयस्कर होगा।

**ज्येष्ठ–** इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अत: पूर्वमासापेक्षया वस्तुओं के मूल्य में कमी आएगी तथा इसके भाव में उतार चढाव का क्रम रहेगा। पञ्चग्रहयोग उपद्रव, दुर्घटना, कलह एवं प्राकृतिक उत्पात सूचक है। झंझावात एवं तापवृद्धि भी संभावित है। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

**आषाढ–** इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ है। अत: सभी वस्तुओं की कीमत में वृद्धि की संभावना है। काले और लाल पदार्थ अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित होंगे। प्राकृतिक उत्पात, उपद्रव, कलह, महामारी एवं रोगभय की संभावना रहेगी। झंझावात एवं तापवृद्धि भी संभावित है। धर्मकृत्य करना चाहिए।

## राशिफलम्

**मेष–** (चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ)– शनि की साढे साती अन्तिम चरण में है। अत: व्यय, चञ्चलता, वैमनस्य, उदर–वातपीडा, श्रमाधिक्य, निरर्थक भ्रमण एवं लोकापवाद संभव है किन्तु इसके साथ साथ कार्य में बाधा एवं विलम्ब के बाद सफलता, सन्तान की अभ्युन्नति, व्यापार, एवं उद्योग के क्षेत्र में उपेक्षाकृत लाभकर स्थिति, शिक्षा एवं राजनीति में सफलता मिलेगी। शनि की शान्ति के लिए हनुमत्पूजन–दर्शन, कृष्णगोदर्शन, मंगलव्रत, शनिपूजन–दान–स्तोत्र पाठ–मन्त्रजप, सुन्दरकाण्डपाठ अथवा दुर्गापाठ, शनि दिन अश्वत्थमूल में जल–गुड–तिलदान, तिलतैल से हनुमद्दीपदान, काले घोडा नाल के लोहे की अंगूठी अथवा वृषोत्सर्ग के दगनी लोहे की अंगूठी शनि दिन बामहाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

**वृष–** (इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो)– शनि की साढेसाती चल रही है। अत: कार्य में बाधा, वायुपीडा, उदर–रक्तविकार, व्रण, रोग–शत्रुकोप, झंझट या अशान्तिकरस्थिति, उद्योग–व्यापार में अपेक्षाकृत न्यून लाभ, व्यय एवं निरर्थक भ्रमण संभावित है। सन्तान एवं पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। आकस्मिक लाभ सम्भव है। मेष राशिवत् शनि की एवं केतु की उपासना लाभकारक होगी।

**मिथुन–** (क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)– शनि की साढे साती चल रही है। अत: वायुरक्त विकार से पीडा, व्यय एवं अशान्ति कर स्थिति संभावित है किन्तु इसके साथ साथ, सन्तान–पारिवारिकसुख, सामाजिक प्रतिष्ठा, सत्कार्य में व्यय, उद्योग व्यापार में स्वल्पलाभ, भ्रमण एवं तीर्थाटन, शैक्षणिकक्षेत्र में प्रगति, मित्र सहायता एवं धर्मकृत्य सम्पादन होगा। मेषराशिवत् शनि की तथा गुरु की एवं चैत्र से राहु की उपसना लाभकरहोगी।

**कर्क–** (हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो)– सत्कार्य में व्यय, सन्तान की अभ्युन्नति, पारिवारिक सुख, नवीन कार्यारंभ में सफलता, उद्योग–व्यापार में लाभ, प्रभाववर्द्धक स्थिति, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता तथा भ्रमण–तीर्थाटन संभावित है। वायुविकारजन्यपीडा घाव, अशान्ति एवं नेत्रपीडा हो सकती है। अत: चैत्र तक राहु की तथा गुरु की उपासना लाभकर होगी।

**सिंह–** (म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)– स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा परिवार सन्तानसुख उद्योग–व्यापार में सफलता, नवीन कार्यारंभ से लाभ, शैक्षणिक क्षेत्र में सफलता, सामाजिक यश राजनीतिक सफलता, भ्रमण, शत्रुपर विजय, प्रभाववर्द्धक स्थिति एवं आर्थिक लाभ संभावित है। सूर्य की उपासना लाभकर होगी।

**कन्या–** (टो, प, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पो)– स्वास्थ्य अनुकूल, पारिवारिकसुख उत्तम, सन्तान की अभ्युन्नति, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता, नवीन कार्यारंभ में लाभ, उद्योग–व्यापार में सफलता एवं लाभकारक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रभाववर्द्धक स्थिति, तीर्थाटन एवं धर्मकृत्य में व्यय तथा अभिरुचि, शत्रु पर विजय, सम्मानजनक एवं सफलताप्रद स्थिति रहेगी। विष्णुसहस्रनाम का पाठ अथवा सुन्दरकाण्डपाठ श्रेयस्कर होगा।

**तुला–** (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)– शनि की साढेसाती चल रही है। अत: व्यय, अशान्ति, श्रमाधिक्य, झंझट, वैमनस्य एवं रोग शत्रु कोप संभावित है किंतु भाग्योदय, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता, प्रसन्नता, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक लाभ, उद्योग–व्यापार में मध्यम लाभ, राजनीति में सफलता, प्रभाववर्द्धक स्थिति, सन्तान–परिवार सम्बन्धी सुख एवं अभ्युन्नति संभावित है। चैत्र से राहु एवं केतु की उपासना लाभकर होगी। दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**वृश्चिक–** (तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु)– शनि की साढेसाती चल रही है। अत: श्रमाधिक्य, झंझट, वैमनस्य, शत्रुभय, वायुरक्त पीडा या दर्द, व्यय एवं चिंता संभावित है। उद्योग–व्यापार में घाटा या बाधा, शैक्षणिक एवं सन्तान सम्बन्धी अभ्युन्नति, पारिवारिक सुखबाधा तथा शत्रु से पराजय संभव है। अतएव मेषराशिवत् शनि की, राहु एवं गुरु की उपासना लाभकर होगी। दुर्गापाठ अथवा सुन्दरकाण्ड पाठ श्रेयस्कर होगा।

**धनु–** (ये, यो, भ, भि, भु, ध, फ, ढ, भे)– रक्तवायु पीडा से स्वास्थ्यबाधा, पारिवारिक सुख मध्यम, उद्योग–व्यापार में मध्यमत्वेन लाभ, तीर्थाटन–धर्मकृत्य में व्यय,शैक्षणिक क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से सफलता, आर्थिक स्थिति सामान्यत: अनुकूल, प्रभाववर्द्धक स्थिति, सन्तान को मध्यमरूप से सफलता, कार्यसिद्धि एवं आर्थिक लाभ, प्रसन्नता एवं चिन्तन का अवसर प्राप्त होगा। गुरु, फाल्गुन तक राहु एवं चैत्र से केतु की उपासना लाभकर होगी।

**मकर–** (भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि)– स्वास्थ्य अनुकूल, सन्तान सुख में बाधा, पारिवारिक सुख मध्यम, उद्योग–व्यापार में सामान्य लाभ, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता, नवीन कार्यारंभ एवं राजनीति में लाभकर स्थिति, भ्रमण, तीर्थाटन, धर्मकृत्य सम्पादन तथा कार्यसिद्धि में सफलता मिलेगी। गुरु तथा फाल्गुन तक केतु की उपासना लाभकर होगी। सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**कुंभ–** (गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द)– वायुरक्तविकार किन्तु स्वास्थ्य अनुकूल, सन्तान सुख मध्यमोत्तम, पारिवारिक सुख अनुकूल, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता, उद्योग–व्यापार में सामान्य लाभ, भ्रमण, तीर्थाटन, कार्यसिद्धि में बाधा एवं विलम्ब किन्तु सफलता, प्रभाववर्द्धक स्थिति, राजनीति में लाभदायक स्थिति एवं सद्व्यय होगा। शनि की उपासना अथवा सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**मीन–** (दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि)– स्वास्थ्य अनुकूल, परिवारसुख, सन्तानसुख, प्रभावोत्पादक स्थिति, उद्योग–व्यापार में लाभ, राजनीति में सफलता, नवीन कार्यारंभ में सफलता एवं लाभकारक स्थिति, शिक्षा के क्षेत्र में अभ्युन्नति, सामाजिक यश, रोग शत्रु पर विजय, लाभकारक समय, धर्मकृत्य एवं तीर्थाटन का योग है। दुर्गापाठ अथवा सुन्दरकाण्ड पाठ श्रेयस्कर होगा।

## ✱ अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः ✱

सूर्यस्य–ओम् घृणि: सूर्य आदित्य॥ चन्द्रस्य-ओम् सों सोमाय नमः। कुजस्य-ओं अं अंगारकाय नमः। बुधस्य-ओम् बुं बुधाय नमः॥ गुरोः-ओम् वृं वृहस्पतये नमः॥ शुक्रस्य-ओम् शुं शुक्राय नमः। शनेः-ओम् शं शनैश्चराय नमः। राहोः-ओं रां राहवे नमः। केतोः-ओम् कें केतवे नमः॥

**ग्रहाणां समिधः**–अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः। औदुम्बरः शमी दुर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात्।

**शाकल्यनिर्माणम्**–तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः। यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम्।

**छन्दोगप्राण-प्रतिष्ठामन्त्रः**–ओम् वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्मवर्म भूतिः प्रतिष्ठा॥ वाजसनेयिनां **देवताप्राण-प्रतिष्ठामन्त्रः**–ओम् मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञवं समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।

**अथ शुभदिनानि**–चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि। **शुभतिथयः**–२. ३. ५. ७. १०. ११. १२. १३. १५.।

**शुभनक्षत्राणि**–अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे.। **शुभलग्नानि राशयश्च**–वृष. मिथुन. कर्क. कन्या. तुला. धनु. मीन।

### ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जावती, कुष्ठः (कुढ़), बला (बरियार), प्रियंगु (काउनी) घनः (मोथा) सर्षपः हरिद्रा देवदारु, पुंखा (सहरफोंका) लोध्रं एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखण्ड-रक्तचन्दन-धान्य-शतावरी-तीर्थोदक-सप्तमृत्तिका-तिल-यव-पञ्चगव्य-ताम्बूल-पञ्चपल्लव- पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात्। एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च।

### अर्द्धप्रहराबोधकचक्रम्

| दिन | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिने | ४।५ | २।७ | २।६ | ३।५ | ७।८ | ३।४ | १।६।८ |
| रात्रौ | ४।६ | ४।७ | ०।२ | ५।७ | ५।८ | ०।३ | १।६।८ |

### ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः। त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः। षण्णां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः। सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे। शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च। लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति।

### योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

| तिथयः | १।९ | ३।११ | ५।१३ | ४।१२ | ६।१४ | ७।१५ | २।१० | ८।३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिशा | पू० | अ० | द० | नै० | प० | वा० | उ० | ई० |

### गर्भाधानमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु. १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं. बु. वृ. शु. वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रि यावत्। शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्न, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

### सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम्। सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृ. पुष्य. श्रव. मू. पुन. ह. रो. रे. उत्तरा ३ (जन्मर्भविना) नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत्। सू. मं. वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु. च. अपि. पूर्वाह्णे, पुंभस्यांगे तदंशे शुभम्। तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

### जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि. अनु. रे. उत्तरा ३ रो. अश्वि पुन. पु. स्वा.. श्र. ध. श. भेषु, पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

### शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. ह. पुन. उत्तरा ३ पुष्य चि. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु शुभदिनेषु वृष-सिंह-वृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभं शिशोः। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम्। भैषज्योक्तनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम्।

### सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. स्वा. अनु. उत्तरा ३. रे. नक्षत्रेषु रवि, मङ्गल, वृहस्पति वारेषु शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्ले, पूर्वा ३, ज्ये. ध. श. नक्षत्रेषु मध्यमम्।

### प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अ. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्णे शुभम्।

### स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः

भ. आ. श्ले. म. वि. श. रहितनक्षत्रेषु शनिमंगलरहितदिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठीधारणं) शुभम्।

### शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः

जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।

### शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पञ्चमे मासि उत्तरा ३ रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य अभि नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्। तन्मन्त्रः–रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये। अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं, सुवर्णं, रौप्यं च स[illegible]म्। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

### शिशुविलोकनमुहूर्त्तः

तृतीयं मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम्।

### नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११ क्षत्रियाणां १३ वैश्यानां १६ शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा. पुन. श्र. ध. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. उत्तरा ३, रो. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, पूर्वाह्णे शुभम्, मध्याह्ने मध्यमम्। शुभलग्ने, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थैः, ८।१२ गृहे शुद्धे, चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते। लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

### अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा ३ मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु, च. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु, एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च त्यजेत्। शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः, दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने, ४।८।६।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

### कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् च. बु. वृ. शु. दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र. ध. पुन. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु १२।६ मासे वा विषम वर्षे चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु. शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापै ३।६।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

### चूड़ाकरण ( मुण्डनाद्यकचकर्त्तन ) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि ६ मासे, ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना, विषमवर्षे, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. ज्ये. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु च. बु. वृ. शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत्, २।३।४।७।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम्।

### अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (बालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीकुलदेव-ग्रामदेवान् विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः। अश्वि. आर्द्रा पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। च. बु. वृ. शु. दिनेषु, वृष मिथुन कन्या धनु मीन लग्नेषु तत्रवांशे चोत्तमः, कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे, खेऽस्ते गुरुबुधे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभः।

## विद्यारंभमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जाते विद्यारम्भः कार्यः सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि. मृ. आर्द्रा, पुन. पुष्य, आश्ले. ह. चि. स्वा. मूल, पूर्वा.३ श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गृहगतैः, पापैः ३।६।११ गतैः, वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारंभः शुभावहः।

## उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादिषण्मासेषु, सू.च.बु.वृ.शु. वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढ़े १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आ. पुष्य आश्ले. पूर्वा ३, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्णे, सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवश्च षडष्टगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ १।५।८ स्थाः पापाः न शुभाः। ६।८।१२ गताः शुभाः न शुभप्रदाः। ३।६।११ गताः पापाः शुभदाः, पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतो शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। **गुरुशुद्धिः**—जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२स्थानगतः शान्त्या शुभः, १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः, ४।८।१२ स्थनगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

**प्रदोषनिर्णयः**— यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां यदा मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां यदा सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषं ऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

## विवाहमुहूर्त्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढ़मासेषु सौरक्रमेण (आषाढ़े हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू.चं.बु.वृ.शु.वारेषु,अश्वि.रो.मृ.म.उत्तरा३,ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.ध.रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला,धनु,मीन,लग्नेषु,शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलंदोषं नाशयति। ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात् । आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

**वरवरणमुहूर्त्तः**— शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणं शुभम्।

**कन्यावरणमुहूर्त्तः**— शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहभेषु च पुष्पफलवस्त्रादिभिः कन्यावरणं शुभम्।

**विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्त्तः**— चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिककार्यमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं सर्वं कार्यं विधेयम्।

**महामृत्युंजयमन्त्रस्य जपविधिः**— श्रीगणेशस्मरणपूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय संकल्पः— ॐ अद्य अमुके मासि अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटितिप्रशमनपूर्वक—दीर्घायुष्ट्वबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनशाखीय ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ'' इति महामृत्युंजयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि। ॐ हौं ॐ जूं सः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवता हौ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः— वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिर्गायत्र्य—नुष्टुप्छन्दोभ्योनमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमःपादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयायनमः। ॐ हौं ॐ जूं सःभूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वःउर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ॐ ह्रीं हौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडंगन्यासः। ततः— चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभि—र्दशांशक्रमेण होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः**— ॐ जूं सः।



## वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चम—सप्तम—नवमदिने च ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्रपौषभाद्र—क्षयमास—मलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, चं. वृ. शु. श. वारेषु, मन्तान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. रे. अनु. नक्षत्रेषु। २।३।५।६। ७।८।९।११।१२ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

## नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३, पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

## द्विरागमनमुहुर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते,जीवे ३।६।१०।११गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेणाग्रहणफाल्गुनवैशाखमासेषु शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे, अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

## वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे शुक्लपक्षे शुद्धसमये, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा ३, ह. अनु. पूषा. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु,शुभतिथिदिनेषु ४।१०।११।१२ लग्नेषु राशिषु च। शुक्रे दशमस्थे। गुरुबुधयोरन्यतरस्थलग्ने, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः शुभम्।

## जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

चैत्ररहितउत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५तिथिषु। मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य, स्वा. पुन. श्र. ध. श. रो. उत्तरा ३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथि—दिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शङ्करं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ३।६।११ स्थितैः। शुभैः १।२।८ भिन्नस्थानगतैः देवादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुद्धः श्रवणायां, गणेशाद्यो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीपमालिकायां, शङ्करस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

### कूपचक्रंरोहिणीभात्

| स्थान | न | फलानि |
|---|---|---|
| मध्य | ३ | सांग्रस्वादु |
| पूर्व | ३ | निर्जलम् |
| अग्नि | ३ | शांघ्रजलम् |
| दक्षिण | ३ | निर्जलम् |
| नेऋत्य | ३ | निर्मलजलम् |
| पश्चिम | ३ | शीतलजलम् |
| वायु | ३ | जलहानि: |
| उत्तर | ३ | मधुरजलम् |
| ईशान | ३ | क्षारजलम् |

अथवा सूर्यक्षांदप्येवमंव गणनीयम्

### सूर्यभात्तडागचक्रम्

| स्थान | न | फलानि |
|---|---|---|
| पूर्व | २ | जलशोष: |
| अग्नि | ३ | बहुजलम् |
| दक्षिण | २ | जलहानि: |
| नैऋत्य | २ | अमृतजलम् |
| पश्चिम | ३ | स्वादुजलम् |
| वायु | २ | निर्जलम् |
| उत्तर | ३ | स्थिरजलम् |
| ईशान | ३ | नष्टजलम् |
| मध्य | ५ | पूर्णजलम् |
| वाह्य | ३ | अमृतजलम् |

### रोहिणी-नक्षत्राद्वापी चक्रम्

| स्थान | न | फलानि |
|---|---|---|
| पृष्ठे | ४ | शुभजलम् |
| नाभौ | ४ | बुद्धिनाश: |
| हृदि | ४ | स्थिरता |
| मध्य | ४ | कलह: |
| नेत्रयो: | ४ | धनागम: |
| पादयो: | ८ | दुखम् |

### हवनचक्रं सूर्यभात्

| न | ग्रह | फलानि |
|---|---|---|
| ३ | सू. | अशुभ |
| ३ | बु. | शुभ |
| ३ | शु. | शुभ |
| ३ | श. | अशुभ |
| ३ | च. | शुभ |
| ३ | म. | अशुभ |
| ३ | बृ. | शुभ |
| ३ | रा. | अशुभ |
| ३ | के | अशुभ |

### बीजवपने फणिचक्रं राहुनक्षत्रात

| नक्षत्र | ८ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फलं | अशुभ | शुभम् | अशुभं | शुभम् | अशुभं | शुभम् | अशुभ | शुभम् | अशुभं |

### हलचक्रमर्कभुक्तभात

| नक्षत्र | ३ | ८ | ९ | ८ |
|---|---|---|---|---|
| फलं | अशुभं | शुभम् | अशुभं | शुभम् |

च. बु. वृ. शु. श. वारेषु ॥ दिवा ॥ शुद्धसमये ॥ शुद्धे वृषवास्तुचक्रे, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितनक्षत्रेषु । २।३।५।६।७।८।९।११।१२ लग्नेषु । लग्ने शुभदृग्युते । शुभै: १।४।५।७।९।१० स्थितै:, पापै: ३।६।११ स्थितै:, ८।१२ ग्रहरहिते शुभ: । तृणकाष्ठादिगृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादिगृहनिर्माणं शुद्धसमये एव । देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्तेषु शुभम् ।

### देवालयगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

| खातदिक् | नैऋत्यां | आग्नेय्याम् | ऐशान्यां | वायव्यां |
|---|---|---|---|---|
| देवालयारम्भे | ध.म.कु. सूर्ये | मी.मे.वृ. सूर्ये | मि.क.सि. सूर्ये | क.तु.वृ. सूर्ये |
| जलाशयारम्भे | तु.वृ.ध. सूर्ये | म.कु.मी. सूर्ये | मे.वृ.मि. सूर्ये | क.सि.कं. सूर्ये |
| गृहारम्भे | वृ.मि.क. सूर्ये | सिं.क.तु. सूर्ये | वृ.ध.म. सूर्ये | कु.मी.मे. सूर्ये |

### अथ तिथिनन्दादिसंज्ञा

| संज्ञा | नन्दा | भद्रा | जया | रिक्ता | पूर्णा | सिनीवाली | कुहू: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिथय: | १।६।११ | २।७।१२ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | ५।१०।१५ | दृष्टचन्द्रमा | नष्टचन्द्रमा |

### गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्

| स्थान | न० | फलानि |
|---|---|---|
| मु. | १ | अग्निदाह: |
| पू. | ४ | उद्वसनम् |
| द. | ४ | लाभ: |
| प. | ४ | धनम् |
| उ. | ४ | कलह: |
| म. | ४ | विनाश: |
| अ. | ३ | स्थिरता |
| कं. | ३ | स्थिरता |

### गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्

| स्थान | न० | फलानि |
|---|---|---|
| शीर्षे | ३ | अग्निभयम् |
| अ. पा. | ४ | शून्यम् |
| पृ. पा. | ४ | स्थैर्यम् |
| पृष्ठे | ३ | धनम् |
| द. कु. | ४ | लाभ: |
| पु. | ३ | नाश: |
| वा. कु. | ३ | धननाश: |
| मुखे | ३ | कष्टम् |

### गृहारम्भ ( वास्तु ) मुहूर्त्त:

वैशाख, आषाढ ( चतुर्गृहं त्यक्त्वा ) कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण ( सौरक्रमेण ) मासेषु । सम्मुखकालवर्जितसमये । २।३।५।७।१०।११ ।१२।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु ।

### गृहप्रवेशमुहूर्त्त:

वैशाख, आषाढ, कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण ( सौर ) मासेषु २।३।५।७।१०।११। १२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु । दिवारात्री, शुद्ध समये । शुद्धे कुम्भचक्रे । २।५।८।११ लग्नेषूत्तम: । ३।६।९।१२ मध्यम: ॥

जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय(३।६।१०।११) राश्यंशयो:, स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।९।।नेषु शुभा:, ३।६।११ स्थानेषु पापा:, ४।८ भवने ग्रहमुख-कालरहितसमये शुभ:।इष्टिकादिगृहप्रवेश: शुद्धसमयादिकगृहप्रवेशोऽशुद्ध-समयेऽपि । अग्निभये राजकोपप्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारंभो गृहकार्य: ।

★ **अथ चरणिविचार:**- रमाणेन दीर्घविस्तार-संयुतमष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं च। पशुहानि: पशो रोग: पशुलाभ: पशुक्षय: । पशुनाश: पशुमंदो बहुपशु: ।

★ **पृथ्वीशयननक्षत्राणि** - सूर्य ५।७।९।१२।१९।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वीशयननक्षत्रेषुकूपवास्तुप्रभृतिकार्यं ट्यूबवेल बोरिंग प्रभृतिस्थापनञ्चम् ।

★ **ट्यूबवेल, बोरिंग, टंकी प्रभृशुभमुहूर्त्त:**-कृत्तिका आश्ले. मघा. पूर्वा ३. भरणी, विक्षत्रेषु २।४।५।६।७।९। १३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे, कृष्णवत्, च. बु. वृ. शु. वारेषु।। पूर्वाह्णेऽपराह्णेवा. २।३।४।६।११।१२। लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, शुभै: १।४।५।७।९।१। पापै: ३।६।११ गतै: शुभम् ।

★ **मासस्नानमुहूर्त्त:**- विवाहादिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं २।३।५।७।१०।११।१, च. बु. वृ. शु. दिनेषु, आर्द्रा, पुन. पुष्य, आश्ले, उफ. ह. चि. स्वा. नक्षत्रेषु, वृष मि. कन्या. तु. ल. ।

★ **चुल्हिकास्थापनमुहूर्त्त:** -. वि. रो, मृ, उत्तरा ३ कृ, मू. पूषा, ध, आर्द्रा नक्षत्रेषु । दिनेषु शुभतिथिलग्नेषु शुभम् ।

### चुल्हिकाचक्रम् भावधि

| स्थान | न० | फलम् | | न० | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|
| पृष्ठे | ६ | धनम् | | ५ | नाश: |
| शीर्षे | ४ | मृत्युभयम् | | २ | भोग: |
| बाहौ | ८ | सुखम् | | २ | स्त्रीमृति: |

**मन्त्रग्रहणमुहूर्त्त:**– अश्वि. रो. पुन. पुष्य उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे ॥ अत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्, सू, च, बु, वृ, शु, वारेषु । शुद्धसमये प्रात: मध्याह्नेवा । २।३।५।७।९।१२। लग्नेषु, शुभै: १।४।५।७।९।१० गतै:, पापै: ३।६।११ स्थितै:, वै. श्रा, आश्वि, का अग्र, मा, फा, मासेषु (सौरक्रमेण) । संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम् ।

**व्रतोद्यापनमुहूर्त्त:**- अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य. उत्तरा ३, ह. चि., स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा । का, मा, फा, वै, ज्ये, आषा, मासेषु । शुभलग्नेषु । कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीप-दानव्रतोद्यापनं च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ । एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम् । शुभै: १।४।५।७।९।१०। स्थितै: पापै: ३।६।११ स्थितै:, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यके शुभम् ।

**यात्रामुहूर्त्त:**– वामपृष्ठराहौ । मलमासक्षयमास-सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु । अश्वि मृ, पुन, पुष्य. ह, ज्ये, अनु, श्र, रे, नक्षत्रेषूत्तम: । रो, पूर्वा ३. चित्रा स्वा, मू, पूषा. ध. नक्षत्रेषु मध्यम: । मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्त-संक्रान्तिमासादिप्रभृतिदोषरहिते । अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु ॥ अमावास्यां विहायान्यतिथिषु योगवशनान्यथा शुभतिथिषु ॥ दिक्शूलरहितदिने ॥ २।४।६।८।९ तारासु । पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च । १।२।३।५।६।७।९।१०।११। चन्द्रेषु । आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि, द्विरागमनानन्तरं पितृगहागताया: पुन: पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ । तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्य: । दक्षिणकाले च सम्मुखचन्द्रवशेन यात्रा कार्या ।

**राहु ( काल ) बास:**- सौरक्रमेणाग्रहणपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां । फाल्गुन चैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम् । ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायांम् । भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवास: ।

### सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणानक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि ।

### दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमे, शनिवारे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मंगलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम् । परिहार:- रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयोगुडतिलदधियवमाषान्न भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत् ।

### विदिक्शूलविचार:

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां,बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम् ।

### लग्नचन्द्रयोर्वास:

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वास: । सम्मुखदक्षिणस्थलग्नचन्द्रयो: यात्रा शुभा । परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभेति ।

### चन्द्रविचार:

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम् । तत्र १।२।३।५।६ ।७।९।१०।११ संख्याकरचन्द्र: शुभप्रद: । ८ चन्द्र: मृत्युप्रद: । ४ कलहद: ।१२। हानिकारक: । तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुलशंखदधिश्वेत-वस्त्रादिदानं कार्यम् ।

### द्वादशचन्द्रस्य विशेष:

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ: । अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ: ।

### जन्मनक्षत्रे त्याज्यविषया:

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्र: प्रशस्त: सर्वकर्मसु । क्षौरभैषज्यवादाध्व-कर्त्तनेषु विवर्जयेत् ।

**जन्ममासे त्याज्य:- क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च ॥**

### सिद्धादियोगचक्रं तिथिदिनवशेन नक्षत्रादिवशेन च

| दिनानि | रविः | सोमः | कुजः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिद्धियोगाः | ३।८।१३ | १।६।११ | ३।८।१३ | २।७।१२ | ५।१०।१५ | १।६।११ | ४।९।१४ |
| अमृतयोगाः | ५।१०।१५ | ५।१०।१५ | २।७।१२ | १।६।११ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | १।६।११ |
| सर्वार्थ सिद्धियोगाः | अश्वि.पुष्य ह.मू. | रो.मृ.पुष्य अनु.श्र. | अश्वि. | रो.मृ. ह.अनु. | अश्वि.पुन. पुष्य.अनु.रे | अश्वि.पुनः अनु.श्र.रे | रो.स्वा.श्र |
| मृत्युयोगाः | १।६।११ | २।७।१२ | १।६।११ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | २।७।१२ | ५।१०।१५ |
| राज्यप्रदयोगः | x x | xx | ४।९।१४ | x x | xx | xx | ४।९।१४ |
| मध्यमयोगः | १२ | ११ | १० | ३ | ६ | २ | ७ |

### ताराचक्रम्

| ताराः | जन्म | सम्पत् | विपत् | क्षेमः | प्रत्यरिः | साधकः | वधः | मित्रम् | अतिमित्रम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्राणि | १।१०।१९ | २।११।२० | ३।१२।२१ | ४।१३।२२ | ५।१४।२३ | ६।१५।२४ | ७।१६।२५ | ८।१७।२६ | ९।१८।२७ |
| फलानि | मध्यमम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् | शुभम् |
| दानानि | शाकम् | x | गुडम् | x | लवणम् | x | तिलाः | x | x |

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेषं तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।९ ताराः शुभदाः । १।३।७ अशुभदाः । **विशेषः**– पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृतेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम् ।

**कालशूलम्**–उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले (गोधू-ल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात् ।

## ॥ पञ्चक ( भदवा ) विचारः ॥

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि । तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठादि- संग्रहशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्यजेत् ।। तत्रापवादः- वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके । पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत् ।

## ॥ दग्धतिथिमासान्तादिविचारः ॥

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येऽष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति । तत्र शुभकार्यं निषिद्धम् । एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च ( मासान्तमासादिसंज्ञकम् ) यात्रादिशुभकार्येषु त्याज्यम् ।

## ॥ पुराणादिश्रवणमुहूर्त्तः ॥

अश्वि. रो. मृ, पुन, पु, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु ।। सू, च, बु, वृ, शु, दिनेषु । शुक्लपक्षे ।। कृष्णे ५ यावत् । शुभलग्ने । लग्ने शुभयुग्दृष्टे बलाढ्ये, शुभैः १।४।५।७।९।१०। स्थितैः । पापैः ३।६।११ स्थितैः । उत्तरायणे, श्रा, आश्वि, कार्ति, अग्र मासेषु । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्तं विनाऽपि शुभम् ।

## ॥ इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः ॥

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं ततः ४ शुभम् ।

## ॥ नवान्नपार्वणमुहूर्त्तः ॥

अ. रो. मृ. पुन, पुष्य, उत्तरा३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम्। मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम् । सू, च, बु, वृ. वारेषु । शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु । वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् । २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् । नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्रसौरक्रमेण कार्तिक-पौष-चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशीरिक्तामंगलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानीति । अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः ।

## ॥ कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्त्तः ॥

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र ध, श. रे नक्षत्रेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू. च. बु. वृ. शु. वारेषु, शुद्ध समये, आवश्यकेऽशुद्धेऽपि, चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षय-मासरहिते शुभम् । शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा ।

## ॥ खलस्थापनमुहूर्त्तः ॥

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम् ।

## ॥ धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः ॥

मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. पूषा. ह. कृ. ध. श्र. मृ. स्वा. म. उत्तरा ३, पूषा, भ. चि. पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.वृ.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् । अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

## ॥ मेधिरोपणमुहूर्त्तः ॥

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा, ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम् ।

## ॥ वर्षेशवशेन मेधिविचारः ॥

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मङ्गले कदम्बकम्, बुध उदुम्बरम्, गुरौ आम्रम्, भृगुजे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम् ।

## ॥ कणमर्दनमुहूर्त्तः ॥

मघा. पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

## ॥ धान्यस्थापनमुहूर्त्तः ॥

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि.स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु २।३।५।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

## ॥ धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः ॥

अ. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ स्वा. वि. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा ।

## ॥ बीजस्थापनमुहूर्त्तः ॥

रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, च. बु. वृ. शु. वारेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

## ॥ बीजवपनमुहूर्त्त.॥

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. पुष्य. रे. नक्षत्रेषु २।३।५।८।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु च. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रकोणगैः, पापैः त्रिषडायगैः शुभम् ।

## ॥ हलप्रवहणमुहूर्त्तः ॥

अ.रो.मृ.पुन.म. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । च.मं. बु. वृ. शु. वारेषु, शुभतिथिषु शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः । शुभैः सुबलिभिः । चन्द्रे जलचर-राशिस्थे तन्नवांशे वा । गुरौ लग्नस्थे । शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम् ।

## ॥ धान्यरोपणमुहूर्त्तः ॥

रोहिणी उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु । सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु । शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम् ।

## ॥ स्वामिसेवा ( नौकरी ) मुहूर्त्तः ॥

अश्वि, मृ, पुष्य, ह, चि, अनु, अभि, रे नक्षत्रेषु । सू, बु, वृ, शु, दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु । लग्ने शुभयुते ।। सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे ।। संव्यसंवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः ।

## कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः

अश्वि, मृ, पुन, पुष्य, ह, चि, स्वा, अनु, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु , सू, मं, बु, वृ, शु वारेषु, शुद्धसमये, ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

## ऋणप्रदानमुहूर्त्तः ( द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः )

स्वा, पुन, मृ, रे, चि. अनु, वि, पुष्य, श्र, ध, श, नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, ५।८।९ ग्रहरहिते । चं, वृ, शु, श, वारेषु शुभम् ।

**ऋणदाने निषिद्धसमयः**- बुधवासरः, भरणी, कृ, आर्द्रा, आश्ले, मघा, पूर्वा ३, चि, ज्ये, नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च ।

**ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः**-रविभौमिदिने। संक्रान्तौ । वृद्धियोगे । हस्तनक्षत्रे च । एषु ऋणार्पणं शुभम् ।

### युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

| संज्ञा | नक्षत्राणि | तिथयः | दिनानि | फलानि |
|---|---|---|---|---|
| कुलः | पू. ३ अश्वि.पुष्य.म.मृ. श्र. कृ.ज्ये. वि. चि | ४।८।१२।१४ | मं.शु | स्थायिजयदः |
| अकुलः | भर.स्वा.आश्ले.ध.रे.ह. रो.अनु.पुन.उत्तरा३ | १।३।५।७।९। ११।१३।१५ | सू.चं. वृ.श | यायिजयदः |
| कुलाकुलः | आर्द्रा. मू. अभि. श. | २।६।१० | बुधः | उभयोः सन्धिः |

### नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम्

| संज्ञा | नक्षत्राणि | लाभालाभः | नष्टवस्तुदिक् |
|---|---|---|---|
| अन्धाक्षः | रो.पुष्य.उफ.वि.पूषा.ध.रे | शीघ्रलाभः | पूर्वस्याम् |
| मन्दाक्षः | मृ.आश्ले.ह.अनु.उषा.श.अश्वि. | प्रयत्नाल्लाभः | दक्षिणस्याम् |
| मध्याक्षः | आर्द्रा.म.चि.ज्ये.अभि.पूभा.भ. | दूरे श्रवण-मलाभश्च | पश्चिमायाम् |
| सुलोचनः | पुन,पूफ,स्वा,मू,श्र,उभा,कृ. | अलाभः | उत्तरस्याम् |

**प्रथमलग्नसारिणी ॥ इष्टार्कराश्यंशतलेघटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च ।**
**यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ॥**

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| वृष | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| मिथुन | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| कर्क | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| सिंह | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| कन्या | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| तुला | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| वृश्चिक | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| धनु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| मकर | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| कुम्भ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| मीन | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

**उदाहरण—** श्रावण कृष्ण १ शुक्र का इष्टदण्डादि ३/५ है। इस दिन सूर्य के मिथुन राशि के २० अंश के नीचे दण्डादि १५।२०।३८ में इष्टदण्डादि ३।५ जोड़ने से १८।२५।३८ हुआ। यह दण्डादि कर्क राशि के ०६ अंश के आगे ०७ अंश के नीचे पडा। अतः उक्त समय ०७ अंश से कर्कलग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

**॥ दशमलग्नसारिणी ॥ यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम् ।**
**प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः ॥**

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष २७८ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| वृष २९९ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| मिथुन ३२३ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| कर्क ३२३ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| सिंह २९९ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| कन्या २७८ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| तुला २७८ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| वृश्चिक २९९ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| धनु ३२३ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| मकर ३२३ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| कुम्भ २९९ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| मीन २७८ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

**नतकालसाधनम्—** रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नः गतं शेषकं विश्लेष्यं खलु, पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं नोन्नतम् ॥
**यथा—** श्रावण कृष्ण ३० शुक्र को इष्टघट्यादि ३/५ के समय दिनार्ध-इष्टकाल = १६।[illegible]-(३।५) = १३।४५= पूर्वनतघटी।

**दशमलग्नोदाहरणम्—** श्रावणकृष्ण ३० शुक्र को इष्टदण्डादि ३।५ है। नतकालानयनविधि से इस काल का पूर्वनत १३।४५ हुआ। इसे सूर्य के कर्कराशि के ३ अंश के नीचे दण्डादि १९।३९।५६ में घटाया तो (१९।३९।५६) -(१३।४५) = ५।५४।५६ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में मेषराशि के १४ अंश के आगे १५ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय १५ अंश से मेष दशमलग्न हुआ।

**अग्निवासचक्रम्**

| शुक्लपक्षे | | | | कृष्णपक्षे | | | | र | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ५ | ९ | १३ | २ | ६ | १० | १४ | भु. | भु. | दि. | भू. | भु. | भु. | दि. |
| २ | ६ | १० | १४ | ३ | ७ | ११ | ३० | भु. | दि. | भू. | भु. | भु. | दि. | भू. |
| ३ | ७ | ११ | १५ | | ४ | ८ | १२ | दि. | भू. | भु. | भु. | दि. | भू. | भु. |
| | ४ | ८ | १२ | १ | ५ | ९ | १३ | भू. | भु. | भु. | दि. | भू. | भु. | भु. |

**फलं—** भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः, भूतले च धननाश इति ज्ञेयम् ।
**विधिः—**(शुक्लादितिथिसं+सूर्यादिदिनसं+१)÷४ =३, ० शेषे शुभः । १, २, अशुभः ।
**अथ पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः—**
शुक्लपक्षे-२।५।६।९।१२।१३। कृष्णपक्षे—१।४।५।८।११।१२।३०।
**विधिः—**(शुक्लादितिसं x २+५) ÷ ७ = १।२।३ शेषे शुभम् । अन्यदशुभम् ।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरिसन्निधौ, ३ शेषे वृषारुढः शिवः अभीष्टदः स्यात् ।

**इष्टिकारम्भ मुहूर्तः—**अश्वि. रो. मृग. पुष्य उत्तरा ३. ह. ज्ये. श्र. रे नक्षत्रेषु। वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु। रविगुरुशनिदिनेषु। शुभतिथिषु, चैत्रभाद्रपौषमलमास-क्षयमासभिन्नसमये शुभः।

**वृक्षादिरोपणमुहूर्त्तः—**अश्वि. रो. मृ. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. वि. अनु. मू. अभि श. रे नक्षत्रेषु। चं. वृ. शु. दिनेषु शुभतिथिषु च शुभम्।
**कदलीरोपणम्—**पञ्चक (ध.श.पूभा.उभा. रे) रहित नक्षत्रेषु १।२।३।५।६ तिथिषु शुभदिनेषु शुभम्।

**अथ त्रिविधप्रवेशः**–दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः ।

**विपणिमुहूर्तः**–अश्विः, रे पुष्य ह. उत्तरा ३ अनु. अभि. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू.च.बु.बृ.शु.श. वारेषु॥ शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत् ॥ १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८।१२ रहितैः। शुभैः २।१०।११ स्थितैः शुभा ।

**अथ मीलचालनमुहूर्तः**–शुभतिथिदिननक्षत्रेषु ॥ १।४।७।१० लग्नेषु॥ शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः । पापैः ३।६।११ स्थितैः, लग्नेशधनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम् ।

**अथ वस्तूनां विक्रयमुहूर्तः**–भ.कृत्ति.आश्ले. वि.पूर्वा ३.नक्षत्रेषु,२।३।५।७। १०।११।१३।१५ तिथिषु, चं, बु. बृ. शु. दिनेषु, शुभैः १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः । पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः ।

**अथ वस्तूनां क्रयमुहूर्तः**–शुभतिथिदिनलग्नेषु । अश्वि. चि. स्वा. श्र. श. रे नक्षत्रेषु शुभः ।

**अथ भैषज्यभक्षणमुहूर्तः**–अश्वि. मृ. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे नक्षेषु । शुभतिथिषु ॥ सू. च. बु. बृ. शु. दिनेषु॥ ३।६।९।१२ लग्नेषु, शुभैः ३।६।९।१२ राशिगतैः, लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु औषधिभक्षणं शुभम् । जन्मनक्षत्रे भैषज्यभक्षणमशुभम् ॥

**अथरक्तमोक्षण ( आपरेशन ) मुहूर्तः**–अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनुः ज्ये. अभि.श्र. श. नक्षत्रेषु, सू.मं.बृ. दिनेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु चन्द्रतारानुकुले सति शुभम् ।

**अथ चिकित्सामुहूर्तः**–अश्वि. रो. मृ. पुष्यं ह. चि. स्वा. अनुः ज्ये. अभि.श्र.श. नक्षत्रेषु, सू. च. मं. बृ. शु. दिनेषु । शुभतिथिलग्नेषु चन्द्रतारानुकूले शुभा ।

**अथोग्रकर्ममुहूर्तः**–पूर्वा ३, भ. मघा. मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु ॥ १।८।१०।११ लग्नेषु ॥ १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम् ।

**अथ मोटर बस साइकिल यानादिचालनमुहूर्तः**–अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु, च. मं. बृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेशे वलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसप्तमेश–नवमेशैरपि १।४।५।७।९।१०। गतैर्वलयुक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादि–चालनं शुभम्।

अथ जन्म– नामराशिवशेन विचारणीयविषयाः–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥
देश ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥

॥ अथ राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाचक्रम् ॥

| राशि | मे | वृ | मि | क | सि | क | तु | वृ | ध | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पति | म | शु | बु | च | सू | बु | शु | मं | बृ | श | श | बृ |
| संज्ञा | चर | स्थि | द्वि | चर | स्थि | द्वि | चर | स्थि | द्वि | चर | स्थि | द्वि |
| प्रकृ | पित्त | वात | सम | कफ | पित्त | वा | स | क | पि | व | सम | क |
| आकृ | ह्रस्व | ह | सम | सम | दीर्घ | दी | दी | दी | स | स | ह | स |
| जाति | क्ष | वै | शू | वि | क्ष | वै | शू | वि | क्ष | वै | शू | वि |

॥ अथ ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम् ॥

| ग्रह | सू | च | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | मे १० | वृ ३ | म २८ | कं १५ | क ५ | मी२७ | तु२० | मि | ध |
| नीच | तु १० | वृश्चि ३ | क २८ | मी १५ | म ५ | कं २७ | मे २० | ध | मि |
| मूत्रि | सि | वृष | मे | कं | ध | तु | कु | कु | सि |
| जातिः | क्ष | वै | क्ष | शू | ब्रा | ब्रा | चा | चा | चा |
| दिक् | पू | वा | द | उ | ई | अ | प | नै | नै |
| भाग्य | २२वर्ष | २४व | २८व | ३२व | १६व | २५व | ३६व | ४२व | ४८व |
| प्रकृतिः | पित्त | कफ | पित्त | सम | सम | वात | वात | वात | वात |
| पुसंज्ञा | पु | स्त्री | पु | नपु | पु | स्त्री | नपु | नपु | पु |
| आकृति | ह | ह | ह | ह | दीर्घ | ह | दी | दी | दी |

॥ होराचक्रम् ॥

| राशिः | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५अं | सू | च | सू | च | सू | च | सू | च | सू | च | सू | च |
| ३०अं | च | सू | च | सू | च | सू | च | सू | च | सू | च | सू |

॥ द्रेष्काणचक्रम् ॥

| राशिः | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०अं | मं | श | बु | च | सू | बु | शु | मं | बृ | श | श | बृ |
| २०अं | सू | बु | शु | म | बृ | श | श | बृ | मं | शु | बु | च |
| ३०अं | बृ | श | श | बृ | मं | शु | बु | च | सू | बु | शु | मं |

॥ अथ वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम् ॥

| शनिः | रविः | भौमः | गुरुः | शुक्रः | बुधः | चन्द्रः | स्वामी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृ. | रो. | मृ. | आ. | पुन. | पु. | आश्ले | नक्षत्र |
| वि. | स्वा. | चि. | ह. | उफ. | पूफ | म. | नक्षत्र |
| अनु. | ज्ये. | मू. | पूषा | उषा | अभि. | श्र. | नक्षत्र |
| भ. | अ. | रे. | उभा | पूभा. | श. | ध. | नक्षत्र |
| चण्डा | वाता | वह्नि | सौम्या | नीरा | जला | अमृता | संज्ञा |

होरालग्नानयनम्–द्विघ्नेष्ट–नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ॥

॥ अथ त्रिविधायुर्बोधकचक्रम् ॥

| दीर्घायुः | मध्यमायुः | अल्पायुः |
|---|---|---|
| चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः | चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः | चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः |
| स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः | स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः | स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः |
| द्विस्वभावेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः | द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः | द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः |

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरलग्नाभ्याम्वायुर्निर्णयम् ।

॥ ग्रहाणां धारणाय मणयः ॥

| ग्रहाः | मणयः | | |
|---|---|---|---|
| सूर्यः | माणिक्य | गारनेट | विद्रुम |
| चन्द्रः | मुक्ता | मूनस्टोन | चाँदी |
| कुजः | विद्रुम | मूंगा | मूंगा |
| बुधः | पन्ना | लीली | सोना |
| गुरुः | पोखराज | सुनहला | मोती |
| शुक्रः | हीरा | स्फटिक | चाँदी |
| शनिः | नीलमणि | यमुनियां | लोह |
| राहुः | गोमेद | लाजवर्त | लाजवर्त |
| केतुः | लहसुनिया | लाजवर्त | लाजवर्त |

॥ अथ नवमांशचक्रम् ॥

| राशि | मे.सि. ध. | वृष कं.म. | मि.तु. कु. | क.वृ. मी. |
|---|---|---|---|---|
| ३/२० | म. | श. | शु. | च. |
| ६/४० | शु. | श. | मं. | सू. |
| १०/० | बु. | बृ. | बृ. | बु. |
| १३/२० | चं | म. | श. | शु. |
| १६/४० | सू. | शु. | श. | म. |
| २०/० | बु. | बु. | बृ. | बृ. |
| २३/२० | शु. | चं | मं. | श. |
| २६/४० | म. | सू. | शु. | श. |
| ३०/० | बृ. | बु. | बु. | बृ. |

| विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम् | | समराशौ त्रिंशांशचक्रम् | |
|---|---|---|---|
| राशिः | मे.तु.मि. ध.सिं.कु. | राशिः | वृ.क.कं. वृ.म.मी. |
| ५ अं | म | शु | ५ अं |
| १० अं | श | बु | १२ अं |
| १८ अं | बृ | बृ. | २० अं |
| २५ अं | बु | श. | २५ अं |
| ३० अं | शु | मं. | ३० अं |

## ॥ अथायुर्विचारः ॥

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरलग्नाभ्यामेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम् । प्रकारत्रयेष्वेकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम् । विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो वली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुरेव । इत्यमेवात्मकारकवशेनापि । १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव । विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः पणफरं मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुर्ज्ञेयः । यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः, यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुयोगः, समस्तदा मध्यायुर्योगः शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः ॥ इति॥ पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुयोगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः । एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेण ८०, ७२, ६४, वर्षाण्यायुः । अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति ॥ आयुः स्थानमारकादिस्थानञ्च–अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् । द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते । क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः । मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा, लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिडायेशानां च पापाख्या । व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येण साहचर्याद्वा फलदा । चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च । अष्टमेशदशापापफलदा, परं स्थानान्तर-शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति ॥

★ **द्वादशांशज्ञानम्**:–प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति । द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति ।

**अथ कारकग्रहाः**–ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य–भ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः । अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम् । **स्थिरकारकाः**–तन्वादिभावनां क्रमेणसूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रगुरु-गुरु- भौम-शुक्र-शनि-गुरु-बुध-शुक्र-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति ।

**स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्**–जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थितं रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे ४।८।१२ स्थितं च लौहपादे जन्म ज्ञेयम् ।

आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म बोध्यम् । तेषां फलम्–स्वर्णपादेऽत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति ।

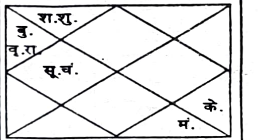
# श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.६।७।२००१ ई.त: २०।७।२००१ ई.या., पश्चिमे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, ११तः पुष्टः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ११तः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलयने, १०तो वर्षर्तुर्याम्यायनं।

| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | चन्द्रराशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | दिनाङ्काः सौ. | दिनाङ्काः अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ३८।०५ | रा.८।४६ | पुषा.११।२५ | दि.९।४६ | ऐ.११।५० | बा.७।२४ | ध.२७।४७ | दि.४।२९ | २।२०।२९।२७ | ३३।५८ | ५।२२ | ६।४८ | १५ | २२ | ६ |
| २ श. | ४३।०६ | रा.१०।२७ | उषा.१६।५३ | दि.११।५८ | वै.१२।३४ | तै.११।०० | मकर | अहो. | २।२१।२६।२९ | ३३।५६ | ५।२३ | ६।४७ | १६ | २३ | ७ |
| ३ र. | ४७।५७ | रा.१२।२४ | श्र.२३।०१ | दि.१३।५० | वि.१३।५० | व.१५।३२ | म.५६।२७ | रा.३।४४ | २।२२।२३।२१ | ३३।५५ | ५।२३ | ६।४७ | १७ | २४ | ८ |
| ४ च. | ५३।०० | रा.२।२५ | ध.२९।३३ | सा.५।०२ | प्री.१५।२६ | ब.२०।२९ | कुंभ | अहो. | २।२३।२०।०३ | ३३।५४ | ५।२३ | ६।४७ | १८ | २५ | ९ |
| ५ मं. | ५७।५० | रा.४।२१ | श.३६।०३ | रा.७।३८ | आ.१७।०७ | कौ.१५।२५ | कुंभ | अहो. | २।२४।२६।५५ | ३३।५३ | ५।२३ | ६।४७ | १९ | २६ | १० |
| ६ बु. | ६०।०० | अहो. | पूभा.४२।०२ | रा.१०।०३ | सौ.१८।२६ | ग.२९।५७ | कुं.२५।३३ | दि.३।२७ | २।२५।२३।४७ | ३३।५२ | ५।२४ | ६।४६ | २० | २७ | ११ |
| ६ वृ. | २।०३ | दि.६।०३ | उभा.४७।२५ | रा.१२।०८ | शो.१९।२५ | व.२।०३ | मीन | अहो. | २।२६।२०।३९ | ३३।५१ | ५।२४ | ६।४६ | २१ | २८ | १२ |
| ७ शु | ५।२० | दि.७।२२ | रे.५१।२१ | रा.१।४६ | अगं.१९।२८ | ब.५।२० | मी.५१।२१ | रा.१।४६ | २।२७।०७।३१ | ३३।५० | ५।२४ | ६।४६ | २२ | २९ | १३ |
| ८ श. | ७।३१ | दि.८।२४ | अ.५४।२२ | रा.२।५९ | सु.१८।२८ | कौ.०७।३१ | मेष | अहो. | २।२८।०४।२७ | ३३।४८ | ५।२४ | ६।४६ | २३ | ३० | १४ |
| ९ र. | ८।२८ | दि.८।३८ | भ.५६।०३ | रा.३।४० | धृ.१६।३६ | ग.०८।२८ | मेष | अहो. | २।२९।०१।२३ | ३३।४६ | ५।२५ | ६।४५ | २४ | ३१ | १५ |
| १० चं. | ८।०६ | दि.८।२९ | कृ.५६।३२ | रा.३।५२ | शू.१३।४४ | वि.०८।०६ | मे.११।२० | दि.९।४३ | २।२९।५८।२९ | ३३।४४ | ५।२५ | ६।४५ | २५ | ३२ | १६ |
| ११ मं. | ६।३० | दि.७।५१ | रो.५५।४९ | रा.३।३५ | गं.९।५२ | बा.०६।३० | वृष | अहो. | ३।००।५५।२५ | ३३।४३ | ५।२५ | ६।४५ | २६ | ०१ | १७ |
| १२ बु. | ३।४३ | दि.६।४५ | मृ.५४।०६ | रा.२।५४ | वृ.५।०६ | तै.०३।४३ | वृ.२४।५८ | दि.३।२५ | ३।०१।५२।२१ | ३३।४२ | ५।२६ | ६।४४ | २७ | ०२ | १८ |
| १४ वृ. | ५५।२० | रा.३।२४ | आ.५१।३३ | रा.१।५३ | व्या.५३।२५ | वि.२७।[illegible] | मिथुन | अहो. | ३।०२।४९।०६ | ३३।४१ | ५।२६ | ६।४४ | २८ | ०३ | १९ |
| ३० शु. | ५०।०३ | रा.१।२७ | पुन.४८।२६ | रा.१२।३४ | ह.४६।२५ | च.२२।४२ | मि.३४।०६ | सा.६।५४ | ३।०३।४६।[illegible] | ३३।४० | ५।२६ | ६।४४ | २९ | ०४ | २० |

पुनर्वसौ रविः १५।५४ पुंस्त्रीचंचंयोगः कन्यालग्नं शिखिवाहनं नीरानाडी तत्पतिः शुक्रस्तेन वृष्टियोगः, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, अशून्यशयनव्रतं, श्रावणे वर्जयेच्छाकम्।
गृहारंभः, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्।
पञ्चकारंभो दिवा घं. २ मि. २५उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा तृतीयायाम्।
श्रीगणेश ४व्रतं, सोमवासरव्रतम्।
मौनापञ्चमी, नाग ५, श्रीमनसादेव्युत्थापनं, श्रीविषहरापूजनं, मधुश्रावणीपूजारंभः, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे पञ्चम्याम्।
पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
द.ति.५।२० उ., पञ्चकान्तो रात्रौ घं.१मि.४६ उपरि, गं ३९।२१ उ. ५४।२१ यावत्।
द.ति.७।३१ या., इन्द्रसावर्णिमन्वादिः, पूर्वां विना यात्रा नवम्यामश्विन्याम्।
।।००।।
कर्के रविः ४८।३८ मु.३० फलं साम्यं, सोमवासरव्रतं, गुर्वादित्यनिवृत्तिः ४८।३८उ., मासान्तः।
याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि०० यावदिने, मार्गी कुजः ३२।२०, कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, पुष्टो गुरुः शुद्धारंभः ३।५६ उपरि।
त्रयोदशीमानं ५६।२४, ध्रुवयोगमानं ५४।२५, दूर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, मासादिः।
प्रदोष १४ व्रतम्।
श्रावणी ३० स्नानदानादिः, देवसावर्णिमन्वादिः, पश्चिमां विना यात्रा प्रतिपदि, पुष्ये रविः १९।२५ स्त्रीस्त्रीचंचंयोगस्तुलालग्नं गजवाहनं नीरानाडीतत्पतिः शुक्रस्तेन वृष्टियोगः।

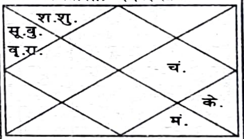
३० शुक्रे वल्ली ८।३७।४०।४६
अयनांशाः २२।३२।०२



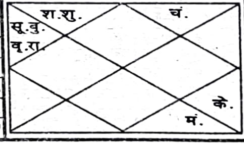

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ७।२०।३४।४६ | २।०१।४७।०२ | २।०५।२१।५० | १।०७।५४।०२ | १।२५।३८।०१ | ८।२४।०६।३२ | ४६।५९ | १।४९ | ३।४५ | ५।५८ | ८।२६ | १०।३२ | १२।४७ | १५।०५ | १७।२३ | १९।२८ | २१।२४ | २२।४५ | ००।२२ |
| २ श. | ७।२०।२९।५६ | २।०३।२१।३३ | २।०५।३५।३६ | १।०९।०१।२५ | १।२५।४५।०४ | ८।२४।०३।२१ | ४६।५८ | १।४५ | ३।४१ | ५।५४ | ८।२२ | १०।२८ | १२।४३ | १५।०१ | १७।२९ | १९।२४ | २१।२० | २२।४१ | ०।०८ |
| ३ र. | ७।२०।२५।०६ | २।०४।३६।०४ | २।०५।४९।२२ | १।२०।०८।२८ | १।२५।५२।०७ | ८।२४।००।२० | ४६।५७ | १।४१ | ३।३७ | ५।५० | ८।०८ | १०।२४ | १२।३९ | १४।५७ | १७।२५ | १९।२० | २१।०६ | २२।३७ | ०।०४ |
| ४ च. | ७।२०।२०।२६ | २।०६।००।३५ | २।०६।०३।०८ | १।२१।२५।४१ | १।२५।५९।२० | ८।२३।५६।५९ | ४६।५६ | १।३७ | ३।३३ | ५।४६ | ८।०४ | १०।२० | १२।३५ | १४।५३ | १७।२१ | १९।२६ | २१।०२ | २२।३३ | ००।०० |
| ५ मं. | ७।२०।२५।२६ | २।०७।२५।०६ | २।०६।२६।५३ | १।२२।२२।५४ | १।२६।०६।२२ | ८।२३।५३।४८ | ४६।५५ | १।३३ | ३।२९ | ५।४२ | ८।०० | १०।२६ | १२।३१ | १४।४९ | १७।०७ | १९।२२ | २०।५८ | २२।२९ | २३।५६ |
| ६ बु. | ७।२०।२०।३६ | २।०८।४९।३७ | २।०६।३०।३८ | १।२३।२०।०७ | १।२६।२३।२४ | ८।२३।५०।३७ | ४६।५५ | १।२९ | ३।२५ | ५।३८ | ७।५६ | १०।२२ | १२।२७ | १४।४५ | १७।०३ | १९।०८ | २०।५४ | २२।२५ | २३।५२ |
| ६ वृ. | ७।२०।०५।४६ | २।२०।२४।०८ | २।०६।४४।२३ | १।२४।३७।२० | १।२६।२०।२६ | ८।२३।४७।२७ | ४६।५५ | १।२५ | ३।२१ | ५।३४ | ७।५२ | १०।०८ | १२।२३ | १४।४१ | १६।५९ | १९।०४ | २०।५० | २२।२१ | २३।४८ |
| ७ शु. | ७।२०।००।५६ | २।२१।३८।३९ | २।०६।५८।०८ | १।२५।४४।३३ | १।२६।२७।२८ | ८।२३।४४।२७ | ४६।५५ | १।२१ | ३।२७ | ५।३० | ७।४८ | १०।०४ | १२।२९ | १४।३७ | १६।५५ | १९।०० | २०।४६ | २२।२७ | २३।४४ |
| ८ श. | ७।२०।००।३१ | २।२३।२६।०२ | २।०७।२१।५९ | १।२६।५२।३१ | १।२६।३४।२९ | ८।२३।४१।०६ | ४६।५४ | १।२७ | ३।२३ | ५।२६ | ७।४४ | १०।०० | १२।२५ | १४।३३ | १६।५१ | १८।५६ | २०।४२ | २२।२३ | २३।४० |
| ९ र. | ७।२०।००।२१ | २।२४।५३।२५ | २।०७।२५।४९ | १।२८।००।२९ | १।२६।४१।२० | ८।२३।३७।५५ | ४६।५३ | १।२३ | ३।०९ | ५।२२ | ७।४० | ९।५६ | १२।२१ | १४।२९ | १६।४७ | १८।५२ | २०।३८ | २२।०९ | २३।३६ |
| १० चं. | ७।२०।००।०४ | २।२६।३०।४८ | २।०७।३९।३९ | १।२९।०८।२६ | १।२६।४८।२० | ८।२३।३४।४४ | ४६।५२ | १।०९ | ३।०५ | ५।२८ | ७।३६ | ९।५२ | १२।०७ | १४।२५ | १६।४३ | १८।४८ | २०।३४ | २२।०५ | २३।३२ |
| ११ मं. | ७।२०।००।०१ | २।२८।०८।२० | २।०७।५३।२९ | १।२०।२६।२३ | १।२६।५५।२० | ८।२३।३१।३३ | ४६।५१ | १।०६ | ३।०२ | ५।२५ | ७।३३ | ९।४९ | १२।०४ | १४।२२ | १६।४० | १८।४५ | २०।३१ | २२।०२ | २३।२९ |
| १२ बु. | ७।२०।००।३१ | २।२९।४५।३२ | २।०८।०७।२९ | १।२१।२४।२० | १।२७।०२।२० | ८।२३।२८।२२ | ४६।५० | १।०२ | २।५८ | ५।२१ | ७।२९ | ९।४५ | १२।०० | १४।२८ | १६।३६ | १८।४१ | २०।२७ | २१।५८ | २३।२५ |
| १४ वृ. | ७।२०।०२।४० | २।२१।२२।५४ | २।०८।२१।०९ | १।२२।३२।२७ | १।२७।०९।२० | ८।२३।२५।२१ | ४६।५० | ०।५८ | २।५४ | ५।०७ | ७।२५ | ९।४१ | ११।५६ | १४।२४ | १६।३२ | १८।३७ | २०।२३ | २१।५४ | २३।२१ |
| ३० शु. | ७।२०।०५।२६ | २।२३।००।२६ | २।०८।३४।५९ | १।२३।४०।२४ | १।२७।२६।२० | ८।२३।२२।०९ | ४६।५० | ०।५४ | २।५० | ५।०३ | ७।२१ | ९।३७ | ११।५२ | १४।२० | १६।२८ | १८।३३ | २०।२९ | २१।५० | २३।२७ |

१ शुक्रे वल्ली ८।३७।४०।३२
अयनांशाः २२।३२।००




७ शुक्रे वल्ली ८।३७।४०।३९
अयनांशाः २२।३२।०१




**अथ विविध विषयाः**— श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। **सोमवासरव्रतं**— सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्। **प्रदक्षिणविधिः**— एका चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणा। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणा। **मांसाभक्षणफलं महाभारते**— मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः। कस्यापि **कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दिपुराणे**— कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्। **श्रेष्ठव्रतानि**— ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः। **वृक्षरोपणमन्त्रः**— वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।

**ग्रहस्थितिः**— वक्री पूर्वोदितः कुजः ११तो मार्गी, मार्गिणः पूर्वोदिताः बुधगुरुशुक्रशनयः।

**वातावरणम्**—पक्षादितः षष्ठीं यावद्वायुमेघच्छायावृष्टयस्ततो द्वादशीं यावदुष्णत्व-वायुखण्डवृष्टयस्त तः पक्षान्तं यावत्सुवृष्टिः।

# श्रावणशुक्लपक्षः

शकाब्द:१९२३, संवत् २०५८,सन्:[illegible]०९ साल,दि.२१।७।२००१ ई.त:४।८।२००१ ई.या., पश्चिमे काल:।
मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वोदित: शुक्र:, शुद्ध:, वर्षर्तु:, सौम्यगोल:, याम्यायनम्।



| ति.दि. | तिथय: |  | नक्षत्राणि |  | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: |  | स्पष्टसूर्य: | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादि: | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ श. | ४६।१३ | रा.१०।५९ | पु.४४।३० | रा.११।०४ | व.३९।०९ | किं.१७।०८ | कर्क. | अहो. | ३।०४।४३।०२ | ३३।३८ | ५।१६ | ६।४४ | ३० | ५ | २१ |
| २ र. | ३८।०७ | रा.८।३२ | आश्ले.४०।२४ | रा.९।२७ | सि.३१।३९ | बा.११।१० | क.४०।२४ | रा.९।२७ | ३।०५।४०।०३ | ३३।३६ | ५।१७ | ६।४३ | ३१ | ६ | २२ |
| ३ चं. | ३१।५३ | सा.६।०२ | म.३६।१० | रा.७।४५ | व्य.२४।०१ | तै.५।०० | सिंह | अहो. | ३।०६।३७।०४ | ३३।३४ | ५।१७ | ६।४३ | १ | ७ | २३ |
| ४ मं. | २५।४६ | दि.३।३६ | पूफ.३२।०६ | सा.६।०८ | व.१६।२६ | वि.२५।४६ | सि.४६।१० | रा.११।४६ | ३।०७।३४।०५ | ३३।३२ | ५।१८ | ६।४२ | २ | ८ | २४ |
| ५ बु. | १९।५४ | दि.१।१६ | उफ.२८।१९ | दि.४।३८ | प.९।०१ | बा.१९।५४ | कन्या | अहो. | ३।०८।३१।०६ | ३३।३० | ५।१८ | ६।४२ | ३ | ९ | २५ |
| ६ बृ. | १४।३३ | दि.११।०७ | ह.२५।०३ | दि.३।१९ | शि.१।५७ | तै.१४।३३ | कं.५६।५३ | रा.४।०३ | ३।०९।२८।०७ | ३३।२८ | ५।१८ | ६।४२ | ४ | १० | २६ |
| ७ शु. | ०९।५२ | दि.९।१६ | चि.२२।३१ | दि.२।१९ | सा.४९।३२ | व.९।५२ | तुला | अहो. | ३।१०।२५।०८ | ३३।२६ | ५।१९ | ६।४१ | ५ | ११ | २७ |
| ८ श. | ०६।०२ | दि.[illegible] | स्वा.२०।५० | दि.१।३९ | शु.४४।२७ | ब.६।०२ | तुला | अहो. | ३।११।२२।१७ | ३३।२३ | ५।१९ | ६।४१ | ६ | १२ | २८ |
| ९ र. | ०३।१० | दि.६।३६ | वि.२०।०९ | दि.१।२४ | शु.४०।१३ | कौ.३।१० | तु.५।२० | दि.७।२८ | ३।१२।१९।२६ | ३३।२० | ५।२० | ६।४० | ७ | १३ | २९ |
| १० चं. | ०१।२८ | दि.५।५५ | अनु.२०।४० | दि.१।३६ | ब्र.३६।५८ | ग.१।२८ | वृश्चिक | अहो. | ३।१३।१६।३५ | ३३।१७ | ५।२० | ६।४० | ८ | १४ | ३० |
| ११ मं. | ०१।०० | दि.५।४५ | ज्ये.२२।२४ | दि.२।१९ | ऐं.३४।४३ | वि.१।०० | वृ.२२।२४ | दि.२।१९ | ३।१४।१३।४४ | ३३।१४ | ५।२१ | ६।३९ | ९ | १५ | ३१ |
| १२ बु. | ०१।५० | दि.६।०६ | मू.२५।२७ | दि.३।३३ | वै.३३।३२ | बा.१।५० | धनु | अहो. | ३।१५।१०।५३ | ३३।११ | ५।२२ | ६।३८ | १० | १६ | १ |
| १३ बृ. | ०३।५७ | दि.६।५७ | पूषा.२९।३५ | दि.५।१२ | वि.३३।११ | तै.३।५७ | ध.४५।५४ | रा.११।४४ | ३।१६।०८।०२ | ३३।०८ | ५।२२ | ६।३८ | ११ | १७ | २ |
| १४ शु. | ०७।१४ | दि.८।१७ | उषा.३४।५० | सा.७।१९ | प्री.३३।४२ | व.७।१४ | मकर | अहो. | ३।१७।०५।१० | ३३।०६ | ५।२३ | ६।३७ | १२ | १८ | ३ |
| १५ श. | ११।२४ | दि.९।५७ | श्र.४०।४८ | रा.९।४२ | आ.३४।५३ | ब.११।२४ | मकर | अहो. | ३।१८।०२।२७ | ३३।०३ | ५।२३ | ६।३७ | १३ | १९ | ४ |

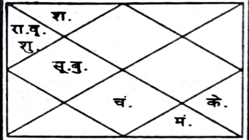
पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, दोलोत्सवारंभ:।
चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महार्घं, गं. २९।२४ उ., ४४।२४ या.।
पूर्वास्तो बुध: ४१।५१, **मधुश्रावणीव्रतं**, श्रीगणेश ४ व्रतं, सोमवासरव्रतम्।
कर्के बुध: ४५।५९, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
**नागपञ्चमी**, कर्कोटकनामानागराज: पीतवर्ण:, **नागपूजनं**, द्वारमुभयतो गोमयलिखितो नागो दूर्वासिन्दूरदुग्धलाजादिभि: पूज्य:, दीक्षाग्रहणं पञ्चम्याम्, द.ति.१९।५४ उ.।
सिद्धियोगमानं ५३।२८, मिथुने शुक्र: १८।३०, द.ति. १४।३३ या; दीक्षाग्रहणं **गृहप्रवेशश्च** सप्तम्यां, पूर्वयात्रा सप्तम्यां कन्यास्थे चन्द्रे, ६–७ एकोद्दिष्टम्।
**तुलसीदासजयन्ती**, दीक्षाग्रहणं **गृहप्रवेशश्च** सप्तम्यां, दक्षिणयात्राष्टम्याम्।
पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
उत्तरयात्रानुराधाय.[illegible]।
दीक्षाग्रहणं, गृहप्रवेशो **गृहारंभश्चानुराधायां**, पश्चिमोत्तरयात्रा. सोमवासरव्रतम्।
**पुत्रदा ११** व्रतं सर्वेषां, गं. १६।२४ उ. ३१।२४ या; पश्चिमयात्रा द्वादश्यां वृश्चिकस्थे चन्द्रे तत: पूर्वयात्रा।
**अगस्त** ८, तिलकजयन्ती, श्रीधर १२ दूर्वादलेनपारणं, प्रदोष १३ व्रतं. गृहप्रवेशो मूले, पूर्वयात्रा द्वादश्याम्।
**प्रदोष १४ व्रतम्,** पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।
**आश्लेषायां रवि:** २०।८ पुंस्त्रीचंचंयोगो वृश्चिकलग्नं छागवाहनं नीरानाडी तत्पति: शुक्रस्तेन वृष्टियोग:, गृहारंभो दीक्षाग्रहणं न पूर्णिमायां, पश्चिमां विना यात्रा ●
**श्रावणी १५** स्नानदानादि:, उपाकर्म, हयग्रीवावतार:, दोलोत्सवान्त:, **संस्कृदिवसमहोत्सव:**, **रक्षाबन्धनम्**, गृहारंभ: पूर्णिमायां, पूर्वां विना यात्रा **श्रवणायां**, ■

■ पञ्चकारंभो रात्रौ घं.९ मि.० ४।२३ . १एको., **मिथुने मध्यमो** गुरु: ४०।७ तत एव मन्मथनामैकोनत्रिंशन्मध्यमगुरुसंवत्सरारंभ:।

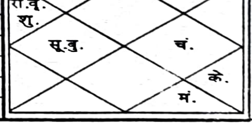
● श्रवणायां, भ. ७।१४ उ. २२।१४ या।

| ति.दि. | मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च |  |  |  |  |  | मिश्रमानं | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: |  | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
| १ श. | ७।२०।११।३९ | २।२४।४५।३४ | २।०८।४८।१२ | १।२४।४८।५५ | १।१७।२३।०२ | ८।१३।१८।५० | ४६।४९ | ०।५१ | २।४७ | ५।०० | ७।१८ | ९।३४ | ११।४९ | १४।०७ | १६।२५ | १८।३० | २०।१६ | २१।४७ | २३।१४ |
| २ र. | ७।२०।१८।०२ | २।२६।३०।५२ | २।०९।०१।२५ | १।२५।५७।३६ | १।१७।२९।४३ | ८।१३।१५।३९ | ४६।४८ | ०।४७ | २।४३ | ४।५६ | ७।१४ | ९।३० | ११।४५ | १४।०३ | १६।२१ | १८।२६ | २०।१२ | २१।४३ | २३।१० |
| ३ चं. | ७।२०।२४।२५ | २।२८।१६।१० | २।०९।१४।३८ | १।२७।०६।१७ | १।१७।३६।२४ | ८।१३।१२।२८ | ४६।४७ | ०।४३ | २।३९ | ४।५२ | ७।१० | ९।२६ | ११।४१ | १३।५९ | १६।१७ | १८।२२ | २०।०८ | २१।३९ | २३।०६ |
| ४ मं. | ७।२०।३०।४८ | ३।००।०१।२८ | २।०९।२७।५१ | १।२८।१४।५८ | १।१७।४३।०५ | ८।१३।०९।१७ | ४६।४६ | ०।३९ | २।३५ | ४।४८ | ७।०६ | ९।२२ | ११।३७ | १३।५५ | १६।१३ | १८।१८ | २०।०४ | २१।३५ | २३।०२ |
| ५ बु. | ७।२०।३७।११ | ३।०१।४६।४६ | २।०९।४१।०४ | १।२९।२३।३९ | १।१७।४९।४६ | ८।१३।०६।०६ | ४६।४५ | ०।३५ | २।३१ | ४।४४ | ७।०२ | ९।१८ | ११।३३ | १३।५१ | १६।०९ | १८।१४ | २०।०० | २१।३१ | २२।५८ |
| ६ बृ. | ७।२०।४३।३४ | ३।०३।३२।०३ | २।०९।५४।१७ | २।००।३२।१९ | १।१७।५६।२७ | ८।१३।०२।५६ | ४५।४४ | ०।३२ | २।२८ | ४।४१ | ६।५९ | ९।१५ | ११।३० | १३।४८ | १६।०६ | १८।११ | १९।५७ | २१।२८ | २२।५५ |
| ७ शु. | ७।२०।४९।५७ | ३।०५।१७।२० | २।१०।०७।३० | २।०१।४०।५९ | १।१८।०३।०८ | ८।१२।५९।४६ | ४६।४३ | ०।२८ | २।२४ | ४।३७ | ६।५५ | ९।११ | ११।२६ | १३।४४ | १६।०२ | १८।०७ | १९।५३ | २१।२४ | २२।५१ |
| ८ श. | ७।२१।०१।२५ | ३।०७।०६।२२ | २।१०।२०।२१ | २।०२।५०।२७ | १।१८।०८।५४ | ८।१२।५६।३५ | ४६।४१ | ०।२४ | २।२० | ४।३३ | ६।५१ | ९।०७ | ११।२२ | १३।४० | १५।५८ | १८।०३ | १९।४९ | २१।२० | २२।४७ |
| ९ र. | ७।२१।१२।५३ | ३।०८।५५।२४ | २।१०।३३।१२ | २।०३।५९।५५ | १।१८।१४।३९ | ८।१२।५३।२४ | ४६।३९ | ०।२० | २।१६ | ४।२९ | ६।४७ | ९।०३ | ११।१८ | १३।३६ | १५।५४ | १७।५९ | १९।४५ | २१।१६ | २२।४३ |
| १० चं. | ७।२१।२४।२१ | ३।१०।४४।२६ | २।१०।४६।०२ | २।०५।०९।२३ | १।१८।२०।२४ | ८।१२।५०।१३ | ४६।३७ | ०।१६ | २।१२ | ४।२५ | ६।४३ | ८।५९ | ११।१४ | १३।३२ | १५।५० | १७।[illegible] | १९।४१ | २१।१२ | २२।३९ |
| ११ मं. | ७।२१।३५।४९ | ३।१२।३३।२८ | २।१०।५८।५२ | २।०६।१८।५१ | १।१८।२६।०९ | ८।१२।४७।०२ | ४६।३६ | ०।१३ | २।०९ | ४।२२ | ६।४० | ८।५६ | ११।११ | १३।२९ | १५।४७ | १७।५२ | १९।३८ | २१।०९ | २२।३६ |
| १२ बु. | ७।२१।४७।१६ | ३।१४।२२।३० | २।११।११।४२ | २।०७।२८।१९ | १।१८।३१।५४ | ८।१२।४३।५१ | ४६।३५ | ०।०९ | २।०५ | ४।१८ | ६।३६ | ८।५२ | ११।०७ | १३।२५ | १५।४३ | १७।४८ | १९।३४ | २१।०५ | २२।३२ |
| १३ बृ. | ७।२१।५८।४३ | ३।१६।११।३२ | २।११।२४।३२ | २।०८।३७।४७ | १।१८।३७।३९ | ८।१२।४०।४१ | ४६।३४ | ०।०५ | २।०१ | ४।१४ | ६।३२ | ८।४८ | ११।०३ | १३।२१ | १५।३९ | १७।४४ | १९।३० | २१।०१ | २२।२८ |
| १४ शु. | ७।२[illegible]।१०।१० | ३।१८।००।३४ | २।११।३७।२२ | २।०९।४७।१५ | १।१८।४३।२४ | ८।१२।३७।३१ | ४६।३३ | ०।०१ | १।५७ | ४।१० | ६।२८ | ८।४४ | १०।५९ | १३।१७ | १५।३५ | १७।४० | १९।२६ | २०।५७ | २२।२४ |
| १५ श. | ७।२२।२६।३७ | ३।१९।५१।११ | २।११।५०।०२ | २।१०।५६।५३ | १।१८।४८।३८ | ८।१२।३४।२० | ४६।३१ | २३।५८ | १।५४ | ४।०७ | ६।२५ | ८।४१ | १०।५६ | १३।१४ | १५।३२ | १७।३७ | १९।२३ | २०।५४ | २२।२१ |

७ शुक्रे वल्ली ८।३७।४०।५३
अयनांशा: २२।३२।०३




१४ शुक्रे वल्ली ८।३७।४१।००
अयनांशा: २२।३२।०४




**अथ विविधाविषया:**– पञ्चम्यां नागपूजनं– श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्यो गोमयेन विषोल्वणा:। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वाङ्कुरै: कुशै:। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणै:। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सरा:। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्। **पञ्चम्यां**–तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम्। **शकुनम्**– श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। 'नभसि शुक्लदलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयो:। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदा: **रक्षासूत्रबन्धनमन्त्र** :– येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल। **ग्रहयोगेन विशिष्टवृष्टिविचार**:–बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगा:। नि:संशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयो:। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टि: स्यान्नात्र संशय:। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहा: पृष्ठावलम्बिन:। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही। **ग्रहस्थिति**:– मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनय:, मार्गी पूर्वोदितो बुध: ३त: पूर्वास्त:। **वातावरणम्**– पक्षादित: षष्ठीं यावद्वायुमेघचारवृष्टयस्तत: एकादशीं यावत्तापमेघचारखण्ड–वृष्टयस्तत: पक्षान्तं यावत्सुवृष्टियोग:।

# भाद्रकृष्णपक्षः

शकाब्द:१९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.५।८।२००१ ई.त. १९।८।२००१ ई.या., पश्चिमे काल:, १३त: उत्तरे काल:
मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वोदित: शुक्र:, शुद्ध:, १३तोऽशुद्ध:, वर्षर्तु:, सौम्यगोल:, याम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथय: द.प. | तिथय: घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगा: द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशय: रा.द.प. | चन्द्रराशय: घं.मि. | स्पष्टसूर्य: राश्यादि: | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्का: रा. | दिनाङ्का: सौ. | दिनाङ्का: अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | १६।१३ | दि.११।५३ | ध.४७।१९ | ग.१२।५० | सौ.३६।२५ | कौ.१६।१३ | म.१४।०४ | दि.११।०२ | ३।१८।५९।४४ | ३३।०० | ५।२४ | ६।३६ | १४ | २० | ५ | भाद्रे स्त्रीणां यात्रा न प्रशस्ता, दधि भाद्रपदे त्यजेत्। |
| २ चं. | २१।१७ | दि.१।५६ | श.५३।४९ | [illegible]।५७ | शो.३७।०२ | ग.२१।१७ | कुंभ | अहो. | ३।१९।५७।०१ | ३२।५७ | ५।२५ | ६।३५ | १५ | २१ | ६ | गृहारंभ:, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, २ एकोद्दिष्टम्। |
| ३ मं. | २६।१३ | दि.३।५४ | पूभा.५९।५५ | [illegible]।१३ | अति.३९।२४ | वि.२६।१३ | कु.४३।२४ | रा.१०।४७ | ३।२०।५४।१८ | ३२।५४ | ५।२५ | ६।३५ | १६ | २२ | ७ | कज्जलीतृतीया, विशालाक्षीदर्शनं, **श्रीगणेश ४ व्रतं**, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| ४ बु. | ३०।३० | दि.५।३८ | उभा.६०।०० | अहो. | सु.४०।२१ | बा.३०।३० | मीन | अहो. | ३।२१।५१।३४ | ३२।५१ | ५।२६ | ६।३४ | १७ | २३ | ८ | ॥००॥ |
| ५ बृ. | ३३।५५ | सा.७।०० | उभा.५।१९ | दि.७।३४ | धृ.४०।३० | कौ.२।१३ | मीन | अहो. | ३।२२।४८।५० | ३२।४८ | ५।२६ | ६।३४ | १८ | २४ | ९ | गृहारंभ उत्तरभाद्रे, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां पञ्चम्यां, गं. ५७।४२ उपरि, द.ति. ३३।५५ उपरि। |
| ६ शु. | ३६।१० | रा.७।५५ | रे.९।४२ | दि.९।२० | शू.३९।४८ | ग.५।०३ | मी.९।४२ | दि.९।२० | ३।२३।४६।०६ | ३२।४४ | ५।२७ | ६।३३ | १९ | २५ | १० | मघायां सिंहे बुध: १६।३८, द.ति. ३६।१० या., पञ्चकान्तो दिवा घं. ९ मि.२०३., गं.१२।४२या., **श्रीहलधरषष्ठीव्रतम्।** |
| ७ श. | ३६।२६ | रा.८।०२ | अ.१२।५८ | दि.१०।३९ | गं.३८।०७ | वि.६।१८ | मेष | अहो. | ३।२४।४३।३५ | ३२।४० | ५।२८ | ६।३२ | २० | २६ | ११ | मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं, **जयन्तीव्रतं**, निशीथेश्रीकृष्णजन्मोत्सव:, पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्। |
| ८ र. | ३७।०१ | रा.८।१७ | भ.१४।५७ | दि.११।१८ | वृ.३५।२६ | बा.६।४४ | मे३०।०३ | सा.५।३० | ३।२५।४१।०४ | ३२।३७ | ५।२९ | ६।३१ | २१ | २७ | १२ | **श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं**, श्रीकृष्णपूजनोत्सव:। |
| ९ चं. | ३५।३३ | रा.७।४२ | कृ.१५।२१ | दि.११।३७ | ध्रु.३१।४४ | तै.६।१७ | वृष | अहो. | ३।२६।३८।३२ | ३२।३४ | ५।२९ | ६।३१ | २२ | २८ | १३ | दक्षिणयात्रा दशम्याम्। |
| १० मं. | ३२।५३ | सा.६।३९ | रो.१८।१२ | दि.१२।४७ | व्या.२७।०६ | व.४।१३ | वृ.४५।५६ | रा.११।५२ | ३।२७।३६।०० | ३२।३१ | ५।३० | ६।३० | २३ | २९ | १४ | पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि दशम्याम्। |
| ११ बु. | २९।१२ | दि.५।११ | मृ.१३।४० | दि.१०।५८ | ह.२१।३८ | ब.१।०३ | मिथुन | अहो. | ३।२८।३३।२८ | ३२।२८ | ५।३० | ६।३० | २४ | ३० | १५ | पञ्चपञ्चाशत् **स्वातन्त्र्यदिवस:**, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनम्, **जया ११** व्रतं सर्वेषां, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि। |
| १२ बृ. | २४।४१ | दि.३।२३ | आ.११।२० | दि.१०।०३ | व.१५।३० | तै.२४।४१ | मि.५३।५९ | रा.३।१७ | ३।२९।३०।५६ | ३२।२५ | ५।३१ | ६।२९ | २५ | ३१ | १६ | मासान्त:, कुष्माण्डेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतम्। ❖जलानाडी तत्पतिर्बुधस्तेन मध्यमवृष्टियोग:। दुर्भर १४ श्रीभैरवपूजनं, प्रदोष १४ व्रतं, **द्वापरयुगादि:।** |
| १३ शु. | १९।२८ | दि.१।१९ | पुन.८।११ | दि.८।४८ | सि.८।४३ | व.१९।२८ | कर्क | अहो. | ४।००।२८।२४ | ३२।२२ | ५।३२ | ६।२८ | २६ | १ | १७ | **मघायां सिंहे रवि:** १६।३२ मु. ३० फलं साम्यं विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ८मि.५७ उपरि घं.३ मि.१० यावद्दिने, स्त्रीस्त्रीचंचंयोगस्तुलालग्नं रासभवाहनं ❖ |
| १४ श. | १३।४३ | दि.११।०१ | पु.४।२९ | दि.७।२० | व्य.१।२८ | श.१३।[illegible] | कर्क | अहो. | ४।०१।२६।०३ | ३२।१८ | ५।३२ | ६।२८ | २७ | २ | १८ | **वरीयानयोगमानं** ५२।३०, मासादि:, गं. ४९।२५३., १४—३० एकोद्दिष्टम्। |
| ३० र. | ७।३९ | दि.८।३७ | आश्ले.००।२५ | दि.५।४३ | व.४६।१४ | ना.७।३९ | क.००।२५ | दि.५।४३ | ४।०२।२३।४२ | ३२।१५ | ५।३३ | ६।२७ | २८ | ३ | १९ | **[illegible] ३० [illegible] ३० स्नानदानादि:**, कुशोत्पाटनम्, रविव्रतम्, मघामानं ५५।४७, गं. ४।२५या.। |

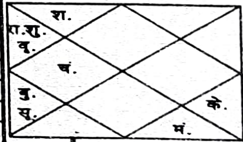
**मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** | **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ७।२२।४३।०४ | ३।२१।४१।४८ | २।१२।०२।४१ | २।१२।०६।३१ | १।१८।५३।५२ | ८।१२।३१।०९ | ४६।२९ | २३।५४ | १।५० | ४।०३ | ६।२१ | ८।३७ | १०।५२ | १३।१० | १५।२८ | १७।३३ | १९।१९ | २०।५० | २२।१७ |
| २ चं. | ७।२२।५९।३१ | ३।२३।३२।२४ | २।१२।१५।२० | २।१३।१६।०९ | १।१८।५९।०६ | ८।१२।२७।५८ | ४६।२७ | २३।५० | १।४६ | ३।५९ | ६।१७ | ८।३३ | १०।४८ | १३।०६ | १५।२४ | १७।२९ | १९।१५ | २०।४६ | २२।१३ |
| ३ मं. | ७।२३।१५।५८ | ३।२५।२३।०० | २।१२।२७।५९ | २।१४।२५।४६ | १।१९।०४।२० | ८।१२।२४।४७ | ४६।२५ | २३।४६ | १।४२ | ३।५५ | ६।१३ | ८।२९ | १०।४४ | १३।०२ | १५।२० | १७।२५ | १९।११ | २०।४२ | २२।०९ |
| ४ बु. | ७।२३।३२।२४ | ३।२७।१३।३६ | २।१२।४०।३८ | २।१५।३५।२३ | १।१९।०९।३४ | ८।१२।२१।३६ | ४६।२४ | २३।४२ | १।३८ | ३।५१ | ६।०९ | ८।२५ | १०।४० | १२।५८ | १५।१६ | १७।२१ | १९।०७ | २०।३८ | २२।०५ |
| ५ बृ. | ७।२३।४८।५० | ३।२९।०४।१२ | २।१२।५३।१७ | २।१६।४५।०० | १।१९।१४।४८ | ८।१२।१८।२६ | ४६।२३ | २३।३८ | १।३४ | ३।४७ | ६।०५ | ८।२१ | १०।३६ | १२।५४ | १५।१२ | १७।१७ | १९।०३ | २०।३४ | २२।०१ |
| ६ शु. | ७।२४।०५।१६ | ४।००।५४।४८ | २।१३।०५।५६ | २।१७।५४।३७ | १।१९।२०।०२ | ८।१२।१५।१६ | ४६।२२ | २३।३४ | १।३० | ३।४३ | ६।०१ | ८।१७ | १०।३२ | १२।५० | १५।०८ | १७।१३ | १८।५९ | २०।३० | २१।५७ |
| ७ श. | ७।२४।२५।१४ | ४।०२।४३।४५ | २।१३।१७।५९ | २।१९।०५।२० | १।१९।२४।५० | ८।१२।१२।०५ | ४६।२० | २३।३० | १।२६ | ३।३९ | ५।५७ | ८।१३ | १०।२८ | १२।४६ | १५।०४ | १७।०९ | १८।५५ | २०।२६ | २१।४३ |
| ८ र. | ७।२४।४५।१२ | ४।०४।३२।४२ | २।१३।३०।०२ | २।२०।१६।०३ | १।१९।२९।३८ | ८।१२।०८।५४ | ४६।१८ | २३।२६ | १।२२ | ३।३५ | ५।५३ | ८।०९ | १०।२४ | १२।४२ | १५।०० | १७।०५ | १८।५१ | २०।२२ | २१।४९ |
| ९ चं. | ७।२५।०५।१० | ४।०६।२१।३९ | २।१३।४२।०४ | २।२१।२६।४६ | १।१९।३४।२६ | ८।१२।०५।४३ | ४६।१६ | २३।२२ | १।१८ | ३।३१ | ५।४९ | ८।०५ | १०।२० | १२।३८ | १४।५६ | १७।०१ | १८।४७ | २०।१८ | २१।४५ |
| १० मं. | ७।२५।२५।०८ | ४।०८।१०।३६ | २।१३।५४।०६ | २।२२।३७।२८ | १।१९।३९।१४ | ८।१२।०२।३२ | ४६।१४ | २३।१८ | १।१४ | ३।२७ | ५।४५ | ८।०१ | १०।१६ | १२।३४ | १४।५२ | १६।५७ | १८।४३ | २०।१४ | २१।४१ |
| ११ बु. | ७।२५।४५।०६ | ४।०९।५९।३३ | २।१४।०६।०८ | २।२३।४८।१० | १।१९।४४।०२ | ८।११।५९।२१ | ४६।१३ | २३।१४ | १।१० | ३।२३ | ५।४१ | ७।५७ | १०।१२ | १२।३० | १४।४८ | १६।५३ | १८।३९ | २०।१० | २१।३७ |
| १२ बृ. | ७।२६।०५।०३ | ४।११।४८।३० | २।१४।१८।१० | २।२४।५८।५२ | १।१९।४८।४९ | ८।११।५६।१० | ४६।१२ | २३।१० | १।०६ | ३।१९ | ५।३७ | ७।५३ | १०।०८ | १२।२६ | १४।४४ | १६।४९ | १८।३५ | २०।०६ | २१।३३ |
| १३ शु. | ७।२६।२५।०० | ४।१३।३७।२६ | २।१४।३०।१२ | २।२६।०९।३४ | १।१९।५३।३६ | ८।११।५३।०० | ४६।११ | २३।०६ | १।०२ | ३।१५ | ५।३३ | ७।४९ | १०।०४ | १२।२२ | [illegible]।४० | १६।४५ | १८।३१ | २०।०२ | २१।२९ |
| १४ श. | ७।२६।४८।४८ | ४।१५।२२।३० | २।१४।४१।२७ | २।२७।२०।४८ | १।१९।५७।४१ | ८।११।४९।४९ | ४६।०९ | २३।०२ | ०।५८ | ३।११ | ५।२९ | ७।४५ | १०।०० | १२।१८ | १४।३६ | १६।४१ | १८।२७ | १९।५८ | २१।२५ |
| ३० र. | ७।२७।१२।२६ | ४।१७।०७।३४ | २।१४।५२।४२ | २।२८।३२।०२ | १।२०।०१।४६ | ८।११।४६ | ४६।०७ | २२।५९ | ०।५५ | ३।०८ | ५।२६ | ७।४२ | ९।५७ | १२।१५ | १४।३३ | १६।३८ | १८।२४ | १९।५५ | २१।२२ |

६ शुक्रे वल्ली ८।३७।४१।०७
अयनांशा: २२।३२।०५




१३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४१।१४
अयनांशा: २२।३२।०६




**अथ विविध विषया:—** भाद्रकृष्णाष्टम्यां **श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्** । तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदव्ययापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यंमेव कार्यमिति। भाद्रामायां कुशोत्पाटनमन्त्र: — कुशाग्रे वसते रुद्र: कुशमध्ये तु केशव:। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि। कुशोऽसि कुशपुत्रोसि ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्। **वर्ज्यकुशा:—** चितिदर्भा: पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्। श्राद्धे **निषिद्धवस्तूनि**, मात्स्ये—कूष्माण्डं महिषीक्षीरं विल्वपत्रमगद्रिजा:। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिता:। श्राद्धे प्रशस्तानि — उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्र: कुतुपस्तिला:। महिष्यादिप्रसवदोष:— माघे बुधे च महिषी श्रावणे बड़वा दिवा। सिंहे गाव: प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायका:। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति।

**ग्रहस्थिति:—** मार्गिण पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनय:, मार्गी पूर्वास्तो बुध:।

**वातावरणम्—** पक्षादितश्चतुर्थी यावद्वृष्टियोगस्तत: एकादशीं यावद्वायुमेघाडम्बर—स्वल्पवृष्टयस्तत: पक्षान्तं यावद्वायुमेषचारवृष्टय:।

# भाद्रशुक्लपक्षः

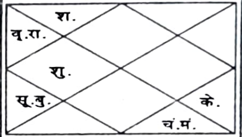
शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८,सन्१४०९ साल,दि.२०।०८।२००१ ई.त:२।९।२००१ई.या., उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथयः |  | नक्षत्राणि |  | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः |  | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्काः |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ च. | १।२५ | दि.६।०८ | पूफ.५२।०४ | रा.२।२४ | शि.३८।३५ | ब.१।२५ | सिंह | अहो. | ४।०३।२१।२१ | ३२।१२ | ५।३४ | ६।२६ | २९ | ४ | २० |
| ३ मं. | ४९।३१ | रा.१।२२ | उफ.४८।११ | रा.१२।५० | सि.३१।०१ | तै.२२।२६ | सि.६।०६ | दि.८।०० | ४।०४।१९।०० | ३२।०९ | ५।३४ | ६।२६ | ३० | ५ | २१ |
| ४ बु. | ४४।०९ | रा.११।१५ | ह.४४।४६ | रा.११।२९ | सा.२३।४७ | व.१६।५० | कन्या | अहो. | ४।०५।१६।३९ | ३२।०६ | ५।३५ | ६।२५ | ३१ | ६ | २२ |
| ५ बृ. | ३९।२८ | रा.९।२२ | चित्रा४२।०० | रा.१०।२३ | शु.१७।०४ | ब.११।४९ | कं.१३।२३ | दि.१०।५६ | ४।०६।१४।२८ | ३२।०३ | ५।३५ | ६।२५ | १ | ७ | २३ |
| ६ शु. | ३५।३५ | रा.७।५० | स्वा.४०।०६ | रा.९।३८ | शु.११।०१ | कौ.७।३२ | तुला | अहो. | ४।०७।११।५७ | ३२।०० | ५।३६ | ६।२४ | २ | ८ | २४ |
| ७ श. | ३२।४२ | सा.६।४२ | वि.३९।०९ | रा.९।१७ | ब्र.५।४२ | ग.४।०९ | तु.२४।२५ | दि.३।२३ | ४।०८।०९।५१ | ३१।५६ | ५।३७ | ६।२३ | ३ | ९ | २५ |
| ८ र. | ३०।५९ | सा.६।०२ | अनु.३९।२० | रा.९।२२ | ऐ.१।११ | वि.१।५१ | वृश्चिक | अहो. | ४।०९।०७।४५ | ३१।५२ | ५।३८ | ६।२२ | ४ | १० | २६ |
| ९ च. | ३०।२८ | सा.५।४९ | ज्ये.४०।४६ | रा.९।५६ | वि.५५।०७ | बा.०।४६ | वृ.४०।४६ | रा.९।५६ | ४।१०।०५।३९ | ३१।४८ | ५।३८ | ६।२२ | ५ | ११ | २७ |
| १० मं. | ३१।१६ | सा.६।०९ | मू.४३।२८ | रा.११।०२ | प्री.५३।३९ | तै.००।५२ | धनु | अहो. | ४।११।०३।३२ | ३१।४४ | ५।३९ | ६।२१ | ६ | १२ | २८ |
| ११ बु. | ३३।२२ | सा.७।०१ | पूषा.४७।२० | रा.१२।३६ | आ.५३।०१ | व.०२।१९ | धनु | अहो. | ४।१२।०१।२५ | ३१।४० | ५।४० | ६।२० | ७ | १३ | २९ |
| १२ बृ. | ३६।३६ | रा.८।१९ | उषा.५२।२१ | रा.२।३७ | सौ.५३।२० | ब.०४।५९ | ध.२।३५ | दि.६।४३ | ४।१२।५९।१८ | ३१।३७ | ५।४१ | ६।१९ | ८ | १४ | ३० |
| १३ शु. | ४०।४७ | रा.१०।०० | श्र.५८।११ | रा.४।५७ | शो.५४।१६ | कौ.०८।४२ | मकर | अहो. | ४।१३।५७।११ | ३१।३४ | ५।४१ | ६।१९ | ९ | १५ | ३१ |
| १४ श. | ४५।३६ | रा.११।५६ | ध.६०।०० | अहो. | अगं.५५।४० | ग.१३।१२ | म.३१।२२ | सा.६।१५ | ४।१४।५५।१७ | ३१।३० | ५।४२ | ६।१८ | १० | १६ | १ |
| १५ र. | ५०।४६ | रा.२।०१ | ध.४।३३ | दि.७।३२ | सु.५७।१४ | वि.१८।११ | कुंभ | अहो. | ४।१५।५३।२३ | ३१।२३ | ५।४३ | ६।१७ | ११ | १७ | २ |

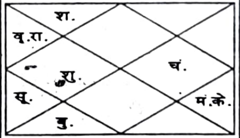
द्वितीयामानं ५३।५५, चन्द्रदर्शनं मु.३० फलं साम्यं, उत्तरयात्रा प्रतिपदि।
कर्के शुक्रः ००।१५, वराहावतारः, रुद्रसावर्णिमन्वादिः, **श्रीहरितालिकाव्रतं**, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
**श्रीगणेश ४ व्रतं**, श्रीगणेशपूजारंभः, **चतुर्थीचन्द्रपूजनं (चौठचन्द्र)**, पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्।
**ऋषिपञ्चमी**, सप्तर्षिपूजनं, पञ्चगव्यप्राशनं, पूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
लोलार्कषष्ठी श्रीसूर्यपूजनं, दक्षिणयात्रा षष्ठ्याम्।
**पश्चिमोदितो बुधः** १०।१०, श्रीमहालक्ष्मीव्रतारंभः, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्, दूर्वाष्टमी, **श्रीराधाष्टमी**, **श्रीराधाजयन्ती**।
**वैधृतियोगमानं** ५६।२७, मूले धनुषि कुजः ३४।३८, **रविव्रतम्**, उत्तरयात्राष्टम्याम्।
कन्यायां बुधः १८।१६, द.ति.३०।२८उ., गं.३४।४६ उ.४९।४६या.।
द.ति.३१।१६या.।
**कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषां**, श्रीहरेः पार्श्वपरिवर्तनं, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे।
**वामनद्वादशी**, वामनावतारः, कुष्माण्डेन पारणं, **इन्द्रपूजारंभः**, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायाम्।
**पूर्वफल्गुन्यां रविः ७।१५** पुंस्त्रीसूसूयोगः कन्यालग्नं मण्डूकवाहनममृतानाडी तत्सातिश्चन्द्रस्तेन वृष्टियोगः, **पञ्चकारंभो रात्रौ घ.४ मि.५७उ., प्रदोष१३व्रतं**, ●
सितम्बर ९, **याम्यामगस्त्योदयः**, प्रदोष १४ व्रतं, **श्रीअनन्तपूजनं** तद्डोरकबन्धनञ्च, **श्रीगणेशविसर्जनम्**। ●पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।
भाद्री १५ स्नानदानादिः, **अगस्त्यार्घदानं**, श्रीशिवपूजनं, **रविव्रतम्**।

| ति.दि. | मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च |  |  |  |  |  | मिश्रमान | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | मंगल | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |  | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
| १ च. | ७।२७।३६।२४ | ४।१८।५२।३८ | २।१५।०३।५७ | २।२९।४३।१५ | १।२०।०५।५१ | ८।११।४३।२७ | ४६।०५ | २२।५५ | ०।५१ | ३।०४ | ५।२२ | ७।३८ | ९।५३ | १२।११ | १४।२९ | १६।३४ | १८।२० | १९।५१ | २१।१८ |
| ३ मं. | ७।२८।००।११ | ४।२०।३७।४२ | २।१५।१५।१२ | ३।००।५४।२८ | १।२०।०९।५६ | ८।११।४०।१६ | ४६।०३ | २२।५१ | ०।४७ | ३।०० | ५।१८ | ७।३४ | ९।४९ | १२।०७ | १४।२५ | १६।३० | १८।१६ | १९।४७ | २१।१४ |
| ४ बु. | ७।२८।२३।५८ | ४।२२।२२।४५ | २।१५।२६।२७ | ३।०२।०५।४१ | १।२०।१४।०१ | ८।११।३७।०५ | ४६।०२ | २२।४८ | ०।४४ | २।५७ | ५।१५ | ७।३१ | ९।४६ | १२।०४ | १४।२२ | १६।२७ | १८।१३ | १९।४४ | २१।११ |
| ५ बृ. | ७।२८।४७।४५ | ४।२४।०७।४८ | २।१५।३७।४१ | ३।०३।१६।५४ | १।२०।१८।०५ | ८।११।३३।५५ | ४६।०१ | २२।४४ | ०।४० | २।५३ | ५।११ | ७।२७ | ९।४२ | १२।०० | १४।१८ | १६।२३ | १८।०९ | १९।४० | २१।०७ |
| ६ शु. | ७।२९।११।३२ | ४।२५।५२।५१ | २।१५।४८।५५ | ३।०४।२८।०७ | १।२० २२।०९ | ८।११।३०।४५ | ४६।०० | २२।४० | ०।३६ | २।४९ | ५।०७ | ७।२३ | ९।३८ | ११।५६ | १४।१४ | १९।१९ | १८।०५ | १९।३६ | २१।०३ |
| ७ श. | ७।२९।३८।१७ | ४।२७।३०।१८ | २।१५।५९।४३ | ३।०५।३९।२८ | १।२०।२५।२५ | ८।११।२७।३४ | ४५।५८ | २२।३७ | ०।३३ | २।४६ | ५।०४ | ७।२० | ९।३५ | ११।५३ | १४।११ | १६।१६ | १८।०२ | १९।३३ | २१।०० |
| ८ र. | ८।००।०५।०२ | ४।२९।०७।४५ | २।१६।१०।३१ | ३।०६।५०।४९ | १।२०।२८।४१ | ८।११।२४।२३ | ४५।५६ | २२।३३ | ०।२९ | २।४२ | ५।०० | ७।१६ | ९।३१ | ११।४९ | १४।०७ | १६।१२ | १७।५८ | १९।२९ | २०।५६ |
| ९ च. | ८।००।३१।४७ | ५।००।४५।१२ | २।१६।२१।१९ | ३।०८।०२।१० | १।२०।३१।५७ | ८।११।२१।१२ | ४५।५४ | २२।२९ | ०।२५ | २।३८ | ४।५६ | ७।१२ | ९।२७ | ११।४५ | १४।०३ | १६।०८ | १७।५४ | १९।२५ | २०।५२ |
| १० मं. | ८।००।५८।३१ | ५।०२।२२।३८ | २।१६।३२।०७ | ३।०९।१३।३१ | १।२०।३५।१२ | ८।११।१८।०१ | ४५।५२ | २२।२६ | ०।२२ | २।३५ | ४।५३ | ७।०९ | ९।२४ | ११।४२ | १४।०० | १६।०५ | १७।५१ | १९।२२ | २०।४९ |
| ११ बु. | ८।०१।२५।१५ | ५।०४।००।०४ | २।१६।४२।५५ | ३।१०।२४।५२ | १।२०।३८।२७ | ८।११।१४।५० | ४५।५० | २२।२२ | ०।१८ | २।३१ | ४।४९ | ७।०५ | ९।२० | ११।३८ | १३।५६ | १६।०१ | १७।४७ | १९।१८ | २०।४५ |
| १२ बृ. | ८।०१।५१।५१ | ५।०५।३७।३० | २।१६।५३।४३ | ३।११।३६।१३ | १।२०।४१।४२ | ८।११।११।४० | ४५।४८ | २२।१८ | ०।१४ | २।२७ | ४।४५ | ७।०१ | ९।१६ | ११।३४ | १३।५२ | १५।५७ | १७।४३ | १९।१४ | २०।४१ |
| १३ शु. | ८।०२।१८।४३ | ५।०७।१४।५६ | २।१७।०४।३१ | ३।१२।४७।३३ | १।२०।४४।५७ | ८।११।०८।३० | ४५।४७ | २२।१५ | ०।११ | २।२४ | ४।४२ | ६।५८ | ९।१३ | ११।३१ | १३।४९ | १५।५४ | १७।४० | १९।[illegible] | २०।३८ |
| १४ श. | ८।०२।४८।०२ | ५।०८।४०।०२ | २।१७।१४।२९ | ३।१३।५९।३९ | १।२०।४७।२३ | ८।११।०५।१९ | ४५।४५ | २२।११ | ०।०७ | २।२० | ४।३८ | ६।५४ | ९।०९ | ११।२७ | १३।४५ | १५।५० | १७।३६ | १९।०७ | २०।३४ |
| १५ र. | ८।०३।१७।२१ | ५।१०।०५।०८ | २।१७।२४।२७ | ३।१५।११।४५ | १।२०।४९।४९ | ८।११।०२।०८ | ४५।४३ | २२।०७ | ०।०३ | २।१६ | ४।३४ | ६।५० | ९।०५ | ११।२३ | १३।४१ | १५।४६ | १७।३२ | १९।०३ | २०।३० |

६ शुक्रे वल्ली ८।३७।४१।२१
अयनांशाः २२।३२।०७




१३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४१।२८
अयनांशाः २२।३२।०८




**अथ विविधविषयाः–** चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च पश्येत्तन्मन्त्रः– सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक **मा रोदीस्तव ह्येष** स्यमन्तकः। **प्रार्थनामन्त्रश्च–** दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्। एकादश्यां विष्णोः **पार्श्वपरिवर्तनमन्त्राः–** प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। **पार्श्वं** सपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। **विबुद्धे त्वयि** बुद्ध्येत जगत्सुप्तं चराचरम्। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरञ्जन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे। **अनन्तधारणमन्त्रः–** अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव। **अनन्तरूपे** विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते। **अगस्त्यार्घदानमन्त्राः–** कुंभयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्। काशपुष्पप्रतिकाश वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्। **प्रार्थनामन्त्रः–** आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।

**ग्रहस्थितिः–** मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो **बुध** ७तः पश्चिमोदितः।

**वातावरणम्ः–** पक्षादितश्चतुर्थीं यावत्खण्डवृष्टिस्ततो दशमीं यावद्वायुमेघच्छायास्वल्पवृष्टयस्ततः पश्चान्तं यावत्खण्डवृष्टयः।

# प्रथमाश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्द:१९२३, संवत् २०५८, सन्१४०९ साल, दि. ३।९।२००१ई. त:१७।९।२००१ ई. या., उत्तरे काल:।
मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वोदित: शुक्र:, अशुद्ध:,वर्षर्तु:, सौम्यगोल:, याम्यायनम्।

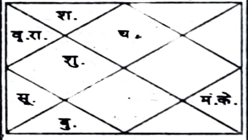
| ति.दि. | तिथय: | | नक्षत्राणि | | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: | | स्पष्टसूर्य: | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादि: | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ चं. | ५५।४४ | रा.४।०१ | श.११।०५ | दि.१०।०९ | धृ.५८।३९ | बा.२३।२५ | कुंभ | अहो. | ४।२६।५१।२९ | ३१।२२ | ५।४३ | ६।२७ | १२ | १८ | ३ |
| २ मं. | ६०।०० | अहो. | पूभा.१७।२७ | दि.१२।३९ | शू.५९।३८ | तै.२७।५५ | कु.००।४४ | दि.६।०२ | ४।२७।४९।३५ | ३१।२८ | ५।४४ | ६।२६ | १३ | १९ | ४ |
| २ बु. | ००।०६ | दि.५।४७ | उभा.२२।५२ | दि.२।५४ | ग.५९।५८ | ग.००।०६ | मीन. | अहो. | ४।२८।४७।४० | ३१।२४ | ५।४५ | ६।२५ | १४ | २० | ५ |
| ३ वृ. | ०३।०४ | दि.७।२४ | रे.२७।३१ | दि.४।४६ | वृ.५९।२२ | वि.३।४० | मी.२७।३१ | दि.४।४६ | ४।२९।४५।४५ | ३१।२० | ५।४६ | ६।२४ | १५ | २१ | ६ |
| ४ शु. | ०६।०२ | दि.८।२२ | अ.३१।०३ | सा.६।२२ | ध्रु.५७।५४ | बा.६।०२ | मेष | अहो. | ४।२०।४३।५० | ३१।०६ | ५।४७ | ६।२३ | १६ | २२ | ७ |
| ५ श. | ०७।२५ | दि.८।४२ | भ.३३।२० | सा.७।०८ | व्या.५५।२४ | तै.७।२५ | मे.४८।३५ | रा.१।२४ | ४।२१।४२।२१ | ३१।०२ | ५।४८ | ६।२२ | १७ | २३ | ८ |
| ६ र. | ०७।०८ | दि.८।३९ | कृ.३४।२८ | सा.७।३१ | ह.५१।५३ | व.७।०८ | वृष | अहो. | ४।२२।४०।३२ | ३०।५८ | ५।४८ | ६।२२ | १८ | २४ | ९ |
| ७ चं. | ०५।४८ | दि.८।०८ | रो.३४।०६ | सा.७।२७ | व.४७।२५ | ब.५।४८ | वृष | अहो. | ४।२३।३८।५३ | ३०।५४ | ५।४९ | ६।२१ | १९ | २५ | १० |
| ८ मं. | ०३।२४ | दि.७।०८ | मृ.३२।४७ | सा.६।५७ | सि.४२।०६ | कौ.३।२४ | वृ.३।२६ | दि.७।०२ | ४।२४।३७।२३ | ३०।५० | ५।५० | ६।२० | २० | २६ | ११ |
| १० बु. | ५५।२५ | रा.३।५७ | आ.३०।३८ | सा.६।०६ | व्य.३६।०३ | व.२७।२८ | मिथुन | अहो. | ४।२५।३५।३३ | ३०।४६ | ५।५१ | ६।०९ | २१ | २७ | १२ |
| ११ वृ. | ५०।०७ | रा.१।५४ | पुन.२७।३७ | दि.४।५४ | व.२९।२२ | ब.२२।४१ | मि.१३।२३ | दि.११।२२ | ४।२६।३३।५३ | ३०।४३ | ५।५१ | ६।०९ | २२ | २८ | १३ |
| १२ शु. | ४४।२६ | रा.११।३८ | पु.२४।०२ | दि.३।२९ | प.२२।०५ | कौ.१७।२७ | कर्क | अहो. | ४।२७।३२।२३ | ३०।४० | ५।५२ | ६।०८ | २३ | २९ | १४ |
| १३ श. | ३८।२७ | रा.९।२६ | आश्ले.२०।०२ | दि.१।५४ | शि.१४।३० | ग.११।२७ | क.२०।०२ | दि.१।५४ | ४।२८।३०।४९ | ३०।३६ | ५।५३ | ६।०७ | २४ | ३० | १५ |
| १४ र. | ३२।२८ | सा.६।४९ | म.१५।५० | दि.१२।२४ | सि.६।४५ | वि.५।२२ | सिंह | अहो. | ४।२९।२९।२५ | ३०।३२ | ५।५४ | ६।०६ | २५ | ३१ | १६ |
| ३० चं. | २६।२४ | दि.४।२४ | पूफ.११।३९ | दि.१०।३४ | शु.५१।२० | ना.२६।२४ | सिं.२५।४० | दि.४।२० | ४।००।२८।०१ | ३०।२८ | ५।५४ | ६।०६ | २६ | ०१ | १७ |

महालयारंभ: पितृपक्षीयपार्वणारंभ:, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे प्रतिपदि, दुग्धं त्यजेदाश्विने।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
।।००।।
**श्रीगणेश ४ व्रतं**, पञ्चकान्तो दिवा घं. ४ मि.४६ उ., गं. १५।३१ उ.३०।३१ या., पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायाम्।
**श्रीइन्द्रविसर्जनम्**, पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम्।
।।००।। ●**षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं**१२ मि.३१ उपरि दिने, **मलमासारंभ**: [illegible] उपरि।
रात्यन्ते स्त्रीणां विशिष्टभोजनं (ओठगन), **रविव्रतं**, **पूर्वदक्षिणयात्रा** रोहिण्याम्।
**जीमूतवाहनव्रतं** (जितिया) श्रीमहालक्ष्मीव्रतं, दक्षिणयात्राष्टम्यां रोहिण्यां तत: पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि।
न५मोमानं ५६।२६, जीमूतवाहनव्रतमहालक्ष्मीव्रतपारणं **दिवा घं.७ मि.८** उपरि, **मातृनवमी**, अन्वष्टकाश्राद्धम्, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि, द.ति. ५९।४० उपरि।
पश्चिमदक्षिणयात्रैकादश्यां, द.ति. ५५।२५या.।
**उत्तरफल्गुन्यां रवि**: ५१।३८ स्त्रीस्त्रीसूचंयोग: कर्कलग्नं मूषकवाहनं जलानाडी तत्पतिर्बुधस्तेन वृष्टियोग:, **इन्दिरा११** व्रतं स्मार्त्तानां, पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ♌
गुडेन पारणं, इन्दिरा ११ व्रतं वैष्णवानाम्। ♌ तत: पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये।
मघायां सिंहे शुक्र: ३।४१, गं. ९।०२ उ. २४।०२या., **प्रदोष १४** व्रतम्।
साध्ययोगमानं ५२।२३, प्रदोष १४ व्रतं, **रविव्रतम्**, शस्त्रादिहतानां श्राद्धम्, मासान्त:।
**अश्विनी ३० महालया ३० स्नानदानादि:**, पितृपक्षीयपार्वणसमाप्ति:, **विश्वकर्मापूजा**, **सोमवारीव्रतम्**, **कन्यायां रवि**: १६।३३ मु. ४५फलं समर्घ ●

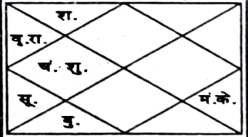
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | ८।०३।४६।४० | ५।२१।३०।२४ | २।२७।३४।२४ | ३।२६।२३।५० | १।२०।५२।२५ | ८।२०।५८।५७ | ४५।४१ | २२।०४ | ००।०० | २।२३ | ४।३१ | ६।४७ | ९।०२ | ११।२० | १३।३८ | १५।४३ | १७।२९ | १९।०० | २०।२७ |
| २ मं. | ८।०४।२५।५८ | ५।२२।५५।२९ | २।२७।४४।२१ | ३।२७।३५।५५ | १।२०।५४।४१ | ८।२०।५५।४६ | ४५।३९ | २२।०० | २३।५६ | २।०९ | ४।२७ | ६।४३ | ८।५८ | ११।२६ | १३।३४ | १५।३९ | १७।२५ | १८।५६ | २०।२३ |
| २ बु. | ८।०४।४५।२६ | ५।२४।२०।२४ | २।२७।५४।२८ | ३।२८।४८।०० | १।२०।५७।०७ | ८।२०।५२।३५ | ४५।३७ | २१।५७ | २३।५३ | २।०६ | ४।२४ | ६।४० | ८।५५ | ११।२३ | १३।३१ | १५।३६ | १७।२२ | १८।५३ | २०।२० |
| ३ वृ. | ८।०५।२४।३४ | ५।२५।४५।२९ | २।२८।०४।२५ | ३।२०।००।०५ | १।२०।५९।३३ | ८।२०।४९।२५ | ४५।३५ | २१।५३ | २३।४९ | २।०२ | ४।२० | ६।३६ | ८।५१ | ११।०९ | १३।२७ | १५।३२ | १७।२८ | १८।४९ | २०।२६ |
| ४ शु. | ८।०५।४३।५२ | ५।२७।२०।३४ | २।२८।२४।२२ | ३।२१।२२।२० | १।२१।०१।५९ | ८।२०।४६।२५ | ४५।३३ | २१।४९ | २३।४५ | १।५८ | ४।२६ | ६।३२ | ८।४७ | ११।०५ | १३।२३ | १५।२८ | १७।२४ | १८।४५ | २०।२२ |
| ५ श. | ८।०६।२५।२८ | ५।२८।२७।०९ | २।२८।२३।०४ | ३।२२।२४।२५ | १।२१।०३।३९ | ८।२०।४३।०४ | ४५।३१ | २१।४५ | २३।४१ | १।५४ | ४।२२ | ६।२८ | ८।४३ | ११।०१ | १३।२९ | १५।२४ | १७।२० | १८।४१ | २०।०८ |
| ६ र. | ८।०६।४७।०४ | ५।२९।२३।४३ | २।२८।३१।५६ | ३।२३।३६।४० | १।२१।०५।२९ | ८।२०।३९।५३ | ४५।२९ | २१।४२ | २३।३८ | १।५१ | ४।०९ | ६।२५ | ८।४० | १०।५८ | १३।२६ | १५।२१ | १७।०७ | १८।३८ | २०।०५ |
| ७ चं. | ८।०७।२८।४० | ५।२०।३०।२७ | २।२८।४०।४८ | ३।२४।४८।५५ | १।२१।०६।५९ | ८।२०।३६।४२ | ४५।२७ | २१।३८ | २३।३४ | १।४७ | ४।०५ | ६।२१ | ८।३६ | १०।५४ | १३।२२ | १५।२७ | १७।०३ | १८।३४ | २०।०१ |
| ८ मं. | ८।०७।५०।२६ | ५।२१।३६।५१ | २।२८।४९।४० | ३।२६।०१।२० | १।२१।०८।३९ | ८।२०।३३।३१ | ४५।२५ | २१।३४ | २३।३० | १।४३ | ४।०१ | ६।२७ | ८।३२ | १०।५० | १३।०८ | १५।२३ | १६।५९ | १८।३० | १९।५७ |
| १० बु. | ८।०८।२१।५२ | ५।२२।४३।२५ | २।२८।५८।३१ | ३।२७।२३।२५ | १।२१।२०।२९ | ८।२०।३०।२० | ४५।२३ | २१।३० | २३।२६ | १।३९ | ३।५७ | ६।२३ | ८।२८ | १०।४६ | १३।०४ | १५।०९ | १६।५५ | १८।२६ | १९।५३ |
| ११ वृ. | ८।०८।५३।२८ | ५।२३।४९।५९ | २।२९।०७।२२ | ३।२८।२५।४० | १।२१।२१।५९ | ८।२०।२७।०९ | ४५।२१ | २१।२७ | २३।२३ | १।३६ | ३।५४ | ६।२० | ८।२५ | १०।४३ | १३।०१ | १५।०६ | १६।५२ | १८।२३ | १९।५० |
| १२ शु. | ८।०९।२५।०४ | ५।२४।५६।३३ | २।२९।२६।२३ | ३।२९।३७।५४ | १।२१।२३।३९ | ८।२०।२३।५९ | ४५।२० | २१।२३ | २३।२९ | १।३२ | ३।५० | ६।०६ | ८।२१ | १०।३९ | १२।५७ | १५।०२ | १६।४८ | १८।२९ | १९।४६ |
| १३ श. | ८।०९।५८।२३ | ५।२५।३२।३१ | २।२९।२४।२८ | ४।००।५०।३६ | १।२१।२४।३५ | ८।२०।२०।४८ | ४५।२८ | २१।२९ | २३।२५ | १।२८ | ३।४६ | ६।०२ | ८।२७ | १०।३५ | १२।५३ | १४।५८ | १६।४४ | १८।२५ | १९।४२ |
| १४ र. | ८।२०।३१।२२ | ५।२६।०८।२९ | २।२९।३२।४३ | ४।०२।०३।२८ | १।२१।२५।३१ | ८।२०।२७।३७ | ४५।२६ | २१।२६ | २३।२२ | १।२५ | ३।४३ | ५।५९ | ८।२४ | १०।३२ | १२।५० | १४।५५ | १६।४१ | १८।२२ | १९।३९ |
| ३० चं. | ८।२१।०४।३१ | ५।२६।४४।२७ | २।२९।४०।५८ | ४।०३।२६।०० | १।२१।२६।२७ | ८।२०।२४।२६ | ४५।२४ | २१।२२ | २३।०८ | १।२१ | ३।३९ | ५।५५ | ८।२० | १०।२८ | १२।४६ | १४।५१ | १६।३७ | १८।०८ | १९।३५ |

४ शुक्रे वल्लो ८।३७।४२।३५
अयनांशा: [illegible]।३२।०९




१२ शुक्रे बल्ली ८।३७।४२।४२
अयनांशा: २२।३२।२०




**अथ विविधविषया:**— आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्प:। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीय: कल्प:। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्प:। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थ: कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। हेमाद्रौ—आषाढ्या: पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नर: कुयदिकस्मिन्नपि वासरे। तस्य सम्वत्सरं यावत्सन्तृप्ता: पितरो ध्रुवम्। **श्राद्धकाल:**—पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। **जीतमूतवाहनव्रतं भविष्ये — इषे** मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहन:। तस्यां पूज्य: सनारीभि:पुत्रसौभाग्यलिप्सया। **हस्तार्के खञ्जनदर्शनमन्त्र:**— नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते। तद्दर्शनाकाशपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। पुनश्च— अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रद: कुशलद: शुचिसाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दु:खं ददाति बहुश: खलु खञ्जरीट:।
**ग्रहस्थिति:**— मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरु शुक्रशनय:, मार्गी पश्चिमोदितो बुध: ।
**वातावरणम्**—पक्षादितस्तृतीयां यावत्स्वल्पखण्डवृष्टिस्ततो दशमीं यावदुष्णता तत: पक्षान्तं यावन्मेघच्छायावायुखण्डवृष्टय:।

# प्रथमाश्विनशुक्लपक्षः मलमासः

शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.१८।९।२००१ई.तः २।१०।२००१ ई. या., उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

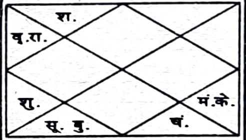
| ति.दि. | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्काः | | | प्रथमाश्विनशुक्लपक्षः मलमासः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ मं. | २०।२९ | दि.२।०७ | उ.फ.७।३८ | दि.८।५८ | शु.४३।५८ | ब.२०।२९ | कन्या | अहो. | ५।०१।२६।३७ | ३०।२४ | ५।५५ | ६।०५ | २७ | २ | १८ | मासादिः, मलमासे स्त्रीणां यात्रा न शस्ता। आश्विने मलमासफलम्— आश्विने परचक्रेण तस्करैः पीडिताः प्रजाः। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणापथे। |
| २ बु. | १५।०८ | दि.११।५९ | ह.४।०४ | दि.७।३४ | ब्र.३७।०३ | कौ.१५।०८ | कं.३२।३६ | सा.६।५८ | ५।०२।२५।१३ | ३०।२० | ५।५६ | ६।०४ | २८ | ३ | १९ | चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्यं, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वितीयायां, (२—३) एकोद्दिष्टम्। |
| ३ वृ. | १०।२८ | दि.१०।०८ | चि.१।०७ | दि.६।२४ | ऐ.३०।४५ | ग.१०।२८ | तुला | अहो. | ५।०३।२३।४९ | ३०।१६ | ५।५७ | ६।०३ | २९ | ४ | २० | स्वातीमान ५७।५६, **श्रीगणेश ४ व्रतं**, पश्चिमयात्रा तृतीयायाम्। |
| ४ शु. | ०६।३७ | दि.८।३७ | वि.५७।४८ | रा.५।०५ | वै.२५।०८ | वि.६।३७ | तु.४३।०७ | रा.११।१३ | ५।०४।२२।२४ | ३०।१२ | ५।५८ | ६।०२ | ३० | ५ | २१ | ॥००॥ |
| ५ श. | ०३।४८ | दि.७।२८ | अनु.५७।४२ | रा.५।०३ | वि.२०।२२ | बा.३।४८ | वृश्चिक | अहो. | ५।०५।२१।१६ | ३०।०८ | ५।५८ | ६।०२ | ३१ | ६ | २२ | पश्चिमोत्तरयात्रा षष्ठ्याम्। |
| ६ र. | ०२।०६ | दि.६।४९ | ज्ये.५८।४६ | रा.५।२९ | प्री.१६।२९ | तै.२।०६ | वृ.५८।४६ | रा.५।२९ | ५।०६।२०।०८ | ३०।०४ | ५।५९ | ६।०१ | १ | ७ | २३ | गं. ५२।४६ उ. उत्तरयात्रा सप्तम्यां ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा मूले। |
| ७ चं. | ०१।३७ | दि.६।३९ | मू.६०।०० | अहो. | आ.१३।३८ | व.१।३७ | धनु | अहो. | ५।०७।१९।०० | ३०।०० | ६।०० | ६।०० | २ | ८ | २४ | **वक्री बुधः** ७।५१, गं. ७।४६ या., द.ति. १।३७ उपरि। |
| ८ मं. | ०२।२८ | दि.७।०० | मू.०१।११ | दि.६।२९ | सौ.११।४७ | ब.२।२८ | धनु | अहो. | ५।०८।१७।५१ | २९।५६ | ६।०१ | ५।५९ | ३ | ९ | २५ | **वक्री शनिः** ५४।४८, द.ति. २।२८ या., पूर्वयात्रा नवम्याम्। |
| ९ बु. | ०४।३७ | दि.७।५३ | पूषा.४।५१ | दि.७।५८ | शो.१०।५६ | कौ.४।३७ | ध.२१।०२ | दि.२।२७ | ५।०९।१६।४२ | २९।५२ | ६।०२ | ५।५८ | ४ | १० | २६ | पूर्वयात्रा दशम्यां पूर्वाषाढे। |
| १० वृ. | ०७।५४ | दि.९।१२ | उषा.९।३६ | दि.९।५२ | अगं.१०।५८ | ग.७।५४ | मकर | अहो. | ५।१०।१५।३३ | २९।४८ | ६।०२ | ५।५८ | ५ | ११ | २७ | **हस्ते रविः** २९।३ पुंस्त्रीसूचंयोगो मीनलग्नमश्ववाहनममृतानाडी तत्पतिश्चन्द्रस्तेन सुवृष्टियोगः, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां, पश्चिमास्तो बुधः ३९।५८। |
| ११ शु. | १२।०७ | दि.१०।५४ | श्र.१५।१६ | दि.१२।०९ | सु.११।४४ | वि.१२।०७ | म.४८।२४ | रा.१।२५ | ५।११।१४।२४ | २९।४४ | ६।०३ | ५।५७ | ६ | १२ | २८ | **पञ्चकारंभो दिवा घं १२ मि. ९ उ., पद्मा ११ व्रतं** सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रैकादश्यां, १२ एकोद्दिष्टम्। |
| १२ श. | १७।०२ | दि.१२।५३ | ध.२१।३२ | दि.२।३१ | धृ.१२।५८ | बा.१७।०२ | कुंभ | अहो. | ५।१२।१३।३२ | २९।४० | ६।०४ | ५।५६ | ७ | १३ | २९ | पद्मनाभ १२, गुडेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं**, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। |
| १३ र. | २२।१५ | दि.२।५९ | श.२८।०५ | सा.५।१९ | शू.१४।२९ | तै.२२।१५ | कुंभ | अहो. | ५।१३।१२।३९ | २९।३६ | ६।०५ | ५।५५ | ८ | १४ | ३० | **प्रदोष** १४ व्रतं, १३ एकोद्दिष्टम्। |
| १४ चं. | २७।१९ | सा.५।०२ | पूभा.३४।२६ | रा.७।५२ | गं.१५।५४ | व.२७।१९ | कु.१७।५१ | दि.१।१४ | ५।१४।११।४६ | २९।३२ | ६।०६ | ५।५४ | ९ | १५ | १ | **अक्टूबर १०**, पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्णिमायां पूर्वभाद्रे। |
| १५ मं. | ३१।४६ | सा.६।४८ | उभा.४०।११ | रा.१०।१० | वृ.१६।५६ | ब.३१।४६ | मीन | अहो. | ५।१५।१०।५३ | २९।२८ | ६।०६ | ५।५४ | १० | १६ | २ | **प्रथमाश्विनी** १५ स्नानदानादिः। |

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

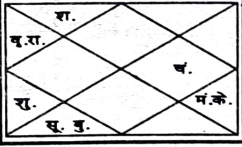
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ८।११।३७।४० | ५।२७।२०।२५ | २।१९।४९।१३ | ४।०४।२८।४२ | १।२१।१७।२३ | ८।१०।११।१५ | ४५।१२ | २१।०९ | २३।०५ | १।१८ | ३।३६ | ५।५२ | ८।०७ | १०।२५ | १२।४३ | १४।४८ | १६।३४ | १८।०५ | १९।३२ |
| २ बु. | ८।१२।१०।४९ | ५।२७।५६।२२ | २।१९।५७।२७ | ४।०५।४१।३४ | १।२१।१८।१८ | ८।१०।०८।०४ | ४५।१० | २१।०५ | २३।०१ | १।१४ | ३।३२ | ५।४८ | ८।०३ | १०।२१ | १२।३९ | १४।४४ | १६।३० | १८।०१ | १९।२८ |
| ३ वृ. | ८।१२।४३।५८ | २।२८।३२।१९ | २।२०।०५।४१ | ४।०६।५४।०५ | १।२१।१९।१३ | ८।१०।०४।५४ | ४५।०८ | २१।०१ | २२।५७ | १।१० | ३।२८ | ५।४४ | ७।५९ | १०।१७ | १२।३५ | १४।४० | १६।२६ | १७।५७ | १९।२४ |
| ४ शु. | ८।१३।१७।०६ | ५।२९।०८।१६ | २।२०।१३।५५ | ४।०८।०६।४६ | १।२१।२०।०८ | ८।१०।०१।४४ | ४५।०६ | २०।५८ | २२।५४ | १।०७ | ३।२५ | ५।४१ | ७।५६ | १०।१४ | १२।३२ | १४।३७ | १६।२३ | १७।५४ | १९।२१ |
| ५ श. | ८।१३।५२।१६ | ५।२९।२२।१७ | २।२०।२१।०९ | ४।०९।१९।४७ | १।२१।२०।५८ | ८।०९।५८।३३ | ४५।०४ | २०।५४ | २२।५० | १।०४ | ३।२१ | ५।३७ | ७।५२ | १०।१० | १२।२८ | १४।३३ | १६।१९ | १७।५० | १९।१७ |
| ६ र. | ८।१४।२७।२५ | ५।२९।३१।३३ | २।२०।२८।२३ | ४।१०।३२।४८ | १।२१।२१।३८ | ८।०९।५५।२२ | ४५।०२ | २०।५० | २२।४६ | ०।५९ | ३।१७ | ५।३३ | ७।४८ | १०।०६ | १२।२४ | १४।२९ | १६।१५ | १७।४६ | १९।१३ |
| ७ चं. | ८।१५।०२।३४ | ५।२९।३१।१० | २।२०।३५।३६ | ४।११।४५।४९ | १।२१।२०।५७ | ८।०९।५२।११ | ४५।०० | २०।४७ | २२।४३ | ०।५६ | ३।१४ | ५।३० | ७।४५ | १०।०३ | १२।२१ | १४।२६ | १६।१२ | १७।४३ | १७।१० |
| ८ मं. | ८।१५।३७।४३ | ५।२९।२१।०५ | २।२०।४२।४९ | ४।१२।५८।५० | १।२१।२०।०६ | ८।०९।४९।०० | ४४।५८ | २०।४३ | २२।३९ | ०।५२ | ३।१० | ५।२६ | ७।४१ | ०९।५९ | १२।१७ | १४।२२ | १६।०८ | १७।३९ | १९।०६ |
| ९ बु. | ८।१६।१२।५२ | ५।२९।०६।०० | २।२०।५०।०२ | ४।१४।११।५० | १।२१।१९।५१ | ८।०९।४५।४९ | ४४।५६ | २०।३९ | २२।३५ | ०।४८ | ३।०६ | ५।२२ | ७।३७ | ९।५५ | १२।१३ | १४।१८ | १६।०४ | १७।३५ | १९।०२ |
| १० वृ. | ८।१६।४८।०१ | ५।२८।५१।१३ | २।२०।५७।१५ | ४।१५।२४।५० | १।२१।१९।२९ | ८।०९।४२।३९ | ४४।५४ | २०।३६ | २२।३२ | ०।४५ | ३।०३ | ५।१९ | ७।३४ | ९।५२ | १२।१० | १४।१५ | १६।०१ | १७।३२ | १८।५९ |
| ११ शु. | ८।१७।२३।१०. | ५।२८।३२।०५ | २।२१।०४।२८ | ४।१६।३७।५० | १।२१।१९।०० | ८।०९।३९।२९ | ४४।५२ | २०।३२ | २२।२८ | ०।४१ | २।५९ | ५।१५ | ७।३० | ९।४८ | १२।०६ | १४।११ | १५।५७ | १७।२८ | १८।५५ |
| १२ श. | ८।१७।५९।४६ | ५।२७।५०।२१ | २।२१।१०।०४ | ४।१७।५१।१७ | १।२१।१८।१५ | ८।०९।३६।१८ | ४४।५० | २०।२८ | २२।२४ | ०।३७ | २।५५ | ५।११ | ७।२६ | ९।४४ | १२।०२ | १४।०७ | १५।५३ | १७।२४ | १८।५१ |
| १३ र. | ८।१८।३६।२१ | ५।२७।०८।३७ | २।२१।१५।४० | ४।१९।०४।४४ | १।२१।१७।३० | ८।०९।३३।०७ | ४४।४८ | २०।२५ | २२।२१ | ०।३४ | २।५२ | ५।०८ | ७।२३ | ९।४१ | ११।५९ | १४।०४ | १५।५० | १७।२१ | १८।४८ |
| १४ चं. | ८।१९।१२।५६ | ५।२६।२६।५३ | २।२१।२१।१६ | ४।२०।१८।११ | १।२१।१६।४५ | ८।०९।२९।५६ | ४४।४६ | २०।२१ | २२।१७ | ०।३० | २।४८ | ५।०४ | ७।१९ | ९।३७ | ११।५५ | १४।०० | १५।४६ | १७।१७ | १८।४४ |
| १५ मं. | ८।१९।४९।३१ | ५।२५।४५।०९ | २।२१।२६।५२ | ४।२१।३१।३८ | १।२१।१६।०० | ८।०९।२६।४५ | ४४।४४ | २०।१७ | २२।१३ | ०।२६ | २।४४ | ५।०० | ७।१५ | ९।३३ | ११।५१ | १३।५६ | १५।४२ | १७।१३ | १८।४० |

४ शुक्रे वॅल्ली ८।३७।४१।४९
अयनांशाः २२।३२।११




११ शुक्रे वल्ली ८।३७।४१।५६
अयनांशाः २२।३२।१२




**अथ विविधविषयाः:—** मलमासे कर्त्तव्याकर्त्तव्यविचारस्तत्र **वृहस्पतिः—** नित्यनैमित्तिके कुर्यात्प्रयतः सन् मलिम्लुचे। तीर्थस्नानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव च। गर्भे वाद्‌र्धुषिकृत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु। सपिण्डीकरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः। तत्र नित्यं सन्ध्यावन्दनादि, नैमित्तिकं ग्रहशान्त्यादिनिमित्तकस्नानादि, तीर्थस्नानं द्वितीयाद्यावृत्ति, गजच्छायेति ग्रहणनिमित्तकश्राद्धं, प्रेतस्नानं मरणनिमित्तकस्नानं, गर्भाधान—जातकर्मर्णप्रयोग—मृतनरपिण्डकर्मसपिण्डीकरणानि च मलमासेऽपि कर्त्तव्यानि। तदतिरिक्तान्यग्न्याधानयज्ञदानव्रतवृषोत्सर्गचूडाकरणोपनयनवेदारंभसमावर्तनमहादान—वापीकूपतडागदेवालयारंभादिकार्याणि त्याज्यानि। **मलमासे दानादि—** विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं हरिं कृष्णमधोक्षजम्। केशवं माधवं राममच्युतं पुरुषोत्तमम्। गोविन्दं वामनं श्रीशं श्रीकान्तं विश्वसाक्षिणम्। नारायणं मधुरिपुमनिरुद्धं त्रिविक्रमम्। वासुदेवं जगद्योनिमनन्तं शेषशायिनम्। संकर्षणंच प्रद्युम्नं दैत्यारिं विश्वतोमुखम्। जनार्दनं धरावासं दामोदरमघार्दनम्। श्रीपतिञ्च त्रयस्त्रिंशदुद्दिश्य प्रतिनामभिः। त्रयस्त्रिंशदपूपानि कांस्यपात्रे निधाय च। सघृतं सहिरण्यं च ब्राह्मणाय निवेदयेत्। प्राप्नुयात्तेन लक्ष्मीं पुत्रपौत्रादिसम्पदः।

**ग्रहस्थितिः—** मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ७ तो वक्रः १० तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ८तो वक्रः।

**वातावरणम्—**पक्षादिभागे वायुमेघचारस्वल्पखण्डवृष्टयस्तदन्तभागे मेघच्छायावायुखण्डवृष्टयः।

## द्वितीयाश्विनकृष्णपक्षः (मलमासः)

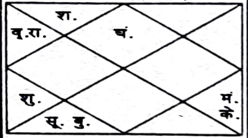
शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८,सन्१४०९ साल,दि.३।२०।२००१ ई.त.१६।२०।२००१ई.या., उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनांकाः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ बु. | ३५।२६ | रा.८।२७ | रे.४५।०७ | रा.१२।२० | धु.१७।२३ | बा.३।३६ | मी.४५।०७ | रा.१२।२० | ५।२६।२०।०० | २९।२४ | ६।०७ | ५।५३ | ११ | १७ | ०३ | पंचकान्तो रात्रौ घं.१२ मि. १०उ., गं.३३।०७ उ. ४८।०७ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्। |
| २ वृ. | ३७।५५ | रा.९।२८ | अ.४८।५४ | रा.१।४२ | व्या.१६।५६ | तै.०६।४१ | मेष | अहो. | ५।२७।०९।०७ | २९।२१ | ६।०८ | ५।५२ | १२ | १८ | ०४ | दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम्। |
| ३ शु. | ३९।२४ | रा.९।५० | भ.५१।२९ | रा.२।४४ | ह.१५।४१ | व.८।३३ | मेष | अहो. | ५।२८।०८।२४ | २९।२८ | ६।०८ | ५।५२ | १३ | १९ | ०५ | ॥००॥ |
| ४ श. | ३९।२३ | रा.९।५० | कृ.५२।४७ | रा.३।२६ | व.१३।२२ | ब.९।२४ | मे.६।३४ | दि.८।४७ | ५।२९।०७।३८ | २९।२४ | ६।०९ | ५।५१ | १४ | २० | ०६ | **श्रीगणेश४ व्रतं**, दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। |
| ५ र. | ३७।५९ | रा.९।२२ | रो.५२।५३ | रा.३।२९ | सि.१०।०५ | कौ.८।५६ | वृष | अहो. | ५।२०।०७।०१ | २९।२० | ६।२० | ५।५० | १५ | २१ | ०७ | पूर्वदक्षिणयात्रा पंचम्याम्। |
| ६ चं. | ३५।३१ | रा.८।२३ | मृ.५१।४८ | रा.२।५४ | व्य.०५।४६ | ग.६।४५ | वृ.२२।३१ | दि.३।०७ | ५।२१।०६।२४ | २९।०६ | ६।२१ | ५।४९ | १६ | २२ | ०८ | पूर्वां विना यात्रा षष्ठ्याम्। |
| ७ मं. | ३२।०३ | सा.७।०१ | आ.४९।५२ | रा.२।०९ | व.००।३८ | वि३।४७ | मिथुन | अहो. | ५।२२।०५।४७ | २९।०२ | ६।२२ | ५।४८ | १७ | २३ | ०९ | परिघयोगमानं ५४।००, कन्यायां शुक्रः३८।४९, द.ति. ३२।०३ उपरि। |
| ८ बु. | २७।४४ | सा.५।२८ | पुन.४७।०३ | रा.१।०१ | शि.४७।५८ | कौ.२७।४४ | मि.३२।४६ | सा.७।२८ | ५।२३।०५।२० | २८।५८ | ६।२२ | ५।४८ | १८ | २४ | १० | चित्रायां **रविः**५९।२८ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगः कन्यालग्नं छागवाहनं जलानाडी तत्पतिर्बुधस्तेन वृष्टियोगः, द.ति.२७।४४ या.। |
| ९ वृ. | २२।३९ | दि.३।२७ | पु.४३।३२ | रा.११।३८ | सि.४०।४५ | ग.२२।३९ | कर्क | अहो. | ५।२४।०४।३३ | २८।५४ | ६।२३ | ५।४७ | १९ | २५ | ११ | दक्षिणां विना यात्रा दशम्यां पुष्ये। |
| १० शु. | १७।०५ | दि.१।०४ | आश्ले.३९।३७ | रा.१०।०५ | सा.३३।२० | वि.१७।०५ | क.३९।३७ | रा.१०।०५ | ५।२५।०३।५६ | २८।५० | ६।२४ | ५।४६ | २० | २६ | १२ | गं.२८।३७ उ. ४३।३७ या.। |
| ११ श. | ११।०९ | दि.१०।४३ | म.३५।२९ | रा.८।२७ | शु.२५।२६ | बा.११।०९ | सिंह | अहो. | ५।२६।०३।३५ | २८।४६ | ६।२५ | ५।४५ | २१ | २७ | १३ | पूर्वोदितो बुधः४१।२०, **कमला ११ व्रतं** सर्वेषां, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, (११–१२) एकोद्दिष्टम्। |
| १२ र. | ०५।०६ | दि.८।२८ | पूफ.३१।२५ | सा.६।४६ | शु.१७।३१ | तै.५।०६ | सि.४५।२४ | रा.१२।२२ | ५।२७।०३।२४ | २८।४२ | ६।२६ | ५।४४ | २२ | २८ | १४ | त्रयोदशीमानं ५४।०१, गुडेन पारणं, **प्रदोष१३ व्रतं**, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |
| १४ चं. | ५३।२४ | रां.३।३८ | उफ.२७।२३ | दि.५।०९ | ब्र.९।४६ | वि.२६।२६ | कन्या | अहो. | ५।२८।०२।५३ | २८।३८ | ६।२६ | ५।४४ | २३ | २९ | १५ | प्रदोष १४ व्रतम्। |
| ३०मं. | ४८।२० | रा.१।३३ | ह.२३।३४ | दि.३।४३ | ऐ.२।२५ | च.२०।४७ | कं.५२।०१ | रा.३।०५ | ५।२९।०२।३[illegible] | २८।३४ | ६।२७ | ५।४३ | २४ | ३० | १६ | वैधृतियोगमानं ५२।५२, द्वितीयाश्विनी ३० स्नानदानादिः मलमासान्तः शुद्धारंभश्च ४८।२० उपरि,मासान्तः। |

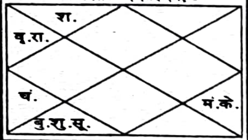
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बु. | ८।२०।२६।०६ | ५।२५।०३।२६ | २।२१।३२।२८ | ४।२२।४५।०४ | १।२१।२५।२५ | ८।०९।२३।३४ | ४४।४२ | २०।२४ | २२।२० | ००।२३ | २।४१ | ४।५७ | ७।२२ | ९।३० | ११।४८ | १३।५३ | १५।३९ | १७।२० | १८।३७ |
| २ वृ. | ८।२१।०२।४१ | ५।२४।२१।४३ | २।२१।३८।०३ | ४।२३।५८।३० | १।२१।२४।२९ | ८।०९।२०।२३ | ४४।४० | २०।२० | २२।०६ | ००।२९ | २।३७ | ४।५३ | ७।०८ | ९।२६ | ११।४४ | १३।४९ | १५।३५ | १७।०६ | १८।३३ |
| ३ शु. | ८।२१।३९।२६ | ५।२३।४०।०० | २।२१।४३।३८ | ४।२५।२१।५६ | १।२१।२३।४३ | ८।०९।२७।२३ | ४४।३९ | २०।०६ | २२।०२ | ००।२५ | २।३३ | ४।४९ | ७।०४ | ९।२२ | ११।४० | १३।४५ | १५।३१ | १७।०२ | १८।२९ |
| ४ श. | ८।२२।२६।५५ | ५।२[illegible]।५९ | २।२१।४८।२४ | ४।२६।२[illegible]।४२ | १।२१।२१।५९ | ८।०९।२४।०३ | ४४।३७ | २०।०३ | २१।[illegible]९ | ००।२२ | २।३० | ४।४६ | ७।०१ | ९।२९ | ११।३७ | १३।४२ | १५।२८ | १६।५९ | १८।२६ |
| ५ र. | ८।२२।५४।३४ | ५।२२।२५।५८ | २।२१।५२।४९ | ४।२७।३९।२८ | १।२[illegible]०।२५ | ८।०९।२०।५२ | ४४।३५ | १९।५९ | २१।५५ | ००।०८ | २।२६ | ४।४२ | ६।५७ | ९।२५ | ११।३३ | १३।३८ | १५।२४ | १६।५५ | १८।२२ |
| ६ चं. | ८।२३।३२।२३ | ५।२१।३३।५७ | २।२१।५७।२४ | ४।२८।५३।२४ | १।२१।०८।३१ | ८।०९।०७।४१ | ४४।३३ | १९।५५ | २१।५१ | ००।०४ | २।२२ | ४।३८ | ६।५३ | ९।२१ | ११।२९ | १३।३४ | १५।२० | १६।५१ | १८।२८ |
| ७ मं. | ८।२४।०९।५२ | ५।२०।५१।५६ | २।२२।०१।५९ | ५।००।०७।०० | १।२१।०६।४७ | ८।०९।०४।३० | ४४।३१ | १९।५२ | २१।४८ | ००।०१ | २।२९ | ४।३५ | ६।५० | ९।०८ | ११।२६ | १३।३१ | १५।२७ | १६।४८ | १८।२५ |
| ८ बु. | ८।२४।४७।३१ | ५।२०।०९।५५ | २।२२।०६।३४ | ५।०१।२०।४६ | १।२१।०५।०४ | ८।०९।०१।२९ | ४४।२९ | १९।४८ | २१।४४ | २३।५७ | २।२५ | ४।३१ | ६।४६ | ९।०४ | ११।२२ | १३।२७ | १५।२३ | १६।४४ | १८।२१ |
| ९ वृ. | ८।२५।२५।२० | ५।२९।२७।५४ | २।२२।२१।०९ | ५।०२।३४।३१ | १।२१।०३।२१ | ८।०८।५८।०९ | ४४।२७ | १९।४४ | २१।४० | २३।५३ | २।२१ | ४।२७ | ६।४२ | ९।०० | ११।२८ | १३।२३ | १५।०९ | १६।४० | १८।०७ |
| १० शु. | ८।२६।०२।४९ | ५।२८।४५।५४ | २।२२।२५।४४ | ५।०३।४८।२६ | १।२१।०१।३८ | ८।०८।५४।५९ | ४४।२५ | १९।४१ | २१।३७ | २३।५० | २।०८ | ४।२४ | ६।३९ | ८।५७ | ११।२५ | १३।२० | १५।०६ | १६।३७ | १८।०४ |
| ११ श. | ८।२६।४१।४३ | ५।२८।२०।५० | २।२२।२९।२० | ५।०५।०२।२२ | १।२०।५९।०६ | ८।०८।५१।४८ | ४४।२३ | १९।३७ | २१।३३ | २३।४६ | २।०४ | ४।२० | ६।३५ | ८।५३ | ११।२१ | १३।२६ | १५।०२ | १६।३३ | १८।०० |
| १२ र. | ८।२७।२०।३७ | ५।२८।०४।०४ | २।२२।२२।३६ | ५।०६।२६।०८ | १।२०।५६।३४ | ८।०८।४८।३७ | ४४।२१ | १९।३३ | २१।२९ | २३।४२ | २।०० | ४।२६ | ६।३१ | ८।४९ | ११।०७ | १३।२२ | १४।५८ | १६।२९ | १७।५६ |
| १४ चं. | ८।२७।५९।३० | ६।२७।५२।३६ | २।२२।२६।०२ | ५।०७।३०।०४ | १।२०।५४।०२ | ८।०८।४५।२६ | ४४।२९ | १९।३० | २१।२६ | २३।३९ | १।५७ | ४।२३ | ६।२८ | ८।४६ | ११।०४ | १३।०९ | १४।५५ | १६।२६ | १७।५३ |
| ३०मं. | ८।२८।[illegible]।२३ | ५।२७।४७।२५ | २।२२।२९।२८ | ५।०८।४४।०० | १।२०।५१।३० | ८।०८।४२।२५ | ४४।२७ | १९।२६ | २१।२२ | २३।३५ | १।५३ | ४।०९ | ६।२४ | ८।४२ | ११।०० | १३।०५ | १४।५१ | १६।२२ | १७।४९ |

३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।०३
अयनांशाः २२।३२।२३




१० शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।२०
अयनांशाः २२।३२।२४




**अथ विविध विषयाः**– मलमासे विशिष्टकर्तव्यम्–मलमासे राजगिरौ (पाटलिपुत्रसविधे) वासः परमपुण्यप्रदः। गैरिकानद्यां (नेपालदेशे) स्नानमपि मासेऽस्मिन् महापुण्यप्रदमुक्तम्। **मलमासविमर्शः**– सूर्यसंक्रान्तिविहीनः शुक्लादिचान्द्रमासोऽधिमासः, सूर्यसंक्रान्तिद्वययुतः शुक्लादिचान्द्रमासश्च क्षयाख्यो मासः। तथाहि कमलाकरः– असंक्रान्तिमासो हि चान्द्रोऽधिमासो द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यस्तदानीम्। क्षयाख्यः कदाचित्ततः प्राक् च पश्चादवश्यं हि तत्राधिमासद्वयं स्यात्। तत्र क्षयमासवतिवर्षे क्षयमासात्पूर्वं पश्चाच्च मासत्रयान्तरेऽधिमासद्वयं जायते। अधिमासद्वयमित्यसंक्रान्तमासद्वयमसंक्रान्तिमासोऽधिमास इति लक्षणेन केवलमसंक्रान्तमासद्वयमेव भवति, न तूभयत्र मासवृद्धिः. मासवृद्धेरधिशेषोद्भवमासासन्नकालसापेक्षत्वात्। तेन तद्वर्षे पूर्वाधिमासस्य त्रिंशत्तिथ्यात्मकस्यासंक्रान्तत्वादधिमासत्वमिति मासवृद्ध्यभाव एव ज्यौतिषलक्षणसंगतिः। तथा चाधिशेषरूपकालाधिक्यवशाच्चोत्तरसंक्रान्ताधिमासे एव मासवृद्धिः, यथोक्तलक्षणसन्निकटत्वात्। अत्रेदं ध्येयं–सावनदिनप्रविष्टे चान्द्रदिने तिथिक्षयः, चान्द्रमासप्रविष्टे सौरमासे क्षयमास इत्युभौ भिन्नपदार्थौ। अतो मध्यममानसिद्धो व्यवहारबहिर्भूतः प्रथमः, स्पष्टमानसिद्धो व्यवहारविहितश्च द्वितीयोऽधिमासः। तत्रासंक्रान्तोऽवृद्धिमदधिमासः एकः, असंक्रान्तो वृद्धिमदधिमासश्चापर इति स्पष्टमानसिद्धोऽप्यधिमासो द्विविध इति। अत्र क्षयमासभिन्नवर्षेषु अधिशेषोद्भवकालाधिक्यवशाज्जायमानः असंक्रान्तो वृद्धिमदधिमासः२७–३६ मासाभ्यन्तरे पततीति यथैषमो मासेऽस्मिनाश्विन इति।

**ग्रहस्थितिः**– मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, वक्रः पश्चिमास्तो बुधः ११ तः पूर्वोदितः। वक्रः पूर्वोदितः शनिः।

**वातावरणम्**– पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे तापवायुचारस्वल्पखण्डवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे मेघचारवायुवृष्टयः।

## द्वितीयाश्विनशुक्लपक्ष:

शकाब्द: १९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.१७।१०।२००१ ई.त.०१।११।२००१ ई.सा., उत्तरे काले। मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वोदित: शुक्र:, शुद्ध:, शरदर्तु: साम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथय: द.प. | तिथय: घ.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घ.मि. | योगा: द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशय: रा.द.प. | चन्द्रराशय: घ.मि. | स्पष्टसूर्य: राश्यादि | दिनमान द.प. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | दिनाङ्का: रा. | दिनाङ्का: सौ. | दिनाङ्का: अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बु. | ४३।३३ | ग.११।१९ | चि.२७।२७ | दि.२।२९ | वि.४८।३३ | कि.११।२२ | तुला | अहो. | ६।००।०२।०९ | २८।३० | ६।१८ | ५।४२ | २५ | १ | १७ |
| २ बृ. | ३९।४८ | ग.१०।१४ | स्वा.१८।११ | दि.४।३५ | प्री.४२।४१ | बा.११।४१ | तुला | अहो. | ६।०१।०१।४७ | २८।२६ | ६।१९ | ५।४१ | २६ | २ | १८ |
| ३ शु. | ३७।०१ | ग.९।०८ | वि.१६।४२ | दि.४।०४ | आ.३७।३७ | तै.८।१५ | तु.२।०४ | दि.७।१० | ६।०२।०१।२५ | २८।२२ | ६।२० | ५।४० | २७ | ३ | १९ |
| ४ श. | ३५।२७ | ग.८।२९ | अनु.१६।१८ | दि.१२।१४ | सौ.३३।१५ | व.६।१२ | वृश्चिक | अहो. | ६।०३।०१।१९ | २८।१८ | ६।२० | ५।४० | २८ | ४ | २० |
| ५ र. | ३४।१८ | ग.८।२० | ज्ये.१७।०८ | दि.१।१२ | शो.३०।१२ | व.५।१० | वृ.१७।०८ | दि.१।१२ | ६।०४।०१।१३ | २८।१४ | ६।२१ | ५।३९ | २९ | ५ | २१ |
| ६ चं. | ३४।१४ | ग.८।४४ | मू.१९।११ | दि.२।०२ | अग.२८।०० | को.५।२६ | धनु | अहो. | ६।०५।०१।०७ | २८।१० | ६।२२ | ५।३८ | ३० | ६ | २२ |
| ७ मं. | ३८।५० | ग.९।३९ | पूषा.२२।३२ | दि.३।२४ | सु.२६।५१ | ग.७।०२ | ध.३८।३९ | रा.९।५१ | ६।०६।०१।०१ | २८।०६ | ६।२३ | ५।३७ | १ | ७ | २३ |
| ८ बु. | ४१।३० | ग.११।०० | उषा.२७।०० | सा.५।१२ | धृ.२६।३१ | वि.९।५० | मकर | अहो. | ६।०७।००।५५ | २८।०२ | ६।२४ | ५।३६ | २ | ८ | २४ |
| ९ बृ. | ४५।१९ | ग.१२।४४ | श्र.३२।२८ | सा.७।२३ | श.२७।०० | बा.१३।४१ | मकर | अहो. | ६।०८।००।४९ | २७।५९ | ६।२४ | ५।३६ | ३ | ९ | २५ |
| १० शु. | ५०।१४ | ग.२।१५ | ध.३८।३५ | रा.०।११ | गं.२८।०० | तै.१८।०० | म.५।३२ | दि.८।३८ | ६।०९।००।४२ | २७।५६ | ६।२५ | ५।३५ | ४ | १० | २६ |
| ११ श. | ५६।११ | ग.४।१४ | श.४५।०० | रा.१२।२८ | वृ.२९।०१ | व.२३।३१ | कुम्भ | अहो. | ६।१०।००।५१ | २७।५२ | ६।२६ | ५।३४ | ५ | ११ | २७ |
| १२ र. | ६०।०० | अहो. | पूभा.५१।३० | रा.३।०२ | ध्रु.३०।११ | व.२८।४५ | कु.३४।१४ | रा.८।२४ | ६।११।०१।०० | २७।४८ | ६।२६ | ५।३४ | ६ | १२ | २८ |
| १२ चं. | ०१।१८ | दि.६।१८ | उभा.५७।२८ | रा.५।२६ | व्या.३१।१८ | वा.१।१८ | मीन | अहो. | ६।१२।०१।०९ | २७।४४ | ६।२७ | ५।३३ | ७ | १३ | २९ |
| १३ मं. | ०५।१४ | दि.८।५० | रे.६०।०० | अहो. | ह.३२।३३ | तै.५।१४ | मीन | अहो. | ६।१३।०१।१८ | २७।४१ | ६।२८ | ५।३२ | ८ | १४ | ३० |
| १४ बु. | ०९।३८ | दि.१०।१९ | रे.२।३७ | दि.७।३१ | व.३२।२० | व.९।३८ | मी.२।३७ | दि.७।३१ | ६।१४।०१।२७ | २७।३८ | ६।२८ | ५।३२ | ९ | १५ | ३१ |
| १५ बृ. | १२।५० | दि.११।०१ | अ.६।३९ | दि.९।०९ | सि.३१।५७ | व.१२।५० | मेष | अहो. | ६।१५।०१।३५ | २७।३५ | ६।२९ | ५।३१ | १० | १६ | १ |

तुलायां रवि: ४२।५ मु.१५ फलं महार्घं धान्यविपुवसंक्रान्तिपुण्यकालो घ.१२ मि.०० उपरिदिनं शारदीयनवरात्रारम्भ: कलशस्थापनं श्रीदुर्गापूजनोत्सव: नौकारूढायां ❖ मकरे कुज: ५०।११, चन्द्रदर्शनं मु.४५ फलं समर्घं, मासादि:, श्रीरेमन्तपूजा। ❖ देव्या आगमनफलं सर्वसिद्धिदं, कार्तिकस्नानारम्भ:, मार्गी बुध १३।७ उत्तरयात्रानुराधायाम्।

श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा चतुर्थ्याम्।

ग.११।०८ उ. २६।०८ या. उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत: पूर्वोत्तरयात्रा पंचम्याम्।

गजपूजा विल्वाभिमन्त्रणं, सरस्वत्या आवाहनं, उत्तरयात्रा षष्ठ्याम्।

पत्रिकाप्रवेश: महारात्रिर्निशापूजा, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे।

महाष्टमीव्रतं, दीक्षाग्रहणं, स्वात्यां रवि: २३।०४ पुंस्त्रीसूचयोग: कुम्भलग्नं महिषवाहनं नीरानाडी तत्पति: शुक्रस्तेन सुवृष्टियोग:।

महानवमीव्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, दीक्षाग्रहणं, सरस्वतीविसर्जनं, गृहप्रवेशो दशम्यां, पंचकारम्भ: सायं घ.७ मि. २३ उपरि, पूर्वयात्रा दशम्याम्।

विजयादशमी अपराजितापूजा देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं नीलकण्ठदर्शनं यात्रा सीमोल्लंघनं, गजवाहनायां देव्या गमनफलं शुभवृष्टिप्रदं, दक्षसावर्णिमन्वादि:, ◆

पाशांकुशा ११ व्रतं सर्वेषां, गृहारम्भप्रवेशौ शतभिषायां, पश्चिमयात्रैकादश्यां पूर्वभाद्रे, द.ति. ५६।११ उपरि। ◆ गृहप्रवेश:, पूर्वयात्रा मकरस्थे च।

पद्मनाभद्वादशी, गुडेन पारणं, दग्धतिथि:।

प्रदोष १३ व्रतं, गृहप्रवेशस्त्रयोदश्यां, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, द.ति. १।१८या।

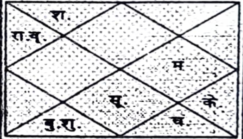
प्रदोष १४ व्रतं, ग.५०।३७ उ. पश्चिमयात्रा।

कौमुदीमहोत्सव: कोजागरा प्रदोषे घ.७ मि.८ यावद्रात्रौ श्रीमहालक्ष्मीपूजनं, गृहारम्भ: पूर्णिमायां, पंचकान्तो दिवा घ.७ मि.३१ उ., उत्तरां विना यात्रा पूर्णिमायाम्।

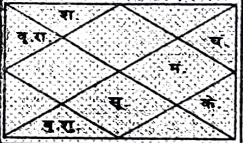
नभम्बर ११, आश्विनी १५ स्नानदानादि: महर्षिवाल्मीकिजयन्ती, गृहारम्भ: दक्षिणां विना यात्रा चाश्विन्यां, १ एकोद्दिष्टम्।

| | मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च | | | | | | | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ति.दि. | मंगल | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | क.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
| १ बु. | ८।२९।४२।२५ | ६।०७।४८।३३ | २।२२।३२।१४ | ५।०९।०७।१६ | १।२०।४८।५९ | ८।०८।३९।०३ | ४४।१५ | १९।०२ | २१।१८ | २३।३१ | १।४९ | ४।०५ | ६।२० | ८।३८ | १०।५६ | १३।०१ | १४।४७ | १६।१८ | १७।४५ |
| २ बृ. | ८।२९।५६।०९ | ६।०७।५८।१० | २।२२।३६।१९ | ५।१०।२१।५२ | १।२०।४६।२८ | ८।०८।३५।५३ | ४४।१३ | १९।१८ | २१।१४ | २३।२७ | १।४५ | ४।०१ | ६।१६ | ८।३४ | १०।५२ | १२।५७ | १४।४३ | १६।१४ | १७।४१ |
| ३ शु. | ९।००।३१।०२ | ६।०८।२०।५५ | २।२२।३९।४४ | ५।१२।०५।०८ | १।२०।४३।५७ | ८।०८।३२।४३ | ४४।११ | १९।१४ | २१।१० | २३।२३ | १।४१ | ३।५७ | ६।१२ | ८।३० | १०।४८ | १२।५३ | १४।३९ | १६।१० | १७।३७ |
| ४ श. | ९।०१।०६।५४ | ६।०८।४६।४८ | २।२२।४१।३८ | ५।१३।४०।०४ | १।२०।४०।४४ | ८।०८।२९।३२ | ४४।०९ | १९।१० | २१।०६ | २३।१९ | १।३७ | ३।५३ | ६।०८ | ८।२६ | १०।४४ | १२।४९ | १४।३५ | १६।०६ | १७।३३ |
| ५ र. | ९।०१।४२।४६ | ६।०९।०२।४९ | २।२२।४३।३२ | ५।१४।५४।२० | १।२०।३७।३१ | ८।०८।२६।२१ | ४४।०७ | १९।०६ | २१।०२ | २३।१५ | १।३३ | ३।४९ | ६।०४ | ८।२२ | १०।४० | १२।४५ | १४।३१ | १६।०२ | १७।२९ |
| ६ चं. | ९।०२।१८।३८ | ६।०९।१८।३४ | २।२२।४५।२६ | ५।१६।०८।३६ | १।२०।३४।१८ | ८।०८।२३।१० | ४४।०५ | १९।०२ | २०।५८ | २३।११ | १।२९ | ३।४५ | ६।०० | ८।१८ | १०।३६ | १२।४१ | १४।२७ | १५।५८ | १७।२५ |
| ७ मं. | ९।०२।५४।३० | ६।१०।३४।२७ | २।२२।४७।१९ | ५।१७।२२।५२ | १।२०।३१।०५ | ८।०८।१९।५९ | ४४।०३ | १८।५८ | २०।५४ | २३।०७ | १।२५ | ३।४१ | ५।५६ | ८।१४ | १०।३२ | १२।३७ | १४।२३ | १५।५४ | १७।२१ |
| ८ बु. | ९।०३।३०।२२ | ६।११।१०।२० | २।२२।४९।१२ | ५।१८।३७।०८ | १।२०।२७।५२ | ८।०८।१६।४८ | ४४।०१ | १८।५४ | २०।५० | २३।०३ | १।२१ | ३।३७ | ५।५२ | ८।१० | १०।२८ | १२।३३ | १४।१९ | १५।५० | १७।१७ |
| ९ बृ. | ९।०४।०६।१४ | ६।११।४६।१३ | २।२२।५१।०५ | ५।१९।५१।२३ | १।२०।२४।३९ | ८।०८।१३।३८ | ४३।५९ | १८।५० | २०।४६ | २२।५९ | १।१७ | ३।३३ | ५।४८ | ८।०६ | १०।२४ | १२।२९ | १४।१५ | १५।४६ | १७।१३ |
| १० शु. | ९।०४।४२।०६ | ६।१२।२२।०६ | २।२२।५२।५८ | ५।२१।०५।३८ | १।२०।२१।२६ | ८।०८।१०।२८ | ४३।५८ | १८।४६ | २०।४२ | २२।५५ | १।१३ | ३।२९ | ५।४४ | ८।०२ | १०।२० | १२।२५ | १४।११ | १५।४२ | १७।०९ |
| ११ श. | ९।०५।१७।५८ | ६।१३।२७।३८ | २।२२।५३।२५ | ५।२२।२०।०८ | १।२०।१७।४४ | ८।०८।०७।१७ | ४३।५६ | १८।४२ | २०।३८ | २२।५१ | १।०९ | ३।२५ | ५।४० | ७।५८ | १०।१६ | १२।२१ | १४।०७ | १५।३८ | १७।०५ |
| १२ र. | ९।०६।१३।५४ | ६।१४।३३।२० | २।२२।५३।५२ | ५।२३।३४।३८ | १।२०।१४।०१ | ८।०८।०४।०६ | ४३।५४ | १८।३८ | २०।३४ | २२।४७ | १।०५ | ३।२१ | ५।३६ | ७।५४ | १०।१२ | १२।१७ | १४।०३ | १५।३४ | १७।०१ |
| १२ चं. | ९।०७।१५।४८ | ६।१५।३८।४२ | २।२२।५४।१९ | ५।२४।४९।०८ | १।२०।१०।१८ | ८।०८।००।५५ | ४३।५२ | १८।३४ | २०।३० | २२।४३ | १।०१ | ३।१७ | ५।३२ | ७।५० | १०।०८ | १२।१३ | १३।५९ | १५।३० | १६।५७ |
| १३ मं. | ९।०७।५६।२१ | ६।१६।४४।०४ | २।२२।५४।४६ | ५।२६।०३।३८ | १।२०।०६।३५ | ८।०७।५७।४४ | ४३।५० | १८।३० | २०।२६ | २२।३९ | ०।५७ | ३।१३ | ५।२८ | ७।४६ | १०।०४ | १२।०९ | १३।५५ | १५।२६ | १६।५३ |
| १४ बु. | ९।०८।३६।५४ | ६।१७।४९।४६ | २।२२।५५।१३ | ५।२७।१८।०८ | १।२०।०२।५२ | ८।०७।५४।३३ | ४३।४८ | १८।२७ | २०।२३ | २२।३६ | ०।५४ | ३।१० | ५।२५ | ७।४३ | १०।०१ | १२।०६ | १३।५२ | १५।२३ | १६।५० |
| १५ बृ. | ९।०९।१७।२७ | ६।१८।५५।२८ | २।२२।५५।४० | ५।२८।३२।३८ | १।१९।५९।०९ | ८।०७।५१।२३ | ४३।४७ | १८।२३ | २०।१९ | २२।३२ | ०।५० | ३।०६ | ५।२१ | ७।३९ | ९।५७ | १२।०२ | १३।४८ | १५।१९ | १६।४६ |

३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।१७
अयनांशा: २२।३२।१५




१० शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।२४
अयनांशा: २२।३२।१६




**अथ विविध विषया:–** प्रतिपदि कलशस्थापनन्ततो देवीपूजनपूर्वकं नव दिनं यावच्छतचण्डीस्तोत्रपुराणादिधर्मग्रन्थपाठ: मन्त्रजपश्च कर्तव्य:। **दुर्गाऽऽगमनयानविचार:–** शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता। तत्फलम्–गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धि: स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्। **विजयादशम्यां देव्या गमनयानफलं–** शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमनं रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा। **दुर्गापाठमहत्त्वम्–** यथाश्वमेध: क्रतुराट् देवानां च यथा हरि:। स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तव:। चण्ड्या: शतावृत्तिपाठात् सर्वा: सिद्ध्यन्ति सिद्धय:। **विल्वपत्रत्रोटनमन्त्र:–** अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदा प्रिय। क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्। **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्र:–** तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया। क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्।

**ग्रहस्थिति:–** मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रा:, वक्र: पूर्वोदितो बुध: १ तो मार्गी, वक्र: पूर्वोदित: शनि:।

**वातावरणम्–** पक्षस्यादिभागे वायुचारमेघखण्डवृष्टयस्तदन्तभागे मेघाचारवायुवृष्टय:।

# कार्त्तिककृष्णपक्षः



शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८,सन्१४०९ साल,दि.२।११।२००१ ई.तः१५।११।२००१ई.या., उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः१तो वक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, १३तःक्षीणः,शुद्धः, १तोऽशुद्धः, शरदर्तुः, याम्यगोलायने।

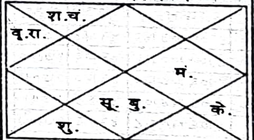
| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | चन्द्रराशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | दिनाङ्काः सो. | दिनाङ्काः अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | १३।३४ | दि.११।५६ | भ.९।३४ | दि.१०।२० | व्य.१९।१२ | कौ.१३।३४ | मे.२४।५८ | दि.१२।२९ | ६।१६।०१।४३ | २७।३२ | ६।[illegible] | ५।३० | ११ | १७ | ०२ |
| २ श. | १३।३६ | दि.११।५६ | कृ.११।११ | दि.१०।५८ | व.२६।०८ | ग.१३।३६ | वृष | अहो. | ६।१७।०२।०५ | २७।२८ | ६।३० | ५।३० | १२ | १८ | ०३ |
| ३ र. | १२।२५ | दि.११।२९ | रो.११।३५ | दि.११।०९ | प.२२।०० | वि.१२।२५ | वृ.४१।१२ | रा.११।०० | ६।१८।०२।२७ | २७।२५ | ६।३१ | ५।२९ | १३ | १९ | ०४ |
| ४ चं. | ०९।५९ | दि.१०।३२ | मृ.१०।४९ | दि.१०।५२ | शि.१६।५७ | बा.९।५९ | मिथुन | अहो. | ६।१९।०२।४९ | २७।२२ | ६।३२ | ५।२८ | १४ | २० | ०५ |
| ५ मं. | ०६।३३ | दि.०९।०९ | आ.९।०१ | दि.१०।०८ | सि.११।०९ | तै.६।३३ | मि.५२।०३ | रा.०३।२१ | ६।२०।०३।११ | २७।१९ | ६।३२ | ५।२८ | १५ | २१ | ०६ |
| ६ बु. | ०२।१६ | दि.०७।२७ | पुन.६।२३ | दि.९।०६ | सा.०४।३८ | व.२।१६ | कर्क | अहो. | ६।२१।०३।३३ | २७।१६ | ६।३३ | ५।२७ | १६ | २२ | ०७ |
| ८ वृ. | ५१।४५ | रा.३।१५ | पु.३।०५ | दि.७।४७ | शु.५०।०१ | बा.२४।३० | क.५९।१६ | रा.०६।१५ | ६।२२।०३।५५ | २७।१३ | ६।३३ | ५।२७ | १७ | २३ | ०८ |
| ९ शु. | ४५।५५ | रा.१२।५६ | म.५५।०९ | रा.४।३८ | ब्र.४२।१२ | तै.१८।५० | सिंह | अहो. | ६।२३।०४।१६ | २७।१० | ६।३४ | ५।२६ | १८ | २४ | ०९ |
| १० श. | ३९।५३ | रा.१०।३८ | पूफ.५०।५४ | रा.२।५७ | ऐ.३४।१६ | व.१२।५४ | सिंह | अहो. | ६।२४।०४।५२ | २७।०६ | ६।३५ | ५।२५ | १९ | २५ | १० |
| ११ र. | ३४।०० | रा.८।११ | उफ.४६।४९ | रा.१।१९ | वै.२६।२६ | ब.०६।५३ | सि.०४।५२ | दि.०८।३२ | ६।२५।०५।२८ | २७।०३ | ६।३५ | ५।२५ | २० | २६ | ११ |
| १२ चं. | २८।२२ | सा.५।५७ | ह.४३।०४ | रा.११।२६ | वि.१८।४८ | कौ.०१।११ | कन्या | अहो. | ६।२६।०६।०४ | २७।०० | ६।३६ | ५।२४ | २१ | २७ | १२ |
| १३ मं. | २३।१५ | दि.३।५५ | चि.३९।४७ | रा.१०।३२ | प्री.११।२८ | व.२३।१५ | कं.११।२६ | दि.११।११ | ६।२७।०६।४० | २६।५७ | ६।३७ | ५।२३ | २२ | २८ | १३ |
| १४ बु. | १८।४४ | दि.२।०७ | स्वा.३७।१५ | रा९।३१ | आ.०४।४१ | श.१८।५४ | तुला | अहो. | ६।२८।०७।१५ | २६।५४ | ६।३७ | ५।२३ | २३ | २९ | १४ |
| ३० वृ. | १५।०४ | दि.१२।४० | वि.३५।२२ | रा.८।४७ | शो.५३।१२ | ना.१५।०४ | तु.२०।४१ | दि.०२।५८ | ६।२९।०७।५० | २६।५१ | ६।३८ | ५।२२ | २४ | ३० | १५ |

वक्रो गुरुरशुद्धारंभश्च ४४।०५ उ.,तुलायां बुधः ४३।०० तुलायां शुक्रः५४।०९, २एको०, कार्तिके यमुनास्नानं महापुण्यप्रदम्। कार्तिके द्विदलं त्यजेत्।
गृहारंभो रोहिण्यां, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, (३) एकोद्दिष्टम्।
करकचतुर्थी श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायां,(४)एकोद्दिष्टम्।
गृहारंभः पूर्वां विना यात्रा च पंचम्यां मृगशिरसि।
विशाखायां रविः४०।२८।
सप्तमीमानं ५४।५९, शुभयोगमानं ५२।५२, अशोकचन्दनषष्ठी, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उतरां विना यात्रा सप्तम्याम्।
आश्लेषामानं ५६।११, गं. ५३।१६ उ., दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये।
गं.८।१६या., पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
उत्तरयात्रैकादश्यां पूर्वफल्गुन्याम्। ❖वायुपुराणे – कार्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात्स्वयं जातो हरः शिवः।
रम्भा ११ व्रतं सर्वेषां, द.ति.३४।०० उपरि। ◆ अकृतपितृपक्षपार्वणैरद्यावश्यमेव पार्वणं विधेयं, निशीथे श्रीमहाकालीपूजनम्।
गोवत्स१२ तुलसीदलेन विल्वदलेन वा पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, द.ति.२८।२२ या।
धन्वन्तरिजयंती (धनतेरस), प्रदोष १४ व्रतं, श्रीहनुमज्जन्मोत्सवः हनुमद्ध्वजदानं, क्षीणः शुक्रः३१।५१, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा, ❖
सौभाग्ययोगमानं ५३।५३, दीपावली मुखरात्रिः प्रदोषे घं.६मि.५९ यावद्रात्रौ श्रीलक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं पितृविसर्जनं च, रात्रिशेषे शूर्पवादनपुरस्सरं दरिद्रानिस्सारणं,◆
कार्त्तिकी ३० स्नानदानादिः पूर्वास्तो बुधः ४७।११, गोक्रीडा, गोपूजा नैव विशाखानक्षत्रत्वात्, गोवर्द्धनपूजनोत्सवः, अन्नकूटः, वृषभे औषधिदानं, मासान्तः।

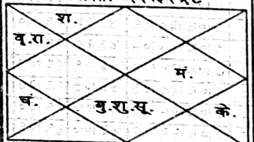
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ९।०९।५८।०० | ६।००।००।५० | २।२२।५६।०७ | ५।२९।४७।०७ | १।१९।५५।२६ | ८।०७।४८।१३ | ४३।४६ | १८।१९ | २०।१५ | २२।२८ | ०।४६ | ३।०२ | ५।१७ | ७।३५ | ९।५३ | ११।५८ | १३।४४ | १५।१५ | १६।४२ |
| २ श. | ९।१०।३९।१३ | ६।०१।२३।५६ | २।२२।५५।१२ | ६।०१।०२।०१ | १।१९।५१।०२ | ८।०७।४५।०२ | ४३।४४ | १८।१५ | २०।११ | २२।२४ | ०।४२ | २।५८ | ५।१३ | ७।३१ | ९।४९ | ११।५४ | १३।४० | १५।११ | १६।३८ |
| ३ र. | ९।११।२०।२६ | ६।०२।४७।०१ | २।२२।५४।१७ | ६।०२।१६।५५ | १।१९।४६।३८ | ८।०७।४१।५१ | ४३।४२ | १८।११ | २०।०७ | २२।२० | ०।३८ | २।५४ | ५।०९ | ७।२७ | ९।४५ | ११।५० | १३।३६ | १५।०७ | १६।३४ |
| ४ चं. | ९।१२।०१।३९ | ६।०४।१०।०६ | २।२२।५३।२२ | ६।०३।३१।४८ | १।१९।४२।१४ | ८।०७।३८।४० | ४३।४० | १८।०७ | २०।०[illegible] | २२।१६ | ०।३४ | २।५० | ५।०५ | ७।२३ | ९।४१ | ११।४६ | १३।३२ | १५।०३ | १६।३० |
| ५ मं. | ९।१२।४२।५२ | ६।०५।३३।११ | २।२२।५२।२८ | ६।०४।४६।४१ | १।१९।३७।५ | ८।०७।३५।२९ | ४३।३८ | १८।०३ | १९।५९ | २२।१२ | ०।३० | २।४६ | ५।०१ | ७।१९ | ९।३७ | ११।४२ | १३।२८ | १४।५९ | १६।२६ |
| ६ बु. | ९।१३।२४।०५ | ६।०६।५६।१६ | २।२२।५१।३४ | ६।०६।०१।३४ | १।१९।३३।२८ | ८।०७।३२।१८ | ४३।३७ | १७।५९ | १९।५५ | २२।०८ | ०।२६ | २।४२ | ४।५७ | ७।१५ | ९।३३ | ११।३८ | १३।२४ | १४।५५ | १६।२२ |
| ८ वृ. | ९।१४।०५।१७ | ६।०८।१९।२१ | २।२२।५०।४० | ६।०७।१६।२७ | १।१९।२९।०५ | ८।०७।२९।०८ | ४३।३६ | १७।५५ | १९।५१ | २२।०४ | ०।२२ | २।३८ | ४।५३ | ७।११ | ९।२९ | ११।३४ | १३।२० | १४।५१ | १६।१८ |
| ९ शु. | ९।१४।४६।२९ | ६।०९।४२।२६ | २।२२।४९।४६ | ६।०८।३१।२० | १।१९।२४।४२ | ८।०७।२५।५८ | ४३।३५ | १७।५१ | १९।४७ | २२।०० | ०।१८ | २।३४ | ४।४९ | ७।०७ | ९।२५ | ११।३० | १३।१६ | १४।४७ | १६।१४ |
| १० श. | ९।१५।२८।३१ | ६।११।१६।४६ | २।२२।४७।२३ | ६।०९।४६।१९ | १।१९।२०।०८ | ८।०७।२२।४७ | ४३।३३ | १७।४७ | १९।४३ | २१।५६ | ०।१४ | २।३० | ४।४५ | ७।०३ | ९।२१ | ११।२६ | १३।१२ | १४।४३ | १६।१० |
| ११ र. | ९।१६।१०।३३ | ६।१२।५१।०५ | २।२२।४५।०० | ६।११।०१।१८ | १।१९।१५।३५ | ८।०७।१९।३६ | ४३।३१ | १७।४४ | १९।४० | २१।५३ | ०।११ | २।२७ | ४।४२ | ७।०० | ९।१८ | ११।२३ | १३।०९ | १४।४० | १६।०७ |
| १२ चं. | ९।१६।५२।३४ | ६।१४।२५।२४ | २।२२।४२।३७ | ६।१२।१६।१६ | १।१९।११।०२ | ८।०७।१६।२५ | ४३।२९ | १७।४० | १९।३६ | २१।४९ | ०।०७ | २।२३ | ४।३८ | ६।५६ | ९।१४ | ११।१९ | १३।०५ | १४।३६ | १६।०३ |
| १३ मं. | ९।१७।३४।३५ | ६।१५।५९।४३ | २।२२।४०।१५ | ६।१३।३१।१४ | १।१९।०६।२९ | ८।०७।१३।१४ | ४३।२७ | १७।३६ | १९।३२ | २१।४५ | ०।०३ | २।१९ | ४।३४ | ६।५२ | ९।१० | ११।१५ | १३।०१ | १४।३२ | १५।५९ |
| १४ बु. | ९।१८।१६।३६ | ६।१७।३४।०२ | २।२२।३७।५३ | ६।१४।४६।१२ | १।१९।०१।५६ | ८।०७।१०।०३ | ४३।२६ | १७।३२ | १९।२८ | २१।४१ | २३।५९ | २।१५ | ४।३० | ६।४८ | ९।०६ | ११।११ | १२।५७ | १४।२८ | १५।५५ |
| ३० वृ. | ९।१८।५८।३७ | ६।१९।०८।२१ | २।२२।३५।३१ | ६।१६।०१।१० | १।१८।५७।२३ | ८।०७।०६।५२ | ४३।२५ | १७।२८ | १९।२४ | २१।३७ | २३।५५ | २।११ | ४।२६ | ६।४४ | ९।०२ | ११।०७ | १२।५३ | १४।२४ | १५।५२ |

१ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।३१
अयनांशाः २२।३२।१७




८ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।३८
अयनांशाः २२।३२।१८




**अथ विविधविषयाः**— कार्तिके सकलं मास प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **प्रातःस्नानमन्त्रः**— कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन! प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह। **धात्रीमाहात्म्यम्** – धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुंक्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्। धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफलविभूषितः। धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्। **उल्काभ्रमणमन्त्रः**— शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते। तुलासंक्रमणे **आकाशदीपदानफलम्**— तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः। **दीपदानमन्त्रः**— दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।

**ग्रहस्थितिः**— मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ३०तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः१तो वक्रः, वक्रः पूर्वोदितः शनिः।

**वातावरणम्**—पक्षादितश्चतुर्थीं यावत्तापवायुमेघचारादयस्ततो द्वादशीं यावद्वायुखण्ड–वृष्टिमेघच्छायादयस्ततः पक्षान्तं यावत्स्वल्पखण्डवृष्टिः।

# कार्तिकशुक्लपक्षः

शकाब्दः१९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.१६।११।२००१ ई.तः ३०।११।२००१ई. या., पूर्वे कालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः १३तःपूर्वास्तः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथयः |  | नक्षत्राणि |  | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः |  | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्काः |  |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|  | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ शु. | १२।२४ | दि.११।३६ | अनु.३४।५१ | रा.८।३४ | अग.४८।३० | ब.१२।२४ | वृश्चिक | अहो. | ७।००।०८।२५ | २६।४८ | ६।३८ | ५।२२ | २५ | १ | १६ |
| २ श. | १०।५४ | दि.११।०१ | ज्ये.३५।२२ | रा.८।४८ | सु.४५।५ | कौ.१०।५४ | वृ.३५।२२ | रा.८।४८ | ७।१।०९।१२ | २६।४४ | ६।३९ | ५।२१ | २६ | २ | १७ |
| ३ र. | १०।३६ | दि.१०।५४ | मू.३७।०९ | रा.९।३२ | धृ.४२।३१ | ग.१०।३६ | धनु | अहो. | ७।२।०९।५९ | २६।४० | ६।४० | ५।२० | २७ | ३ | १८ |
| ४ च. | ११।३८ | दि.११।२० | पू.षा.४०।१२ | रा.१०।४६ | शू.४०।५९ | वि.११।३८ | ध.५५।५८ | रा.५।०४ | ७।३।१०।४६ | २६।३६ | ६।४१ | ५।१९ | २८ | ४ | १९ |
| ५ म. | १४।०१ | दि.१२।१७ | उ.षा.४४।२१ | रा.१२।२५ | गं.४०।१९ | वा.१४।०१ | मकर | अहो. | ७।४।११।३३ | २६।३३ | ६।४१ | ५।१९ | २९ | ५ | २० |
| ६ बु. | १७।३१ | दि.१।४२ | श्र.४९।३७ | रा.२।३३ | वृ.४०।३२ | तै.१७।३१ | मकर | अहो. | ७।५।१२।२० | २६।३० | ६।४२ | ५।१८ | ३० | ६ | २१ |
| ७ बृ. | २१।५९ | दि.३।३१ | ध.५५।३६ | रा.४।५७ | ध्रु.४१।२० | व.२१।५९ | म.१७।३७ | दि.१।४६ | ७।६।१३।०६ | २६।२७ | ६।४३ | ५।१७ | १ | ७ | २२ |
| ८ शु. | २७।०६ | सा.५।३३ | श.६०।०० | अहो. | व्या.४२।३६ | ब.२७।०६ | कुंभ | अहो. | ७।७।१३।५२ | २६।२४ | ६।४३ | ५।१७ | २ | ८ | २३ |
| ९ श. | ३२।३० | रा.७।४४ | श.२।४ | दि.७।३४ | ह.४३।५९ | कौ.३२।३० | कुं.५१।५५ | रा.३।३० | ७।८।१४।५१ | २६।२२ | ६।४४ | ५।१६ | ३ | ९ | २४ |
| १० र. | ३७।४१ | रा.९।४० | पू.भा.८।३२ | दि.१०।०९ | व.४५।१९ | तै.०५।०६ | मीन | अहो. | ७।९।१५।५० | २६।२० | ६।४४ | ५।१६ | ४ | १० | २५ |
| ११ च. | ४२।१९ | रा.११।४० | उ.भा.१४।३६ | दि.१२।३५ | सि.४५।५३ | व.१०।०० | मीन | अहो. | ७।१०।१६।४९ | २६।१८ | ६।४४ | ५।१६ | ५ | ११ | २६ |
| १२ म. | ४६।०४ | रा.१।११ | रे.१९।५९ | दि.२।४५ | व्य.४५।५६ | ब.१४।११ | मी.१९।५९ | दि.२।४५ | ७।११।१७।४७ | २६।१७ | ६।४५ | ५।१५ | ६ | १२ | २७ |
| १३ बु. | ४८।३९ | रा.२।१३ | अ.२४।२० | दि.४।२९ | वरी.४५।१५ | कौ.१७।२२ | मेष | अहो. | ७।१२।१८।४५ | २६।१६ | ६।४५ | ५।१५ | ७ | १३ | २८ |
| १४ बृ. | ५०।०२ | रा.२।४६ | भ.२७।३३ | सा.५।४६ | प.४३।१६ | ग.१९।२१ | मे.४२।४७ | रा.११।५२ | ७।१३।१९।४३ | २६।१५ | ६।४५ | ५।१५ | ८ | १४ | २९ |
| १५ शु. | ५०।०४ | रा.२।४७ | कृ.२९।२९ | रा.६।३२ | शि.४०।२७ | वि.२०।०३ | वृष | अहो. | ७।१४।२०।४१ | २६।१४ | ६।४५ | ५।१५ | ९ | १५ | ३० |

वृश्चिके रविः३५।४ मु.१५ फलं महार्घं विष्णुपदी संक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि.० उ. दिने, कार्तिकस्नानसमाप्तिः, चन्द्रदर्शनं मु.३० फलं साम्यं, ❖

भ्रातृद्वितीया, भगिनीगृहे भोजनं, श्रीचित्रगुप्तपूजा, मासादिः, घं.२९।२२उ. ४४।२२ या. (३) एकोद्दिष्टम्।

कटुमहुली३, श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायां, (४) एकोद्दिष्टम्।

अनुराधायां रविः ५२।२२, गृहप्रवेशो रात्रौ घं.१०मि.४६उ.घं.३ मि. ३८ या., उत्तरयात्रा पंचम्यां पूर्वाषाढे, ५ एकोद्दिष्टम्।

**अनुराधायां रविः** ... उच्चैठग्रामे तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां कर्मस्थले च विशिष्टजयन्त्युत्सवः (१–२)एको।

प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरना)।❖अग्न्यादिदेवोत्थापनं, महाकविकालिदासजयन्ती, **उच्चैठग्रामे तज्जन्मस्थले** उज्जयिन्यां कर्मस्थले च विशिष्टजयन्त्युत्सवः (१–२)एको। ... उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, ६ एकोद्दिष्टम्।

**प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं, गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, पंचकारम्भो रात्रौ घं.२।३३ उ., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, ६ एकोद्दिष्टम्।

प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, ...

**वृश्चिके बुधः** १४।४५, प्रातःकालिकार्घदानं पारणं च, सामापूजारम्भः, जगद्धात्रीपूजारम्भः, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, **पूर्वयात्रा** मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।

गोपाष्टमी।◆सोनपुरमेलापकं, **कार्तिकेयावतारः**, श्रीकार्तिकेयपूजनं, गुरुनानकजयन्ती, सामाविसर्जनं,, **गुरुवक्रशुद्धिः**४४।५ उपरि, प्रथमाब्दीयद्विरागमनं पूर्वदक्षिणयात्रा ●

द.ति.३२।३० उ., अक्षयनवमी, सत्ययुगादिः, गंगास्नानदानादिः, पश्चिमयात्रा नवम्यां पूर्वभाद्रे।

द.ति. ३७।४१ या., जगद्धात्रीविसर्जनम्। ●च रोहिण्यां, **गोशालाघट्टे** कमलास्नानं, जीवछघट्टे **जीववत्सायां** स्नानं शिवार्चनादिकम्।

वृश्चिके शुक्रः ३२।३४, **देवोत्थान** ११ व्रतं सर्वेषां, चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः, **भीष्मपंचकव्रतारम्भः**, गृहारम्भप्रवेशौ, पश्चिमयात्रा रेवत्यामेकादश्याम्।

गं.७।५९ उ., २२।५९ या., **पंचकान्तो** दिवा घं.२ मि.४५ उ., दामोदर१२ तामसमन्वादिः, विल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, **पश्चिमयात्रा** रेवत्यां ततः **उत्तरां** विनां यात्रा श्रवणायाम्

पूर्वास्तःशुक्रः३१।५१, **विद्यापतिस्मृतिदिवसः**, प्रदोष १३ व्रतं, **मुण्डनं**, गृहप्रवेश अश्विन्याम्।

वैकुण्ठ १४ **श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं**, प्रदोष १४ व्रतम्।

कार्तिकी१५ स्नानदानादिः औत्तममन्वादिः, सर्वदेवदेव्युत्थापनं **भीष्मपंचकव्रतसमाप्तिः**, पुष्करस्नानं हरिहरक्षेत्रस्नानं श्रीहरिहरनाथदर्शनपूजनादिकं,◆

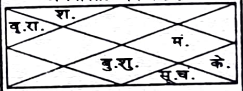
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ९।१९।४०।३८ | ६।२०।४२।४० | २।२२।३३।०९ | ६।१७।१६।०८ | १।१८।५२।५० | ८।०७।०३।४२ |
| २ श. | ९।२०।२३।०३ | ६।२२।२३।३२ | २।२२।२९।२३ | ६।१८।३१।१६ | १।१८।४७।४० | ८।०७।००।३१ |
| ३ र. | ९।२१।०५।२८ | ६।२४।०४।२४ | २।२२।२५।३७ | ६।१९।४६।२४ | १।१८।४२।३० | ८।०६।५७।२० |
| ४ च. | ९।२१।४७।५३ | ६।२५।४५।१६ | २।२२।२१।५२ | ६।२१।०१।३२ | १।१८।३७।२० | ८।०६।५४।०९ |
| ५ म. | ९।२२।३०।१८ | ६।२७।२६।०८ | २।२२।१८।०७ | ६।२२।१६।४० | १।१८।३२।११ | ८।०६।५०।५८ |
| ६ बु. | ९।२३।१२।४२ | ६।२९।०६।५९ | २।२२।१४।२२ | ६।२३।३१।४७ | १।१८।२७।०२ | ८।०६।४७।४७ |
| ७ बृ. | ९।२३।५५।०६ | ७।००।४७।५० | २।२२।१०।३७ | ६।२४।४६।५४ | १।१८।२१।५३ | ८।०६।४४।३७ |
| ८ शु. | ९।२४।३७।३० | ७।०२।२८।४१ | २।२२।०६।५२ | ६।२६।०२।०१ | १।१८।१६।४४ | ८।०६।४१।२७ |
| ९ श. | ९।२५।२०।१० | ७।०४।१२।३३ | २।२२।०१।५६ | ६।२७।१७।२४ | १।१८।११।४२ | ८।०६।३८।१६ |
| १० र. | ९।२६।०२।५० | ७।०५।५६।२४ | २।२१।५७।०० | ६।२८।३२।४७ | १।१८।०६।४० | ८।०६।३५।०५ |
| ११ च. | ९।२६।४५।३० | ७।०७।४०।१५ | २।२१।५२।०४ | ६।२९।४८।१० | १।१८।०१।३९ | ८।०६।३१।५४ |
| १२ म. | ९।२७।२८।१० | ७।०९।३४।०६ | २।२१।४७।०८ | ७।०१।०३।३३ | १।१७।५६।३८ | ८।०६।२८।४३ |
| १३ बु. | ९।२८।१०।५० | ७।११।०७।५७ | २।२१।४२।१२ | ७।०२।१८।५६ | १।१७।५१।३७ | ८।०६।२५।३२ |
| १४ बृ. | ९।२८।५३।३० | ७।१२।५१।४८ | २।२१।३७।१६ | ७।०३।३४।१९ | १।१७।४६।३६ | ८।०६।२२।२२ |
| १५ शु. | ९।२९।३६।१० | ७।१४।३५।३९ | २।२१।३२।२० | ७।०४।४९।४१ | १।१७।४१।३५ | ८।०६।१९।१२ |

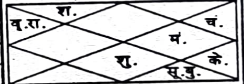
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ४३।२४ | १७।२४ | १९।२० | २१।३३ | २३।५१ | २।०७ | ४।२२ | ६।४० | ८।५८ | ११।०३ | १२।४९ | १४।२० | १५।४७ |
| २ श. | ४३।२२ | १७।२० | १९।१६ | २१।२९ | २३।४७ | २।०३ | ४।१८ | ६।३६ | ८।५४ | १०।५९ | १२।४५ | १४।१६ | १५।४३ |
| ३ र. | ४३।२० | १७।१५ | १९।११ | २१।२४ | २३।४२ | १।५८ | ४।१३ | ६।३१ | ८।४९ | १०।५४ | १२।४० | १४।११ | १५।३८ |
| ४ च. | ४३।१८ | १७।११ | १९।०७ | २१।२० | २३।३८ | १।५४ | ४।०९ | ६।२७ | ८।४५ | १०।५० | १२।३६ | १४।०७ | १५।३४ |
| ५ म. | ४३।१६ | १७।०७ | १९।०३ | २१।१६ | २३।३४ | १।५० | ४।०५ | ६।२३ | ८।४१ | १०।४६ | १२।३२ | १४।०३ | १५।३० |
| ६ बु. | ४३।१४ | १७।०३ | १८।५९ | २१।१२ | २३।३० | १।४६ | ४।०१ | ६।१९ | ८।३७ | १०।४२ | १२।२८ | १३।५९ | १५।२६ |
| ७ बृ. | ४३।१३ | १६।५८ | १८।५४ | २१।०७ | २३।२५ | १।४१ | ३।५६ | ६।१४ | ८।३२ | १०।३७ | १२।२३ | १३।५४ | १५।२१ |
| ८ शु. | ४३।१२ | १६।५४ | १८।५० | २१।०३ | २३।२१ | १।३७ | ३।५२ | ६।१० | ८।२८ | १०।३३ | १२।१९ | १३।५० | १५।१७ |
| ९ श. | ४३।११ | १६।५० | १८।४६ | २०।५९ | २३।१७ | १।३३ | ३।४८ | ६।०६ | ८।२४ | १०।२९ | १२।१५ | १३।४६ | १५।१३ |
| १० र. | ४३।१० | १६।४६ | १८।४१ | २०।५५ | २३।१३ | १।२९ | ३।४४ | ६।०२ | ८।२० | १०।२५ | १२।११ | १३।४२ | १५।०९ |
| ११ च. | ४३।०९ | १६।४२ | १८।३७ | २०।५० | २३।०८ | १।२४ | ३।३९ | ५।५७ | ८।१५ | १०।२० | १२।०६ | १३।३७ | १५।०४ |
| १२ म. | ४३।०८ | १६।३७ | १८।३३ | २०।४६ | २३।०४ | १।२० | ३।३५ | ५।५३ | ८।११ | १०।१६ | १२।०२ | १३।३३ | १५।०० |
| १३ बु. | ४३।०७ | १६।३३ | १८।२९ | २०।४२ | २३।०० | १।१६ | ३।३१ | ५।४९ | ८।०७ | १०।१२ | ११।५८ | १३।२९ | १४।५६ |
| १४ बृ. | ४३।०७ | १६।२९ | १८।२५ | २०।३८ | २२।५६ | १।१२ | ३।२७ | ५।४५ | ८।०३ | १०।०८ | ११।५४ | १३।२५ | १४।५२ |
| १५ शु. | ४३।०७ | १६।२४ | १८।२० | २०।३३ | २२।५१ | १।०७ | ३।२२ | ५।४० | ७।५८ | १०।०३ | ११।४९ | १३।२० | १४।४७ |

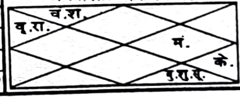
१ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।४५
अयनांशाः २२।३२।१९




८ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।५२
अयनांशाः २२।३२।२०




१५ शुक्रे वल्ली ८।३७।४२।५९
अयनांशाः २२।३२।२१




**अथ विविधविषयाः** — कार्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्। **गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः**— गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णवाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव। **गोपूजनमन्त्रश्च**—लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु। अग्रतः सन्तु मे गावो गावां मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। **भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः**— भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। **कनिष्ठभ्रातरि सति**— भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। **एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्रः**— ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मलपूर्ण–चन्द्र–शारद्य–पुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।

**ग्रहस्थितिः**—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वोस्तो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पूर्वोदितःशुक्रः १३तः पूर्वास्तः।

**वातावरणम्**—पक्षाद्यन्तभागयोः वायुमेघचारोष्णतादयस्तन्मध्ये वायुमेघच्छायाखण्डवृष्टयः।

# अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८,सन्१४०९ साल,दि.१।१२।२००१ ई.त.२४।१२।२००१ई.या., पूर्वं कालः।
वक्रः पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्राशयः रा.द.प. | चन्द्राशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | ४८।५२ | रा.२।१९ | रो.३०।१७ | सा.६।५० | सि.३६।३८ | बा.१९।२८ | वृ.५९।५५ | रा.६।४४ | ७।१५।२१।४८ | २६।१२ | ६।४६ | ५।१४ | १० | १६ | ०१ |
| २ र. | ४६।२६ | रा.१।२० | मृ.२९।३९ | सा.६।३८ | सा.३२।५३ | तै.१७।३९ | मिथुन | अहो. | ७।१६।२२।५५ | २६।११ | ६।४६ | ५।१४ | ११ | १७ | ०२ |
| ३ चं. | ४३।०२ | रा.११।५९ | आ.२८।०४ | सा.६।०० | शु.२६।१६ | व.१४।४४ | मिथुन | अहो. | ७।१७।२४।५३ | २६।१० | ६।४६ | ५।१४ | १२ | १८ | ०३ |
| ४ मं. | ३८।४६ | रा.१०।१६ | पुन.२५।४२ | सा.५।०३ | शु.१९।५९ | ब.१०।५४ | मि.११।०८ | दि.११।१३ | ७।१८।२५।०९ | २६।०९ | ६।४६ | ५।१४ | १३ | १९ | ०४ |
| ५ बु. | ३३।४८ | रा.८।१७ | पु.२२।३२ | दि.३।४७ | ब्र.१३।०४ | कौ.६।१७ | कर्क | अहो. | ७।१९।२६।१५ | २६।०८ | ६।४६ | ५।१४ | १४ | २० | ०५ |
| ६ बृ. | २८।१९ | सा.६।०७ | आश्ले.१८।४९ | दि.२।०७ | ऐ.५।३७ | ग.१।०४ | क.१८।४९ | दि.२।०७ | ७।२०।२७।२१ | २६।०७ | ६।४७ | ५।१३ | १५ | २१ | ०६ |
| ७ शु. | २२।३२ | दि.३।४८ | म.१४।४३ | दि.१२।४० | वि.५०।०१ | ब.२२।३२ | सिंह | अहो. | ७।२१।२८।२७ | २६।०६ | ६।४७ | ५।१३ | १६ | २२ | ०७ |
| ८ श. | १६।३६ | दि.१।२५ | पूफ.१०।३० | दि.१०।५९ | प्री.४२।०६ | कौ.१६।३६ | सि.२४।२४ | दि.४।३३ | ७।२२।२९।४१ | २६।०४ | ६।४७ | ५।१३ | १७ | २३ | ०८ |
| ९ र. | १०।४७ | दि.११।०७ | उफ.६।२२ | दि.९।२१ | आ.३४।२० | ग.१०।४७ | कन्या | अहो. | ७।२३।३०।५५ | २६।०२ | ६।४८ | ५।१२ | १८ | २४ | ०९ |
| १० चं. | ०५।१५ | दि.८।५४ | ह.२।३० | दि.७।४८ | सौ.२६।३२ | वि.५।१५ | कं.३०।४८ | रा.७।०७ | ७।२४।३२।०९ | २६।०० | ६।४८ | ५।१२ | १९ | २५ | १० |
| ११ मं. | ००।१३ | प्रा.६।५३ | स्वा.५५।२१ | रा.४।५६ | शो.१९।५२ | बा.००।१३ | तुला | अहो. | ७।२५।३३।२३ | २५।५९ | ६।४८ | ५।१२ | २० | २६ | ११ |
| १३ बु. | ५२।२० | रा.३।४४ | वि.५४।२७ | रा.४।३५ | अगं.१३।२९ | ग.२४।०६ | तु.३९।४१ | रा.१०।४० | ७।२६।३४।३६ | २५।५८ | ६।४८ | ५।१२ | २१ | २७ | १२ |
| १४ बृ. | ४९।४८ | रा.२।४४ | अनु.५३।३२ | रा.४।१२ | सु.७।४७ | वि.२१।०४ | वृश्चिक | अहो. | ७।२७।३५।४९ | २५।५७ | ६।४९ | ५।११ | २२ | २८ | १३ |
| ३० शु. | ४८।२८ | रा.२।१२ | ज्ये.५३।४५ | रा.४।१९ | धृ.२ ५५ | च.१९।०८ | वृ.५३।४५ | रा.४।१९ | ७।२८।३७।०२ | २५।५६ | ६।४९ | ५।११ | २३ | २९ | १४ |

दिसम्बर १२,कुम्भे कुजः १६।२२, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वा विना यात्रा मृगशिरसि।

ज्येष्ठायां रविः५९।५१, **षाण्मासिकरविव्रतारम्भः**, प्रथमाब्दीयद्विरागमनं पश्चिमां विना यात्रा च मृगशिरसि, नवान्नपार्वणम्। ऐषमः शुक्लपक्षे❖

प्रथमाब्दीयद्विरागमनं पश्चिमदक्षिणयात्रा च पुनर्वसौ तृतीयायाम्।

श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, चतुर्थ्यां पंचम्यां वा मेघदर्शनं वर्षर्तौ वृष्टिसूचकम्।

वीडपञ्चमी, श्रीमनसादेवीशयनं **श्रीविषहरापूजनं**, मुण्डनं, प्रथमाब्दीयद्विरागमनं गृहारम्भ उत्तरां विना यात्रा च पुष्ये, नवान्नपार्वणम्।

वैधृतियोगमानं ५२।१७, ग. ७।४९ उ. २२।४९ या.। ❖रविव्रतोपयोगिरविवासराभावात्सन् १३५८–१३६१ सालसंज्ञकवर्षयोरिव मार्गकृष्णद्वितीयायां रवौ◆

पूर्वोत्तरयात्राष्टम्याम्, पश्चिमोदितो बुधः ३३।४२। ◆ **रविव्रतारम्भः** द्वितीयापंचम्योर्नवान्नपार्वणं चेति पण्डितपरिषदो निर्णयः

कालभैरवाष्टमी, श्रीकालभैरवावतारः, **महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती**, शाकाष्टका, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।

मूले धनुषि बुधः३७।३५, द.ति. १०।४७ उ. अन्वष्टकानवमो, (९–१०) एकोद्दिष्टम्।

चित्रामानं ५६।३६, द.ति. ५।१५ या, दक्षिणयात्रैकादश्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।

द्वादशीमानं ५५।३८, **उत्पन्ना ११ व्रतं सर्वेषां**, पश्चिमदक्षिणयात्रा द्वादशीस्वात्योः।

गोमूत्रेण पारणं, प्रदोष १३ व्रतम्।

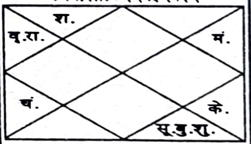
प्रदोष १४ व्रतम्।

मार्गी ३० स्नानदानादिः, शूलयोगमानं ५६।०३, गं.४७।४५ उ., उत्तरयात्रा प्रतिपदि ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा मूले।

**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | १०।००।१९।०९ | ७।१६।१९।५५ | २।२१।२६।१२ | ७।०६।०५।१९ | १।१७।३६।२५ | ८।०६।१६।०१ | ४३।०६ | १६।२० | १८।१६ | २०।२९ | २२।४७ | १।०३ | ३।१८ | ५।३६ | ७।५४ | ९।५९ | ११।४५ | १३।१६ | १४।४३ |
| २ र. | १०।०१।०२।०८ | ७।१८।०४।११ | २।२१।२०।०४ | ७।०७।२०।५७ | १।१७।३१।१६ | ८।०६।१२।५० | ४३।०५ | १६।१६ | १८।१२ | २०।२५ | २२।४३ | ०।५९ | ३।१४ | ५।३२ | ७।५० | ९।५५ | ११।४१ | १३।१२ | १४।३९ |
| ३ चं. | १०।०१।४५।०७ | ७।१९।४८।२७ | २।२१।१३।५७ | ७।०८।३६।३५ | १।१७।२६।०७ | ८।०६।०९।३९ | ४३।०४ | १६।१२ | १८।०८ | २०।२१ | २२।३९ | ०।५५ | ३।१० | ५।२८ | ७।४६ | ९।५१ | ११।३७ | १३।०८ | १४।३५ |
| ४ मं. | १०।०२।२८।०६ | ७।२१।३२।४३ | २।२१।०७।५० | ७।०९।५२।१३ | १।१७।२०।५८ | ८।०[illegible]।०६।२८ | ४३।०३ | १६।०७ | १८।०३ | २०।१६ | २२।३४ | ०।५० | ३।०५ | ५।२[illegible] | ७।४१ | ९।४६ | ११।३२ | १३।०३ | १४।३० |
| ५ बु. | १०।[illegible]३।११।०५ | ७।२३।१६।५९ | २।२१।०१।४३ | ७।११।०७।५० | १।१७।१५।४९ | ८।०६।०३।१७ | ४३।०३ | १६।०३ | १७।५९ | २०।१२ | २२।३० | ०।४६ | ३।०१ | ५।१९ | ७।३७ | ९।४२ | ११।२८ | १२।५९ | १४।२६ |
| ६ बृ. | १०।०३।५४।०४ | ७।२५।०१।१५ | २।२०।५५।३६ | ७।१२।२३।२७ | १।१७।१०।४० | ८।०६।००।०७ | ४३।०३ | १५।५९ | १७।५५ | २०।०८ | २२।२६ | ०।४२ | २।५७ | ५।१५ | ७।३३ | ९।३८ | ११।२४ | १२।५५ | १४।२२ |
| ७ शु. | १०।०४।३७।०२ | ७।२६।४५।३१ | २।२०।४९।२९ | ७।१३।३९।०४ | १।१७।०५।३१ | ८।०५।५६।५७ | ४३।०३ | १५।५५ | १७।५१ | २०।०४ | २२।२२ | ०।३८ | २।५३ | ५।११ | ७।२९ | ९।३४ | ११।२० | १२।५१ | १४।१८ |
| ८ श. | १०।०५।२०।१८ | ७।२८।२७।२२ | २।२०।४२।३३ | ७।१४।५४।४१ | १।१७।००।२४ | ८।०५।५३।४६ | ४३।०२ | १५।५० | १७।४६ | १९।५९ | २२।१७ | ०।३३ | २।४८ | ५।०६ | ७।२४ | ९।२९ | ११।१५ | १२।४६ | १४।१३ |
| ९ र. | १०।०६।०३।३४ | ८।००।०९।१३ | २।२०।३५।३७ | ७।१६।१०।१७ | १।१६।५५।१८ | ८।०५।५०।३५ | ४३।०१ | १५।४६ | १७।४२ | १९।५५ | २२।१३ | ०।२९ | २।४४ | ५।०२ | ७।२० | ९।२५ | ११।११ | १२।४२ | १४।०९ |
| १० चं. | १०।०६।४६।५० | ८।०१।५१।०४ | २।२०।२८।४१ | ७।१७।२५।५३ | १।१६।५०।१२ | ८।०५।४७।२४ | ४३।०० | १५।४२ | १७।३८ | १९।५१ | २२।०९ | ०।२५ | २।४० | ४।५८ | ७।१६ | ९।२१ | ११।०७ | १२।३८ | १४।०५ |
| ११ मं. | १०।०७।३०।०६ | ८।०३।३२।५५ | २।२०।२१।४५ | ७।१८।४१।२९ | १।१६।४५।०६ | ८।०५।४४।१३ | ४२।५९ | १५।३७ | १७।३३ | १९।४६ | २२।०४ | ०।२० | २।३५ | ४।५३ | ७।११ | ९।१६ | ११।०२ | १२।३३ | १४।०० |
| १३ बु. | १०।०८।१३।२२ | ८।०५।१४।४५ | २।२०।१४।४९ | ७।१९।५७।०५ | १।१६।४०।०० | ८।०५।४१।०२ | ४२।५८ | १५।३३ | १७।२९ | १९।४२ | २२।०० | ०।१६ | २।३१ | ४।४९ | ७।०७ | ९।१२ | १०।५८ | १२।२९ | १३।५६ |
| १४ बृ. | १०।०८।५६।३७ | ८।०६।५६।३५ | २।२०।०७।५४ | ७।२१।१२।४१ | १।१६।३४।५४ | ८।०५।३७।५१ | ४२।५८ | १५।२९ | १७।२५ | १९।३८ | २१।५६ | ०।१२ | २।२७ | ४।४५ | ७।०३ | ९।०८ | १०।५४ | १२।२५ | १३।५२ |
| ३० शु. | १०।०९।३९।५२ | ८।०८।३८।२५ | २।२०।००।५९ | ७।२२।२८।१७ | १।१६।२९।४८ | ८।०५।३४।४१ | ४२।५८ | १५।२५ | १७।२१ | १९।३४ | २१।५२ | ०।०८ | २।२३ | ४।४१ | ६।५९ | ९।०४ | १०।५० | १२।२१ | १३।४८ |

**७ शुक्रे वल्ली ८।३७।४३।०६**
**अयनांशा: २२।३२।२२**




**३० शुक्रे वल्ली ८।३७।४३।१३**
**अयनांशा: २२।३२।२३**




**अथ विविधविषयाः**– मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद्दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **पञ्चोपचारपूजा**–गन्ध पुष्पञ्च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पञ्चोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः। **षोडशोपचारपूजा**–आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा। **पञ्चगव्यम्**–गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्। **पञ्चामृतम्**–शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते। **पञ्चरत्नानि**–वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्। पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्। **सप्तमृत्तिका**–गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रद्गोकुलात्। राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्। **पञ्चपल्लवाः**–अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः। **सप्तधान्यम्**–यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्। **सर्वौषधिः**–मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगणः स्मृतः। सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्॥

**ग्रहस्थितिः**– मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ७ तः पश्चिमोदितः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः।

**वातावरणम्**– पक्षाद्यन्तभागयोःमेघचारवायुशीतवृद्धयस्तन्मध्यभागे वायुमेघच्छायास्वल्पतापादयः।

# अग्रहायणशुक्लपक्षः

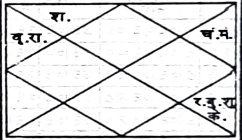
शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८, नं.१४०९ साल, दि.१५।१२।२००१ ई.तः ३०।१२।२००१ ई.या., पूर्वे कालः।
वक्रः पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | चन्द्रराशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | ४८।२३ | रा.२।१० | मू.५५।१५ | रा.४।५५ | ग.५६।०२ | किं.१८।२५ | धनु. | अहो. | ७।२९।३८।२० | २५।५० | ६।४९ | ५।११ | २४ | ३० | १५ | गं. २।४५या., श्रीहरीशोव्रतम्, मासान्तः। |
| २ र. | ४२।३६ | रा.२।४० | पूषा.१८।१ | रा.६।०२ | वृ.५४।५ | बा.१९।०० | धनु. | अहो. | ८।००।३९।३८ | २५।५२ | ६।५० | ५।१० | २५ | १ | १६ | मूले धनुषि रविः ४।१९ मु.३० फलं साम्यं षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.८मि.३० उपरि घं.२मि.४५ यावद्दिने, चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यं, द.ति. ४।१९३, ४९।३६ या.। |
| ३ चं. | ५२।०६ | रा.३।४० | उषा.६०।०० | अहो. | धृ.५३।१७ | तै.२०।५१ | ध.१४।२० | दि.१२।२६ | ८।०१।४०।५६ | २५।५० | ६।५० | ५।१० | २६ | २ | १७ | मासादिः। |
| ४ मं. | ५५।४५ | रा.५।०८ | उषा.१।५६ | दि.७।३६ | व्या.५२।५९ | व.२३।५६ | मकर | अहो. | ८।०२।४२।१४ | २५।४९ | ६।५० | ५।१० | २७ | ३ | १८ | श्रीगणेश ४ व्रतं, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्। |
| ५ बु. | ६०।०० | अहो. | श्रव.७।०१ | दि.९।३८ | ह.५३।३७ | ब.२८।०२ | म.३९।५७ | रा.१०।४५ | ८।०३।४३।३२ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | २८ | ४ | १९ | विवाहपञ्चमी श्रीसीतारामविवहोत्सवः, जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनं, पञ्चकारम्भो दिवा घं.९ मि.३८ उ., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थेचन्द्रे ततः ● |
| ५ वृ. | ००।१८ | दि.६।५८ | ध.१२।५३ | दि.१२।०० | व.५४।४४ | बा.००।१८ | कुंभ | अहो. | ८।०४।४४।५० | २५।४७ | ६।५१ | ५।०९ | २९ | ५ | २० | मूले धनुषि शुक्रः ४०।१२, स्कन्दषष्ठीव्रतं, चम्पकषष्ठी, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। ●पश्चिमयात्रा। |
| ६ शु. | ५।३० | दि.९।०३ | श.११।१८ | दि.२।३४ | सि.५६।१३ | तै.५।३० | कुंभ | अहो. | ८।०५।४६।०८ | २५।४६ | ६।५१ | ५।०९ | ३० | ६ | २१ | ॥००॥ |
| ७ श. | १०।५६ | दि.११।१३ | पूभा.२५।५१ | सा.५।११ | व्या.५७।१९ | व.१०।५६ | कु.९।१३ | दि.१०।३२ | ८।०६।४७।३५ | २५।४७ | ६।५१ | ५।०९ | १ | ७ | २२ | पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, (८) एकोद्दिष्टम्। |
| ८ र. | १६।१० | दि.१।१८ | उभा.३२।४ | रा.७।४१ | व.५८।११ | ब.१६।१० | मीन | अहो. | ८।०७।४९।०२ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | २ | ८ | २३ | ॥००॥ |
| ९ चं. | २०।४५ | दि.३।०८ | रे.३७।४३ | रा.९।५५ | प.५८।२७ | कौ.२०।४५ | मी.३७।४३ | रा.९।५५ | ८।०८।५०।२९ | २५।४९ | ६।५० | ५।१० | ३ | ९ | २४ | पञ्चकान्तो रात्रौ घं.९मि.५५ उ., गं. २५।४३, उ. ४०।४३या., पश्चिमोत्तरयात्रा। दशम्यां रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्राश्विन्यां, (९) एकोद्दिष्टम्। |
| १० मं. | २४।२७ | दि.४।३७ | अ.४२।२१ | रा.११।४६ | शि.५७।५० | ग.२४।२७ | मेष | अहो. | ८।०९।५१।५६ | २५।५० | ६।५० | ५।१० | ४ | १० | २५ | उत्तरां विना यात्रा दशम्याम्। |
| ११ बु. | २६।५९ | सा.५।३८ | भ.४५।५३ | रा.१।११ | सि.५६।२५ | वि.२६।५९ | मेष | अहो. | ८।१०।५३।२३ | २५।५१ | ६।५० | ५।१० | ५ | ११ | २६ | मोक्षदा ११ व्रतं सर्वेषां, गीताजयन्ती। |
| १२ वृ. | २८।१७ | सा.६।०९ | कृ.४८।१० | रा.२।०६ | सा.५३।५६ | बा.२८।१७ | मे.०१।२७ | दि.७।२५ | ८।११।५४।५० | २५।५२ | ६।५० | ५।१० | ६ | १२ | २७ | केशव १२, गोमूत्रेण पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वयात्रा रोहिण्याम्। |
| १३ शु. | २८।१४ | सा.६।०८ | रो.४९।१९ | रा.२।३० | शु.५०।२९ | कौ.००।१५ | वृष. | अहो. | ८।१२।५६।१६ | २५।५२ | ६।५० | ५।१० | ७ | १३ | २८ | मकरे बुधः ४६।२१, प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा। |
| १४ श. | २६।५८ | सा.५।३७ | मृ.४८।५६ | रा.२।२४ | शु.४६।२० | व.२६।५८ | वृ.११।०२ | दि.२।२७ | ८।१३।५७।४२ | २५।५२ | ६।५० | ५।१० | ८ | १४ | २९ | पूर्वाषाढे रविः ७।४१, पूर्वां विना यात्रा चतुर्दश्याम्। |
| १५ र. | २४।३० | सा.४।३७ | आर्द्रा.४७।३८ | रा.१।५२ | ब्र.४०।४२ | ब.२४।३० | मिथुन | अहो. | ८।१४।५९।०८ | २५।५३ | ६।४९ | ५।११ | ९ | १५ | ३० | मार्गी १५ स्नानदानादिः श्रीदत्तात्रेयावतारः, हरिहरक्षेत्रस्नानं श्रीहरिहरनाथदर्शनपूजनादिकम्। |

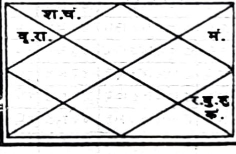
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** — **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगल | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | १०।१०।२३।१२ | ८।१०।१४।३७ | २।१९।५३।१९ | ७।२३।४४।०८ | १।१६।२४।४९ | ८।०५।३१।३० | ४२।५७ | १५।२० | १७।१६ | १९।२९ | २१।४७ | ००।०३ | २।१८ | ४।३६ | ६।५४ | ८।५९ | १०।४५ | १२।१६ | १३।४३ |
| २ र. | १०।११।०६।३२ | ८।११।५०।४८ | २।१९।४५।३९ | ७।२४।५९।५९ | १।१६।१९।५० | ८।०५।२८।१९ | ४२।५६ | १५।१६ | १७।१२ | १९।२५ | २१।४३ | २३।५९ | २।१४ | ४।३२ | ६।५० | ८।५५ | १०।४१ | १२।१२ | १३।३९ |
| ३ चं. | १०।११।४९।५२ | ८।१३।२६।५९ | २।१९।३७।५९ | ७।२६।१५।५० | १।१६।१४।५१ | ८।०५।२५।०८ | ४२।५५ | १५।११ | १७।०७ | १९।२० | २१।३८ | २३।५४ | २।०९ | ४।२७ | ६।४५ | ८।५० | १०।३६ | १२।०७ | १३।३४ |
| ४ मं. | १०।१२।३३।१२ | ८।१५।०३।१० | २।१९।३०।१९ | ७।२७।३१।४१ | १।१६।०९।५३ | ८।०५।२१।५७ | ४२।५४ | १५।०७ | १७।०३ | १९।१६ | २१।३४ | २३।५० | २।०५ | ४।२३ | ६।४१ | ८।४६ | १०।३२ | १२।०३ | १३।३० |
| ५ बु. | १०।१३।१६।३२ | ८।१६।३९।२१ | २।१९।२२।३९ | ७।२८।४७।३२ | १।१६।०४।५५ | ८।०५।१८।४६ | ४२।५३ | १५।०२ | १६।५८ | १९।११ | २१।२९ | २३।४५ | २।०० | ४।१८ | ६।३६ | ८।४१ | १०।२७ | ११।५८ | १३।२५ |
| ५ वृ. | १०।१३।५९।५२ | ८।१८।१५।३२ | २।१९।१४।५९ | ८।००।०३।२३ | १।१५।५९।५७ | ८।०५।१५।३६ | ४२।५३ | १४।५८ | १६।५४ | १९।०७ | २१।२५ | २३।४१ | १।५६ | ४।१४ | ६।३२ | ८।३७ | १०।२३ | ११।५४ | १३।२१ |
| ६ शु. | १०।१४।४३।११ | ८।१९।५१।४३ | २।१९।०७।२० | ८।०१।१९।१५ | १।१५।५४।५९ | ८।०५।१२।२६ | ४२।५३ | १४।५३ | १६।४९ | १९।०२ | २१।२० | २३।३६ | १।५१ | ४।०९ | ६।२७ | ८।३२ | १०।१८ | ११।४९ | १३।१६ |
| ७ श. | १०।१५।२६।२५ | ८।२१।१८।१० | २।१८।५९।२९ | ८।०२।३५।१० | १।१५।५०।२४ | ८।०५।०९।१५ | ४२।५४ | १४।४९ | १६।४५ | १८।५८ | २१।१६ | २३।३२ | १।४७ | ४।०५ | ६।२३ | ८।२८ | १०।१४ | ११।४५ | १३।१२ |
| ८ र. | १०।१६।०९।३९ | ८।२२।४४।३७ | २।१८।५१।३८ | ८।०३।५१।०६ | १।१५।४५।४९ | ८।०५।०६।०४ | ४२।५५ | १४।४५ | १६।४१ | १८।५४ | २१।१२ | २३।२८ | १।४३ | ४।०१ | ६।१९ | ८।२४ | १०।१० | ११।४१ | १३।०८ |
| ९ चं. | १०।१६।५२।५३ | ८।२४।११।०३ | २।१८।४३।४७ | ८।०५।०७।०२ | १।१५।४१।१४ | ८।०५।०२।५३ | ४२।५६ | १४।४० | १६।३६ | १८।४९ | २१।०७ | २३।२३ | १।३८ | ३।५६ | ६।१४ | ८।१९ | १०।०५ | ११।३६ | १३।०३ |
| १० मं. | १०।१७।३६।०७ | ८।२५।३७।२९ | २।१८।३५।५७ | ८।०६।२२।५८ | १।१५।३६।३९ | ८।०४।५९।४२ | ४२।५६ | १४।३६ | १६।३२ | १८।४५ | २१।०३ | २३।१९ | १।३४ | ३।५२ | ६।१० | ८।१५ | १०।०१ | ११।३२ | १२।५९ |
| ११ बु. | १०।१८।१९।२१ | ८।२७।०३।५५ | २।१८।२८।०७ | ८।०७।३८।५३ | १।१५।३२।०५ | ८।०४।५६।३१ | ४२।५६ | १४।३१ | १६।२७ | १८।४० | २०।५८ | २३।१४ | १।२९ | ३।४७ | ६।०५ | ८।१० | ०९।५६ | ११।२७ | १२।५४ |
| १२ वृ. | १०।१९।०२।३४ | ८।२८।३०।२१ | २।१८।२०।१७ | ८।०८।५४।४८ | १।१५।२७।३१ | ८।०४।५३।२१ | ४२।५६ | १४।२७ | १६।२३ | १८।३६ | २०।५४ | २३।१० | १।२५ | ३।४३ | ६।०१ | ८।०६ | ०९।५२ | ११।२३ | १२।५० |
| १३ शु. | १०।१९।४५।४७ | ८।२९।५६।४७ | २।१८।१२।२७ | ८।१०।१०।४३ | १।१५।२२।५७ | ८।०४।५०।११ | ४२।५६ | १४।२२ | १६।१८ | १८।३१ | २०।४९ | २३।०५ | १।२० | ३।३८ | ५।५६ | ८।०१ | ०९।४७ | ११।१८ | १२।४५ |
| १४ श. | १०।२०।२९।१२ | ९।०१।०६।४९ | २।१८।०४।१० | ८।११।३६।३७ | १।१५।१८।४५ | ८।०४।४७।०० | ४२।५७ | १४।१८ | १६।१४ | १८।२७ | २०।४५ | २३।०१ | १।१६ | ३।३४ | ५।५२ | ७।५७ | ०९।४३ | ११।१४ | १२।४१ |
| १५ र. | १०।२१।१२।३७ | ९।०२।१६।५१ | २।१७।५५।५३ | ८।१२।४२।३१ | १।१५।१४।३३ | ८।०४।४३।४९ | ४२।५८ | १४।१३ | १६।०९ | १८।२२ | २०।४० | २२।५६ | १।११ | ३।२९ | ५।४७ | ७।५२ | ०९।३८ | ११।०९ | १२।३६ |

**६ शुक्रे वल्ली ८।३७।४३।२०**
**अयनांशाः २२।३२।२४**




**१३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४३।२७**
**अयनांशाः २२।३२।२५**




**अथ विविधविषयाः— रविवासरे त्याज्यवस्तूनि—** क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। **मार्गादिमासे रविव्रतभक्ष्याणि—**पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण। **रात्रौ लग्नज्ञानम्—**ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलावृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ, नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्—** तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। वाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च। यथा—मार्गशुक्ल—पञ्चम्यां बुधवासरे रात्रिमानं ३४।१२, तदोक्तविधिना (३४।१२)X५ =१७१।००,१७१।००+२।०० = १७३।००, (१७३।००)÷१५=११।३२ दण्डादि। सूर्यास्तमाने (५।१०) यथोक्त ११।३२ फलस्य घण्टामिण्टात्मक (४।३७) मानयोजनेन घं.९ मि. ४७ रात्रौ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।

**ग्रहस्थितिः—**मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः।

**वातावरणम्—**पश्चादिभागे वायुवारमेघवारशीतादयस्तदन्तभागे शीतवृद्धिः।

# पौषकृष्णपक्षः

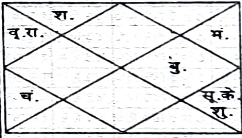
शकाब्दा: १९२३, संवत् २०५८,सन्१४०९ साल,दि.३१।१२।२००१ ई.त:१३।०१।२००२ई.या., पूर्वे काल:।
वक्र: पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वास्त: शुक्र:, अशुद्ध:, हेमन्तर्तु :, याम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथय: | | नक्षत्राणि | | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: | | स्पष्टसूर्य: | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादि: | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ च. | २१।०३ | दि.३।१४ | पुन.४५।३१ | रा.१।०१ | ऐ.३४।३९ | कौ.२१।०३ | मि.३१।०१ | रा.७।१३ | ८।१६।००।३४ | २५।५४ | ६।४९ | ५।११ | १० | १६ | ३१ | पश्चिमदक्षिणयात्रा प्रतिपदि, द.ति.२१।०३ उ., पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदम्। |
| २ मं. | १६।४४ | दि.१।३१ | पु.४२।३१ | रा.११।४९ | वै.२७।५४ | ग.१६।४४ | कर्क | अहो. | ८।१७।०२।०० | २५।५५ | ६।४९ | ५।११ | ११ | १७ | ०१ | १जनवरी २००२ ई. प्रारम्भ:, द.ति.१६।४४ या, उत्तरा विनां यात्रा तृतीयायां पुष्ये। |
| ३ बु. | ११।४५ | दि.११।३१ | आश्ले.३८।५५ | रा.१०।२३ | वि.२०।३७ | वि.११।४५ | क.३८।५५ | रा.१०।२३ | ८।१८।०३।२६ | २५।५६ | ६।४९ | ५।११ | १२ | १८ | ०२ | गं. २७।५५ उ. ४२।५५ या., श्रीगणेश ४ व्रतं, (३—४) एकोद्दिष्टम्। |
| ४ बृ. | ०६।१४ | दि.९।१८ | म.३४।५६ | रा.८।४६ | प्री.१३।०० | बा.०६।१४ | सिंह | अहो. | ८।१९।०४।५२ | २५।५८ | ६।४८ | ५।१२ | १३ | १९ | ०३ | पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |
| ५ शु. | ००।२६ | प्रा.६।५८ | पूफ.३०।४६ | रा.७।०६ | आ.५।०९ | तै.००।२६ | सि.४८।५३ | रा.२।२१ | ८।२०।०६।१८ | २६।०० | ६।४८ | ५।१२ | १४ | २० | ०४ | षष्ठीमानं ५४।०६, सौभाग्ययोगमानं ५२।०२, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |
| ७ श. | ४८।४५ | रा.२।१८ | उफ.२६।३८ | सा.५।२७ | शो.४९।२४ | वि.२१।३९ | कन्या | अहो. | ८।२१।०७।४३ | २६।०२ | ६।४८ | ५।१२ | १५ | २१ | ०५ | दक्षिणयात्रा हस्ते, सप्तम्यां मेघदर्शने सति श्रावण्यामार्द्रायां च सुवृष्टि:। |
| ८ र. | ४३।१७ | रा.१२।०६ | ह.२२।४३ | दि.३।५२ | अगं.४१।४९ | बा.१६।०१ | कं.५०।५७ | रा.३।१० | ८।२२।०९।०८ | २६।०४ | ६।४७ | ५।१३ | १६ | २२ | ०६ | अपूपाष्टका, पूर्वदक्षिणयात्राष्टम्यां, शकुनम्— पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यां तिथौ तोयधरो हि दृष्ट:। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टि: प्रवाच्या नियमेन विज्ञै:। |
| ९ चं. | ३८।१९ | रा.१०।०७ | चि.१९।११ | दि.२।२७ | सु.३४।३७ | तै.१०।१८ | तुला | अहो. | ८।२३।१०।३३ | २६।०६ | ६।४७ | ५।१३ | १७ | २३ | ०७ | अन्वष्टकानवमी, पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम्। |
| १० मं. | ३४।०२ | रा.८।२४ | स्वा.१६।१८ | दि.१।१८ | धृ.२८।०० | व.०६।१० | तु.५९।४८ | रा.६।४२ | ८।२४।११।५७ | २६।०७ | ६।४७ | ५।१३ | १८ | २४ | ०८ | पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्। |
| ११ बु. | ३०।३७ | रा.७।०१ | वि.१४।१८ | दि.१२।२९ | शू.२२।०१ | ब.२।१९ | वृश्चिक | अहो. | ८।२५।१३।२१ | २६।०८ | ६।४६ | ५।१४ | १९ | २५ | ०९ | सफला ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रानुराधायाम्। |
| १२ वृ. | २८।१२ | सा.६।०३ | अनु.१३।०८ | दि.१२।०१ | गं.१६।५५ | तै.२८।१२ | वृश्चिक | अहो. | ८।२६।१४।४५ | २६।०९ | ६।४६ | ५।१४ | २० | २६ | १० | गोमयेन पारणं, पश्चिमोत्तरयात्रा। |
| १३ शु. | २६।५८ | सा.५।३३ | ज्ये.१३।०५ | दि.१२।०० | वृ.१२।३९ | व.२६।५८ | वृ.१३।०५ | दि.१२।०० | ८।२७।१६।०९ | २६।१० | ६।४६ | ५।१४ | २१ | २७ | ११ | उत्तराषाढे रवि: ७।४५, मीने कुज:५१।४२, प्रदोष १३ व्रतं, गं ७।५ उ.२२।५ या., प्रदोष१४ व्रतं, उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत: पूर्वोत्तरयात्रा मूले, दशतारकारंभो दिवा ◆ |
| १४ श. | २७।०१ | सा.५।३४ | मू.१४।१६ | दि.१२।२८ | ध्रु.०९।२१ | श.२७।०१ | धनु | अहो. | ८।२८।१७।३१ | २६।१२ | ६।४६ | ५।१४ | २२ | २८ | १२ | उत्तरयात्रा चतुर्दश्याम्। |
| ३० र. | २८।२३ | सा.६।०६ | पूषा.१६।४५ | दि.१।२७ | व्या.०७।०५ | ना.२८।२३ | ध.३२।४२ | रा.७।४९ | ८।२९।१८।५२ | २६।१४ | ६।४५ | ५।१५ | २३ | २९ | १३ | मकरे गुरु: २१।१२ पौषी ३० स्नानदानादि:, मासान्त:, श्रवणव्यतिपातयोरभावान्महोदययोगाभाव:। ◆ घं.१२ मि.०० उपरि। |

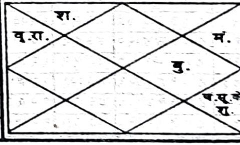
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ च. | १०।२१।५६।०२ | ९।०३।२६।५२ | २।१७।४७।३६ | ८।१३।५८।२५ | १।१५।१०।२१ | ८।०४।४०।३८ | ४२।५९ | १४।०९ | १६।०५ | १८।१८ | २०।३६ | २२।५२ | १।०७ | ३।२५ | ५।४३ | ७।४८ | ९।३४ | ११।०५ | १२।३२ |
| २ मं. | १०।२२।३९।२७ | ९।०४।३६।५५ | २।१७।३९।१९ | ८।१५।१४।१९ | १।१५।०६।०९ | ८।०४।३७।२७ | ४३।०० | १४।०५ | १६।०१ | १८।१४ | २०।३२ | २२।४८ | १।०३ | ३।२१ | ५।३९ | ७।४४ | ९।३० | ११।०१ | १२।२८ |
| ३ बु. | १०।२३।२२।५२ | ९।०५।४६।५७ | २।१७।३१।०२ | ८।१६।३०।१२ | १।१५।०१।५७ | ८।०४।३४।१६ | ४३।०० | १४।०० | १५।५६ | १८।०९ | २०।२७ | २२।४३ | ०।५८ | ३।१६ | ५।३४ | ७।३९ | ९।२५ | १०।५६ | १२।२३ |
| ४ बृ. | १०।२४।०६।१७ | ९।०६।५६।०९ | २।१७।२२।४५ | ८।१७।४६।०५ | १।१४।५७।४६ | ८।०४।३१।०६ | ४३।०० | १३।५६ | १५।५२ | १८।०५ | २०।२३ | २२।३९ | ०।५४ | ३।१२ | ५।३० | ७।३५ | ९।२१ | १०।५२ | १२।१९ |
| ५ शु. | १०।२४।४९।४१ | ९।०८।०७।०१ | २।१७।१४।२९ | ८।१९।०१।५८ | १।१४।५३।३५ | ८।०४।२७।५६ | ४३।०० | १३।५१ | १५।४७ | १८।०० | २०।१८ | २२।३४ | ०।४९ | ३।०७ | ५।२५ | ७।३० | ९।१६ | १०।४७ | १२।१४ |
| ७ श. | १०।२५।३३।०८ | ९।०८।५०।०७ | २।१७।०६।२८ | ८।२०।१८।०५ | १।१४।५०।०२ | ८।०४।२४।४५ | ४३।०१ | १३।४७ | १५।४३ | १७।५६ | २०।१४ | २२।३० | ०।४५ | ३।०३ | ५।२१ | ७।२६ | ९।१२ | १०।४३ | १२।१० |
| ८ र. | १०।२६।१६।३५ | ९।०९।३३।१३ | २।१६।५८।२७ | ८।२१।३४।१२ | १।१४।४६।२९ | ८।०४।२१।३४ | ४३।०२ | १३।४२ | १५।३८ | १७।५१ | २०।०९ | २२।२५ | ०।४० | २।५८ | ५।१६ | ७।२१ | ९।०७ | १०।३८ | १२।०५ |
| ९ च. | १०।२७।००।०२ | ९।१०।१६।१९ | २।१६।५०।२६ | ८।२२।५०।१९ | १।१४।४२।५७ | ८।०४।१८।२३ | ४३।०३ | १३।३८ | १५।३४ | १७।४७ | २०।०५ | २२।२१ | ०।३६ | २।५४ | ५।१२ | ७।१७ | ९।०३ | १०।३४ | १२।०१ |
| १० मं. | १०।२७।४३।२८ | ९।१०।५९।२५ | २।१६।४२।२५ | ८।२४।०६।२६ | १।१४।३९।२५ | ८।०४।१५।१२ | ४३।०४ | १३।३४ | १५।३० | १७।४३ | २०।०१ | २२।१७ | ०।३२ | २।५० | ५।०८ | ७।१३ | ८।५९ | १०।३० | ११।५७ |
| ११ बु. | १०।२८।२६।५४ | ९।११।४२।३० | २।१६।३४।२५ | ८।२५।२२।३२ | १।१४।३५।५३ | ८।०४।१२।०१ | ४३।०५ | १३।२९ | १५।२५ | १७।३८ | १९।५६ | २२।१२ | ०।२७ | २।४५ | ५।०३ | ७।०८ | ८।५४ | १०।२५ | ११।५२ |
| १२ वृ. | १०।२९।१०।२० | ९।१२।२५।३५ | २।१६।२६।२५ | ८।२६।३८।३८ | १।१४।३२।२१ | ८।०४।०८।५० | ४३।०५ | १३।२५ | १५।२१ | १७।३४ | १९।५२ | २२।०८ | ०।२३ | २।४१ | ४।५९ | ७।०४ | ८।५० | १०।२१ | ११।४८ |
| १३ शु. | १०।२९।५३।४६ | ९।१३।०८।४० | २।१६।१८।२५ | ८।२७।५४।४४ | १।१४।२८।४९ | ८।०४।०५।४० | ४३।०५ | १३।२० | १५।१६ | १७।२९ | १९।४७ | २२।०३ | ०।१८ | २।३६ | ४।५४ | ६।५९ | ८।४५ | १०।१६ | ११।४३ |
| १४ श. | ११।००।३७।१७ | ९।१३।२५।३३ | २।१६।१०।४० | ८।२९।१०।३२ | १।१४।२५।४१ | ८।०४।०२।२९ | ४३।०६ | १३।१६ | १५।१२ | १७।२५ | १९।४३ | २१।५९ | ०।१४ | २।३२ | ४।५० | ६।५५ | ८।४१ | १०।१२ | ११।३९ |
| ३० र. | ११।०१।२०।४८ | ९।१३।४२।२६ | २।१६।०२।५५ | ९।००।२६।२० | १।१४।२२।५३ | ८।०३।५९।१८ | ४३।०७ | १३।१२ | १५।०८ | १७।२१ | १९।३९ | २१।५५ | ०।१० | २।२८ | ४।४६ | ६।५१ | ८।३७ | १०।०८ | ११।३५ |

५ शुक्रे वल्ली ८।३७।४३।३४
अयनांशा: २२।३२।२६




१३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४३।४१
अयनांशा: २२।३२।२७




**अथ विविधविषया:—** दशातारकविचार:—पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति। एव चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नत:। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्। **गर्भपुष्टिविचार:—** वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपात: करकावघात:। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारै: प्रभवन्ति गर्भा:। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टि: समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति। **गोचरशन्यादिविचार:—** द्विजन्मनि पंचमसप्तमगा चतुराष्टकद्वादशधर्मयुता:। धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुता:। **तत्र शनेर्विशेष:—** यदि स्वजन्मराशित: शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयु:—जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दै: रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लोहपादम्। **तत्फलम्—** लौहे वित्तविनाश: स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्। अनिष्टफलदायकशनेर्जप: कार्य:, लौहधारणञ्च कार्यम्, शनावश्वत्थमूले जलादिभि: पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य:। **शनिस्तव:—** नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाक्षाय ते नम:। नमस्ते मन्दसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।

**ग्रहस्थिति:—** मार्गी पूर्वोदित: कुज:, मार्गी पश्चिमोदितो बुध:, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पूर्वास्त: शुक्र:।

**वातावरणम्—** पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वायुशीतवृद्धिमेघचारादयस्तदन्तभागे स्वल्पच्छिन्नवृष्टिवायुशीतवृद्धय:।

# पौषशुक्लपक्षः

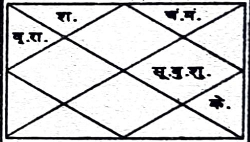
शकाब्दः१९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.१४।१।२००२ई.तः २८।१।२००२ ई. या., पूर्वे कालः।
वक्रः पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यायनम्, सौम्यगोलः,।

| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | चन्द्रराशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | दिनाङ्काः सौ. | दिनाङ्काः अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | ३०।५९ | रा.७।०९ | उषा.२०।२९ | दि.२।५७ | ह.५।५० | ब.३०।५९ | मकर | अहो. | ९।००।२०।१३ | २६।१६ | ६।४५ | ५।१५ | २४ | १ | १४ | मकरे रविः २३।२२ मु. ३० फलं साम्यं सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ४ मि. ६ उपरि दिने, तिलासक्रान्तिः, माघस्नानारंभः। |
| २ मं. | ३४।४५ | रा.८।३९ | श्र.२५।१८ | सा.४।५२ | व.५।२५ | बा.२।५२ | म.५८।१० | रा.६।०१ | ९।०१।२१।३४ | २६।१७ | ६।४५ | ५।१५ | २५ | २ | १५ | वक्रः बुधः ४३।३३, चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्यं, पञ्चकारंभः सायं घं. ४ मि ५२ उ., मासादिः। |
| ३ बु. | ३९।२४ | रा.१०।३० | ध.३१।०३ | रा.७।०९ | सि.५।५१ | तै.७।०५ | कुंभ | अहो. | ९।०२।२२।५५ | २६।१८ | ६।४४ | ५।१६ | २६ | ३ | १६ | मुण्डनम्। |
| ४ वृ. | ४४।४० | रा.१२।३६ | श.३७।२३ | रा.९।४१ | व्य.६।४८ | व.१२।०२ | कुंभ | अहो. | ९।०३।२४।१६ | २६।१९ | ६।४४ | ५।१६ | २७ | ४ | १७ | श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा पञ्चम्याम्। |
| ५ शु. | ५०।०७ | रा.२।४१ | पूभा.४३।५८ | रा.१२।१९ | व.८।०७ | ब.१७।४४ | कु.२७।२० | सा.५।४० | ९।०४।२५।३७ | २६।२० | ६।४४ | ५।१६ | २८ | ५ | १८ | उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे पूर्वभाद्रे। |
| ६ श. | ५५।१९ | रा.४।५२ | उभा.५०।२० | रा.२।५२ | प.९।२९ | कौ.२२।४३ | मीन | अहो. | ९।०५।२६।५३ | २६।२२ | ६।४४ | ५।१६ | २९ | ६ | १९ | पश्चिमास्तो बुधः ७।४२, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्। |
| ७ र. | ५९।५२ | रा.६।४० | रे.५६।०७ | रा.५।१० | शि.१०।३३ | ग.२७।३६ | मी.५६।०७ | रा.५।१० | ९।०६।२८।०९ | २६।२४ | ६।४३ | ५।१७ | ३० | ७ | २० | पञ्चकान्तो रात्रौ घं.५ मि.१० उ., गं.४४।७ उ. ५९।७ या; गुरुगोविन्दजयन्ती, **शिवपूजनं**, उत्तरयात्रा रवेत्यां ततः पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम्। |
| ८ चं. | ६०।०० | अहो. | अश्वि.६०।०० | अहो. | सि.११।०४ | वि.३१।४० | मेष | अहो. | ९।०७।२९।२५ | २६।२६ | ६।४३ | ५।१७ | १ | ८ | २१ | पूर्वां विना यात्रा। |
| ८ मं. | ३।२८ | दि.८।५ | अश्वि.१।०३ | दि.७।०७ | सा.१०।५१ | ब.३।२८ | मेष | अहो. | ९।०८।३०।४१ | २६।२९ | ६।४२ | ५।१८ | २ | ९ | २२ | दशतारकान्तो दिवा घं.७ मि.७ उपरि, उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्। |
| ९ बु. | ५।५७ | दि.९।५ | भ.४।५२ | दि.८।३९ | शु.९।४६ | कौ.५।५७ | मे.२०।३१ | दि.२।५४ | ९।०९।३१।५७ | २६।३२ | ६।४२ | ५।१८ | ३ | १० | २३ | ॥००॥ |
| १० वृ. | ७।०८ | दि.९।३२ | कृ.७।२६ | दि.९।३९ | शु.७।३९ | ग.७।०८ | वृष | अहो. | ९।१०।३३।१२ | २६।३५ | ६।४१ | ५।१९ | ४ | ११ | २४ | श्रवणाया रविः १०।४५, कर्म १० श्रीविश्वकर्मपूजनम्, पूर्वयात्रा रोहिण्याम्। |
| ११ शु. | ७।०० | दि.९।२८ | रो.८।४३ | दि.१०।०९ | ब्र.४।३३ | वि.७।०० | वृ.३८।४६ | रा.१०।१० | ९।११।३४।२७ | २६।३८ | ६।४० | ५।२० | ५ | १२ | २५ | पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, धर्मसावर्णिमन्वादिः, पूर्वदक्षिणयात्रैकादश्यां, द.ति. ७।०० उपरि। |
| १२ श. | ५।३७ | दि.८।५५ | मृ.८।४९ | दि.१०।१२ | ऐ.००।२७ | बा.५।३७ | मिथुन | अहो. | ९।१२।३५।३६ | २६।४२ | ६।४० | ५।२० | ६ | १३ | २६ | वैधृतियोगमानं ५५।०१, श्रीनारायण १२, गोमयेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतम्। |
| १३ र. | ३।०४ | दि.७।५३ | आ.७।४४ | दि.९।४५ | वि.४९।२९ | तै.३।०४ | मि.५१।१८ | रा.३।१० | ९।१३।३६।४५ | २६।४५ | ६।३९ | ५।२१ | ७ | १४ | २७ | चतुर्दशीमानं ५६।२७, प्रदोष १४ व्रतं, **शिवपूजनम्**। ❖ पापं मे हर कौशिकि॥ |
| १५ चं. | ५५।०८ | रा.४।४१ | पुन.५।४९ | दि.८।५८ | प्री.४३।१० | वि.२७।२० | कर्क | अहो. | ९।१४।३७।५३ | २६।४८ | ६।३८ | ५।२२ | ८ | १५ | २८ | पौषी१५स्नानदानादिः, पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, **कौशिकीस्नानं** तन्मन्त्रश्च—गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः श्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये❖ |

**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** — **दैनिकलग्नसारिण्यांचक्रम्**

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | ११।०२।०४।१९ | ९।१३।५९।१९ | २।१५।५५।११ | ९।०१।४२।०८ | १।१४।१९।५५ | ८।०३।५६।०७ | ४३।०८ | १३।०७ | १५।०३ | १७।१६ | १९।३४ | २१।५० | ००।०५ | २।२३ | ४।४१ | ६।४६ | ८।३२ | १०।०३ | ११।३० |
| २ मं. | ११।०२।४७।५० | ९।१४।०१।४५ | २।१५।४७।१७ | ९।०२।५७।५६ | १।१४।१६।५७ | ८।०३।५२।५६ | ४३।०९ | १३।०३ | १४।५९ | १७।१२ | १९।३० | २१।४६ | ००।०१ | २।१९ | ४।३७ | ६।४२ | ८।२८ | ९।५९ | ११।२६ |
| ३ बु. | ११।०३।३१।२१ | ९।१३।५९।२० | २।१५।३९।४३ | ९।०४।१३।४४ | १।१४।१४।०० | ८।०३।४९।४५ | ४३।१० | १२।५९ | १४।५५ | १७।०८ | १९।२६ | २१।४२ | २३।५७ | २।१५ | ४।३३ | ६।३८ | ८।२४ | ९।५५ | ११।२२ |
| ४ वृ. | ११।०४।१४।५१ | ९।१३।४९।३१ | २।१५।३१।५९ | ९।०५।२९।३१ | १।१४।११।०३ | ८।०३।४६।३५ | ४३।१८ | १२।५५ | १४।५१ | १७।०४ | १९।२२ | २१।३८ | २३।५३ | २।११ | ४।२९ | ६।३४ | ८।२० | ९।५१ | ११।१८ |
| ५ शु. | ११।०४।५८।२१ | ९।१३।३६।५४ | २।१५।२४।१५ | ९।०६।४५।१८ | १।१४।०८।०६ | ८।०३।४३।२५ | ४३।१० | १२।५१ | १४।४७ | १७।०० | १९।१८ | २१।३४ | २३।४९ | २।०७ | ४।२५ | ६।३० | ८।१६ | ९।४७ | ११।१४ |
| ६ श. | ११।०५।४१।४० | ९।१३।००।३९ | २।१५।१७।०२ | ९।०८।०१।१३ | १।१४।०५।५८ | ८।०३।४०।१४ | ४३।१२ | १२।४६ | १४।४२ | १६।५५ | १९।१३ | २१।२९ | २३।४४ | २।०२ | ४।२० | ६।२५ | ८।११ | ९।४२ | ११।०९ |
| ७ र. | ११।०६।२४।५९ | ९।१२।२४।२४ | २।१५।०९।४९ | ९।०९।१७।०८ | १।१४।०३।५० | ८।०३।३७।०३ | ४३।१४ | १२।४२ | १४।३८ | १६।५१ | १९।०९ | २१।२५ | २३।४० | १।५८ | ४।१६ | ६।२१ | ८।०७ | ९।३८ | ११।०५ |
| ८ च. | ११।०७।०८।१८ | ९।११।४८।०९ | २।१५।०२।३६ | ९।१०।३३।०३ | १।१४।०१।४२ | ८।०३।३३।५२ | ४३।१५ | १२।३८ | १४।३४ | १६।४७ | १९।०५ | २१।२१ | २३।३६ | १।५४ | ४।१२ | ६।१७ | ८।०३ | ९।३४ | ११।०१ |
| ८ म. | ११।०७।५१।३७ | ९।११।११।५४ | २।१४।५५।२३ | ९।११।४८।५८ | १।१३।५९।३४ | ८।०३।३०।४१ | ४३।१६ | १२।३४ | १४।३० | १६।४३ | १९।०१ | २१।१७ | २३।३२ | १।५० | ४।०८ | ६।१३ | ७।५९ | ९।३० | १०।५७ |
| ९ बु. | ११।०८।३४।५५ | ९।१०।३५।३९ | २।१४।४८।१० | ९।१३।०४।५२ | १।१३।५७।२६ | ८।०३।२७।३० | ४३।१७ | १२।३० | १४।२६ | १६।३९ | १८।५७ | २१।१३ | २३।२८ | १।४६ | ४।०४ | ६।०९ | ७।५५ | ९।२६ | १०।५३ |
| १० वृ. | ११।०९।१८।१३ | ९।०९।५९।२४ | २।१४।४०।५७ | ९।१४।२०।४६ | १।१३।५५।१८ | ८।०३।२४।२० | ४३।१८ | १२।२६ | १४।२२ | १६।३५ | १८।५३ | २१।०९ | २३।२४ | १।४२ | ४।०० | ६।०५ | ७।५१ | ९।२२ | १०।४९ |
| ११ शु. | ११।१०।०१।३१ | ९।०९।२३।०९ | २।१४।३३।४५ | ९।१५।३६।४० | १।१३।५३।११ | ८।०३।२१।१० | ४३।१९ | १२।२२ | १४।१८ | १६।३१ | १८।४९ | २१।०५ | २३।२० | १।३८ | ३।५६ | ६।०१ | ७।४७ | ९।१८ | १०।४५ |
| १२ श. | ११।१०।४४।४७ | ९।०८।३७।२८ | २।१४।२७।२५ | ९।१६।५२।२५ | १।१३।५१।४३ | ८।०३।१७।५९ | ४३।२१ | १२।१७ | १४।१३ | १६।२६ | १८।४४ | २१।०० | २३।१५ | १।३३ | ३।५१ | ५।५६ | ७।४२ | ९।१३ | १०।४० |
| १३ र. | ११।११।२८।०३ | ९।०७।५१।४७ | २।१४।२१।०५ | ९।१८।०८।१० | १।१३।५०।१५ | ८।०३।१४।४८ | ४३।२३ | १२।१३ | १४।०९ | १६।२२ | १८।४० | २०।५६ | २३।११ | १।२९ | ३।४७ | ५।५२ | ७।३८ | ९।०९ | १०।३६ |
| १५ च. | ११।१२।११।१९ | ९।०७।०६।०६ | २।१४।१४।४५ | ९।१९।२३।५५ | १।१३।४८।४७ | ८।०३।११।३७ | ४३।२५ | १२।०९ | १४।०५ | १६।१८ | १८।३६ | २०।५२ | २३।०७ | १।२५ | ३।४३ | ५।४८ | ७।३४ | ९।०५ | १०।३२ |

५ शुक्रे बल्ली ८।३७।४३।४८
अयनांशाः २२।३२।२८




११ शुक्रे बल्ली ८।३७।४३।५५
अयनांशाः २२।३२।२९




**अथ विविधविषयाः — वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः—** दशमी पञ्चपंचाशद् घटिका चेत्प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्॥ दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराबिन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा॥ **नारदपुराणे** — क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम्॥ **कौर्मे—** तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन॥ **भविष्ये—** दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्तितः॥ **अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्त्ते—** चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम्॥ **अथैकादश्यां त्याज्यवस्तूनि—** कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुनम्। **केषामन्नं परान्नं नेत्याह—** गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वशुरान्नं तथैव च। पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः। **स्वपवित्रवस्तूनि—**आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।

**ग्रहस्थितिः—** मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधो २तो वक्रः ६तः पश्चिमास्तः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः।

**वातावरणम्—** पक्षस्य पूर्वार्द्धे वायुमेघच्छायाशीतादयस्तदन्तभागे मेघचारशीतवृद्धिवायुचारादयः।

# माघकृष्णपक्ष:

शकाब्द: १९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि. २९।०१।२००२ ई.त: १२।०२।२००२ई. या., पूर्वे काल:। **वक्री पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वास्त: शुक्र:, अशुद्ध:,** शिशिरर्तु:, **याम्यगोल: सौम्यायनम्।**

| ति.दि. | तिथय: द.प. | तिथय: घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगा: द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशय: रा.द.प. | चन्द्रराशय: घं.मि. | स्पष्टसूर्य: राश्यादि: | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्का: रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ५०।०८ | रा.०२।४१ | पु. ३१।०० | दि.७।५० | आ.३६।०६ | बा.२२।३८ | क.५९।३० | रा.०६।२६ | ९।१५।३९।०१ | २६।५१ | ६।३८ | ५।२२ | ९ | १६ | २९ |
| २ बु. | ४४।३४ | रा.१२।२७ | म. ५५।३६ | रा.४।५१ | सौ.२८।३६ | तै.१७।२१ | सिंह | अहो. | ९।१६।४०।०९ | २६।५४ | ६।३७ | ५।२३ | १० | १७ | ३० |
| ३ गु. | ३८।४६ | रा.१०।०७ | पूफ.५१।२९ | रा.३।१३ | शो.२०।४८ | व.११।४० | सिंह | अहो. | ९।१७।४१।१७ | २६।५७ | ६।३७ | ५।२३ | ११ | १८ | ३१ |
| ४ शु. | ३२।५३ | रा.०७।४५ | उफ.४७।१८ | रा.१।३१ | अंग.१२।५४ | ब.०५।५० | सिं०५।२६ | दि.०८।४६ | ९।१८।४२।२५ | २७।०० | ६।३६ | ५।२४ | १२ | १९ | १ |
| ५ श. | २७।०५ | सा.०५।२५ | ह.४३।१६ | रा.११।५३ | सु.०५।०९ | तै.२७।०५ | कन्या | अहो. | ९।१९।४३।२५ | २७।०४ | ६।३५ | ५।२५ | १३ | २० | २ |
| ६ र. | २१।३६ | दि.०३।१३ | चि.३९।४१ | रा.१०।२७ | शू.५०।१० | व.२१।३६ | कं.११।२९ | दि.११।११ | ९।२०।४४।२४ | २७।०७ | ६।३५ | ५।२५ | १४ | २१ | ३ |
| ७ सो. | १६।४० | दि.१।१४ | स्वा.३६।३९ | रा.९।१४ | गं.४३।२४ | ब.१६।४० | तुला | अहो. | ९।२१।४५।२३ | २७।१० | ६।३४ | ५।२६ | १५ | २२ | ४ |
| ८ मं. | १२।२७ | दि.११।३२ | वि.३४।२७ | रा.८।२० | वृ.३७।१८ | कौ.१२।२७ | तु.२०।०० | दि.०२।१३ | ९।२२।४६।२२ | २७।१३ | ६।३३ | ५।२७ | १६ | २३ | ५ |
| ९ बु. | ०९।०४ | दि.१०।११ | अनु. ३३।०४ | रा.७।४७ | ध्रु.३१।५५ | ग.०९।०४ | वृश्चिक | अहो. | ९।२३।४७।२१ | २७।१६ | ६।३३ | ५।२७ | १७ | २४ | ६ |
| १० गु. | ०६।४३ | दि.०९।१३ | ज्ये.३२।४५ | रा.७।३८ | व्या.२७।२२ | वि.०६।४३ | वृ.३२।४५ | रा.०७।३८ | ९।२४।४८।२० | २७।१९ | ६।३२ | ५।२८ | १८ | २५ | ७ |
| ११ शु. | ०५।३५ | दि.०८।४६ | मू.३३।४२ | रा.८।०१ | ह.२३।४८ | बा.०५।३५ | धनु | अहो. | ९।२५।४९।१९ | २७।२२ | ६।३२ | ५।२८ | १९ | २६ | ८ |
| १२ श. | ०५।४३ | दि.०८।४८ | पूषा.३५।५३ | रा.८।५२ | व.२१।१४ | तै.०५।४३ | ध.५१।४५ | रा.०३।१३ | ९।२६।५०।१० | २७।२६ | ६।३१ | ५।२९ | २० | २७ | ९ |
| १३ र. | ०७।११ | दि.०९।२२ | उषा.३९।२३ | रा.१०।१५ | सि.१९।४३ | व.०७।११ | मकर | अहो. | ९।२७।५१।०१ | २७।३० | ६।३० | ५।३० | २१ | २८ | १० |
| १४ सो. | ०९।५१ | दि.१०।२५ | श्र.४४।०० | रा.१२।०५ | व्य.१९।०२ | श.०९।५१ | मकर | अहो. | ९।२८।५१।५२ | २७।३४ | ६।२९ | ५।३१ | २२ | २९ | ११ |
| ३० मं | १३।४१ | दि.११।५७ | ध.४९।३४ | रा.२।१९ | व.१९।१६ | ना.१३।४१ | म.१६।४७ | दि.१।१२ | ९।२९।५२।४३ | २७।३७ | ६।२९ | ५।३१ | २३ | ३० | १२ |

आश्लेषामानं ५६।३०, गं. ४८।३०उ., **लक्ष्मणसंवत्** ८९३ प्रारंभ:, माघे **कमलास्नानं** महापुण्यप्रदम्।
गं.३।३० यावत्।
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
फरवरी २, **श्रीगणेशावतार:, श्रीगणेश ४ व्रतं,** श्रीगणेशपूजनं, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
धृतियोगमानं ५२।१९, दक्षिणयात्रा षष्ठ्याम्।
**शिवपूजनम्,** दक्षिणयात्रा सप्तम्याम्।
पूर्वोदितो बुध: १०।५०, पश्चिमदक्षिणयात्राष्टम्यां स्वात्यां, (७—८) एकोद्दिष्टम्।
**अपूपाष्टका,** अन्वष्टकानवमी, पश्चिमयात्रानुराधायाम्।
**धनिष्ठायां रवि:** १६।४४, कुंभे शुक्र ८।७, पश्चिमयात्रा दशम्याम्।
मार्गी बुध: ४३।५०, गं. २६।४५ उ.४१।४५या., पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत: पूर्वोत्तरयात्रा मूले।
**षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषां,** द.ति.५।३५ उ., पूर्वोत्तरयात्रैकादश्याम्। ✦४२६८९८, सृष्टिगताब्दा: १९७२९४९१०२, भोग्याब्दा: २३४७०५०८९८।
द.ति. ५।४३ या., गोदुग्धेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां पूर्वाषाढे।
मार्गी शनि: ४४।०७, **शिवपूजनं,** प्रदोष १ व्रतं, **नरकनिवारण** १४ व्रतं प्रदोष: घं. ७ मि. ६ यावद्रात्रौ **शिवपूजनं** सहस्राश्वमेधसमफलदम्।
**पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. १२ मि. ५ उ., **सोमवती** ३० व्रतं घं. १० मि.२५ उपरिदिने, (३०) एकोद्दिष्टम्।
**कुंभे रवि:** ५१।०० मु १५ फलं महार्घ, माघी ३० **मौनी ३०** स्नानदानादि:, मासान्त:, (१) एकोद्दिष्टम्, कलियुगादि:, कलिगताब्दा: ५१०२, भोग्याब्दा: ✦

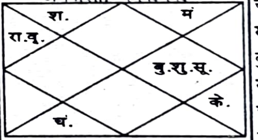
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च**

| ति.दि. | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ११।१२।५४।३५ | ९।०६।२०।२५ | २।१४।०८।२६ | ९।२०।३९।४० | १।१३।४७।१९ | ८।०३।०८।२६ |
| २ बु. | ११।१३।३७।५० | ९।०५।३४।४४ | २।१४।०२।०७ | ९।२१।५५।२५ | १।१३।४५।५१ | ८।०३।०५।१५ |
| ३ गु. | ११।१४।२१।०५ | ९।०४।४९।०३ | २।१३।५५।४८ | ९।२३।११।१० | १।१३।४४।२३ | ८।०३।०२।०५ |
| ४ शु. | ११।१५।०४।२० | ९।०४।०३।२२ | २।१३।४९।२९ | ९।२४।२६।५४ | १।१३।४२।५६ | ८।०२।५८।५५ |
| ५ श. | ११।१५।४७।२७ | ९।०३।३१।३३ | २।१३।४४।०७ | ९।२५।४२।२८ | १।१३।४२।३७ | ८।०२।५५।४४ |
| ६ र. | ११।१६।३०।३५ | ९।०३।१५।०१ | २।१३।३८।४५ | ९।२६।५८।०२ | १।१३।४२।१८ | ८।०२।५२।३३ |
| ७ सो. | ११।१७।१३।४१ | ९।०२।५८।२९ | २।१३।३३।२३ | ९।२८।१३।३६ | १।१३।४२।०० | ८।०२।४९।२२ |
| ८ मं. | ११।१७।५६।४८ | ९।०२।४१।५८ | २।१३।२८।०१ | ९।२९।२९।१० | १।१३।४१।४२ | ८।०२।४६।११ |
| ९ बु. | ११।१८।३९।५४ | ९।०२।२५।२७ | २।१३।२२।३९ | १०।००।४४।४४ | १।१३।४१।२४ | ८।०२।४३।०० |
| १० गु. | ११।१९।२३।०० | ९।०२।२४।३१ | २।१३।१७।१८ | १०।०२।००।१८ | १।१३।४१।०६ | ८।०२।३९।४९ |
| ११ शु. | ११।२०।०६।०६ | ९।०२।२८।५९ | २।१३।११।५७ | १०।०३।१५।५१ | १।१३।४०।४८ | ८।०२।३६।३९ |
| १२ श. | ११।२०।४८।५६ | ९।०२।५८।१९ | २।१३।०७।४६ | १०।०४।३१।२१ | १।१३।४०।३३ | ८।०२।३३।२८ |
| १३ र. | ११।२१।३१।४६ | ९।०३।२७।३९ | २।१३।०३।३५ | १०।०५।४६।५० | १।१३।४०।२४ | ८।०२।३०।१७ |
| १४ सो. | ११।२२।१४।३६ | ९।०३।५६।५९ | २।१२।५९।२४ | १०।०७।०२।१९ | १।१३।४०।२६ | ८।०२।२७।०६ |
| ३० मं. | ११।२२।५७।२६ | ९।०४।२६।१८ | २।१२।५५।१४ | १०।०८।१७।४८ | १।१३।४०।२९ | ८।०२।२३।५५ |

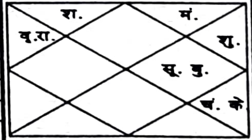
**दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ४३।२७ | १२।०५ | १४।०१ | १६।१४ | १८।३२ | २०।४८ | २३।०३ | १।२१ | ३।३९ | ५।४४ | ७।३० | ९।०१ | १०।२८ |
| २ बु. | ४३।२८ | १२।०१ | १३।५७ | १६।१० | १८।२८ | २०।४४ | २२।५९ | १।१७ | ३।३५ | ५।४० | ७।२६ | ८।५७ | १०।२४ |
| ३ गु. | ४३।२९ | ११।५६ | १३।५२ | १६।०५ | १८।२३ | २०।३९ | २२।५४ | १।१२ | ३।३० | ५।३५ | ७।२१ | ८।५२ | १०।१९ |
| ४ शु. | ४३।३० | ११।५२ | १३।४८ | १५।०१ | १८।१९ | २०।३५ | २२।५० | १।०८ | ३।२६ | ५।३१ | ७।१७ | ८।४८ | १०।१५ |
| ५ श. | ४३।३२ | ११।४८ | १३।४४ | १५।५७ | १८।१५ | २०।३१ | २२।४६ | १।०४ | ३।२२ | ५।२७ | ७।१३ | ८।४४ | १०।११ |
| ६ र. | ४३।३४ | १।४४ | १३।४० | १५।५३ | १८।११ | २०।२७ | २२।४२ | १।०० | ३।१८ | ५।२३ | ७।०९ | ८।४० | १०।०७ |
| ७ सो. | ४३।३६ | ११।४० | १३।३६ | १५।४९ | १८।०६ | २०।२३ | २२।३८ | ०।५६ | ३।१४ | ५।१९ | ७।०५ | ८।३६ | १०।०३ |
| ८ मं. | ४३।३८ | ११।३५ | १३।३१ | १५।४४ | १८।०२ | २०।१८ | २२।३३ | ०।५१ | ३।०९ | ५।१४ | ७।०० | ८।३१ | ९।५८ |
| ९ बु. | ४३।३९ | ११।३१ | १३।२७ | १५।४० | १७।५८ | २०।१४ | २२।२९ | ०।४७ | ३।०५ | ५।१० | ६।५६ | ८।२७ | ९।५४ |
| १० गु. | ४३।४० | ११।२७ | १३।२३ | १५।३६ | १७।५४ | २०।१० | २२।२५ | ०।४३ | ३।०१ | ५।०६ | ६।५२ | ८।२३ | ९।५० |
| ११ शु. | ४३।४१ | ११।२३ | १३।१९ | १५।३२ | १७।५० | २०।०६ | २२।२१ | ०।३९ | २।५७ | ५।०२ | ६।४८ | ८।१९ | ९।४६ |
| १२ श. | ४३।४३ | ११।१९ | १३।१५ | १५।२८ | १७।४६ | २०।०२ | २२।१७ | ०।३५ | २।५३ | ४।५८ | ६।४४ | ८।१५ | ९।४२ |
| १३ र. | ४३।४५ | ११।१५ | १३।११ | १५।२४ | १७।४२ | १९।५८ | २२।१३ | ०।३१ | २।४९ | ४।५४ | ६।४० | ८।११ | ९।३८ |
| १४ सो. | ४३।४७ | ११।११ | १३।०७ | १५।२० | १७।३८ | १९।५४ | २२।०९ | ०।२७ | २।४५ | ४।५० | ६।३६ | ८।०७ | ९।३४ |
| ३० मं. | ४३।४९ | ११।०७ | १३।०३ | १५।१६ | १७।३४ | १९।५० | २२।०५ | ०।२३ | २।४१ | ४।४६ | ६।३२ | ८।०३ | ९।३० |

४ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।०२
अयनांशा: २२।३२।३०




११ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।०९
अयनांशा: २२।३२।३१




**अथ विविधविषया: —** माघे प्रात:स्नानफलम्— यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ। **मकरार्के प्रात: स्नानमन्त्रा:—** मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रात:स्नानेन मे देव **यथोक्तफलदो** भव। दु:खदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रात:स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्। **माघे कुत्रापि स्नानफलं—** स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। **चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्ति:—** सर्वदेवमय: साक्षात्सर्वमंगलकारक:। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिप:। तत्र गणेशं यथोपलब्धोपचारै: संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां **नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्—** चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय:। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।

**ग्रहस्थिति:—** मार्गी पूर्वोदित: कुज:, वक्र: पश्चिमास्तो बुध: ७त: पूर्वोदित: १०तो मार्गी, वक्र:पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वास्त: शुक्र:, वक्र: पूर्वोदित: शनि: १३तो मार्गी।

**वातावरणम्—** पक्षाद्यन्तभागयो: वायुशीतवृद्धिमेघच्छायादयस्तन्मध्यभागे वायुमेघचारशीतादय:।

# माघशुक्लपक्ष:

शकाब्द: १९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.१३।०२।२००२ ई.त: २७।२।२००२ई.या., दक्षिणे काल:।
वक्र: पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वास्त: शुक्र:, इत: पश्चिमोदित:, अशुद्ध:, शिशिरर्तु:, याम्यगोल:, सौम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथय: | | नक्षत्राणि | | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: | | स्पष्टसूर्य: | दिनमान | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादि: | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सो. | अ. |
| १ बु. | १८।२४ | दि.१।५० | श.५५।४८ | रा.४।४७ | प.२०।०६ | ब.१८।२४ | कुंभ | अहो. | १०।००।५३।३४ | २७।४० | ६।२८ | ५।३२ | २४ | १ | १३ |
| २ वृ. | २३।४१ | दि.३।५५ | पूभा.६०।०० | अहो. | शि.२१।२५ | कौ.२३।४१ | कु.४५।४६ | रा.१२।४५ | १०।०१।५४।२५ | २७।४३ | ६।२७ | ५।३३ | २५ | २ | १४ |
| ३ शु. | २९।०९ | सा.६।०७ | पूभा.२।२८ | दि.७।२५ | सि.२२।५१ | ग.२९।०९ | मीन | अहो | १०।०२।५५।१५ | २७।४६ | ६।२७ | ५।३३ | २६ | ३ | १५ |
| ४ श. | ३४।१७ | रा.८।०९ | उभा.८।५३ | दि.९।५९ | सा.२४।०७ | व.१।४३ | मीन | अहो. | १०।०३।५५।५४ | २७।५० | ६।२६ | ५।३४ | २७ | ४ | १६ |
| ५ र. | ३८।४३ | रा.९।५४ | रे.१४।५० | दि.१२।२१ | शु.२४।५२ | व.६।३० | मी.१४।५० | दि.१२।२१ | १०।०४।५६।३२ | २७।५४ | ६।२५ | ५।३५ | २८ | ५ | १७ |
| ६ सो. | ४२।०८ | रा.११।१५ | अ.१९।५९ | दि.२।२४ | शु.२५।०१ | कौ.१०।२६ | मेष | अहो. | १०।०५।५७।१० | २७।५८ | ६।२४ | ५।३६ | २९ | ६ | १८ |
| ७ म. | ४४।३० | रा.१२।१२ | भ.२४।०३ | दि.४।०१ | ब्र.२४।१२ | ग.१३।१९ | मे.३९।४६ | रा.१०।१८ | १०।०६।५७।४८ | २८।०१ | ६।२४ | ५।३६ | ३० | ७ | १९ |
| ८ बु. | ४५।३२ | रा.१२।३६ | कृ.२६।५८ | दि.५।०९ | ऐ.२२।३० | वि.१५।०१ | वृष | अहो. | १०।०७।५८।२६ | २८।०४ | ६।२३ | ५।३७ | १ | ८ | २० |
| ९ वृ. | ४५।१४ | रा.१२।२९ | रो.२८।३१ | सा.५।४७ | वै.१९।४६ | बा.१५।२३ | वृ.५८।४३ | रा.५।५२ | १०।०८।५९।०४ | २८।०७ | ६।२३ | ५।३७ | २ | ९ | २१ |
| १० शु. | ४३।४३ | रा.११।५१ | मृ.२८।५४ | सा.५।५६ | वि.१६।०३ | तै.१४।२९ | मिथुन | अहो | १०।०९।५९।४२ | २८।१० | ६।२२ | ५।३८ | ३ | १० | २२ |
| ११ श | ४१।०३ | रा.१०।४६ | आ.२८।०८ | सा.५।३५ | प्री.११।२४ | व.१२।२३ | मिथुन | अहो. | १०।११।००।०६ | २८।१४ | ६।२१ | ५।३९ | ४ | ११ | २३ |
| १२ र. | ३८।२४ | रा.९।४२ | पुन.२६।१८ | दि.४।५१ | आ.५।५३ | व.९।४४ | मि.११।४८ | दि.११।०२ | १०।१२।००।३० | २८।१८ | ६।२० | ५।४० | ५ | १२ | २४ |
| १३ सो. | ३२।५५ | रा.७।३० | पु.२३।३९ | दि.३।४८ | शो.५२।५१ | कौ.५।४० | कर्क | अहो | १०।१३।००।५४ | २८।२२ | ६।२० | ५।४० | ६ | १३ | २५ |
| १४ म | २७।४८ | सा.५।२६ | आश्ले.२०।२१ | दि.२।२७ | अग.४५।३२ | ग.००।२२ | क.२०।२१ | दि.२।२७ | १०।१४।०१।१८ | २८।२६ | ६।१९ | ५।४१ | ७ | १४ | २६ |
| १५ बु. | २२।१० | दि.३।१० | म.१६।३१ | दि.१२।५४ | सु.३७।५५ | ब.२२।१० | सिंह | अहो. | १०।१५।०१।४२ | २८।३० | ६।१८ | ५।४२ | ८ | १५ | २७ |

विष्णुपदी संक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि.०० यावद्दिने, माघस्नानसमाप्ति:, शिशिरनवरात्रारंभ:, कलशस्थापन, श्रीदुर्गापूजनोत्सव:, श्रीवल्लभाचार्यजयन्ती।

चन्द्रदर्शन मु. ३० फल साम्यं, मासादि:, (२) एकोद्दिष्टम्।

वदरतृतीया कुन्दकुसुमै: पार्वतीपूजनं, श्रीगणेश ४व्रत, कुन्द४, उत्तरयात्रा पूर्वाभाद्रे, द.ति.२९।०८ उपरि। प्रथमाब्दीय द्विरागमनं तृतीयायामुत्तरभाद्रे।

द.ति.३४।१७ या.। ❖तत: पश्चिमां विना यात्रा पंचम्याम्। प्र० द्विरागमनं पञ्चम्याम्।

सौर ५ वसन्तपंचमी, श्रीसरस्वतीपूजनं, उत्तराभिमुखहलप्रवाह:, पंचकान्तो दिवा घं.१२ मि.२१ उ., ग. २।५० उ. १७।५० या., उत्तरयात्रा रेवत्यां ❖

शतभिषायां रवि: २७।००, पश्चिमोदित: शुक्र: ३१।३०,प्रथमाब्दीय द्विरागमनं पूर्वां विना यात्रा चाश्विन्याम्।

अचला ७ ब्रह्मसावर्णिमन्वादि:, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमफलदं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमफलदं प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमफलदम्।

भीष्माष्टमी, श्रीभीष्मतर्पणम्।

गृहप्रवेशो दक्षिणां विना यात्रा प्र० द्विरागमनञ्च दशम्याम्॥

अश्विन्यां मेषे कुज: ३६।३९, मुण्डनं, गृहप्रवेश: पश्चिमां विना यात्रा प्र० द्विरागमनञ्च मृगशिरसि।

भैमी ११ व्रतं सर्वेषां, गृहप्रवेश: पुनर्वसावेकादश्यां, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।

सौभाग्ययोगमानं ५३।४९, श्रीमाधव १२ गोदुग्धेन पारणं, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थेचन्द्रे तत: उत्तरयात्रा पुनर्वसौ तत: पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये, प्र० द्विरागमनम्।

प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोष १४ व्रत. मुण्डनं, गृहप्रवेश: प्र० द्विरागमनं पूर्वां विना यात्रा च पुष्ये।

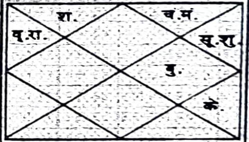
ग.९।२१ उ. २४।२१ यावत्।

महामाघी १५ स्नानदानार्चनजपपाठादय:, श्रीरविदासजयंती, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, गोशालाषष्ट्टे कमलायां जीवछषट्टे जीववत्सायां च स्नानशिवार्चनादिकम्।

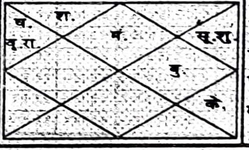
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमान | मे.अ. | वृ.अ. | मि.अ. | क.अ. | सिं.अं. | कं.अ. | तु.अ. | वृ.अ. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बु. | ११।२३।४०।१६ | ९।०४।५५।३७ | २।१२।५१।०४ | १०।०९।३३।१७ | १।१३।४०।३३ | ८।०२।२०।४४ | ४३।५१ | ११।०४ | १३।०० | १५।१३ | १७।३१ | १९।४७ | २२।०२ | ०।२० | २।३८ | ४।४३ | ६।२९ | ८।०० | ९।२७ |
| २ वृ. | ११।२४।२३।०६ | ९।०५।२४।५६ | २।१२।४६।५४ | १०।१०।४८।४६ | १।१३।४०।३८ | ८।०२।१७।३४ | ४३।५२ | ११।०० | १२।५६ | १५।०९ | १७।२७ | १९।४३ | २१।५८ | ०।१६ | २।३४ | ४।३९ | ६।२५ | ७।५६ | ९।२३ |
| ३ शु. | ११।२५।०५।५६ | ९।०५।५४।१५ | २।१२।४२।४४ | १०।१२।०४।१५ | १।१३।४०।४३ | ८।०२।१४।२४ | ४३।५३ | १०।५६ | १२।५२ | १५।०५ | १७।२३ | १९।३९ | २१।५४ | ०।१२ | २।३० | ४।३५ | ६।२१ | ७।५२ | ९।१९ |
| ४ श. | ११।२५।४८।४२ | ९।०६।५६।०५ | २।१२।४०।०२ | १०।१३।१९।३२ | १।१३।४२।१० | ८।०२।११।१३ | ४३।५५ | १०।५२ | १२।४८ | १५।०१ | १७।१९ | १९।३५ | २१।५० | ०।०८ | २।२६ | ४।३१ | ६।१७ | ७।४८ | ९।१५ |
| ५ र. | ११।२६।३१।२८ | ९।०७।५७।५४ | २।१२।३७।२० | १०।१४।३४।४९ | १।१३।४३।३६ | ८।०२।०८।०२ | ४३।५७ | १०।४८ | १२।४४ | १४।५७ | १७।१५ | १९।३१ | २१।४६ | ०।०४ | २।२२ | ४।२७ | ६।१३ | ७।४४ | ९।११ |
| ६ सो. | ११।२७।१४।१४ | ९।०८।५९।४३ | २।१२।३४।३८ | १०।१५।५०।०६ | १।१३।४५।०२ | ८।०२।०४।५१ | ४३।५९ | १०।४४ | १२।४० | १४।५३ | १७।११ | १९।२७ | २१।४२ | ०।०० | २।१८ | ४।२३ | ६।०९ | ७।४० | ९।०७ |
| ७ म. | ११।२७।५७।०० | ९।१०।०१।३२ | २।१२।३१।५६ | १०।१७।०५।२३ | १।१३।४६।२८ | ८।०२।०१।४० | ४४।०१ | १०।४० | १२।३६ | १४।४९ | १७।०७ | १९।२३ | २१।३८ | २३।५६ | २।१४ | ४।१९ | ६।०५ | ७।३६ | ९।०३ |
| ८ बु. | ११।२८।३९।४६ | ९।११।०३।२१ | २।१२।२९।१५ | १०।१८।२०।४० | १।१३।४७।५४ | ८।०१।५८।२९ | ४४।०३ | १०।३६ | १२।३२ | १४।४५ | १७।०३ | १९।१९ | २१।३४ | २३।५२ | २।१० | ४।१५ | ६।०१ | ७।३२ | ८।५९ |
| ९ वृ. | ११।२९।२२।३२ | ९।१२।०५।१० | २।१२।२६।३४ | १०।१९।३५।५७ | १।१३।४९।२० | ८।०१।५५।१९ | ४४।०४ | १०।३३ | १२।२९ | १४।४२ | १७।०० | १९।१६ | २१।३१ | २३।४९ | २।०७ | ४।१२ | ५।५८ | ७।२९ | ८।५६ |
| १० शु. | ००।००।०५।१८ | ९।१३।०६।५९ | २।१२।२३।५३ | १०।२०।५१।१३ | १।१३।५०।४६ | ८।०१।५२।०९ | ४४।०५ | १०।२९ | १२।२५ | १४।३८ | १६।५६ | १९।१२ | २१।२७ | २३।४५ | २।०३ | ४।०८ | ५।५४ | ७।२५ | ८।५२ |
| ११ श. | ००।००।४७।४३ | ९।१४।३०।०४ | २।१२।२२।१३ | १०।२२।०६।१२ | १।१३।५२।४७ | ८।०१।४८।५८ | ४४।०७ | १०।२५ | १२।२१ | १४।३४ | १६।५२ | १९।०८ | २१।२३ | २३।४१ | १।५९ | ४।०४ | ५।५० | ७।२१ | ८।४८ |
| १२ र. | ००।०१।३०।०७ | ९।१५।५३।०९ | २।१२।२१।१३ | १०।२३।२१।११ | १।१३।५४।४८ | ८।०१।४५।४७ | ४४।०९ | १०।२१ | १२।१७ | १४।३० | १६।४८ | १९।०४ | २१।१९ | २३।३७ | १।५५ | ४।०० | ५।४६ | ७।१७ | ८।४४ |
| १३ सो. | ००।०२।१२।३१ | ९।१७।१६।०४ | २।१२।१९।५४ | १०।२४।३६।१० | १।१३।५६।४९ | ८।०१।४२।३६ | ४४।११ | १०।१७ | १२।१३ | १४।२६ | १६।४४ | १९।०० | २१।१५ | २३।३३ | १।५१ | ३।५६ | ५।४२ | ७।१३ | ८।४० |
| १४ म | ००।०२।५४।५५ | ९।१८।३९।११ | २।१२।१८।३५ | १०।२५।५१।०८ | १।१३।५८।४९ | ८।०१।३९।२५ | ४४।१३ | १०।१३ | १२।०९ | १४।२२ | १६।४० | १८।५६ | २१।११ | २३।२९ | १।४७ | ३।५२ | ५।३८ | ७।०९ | ८।३६ |
| १५ बु. | ००।०३।३७।१९ | ९।२०।०२।२४ | २।१२।१७।१६ | १०।२७।०६।०६ | १।१४।००।४९ | ८।०१।३६।१४ | ४४।१५ | १०।०९ | १२।०६ | १४।१९ | १६।३७ | १८।५३ | २१।०८ | २३।२६ | १।४४ | ३।४९ | ५।३५ | ७।०६ | ८।३३ |

३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।१६
अयनांशा: २२।३२।३२




१० शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।२३
अयनांशा: २२।३२।३३




**अथ विविधविषया: —** अचलासप्तम्यां सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमन्त्र:— यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुन:। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमि। तत: **सूर्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्र:—** सप्तसप्तेरह: प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर। तत: प्रणमेच्च तन्मन्त्र:— जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये। ततो दानादिकं कुर्यात्। **अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्र:—** वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे। भीष्म: शान्तनवो वीर: सत्यवादी जितेन्द्रिय:। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्। अनेन सन्ततिलाभ: संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्रापि कर्तव्यम्।

**ग्रहस्थिति:—** मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजबुधशनय:, वक्र: पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पूर्वास्तो बुध: इत: पश्चिमोदित:।

**वातावरणम्—** पक्षाद्यन्तभागयोर्मेघचाराच्छिन्नवृष्टिवायवस्तन्मध्यभागो तापवृद्धिमेघच्छायादय:।

# फाल्गुनकृष्णपक्षः

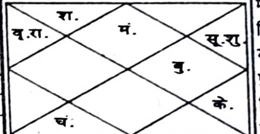
शकाब्दः१९२३, संवत् २०५८, सन् १४०९ साल, दि.२८।२।२००२ ई.त:१४।३।२००२ ई.या., दक्षिणे कालः। वक्रः पूर्वोदितो गुरुः ७तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | चन्द्रराशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | १६।२१ | दि.१२।४९ | पूफ.१२।२७ | दि.११।१६ | धृ.३०।०६ | कौ.१६।२१ | सिं.२३।२४ | दि.४।५१ | १०।१६।०२।०६ | २८।३५ | ६।१७ | ५।४३ | ९ | १६ | २८ | पुष्टः शुक्रः शुद्धारम्भः३१।३०३., विवाहो द्विरागमनं च सायं घं.६ मि.५३ उपरि रात्रौ, गृहारंभो द्वितीयायां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, (१–२) एको० फाल्गुने ● |
| २ शु. | १०।२५ | दि.१०।२६ | उफ.८।१६ | दि.९।३४ | शू.२२।१७ | ग.१०।२५ | कन्या | अहो. | १०।१७।०२।२९ | २८।३८ | ६।१६ | ५।४४ | १० | १७ | ०१ | मार्च ३, विवाहो दिवारात्रौ, गृहारम्भः,मुण्डनं कर्णवेधश्च हस्ते, द्विरागमनं पूर्वदक्षिणयात्रा च तृतीयायाम्। ● वाङ्मतीस्नानं महापुण्यप्रदम्। |
| ३ श. | ०४।३७ | दि.०८।०७ | ह.४।१२ | दि.७।५७ | गं.१४।३७ | वि.४।३७ | कं.३२।२२ | रा.७।१३ | १०।१८।०२।४२ | २८।४२ | ६।१६ | ५।४४ | ११ | १८ | ०२ | चतुर्थीमानं ५४।३२, मीने शुक्रः ३।३०, श्रीगणेश ४ व्रतं, गृहारम्भः दक्षिणयात्रा च तृतीयायां द.ति.४।३७ उ. ५९।०९ या.। |
| ५ र. | ५४।१० | रा.३।५५ | चि.००।३१ | प्रा.६।२७ | वृ.७।१४ | कौ.२६।३९ | तुला | अहो. | १०।१९।०२।५५ | २८।४६ | ६।१५ | ५।४५ | १२ | १९ | ०३ | स्वातीमानं ५६।४९, विवाहः स्वात्यां, द्विरागमनं दक्षिणयात्रा च पंचम्याम्। |
| ६ च. | ४९।५७ | रा.२।१३ | वि.५४।५९ | रा.४।१४ | ध्रु.०१।२० | ग.२२।०३ | तु.४०।३५ | रा.१०।२८ | १०।२०।०३।०७ | २८।५० | ६।१४ | ५।४६ | १३ | २० | ०४ | व्याघातयोगमानं ५३।४५, पूर्वभाद्रे रविः ४१।१९। |
| ७ मं. | ४६।३६ | रा.१२।५१ | अनु.५३।२३ | रा.३।३४ | ह.४८।२९ | वि.१८।१७ | वृश्चिक | अहो. | १०।२१।०३।१९ | २८।५४ | ६।१३ | ५।४७ | १४ | २१ | ०५ | मार्गी गुरुः १४।१९, पश्चिमयात्रा। |
| ८ बु. | ४४।१६ | रा.११।५४ | ज्ये.५२।५२ | रा.३।२१ | व.४३।४४ | बा.१५।२६ | वृ.५२।५२ | रा.३।२१ | १०।२२।०३।३१ | २८।५८ | ६।१२ | ५।४८ | १५ | २२ | ०६ | कुंभे बुधः १४।००, गं.४६।५२ उपरि, शाकाष्टका। |
| ९ वृ. | ४३।१० | रा.११।२८ | मू.५३।३३ | रा.३।३७ | सि.३९।५४ | तै.१३।४३ | धनु. | अहो. | १०।२३।०३।४३ | २९।०२ | ६।१२ | ५।४८ | १६ | २३ | ०७ | विवाहो दशम्यां मूले, पूर्वोत्तरयात्रा दशम्यां, अन्वष्टकानवमी, ग.१।५२ या.। |
| १० शु. | ४३।१८ | रा.११।३० | पूषा.५५।३० | रा.४।२३ | व्य.३७।०५ | व.१३।१४ | धनु. | अहो. | १०।२४।०३।५५ | २९।०६ | ६।११ | ५।४९ | १७ | २४ | ०८ | पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे। ◆सिंहेश्वरनाथयोः प्रतिष्ठादिनं, सिंहेश्वरमेलापकः, श्रीशिवपार्वतीपूजनदर्शनादिकं, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। |
| ११ श. | ४४।४८ | रा.१२।५ | उषा.५८।४४ | रा.५।४० | वरी.३५।१६ | ब.१४।०३ | ध.११।१९ | दि.१०।४२ | १०।२५।०३।५३ | २९।१० | ६।१० | ५।५० | १८ | २५ | ०९ | पूर्वास्तो बुधः ५९।३१, विजया ११ व्रतं सर्वेषाम्। |
| १२ र. | ४७।२८ | रा.१।०८ | श्र.६०।०० | अहो. | प.३४।२६ | कौ.१६।०८ | मकर | अहो. | १०।२६।०३।५१ | २९।१४ | ६।०९ | ५।५१ | १९ | २६ | १० | विवाहो दिवारात्रौ, गोवत्सा पारणं, पश्चिमां विना यात्रा। |
| १३ च. | ५१।१६ | रा.२।३८ | श्र.३।०३ | दि.७।२१ | शि.३४।३२ | ग.१९।२२ | म.३५।४५ | रा.८।२६ | १०।२७।०३।४९ | २९।१८ | ६।०८ | ५।५२ | २० | २७ | ११ | पंचकारम्भो दिवा घं.७ मि.२१ उ., प्रदोष १३ व्रतं, विवाहस्त्रयोदश्यां, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, पश्चिमयात्रा कुंभगे चन्द्रेत्रयोदश्याम्। |
| १४ मं | ५५।५६ | रा.४।३० | ध.८।२७ | दि.९।३१ | सि.३५।२० | वि.२३।३६ | कुंभ | अहो. | १०।२८।०३।४६ | २९।२२ | ६।०८ | ५।५२ | २१ | २८ | १२ | महाशिवरात्रिव्रतं, नक्तव्रतं प्रदोष १४ व्रतं, प्रदोषे घं.७ मि.२८ यावद्रात्रौ शिवपूजनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः, श्रीरावणेश्वरवैद्यनाथ ◆ |
| ३० बु. | ६०।०० | अहो. | श.१४।३२ | दि.११।५६ | सा.३६।३६ | च.२८।३३ | कुंभ | अहो. | १०।२९।०३।४३ | २९।२६ | ६।०७ | ५।५३ | २२ | २९ | १३ | फाल्गुनी ३०, गोसहस्रिका ३० स्नानदानादिः, मासान्तः। |
| ३० वृ. | १।०९ | दि.६।४० | पूभा.२१।०८ | दि.२।३३ | शु.३८।०७ | ना.१।०९ | कुं.४।२९ | दि.७।५४ | ११।००।०३।४० | २९।३० | ६।०६ | ५।५४ | २३ | ०१ | १४ | मीने रविः ४०।४८ मु.४५ फलं समर्घं षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि. ०० उपरि दिने। |

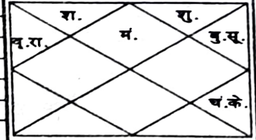
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** — **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | ०।०४।१९।४३ | ९।२१।२५।२९ | २।१२।१५।५७ | १०।२८।२१।०४ | १।१४।०२।४९ | ८।०१।३३।०४ | ४४।१७ | १०।०६ | १२।०२ | १४।१५ | १६।३३ | १८।४९ | २१।०४ | २३।२२ | १।४० | ३।४५ | ५।३१ | ७।०२ | ८।२९ |
| २ शु. | ०।०५।०२।०७ | ९।२२।४८।३४ | २।१२।१४।३८ | १०।२९।३६।०२ | १।१४।०४।४९ | ८।०१।२९।५४ | ४४।१९ | १०।०२ | ११।५८ | १४।११ | १६।२९ | १८।४५ | २१।०० | २३।१८ | १।३६ | ३।४१ | ५।२७ | ६।५८ | ८।२५ |
| ३ श. | ०।०५।४४।२५ | ९।२४।२४।४२ | २।१२।१४।१५ | ११।००।५०।५६ | १।१४।०७।३८ | ८।०१।२६।४३ | ४४।२१ | ९।५८ | ११।५४ | १४।०७ | १६।२५ | १८।४१ | २०।५६ | २३।१४ | १।३२ | ३।३७ | ५।२३ | ६।५४ | ८।२१ |
| ५ र. | ०।०६।२६।४३ | ९।२६।००।५० | २।१२।१३।५२ | ११।०२।०५।५० | १।१४।१०।२६ | ८।०१।२३।३२ | ४४।२३ | ९।५४ | ११।५० | १४।०३ | १६।२१ | १८।३७ | २०।५२ | २३।१० | १।२८ | ३।३३ | ५।१९ | ६।५० | ८।१७ |
| ६ च. | ०।०७।०९।०१ | ९।२७।३६।५८ | २।१२।१३।३० | ११।०३।२०।४४ | १।१४।१३।१४ | ८।०१।२०।२१ | ४४।२५ | ९।५१ | ११।४७ | १४।०० | १६।१८ | १८।३४ | २०।४९ | २३।०७ | १।२५ | ३।३० | ५।१६ | ६।४७ | ८।१४ |
| ७ मं. | ०।०७।५१।१९ | ९।२९।१३।०६ | २।१२।१३।३५ | ११।०४।३५।३ | १।१४।१६।०२ | ८।०१।१७।१० | ४४।२७ | ९।४७ | ११।४३ | १३।५६ | १६।१४ | १८।३० | २०।४५ | २३।०३ | १।२१ | ३।२६ | ५।१२ | ६।४३ | ८।१० |
| ८ बु. | ०।०८।३३।३७ | १०।००।४९।१४ | २।१२।१४।०२ | ११।०५।५०।३२ | १।१४।१८।५० | ८।०१।१३।५९ | ४४।२९ | ९।४३ | ११।३९ | १३।५२ | १६।१० | १८।२६ | २०।४२ | २२।५९ | १।१७ | ३।२२ | ५।०८ | ६।३९ | ८।०६ |
| ९ वृ. | ०।०९।१५।५५ | १०।०२।२५।२१ | २।१२।१४।३४ | ११।०७।०५।२६ | १।१४।२१।३८ | ८।०१।१०।४८ | ४४।३१ | ९।३९ | ११।३५ | १३।४८ | १६।०६ | १८।२२ | २०।३७ | २२।५५ | १।१३ | ३।१८ | ५।०४ | ६।३५ | ८।०२ |
| १० शु. | ०।०९।५८।१३ | १०।०४।०१।२८ | २।१२।१५।०४ | ११।०८।२०।२० | १।१४।२४।२६ | ८।०१।०७।३[illegible] | ४४।३३ | ९।३५ | ११।३१ | १३।४४ | १६।०२ | १८।१८ | २०।३३ | २२।५१ | १।०९ | ३।१४ | ५।०० | ६।३१ | ७।५८ |
| ११ श. | ०।१०।४०।२२ | १०।०५।४६।०१ | २।१२।१६।३१ | ११।०९।३५।०० | १।१४।२७।५२ | ८।०१।०४।२[illegible] | ४४।३५ | ९।३१ | ११।२७ | १३।४० | १५।५८ | १८।१४ | २०।२९ | २२।४७ | १।०५ | ३।१० | ४।५६ | ६।२७ | ७।५४ |
| १२ र. | ०।११।२२।३१ | १०।०७।३०।३४ | २।१२।१७।५८ | ११।१०।४९।४० | १।१४।३१।१८ | ८।०१।०१।१६ | ४४।३७ | ९।२८ | ११।२४ | १३।३७ | १५।५५ | १८।११ | २०।२६ | २२।४४ | १।०२ | ३।०७ | ४।५३ | ६।२४ | ७।५१ |
| १३ च. | ०।१२।०४।४० | १०।०९।१५।०७ | २।१२।१९।२५ | ११।१२।०४।२० | १।१४।३४।४४ | ८।००।५८।०५ | ४४।३९ | ९।२४ | ११।२० | १३।३३ | १५।५१ | १८।०७ | २०।२२ | २२।४० | ०।५८ | ३।०३ | ४।४९ | ६।२० | ७।४७ |
| १४ म | ०।१२।४६।४८ | १०।१०।५९।४० | २।१२।२०।५१ | ११।१३।१९।०० | १।१४।३८।१० | ८।००।५४।५४ | ४४।४१ | ९।२० | ११।१६ | १३।२९ | १५।४७ | १८।०३ | २०।१८ | २२।३६ | ०।५४ | २।५९ | ४।४५ | ६।१६ | ७।४३ |
| ३० बु. | ०।१३।२८।५६ | १०।१२।४४।१३ | २।१२।२२।१७ | ११।१४।३३।३९ | १।१४।४१।३५ | ८।००।५१।४३ | ४४।४३ | ९।१६ | ११।१२ | १३।२५ | १५।४३ | १७।५९ | २०।१४ | २२।३२ | ०।५० | २।५५ | ४।४१ | ६।१२ | ७।३९ |
| ३० वृ. | ०।१४।११।०४ | १०।१४।२८।४५ | २।१२।२३।४३ | ११।१५।४८।१८ | १।१४।४५।०० | ८।००।४८।३३ | ४४।४५ | ९।१२ | ११।०८ | १३।२१ | १५।३९ | १७।५५ | २०।१० | २२।२८ | ०।४६ | २।५१ | ४।३७ | ६।०८ | ७।[illegible] |

२ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।३०
अयनांशाः २२।३२।३४




१० शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।३७
अयनांशाः २२।३२।३५




**अथ विविधविषयाः** — फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां **शिवरात्रिव्रतं** तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे– माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता। तथा च – उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्। **गङ्गासागरसङ्गमस्नानमन्त्रः** – त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते। **गङ्गास्नानमन्त्रः**– ब्रह्मस्वरूपे हे गङ्गे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव। **गङ्गामाहात्म्यं, विष्णुपुराणे**– गङ्गा गङ्गेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चारितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।

**ग्रहस्थितिः**– मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ११तः पूर्वास्तः, वक्रः पूर्वोदितो गुरुः ७तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

**वातावरणम्**– पक्षाद्यन्तभागयोः वायुमेघचारस्वल्पशीतादयस्तन्मध्यभागे तीव्रवायु–मेघचारादयः।

# फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२३, संवत् २०५८,सन्१४०९ साल,दि.१५।०३।२००२ ई.तः२८।०३।२००२ई.या., दक्षिणे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्काः | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ शु. | ६।३१ | दि.८।४३ | उफा.२७।३९ | सा.५।०९ | शु.३९।३१ | ब.६।३१ | मीन | अहो. | ११।०१।०३।३७ | २९।३४ | ६।०५ | ५।५५ | २४ | २ | १५ |
| २ श. | ११।३३ | दि.१०।४१ | रे.३३।४४ | रा.७।३४ | ब्र.४०।३२ | कौ.११।३३ | मी.३३।४४ | रा.७।३४ | ११।०२।०३।१९ | २९।३८ | ६।०४ | ५।५६ | २५ | ३ | १६ |
| ३ र. | १५।५४ | दि.१२।२६ | अ.३९।०९ | रा.९।४४ | ऐ.४०।५६ | ग.१५।५४ | मेष | अहो. | ११।०३।०३।०१ | २९।४२ | ६।०४ | ५।५६ | २६ | ४ | १७ |
| ४ चं. | १९।१५ | दि.१।४५ | भ.४३।२४ | रा.११।२५ | वै.४०।२६ | वि.१९।१५ | मे.५९।१२ | रा.५।४४ | ११।०४।०२।४३ | २९।४६ | ६।०३ | ५।५७ | २७ | ५ | १८ |
| ५ मं. | २१।२८ | दि.२।३७ | कृ.४६।३४ | रा.१२।४० | वि.३९।०७ | बा.२१।२८ | वृष | अहो. | ११।०५।०२।२५ | २९।५० | ६।०२ | ५।५८ | २८ | ६ | १९ |
| ६ बु. | २२।२० | दि.२।५७ | रो.४८।२८ | रा.१।२४ | प्री.३६।४४ | तै.२२।२० | वृष | अहो. | ११।०६।०२।०७ | २९।५४ | ६।०१ | ५।५९ | २९ | ७ | २० |
| ७ वृ. | २१।५२ | दि.२।४५ | मृ.४९।०६ | रा.१।३८ | आ.३३।२२ | व.२१।५२ | वृ.१८।४७ | दि.१।३१ | ११।०७।०१।४८ | २९।५८ | ६।०० | ६।०० | ३० | ८ | २१ |
| ८ शु. | २०।१२ | दि.२।०५ | आ.४८।३३ | रा.१।२५ | सौ.२९।०० | ब.२०।१२ | मिथुन | अहो. | ११।०८।०१।२९ | ३०।०२ | ६।०० | ६।०० | १ | ९ | २२ |
| ९ श. | १७।२४ | दि.१२।५७ | पुन.४६।५७ | रा.१२।४६ | शो.२३।४८ | कौ.१७।२४ | मि.३२।२१ | रा.६।५५ | ११।०९।००।५६ | ३०।०६ | ५।५९ | ६।०१ | २ | १० | २३ |
| १० र. | १३।३८ | दि.११।२५ | पु.४४।३३ | रा.११।४७ | अगं.१७।५१ | ग.१३।३८ | कर्क | अहो. | ११।१०।००।२३ | ३०।१० | ५।५८ | ६।०२ | ३ | ११ | २४ |
| ११ चं. | ९।०२ | दि.९।३४ | आश्ले.४१।२१ | रा.१०।२९ | सु.११।१४ | वि.९।०२ | क.४१।२१ | रा.१०।२९ | ११।१०।५९।४९ | ३०।१४ | ५।५७ | ६।०३ | ४ | १२ | २५ |
| १२ मं. | ३।४८ | दि.७।२७ | म.३७।४० | रा.९।०० | धृ.४।०५ | बा.३।४८ | सिंह | अहो. | ११।११।५९।१५ | ३०।१८ | ५।५६ | ६।०४ | ५ | १३ | २६ |
| १४ बु. | ५२।०८ | रा.२।४७ | पूफ.३३।३९ | रा.७।२४ | गं.४८।५४ | ग.२५।०७ | सि.४७।३६ | रा.१२।५८ | ११।१२।५८।४१ | ३०।२२ | ५।५६ | ६।०४ | ६ | १४ | २७ |
| १५ वृ. | ४६।०९ | रा.१२।२३ | उफ.२९।२७ | सा.५।४२ | वृ.४१।०६ | वि.१९।०९ | कन्या | अहो. | ११।१३।५८।०७ | ३०।२६ | ५।५५ | ६।०५ | ७ | १५ | २८ |

मासादिः, चन्द्रदर्शनं मु.३० फलं साम्यं, द.ति. ६।३१ उ., कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारम्भः, श्रीरामकृष्णजयन्ती।

पञ्चकान्तो रात्रौ घं.७ मि.३४ उ., गं, २१।४४ उ. ३६।४४ या; द.ति.११।३३ या; पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्, (३) एकोद्दिष्टम्।

**श्रीगणेश ४ व्रतं,** पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम्।

**उत्तरभाद्रे रविः** १।५६, (४) एकोद्दिष्टम्।

॥००॥

पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।

दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि।

दक्षिणायात्रा पुनर्वसौ।

**मीने बुधः** १८।५०, पश्चिमदक्षिणयात्रा नवम्याम्।

**उपनयनं,** पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां, (१०—११) एकोद्दिष्टम्।

**आमलकी ११** व्रतं सर्वेषां, गं. ३०।२१ उ. ४५।२१ या; **उपनयनं, जनकपुरस्यान्तर्गृहीयपरिक्रमारंभः।**

त्रयोदशीमानं ५४।१७, शूलयोगमानं ५२।३०, **अश्विन्यां मेषे शुक्रः** १२।१८, गोविन्द १२, गोदध्ना पारणं, **समुद्रस्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनं,** प्रदोष १३ व्रतं, **पूर्वयात्रा✦**

प्रदोष १४ व्रतं, भ. ५२।०८ उपरि। ✦ पूर्वफल्गुन्याम्।

फाल्गुनी १५ स्नानदानादिः, कुलदेवताभ्यः **सिन्दूरार्पणं** (पातरिदानम्) सावर्णिमन्वादिः, **जनकपुरपरिक्रमासमाप्तिः,** होलिकादाहो रात्रौ घं.१२ मि.२३या., **होलिकादाहे◆**

◆ पूर्ववायौ राजाप्रजासुखं, अग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टेराधिक्यं, वायव्ये वायुवृद्धिः, उत्तरे सुभिक्षं, ईशाने प्रजासुखं, निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः, **श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती,** भ. १९।०९ या; पूर्व यात्रा हस्ते।

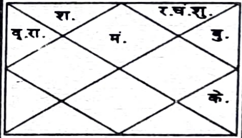
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ०।१४।५३।१२ | १०।१६।१३।१७ | २।१२।२५।०९ | ११।१७।०२।५७ | १।१४।४८।२५ | ८।००।४५।२३ |
| २ श. | ०।१५।३५।०७ | १०।१८।०२।२६ | २।१२।२८।०४ | ११।१८।१७।२३ | १।१४।५२।४३ | ८।००।४२।१२ |
| ३ र. | ०।१६।१७।०१ | १०।१९।५१।३५ | २।१२।३०।५९ | ११।१९।३१।४९ | १।१४।५७।०१ | ८।००।३९।०१ |
| ४ चं. | ०।१६।५८।५५ | १०।२१।४०।४४ | २।१२।३३।५४ | ११।२०।४६।१५ | १।१५।०१।१९ | ८।००।३५।५० |
| ५ मं. | ०।१७।४०।४९ | १०।२[illegible]।२९।५३ | २।१२।३६।४९ | ११।२२।००।४१ | १।१५।०५।३७ | ८।००।३२।३९ |
| ६ बु. | ०।१८।२२।४३ | १०।२५।१९।०२ | २।१२।३९।४३ | ११।२३।१५।०७ | १।१५।०९।५५ | ८।००।२९।२८ |
| ७ वृ. | ०।१९।०४।३७ | १०।२७।०८।११ | २।१२।४२।३७ | ११।२४।२९।३३ | १।१५।१४।१२ | ८।००।२६।१८ |
| ८ शु. | ०।१९।४६।३१ | १०।२८।५७।१९ | २।१२।४५।३१ | ११।२५।४३।५८ | १।१५।१८।२९ | ८।००।२३।०८ |
| ९ श. | ०।२०।२८।१३ | ११।००।४८।४३ | २।१२।४९।१६ | ११।२६।५८।०८ | १।१५।२३।२६ | ८।००।१९।५७ |
| १० र. | ०।२१।०९।५५ | ११।०२।४०।०७ | २।१२।५३।०१ | ११।२८।१२।१७ | १।१५।२८।२२ | ८।००।१६।४६ |
| ११ च. | ०।२१।५१।३७ | ११।०४।३१।३१ | २।१२।५६।४५ | ११।२९।२६।२६ | १।१५।३३।१८ | ८।००।१३।३५ |
| १२ मं. | ०।२२।३३।१९ | ११।०६।२२।५५ | २।१३।००।२९ | ००।००।४०।३५ | १।१५।३८।१४ | ८।००।१०।२४ |
| १४ बु. | ०।२३।१५।०१ | ११।०८।१४।१९ | २।१३।०४।१३ | ००।०१।५४।४४ | १।१५।४३।१० | ८।००।०७।१३ |
| १५ वृ. | ०।२३।५६।४३ | ११।१०।०५।४३ | २।१३।०७।५७ | ००।०३।०८।५३ | १।१५।४८।०६ | ८।००।०४।०३ |

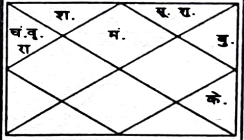
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ४४।४७ | ९।०९ | ११।०५ | १३।१८ | १५।३६ | १७।५२ | २०।०७ | २२।२५ | ०।४३ | २।४८ | ४।३४ | ६।०५ | ७।३२ |
| २ श. | ४४।४९ | ९।०५ | ११।०१ | १३।१४ | १५।३२ | १७।४८ | २०।०३ | २२।२१ | ०।३९ | २।४४ | ४।३० | ६।०१ | ७।२८ |
| ३ र. | ४४।५१ | ९।०१ | १०।५७ | १३।१० | १५।२८ | १७।४४ | १९।५९ | २२।१७ | ०।३५ | २।४० | ४।२६ | ५।५७ | ७।२४ |
| ४ चं. | ४४।५३ | ८।५८ | १०।५४ | १३।०७ | १५।२५ | १७।४१ | १९।५६ | २२।१४ | ०।३२ | २।३७ | ४।२३ | ५।५४ | ७।२१ |
| ५ मं. | ४४।५५ | ८।५४ | १०।५० | १३।०३ | १५।२१ | १७।३७ | १९।५२ | २२।१० | ०।२८ | २।३३ | ४।१९ | ५।५० | ७।१७ |
| ६ बु. | ४४।५७ | ८।५० | १०।४६ | १२।५९ | १५।१७ | १७।३३ | १९।४८ | २२।०६ | ०।२४ | २।२९ | ४।१५ | ५।४६ | ७।१३ |
| ७ वृ. | ४४।५९ | ८।४७ | १०।४३ | १२।५६ | १५।१४ | १७।३० | १९।४५ | २२।०३ | ०।२१ | २।२६ | ४।१२ | ५।४३ | ७।१० |
| ८ शु. | ४५।०१ | ८।४३ | १०।३९ | १२।५२ | १५।१० | १७।२६ | १९।४१ | २१।५९ | ०।१७ | २।२२ | ४।०८ | ५।३९ | ७।०६ |
| ९ श. | ४५।०३ | ८।३९ | १०।३५ | १२।४८ | १५।०६ | १७।२२ | १९।३७ | २१।५५ | ०।१३ | २।१८ | ४।०४ | ५।३५ | ७।०२ |
| १० र. | ४५।०५ | ८।३६ | १०।३२ | १२।४५ | १५।०३ | १७।१९ | १९।३४ | २१।५२ | ०।१० | २।१५ | ४।०१ | ५।३२ | ६।५९ |
| ११ च. | ४५।०७ | ८।३२ | १०।२८ | १२।४१ | १४।५९ | १७।१५ | १९।३० | २१।४८ | ०।०६ | २।११ | ३।५७ | ५।२८ | ६।५५ |
| १२ मं. | ४५।०९ | ८।२८ | १०।२४ | १२।३७ | १४।५५ | १७।११ | १९।२६ | २१।४४ | ०।०२ | २।०७ | ३।५३ | ५।२४ | ६।५१ |
| १४ बु. | ४५।११ | ८।२५ | १०।२१ | १२।३४ | १४।५२ | १७।०८ | १९।२३ | २१।४१ | २३।५९ | २।०४ | ३।५० | ५।२१ | ६।४८ |
| १५ वृ. | ४५।१३ | ८।२१ | १०।१७ | १२।३० | १४।४८ | १७।०४ | १९।१९ | २१।३७ | २३।५५ | २।०० | ३।४६ | ५।१७ | ६।४४ |

१ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।४४
अयनांशा: २२।३२।३६




८ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।५१
अयनांशा: २२।३२।३७




**अथ विविधविषयाः—** फाल्गुनपूर्णिमायां **होलिकादाहः—** तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः—** असृमयावसन्तप्तेः कृत्वा त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। **तत्प्रदीपनमन्त्रः—** दीपयाम्यत्र ते घोरां चितिं राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः—** वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव। **प्रयागे केशवपनफलम्—** किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। **स्थानविशेषमहत्त्वम्—** प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्।

**ग्रहस्थितिः—** मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

**वातावरणम्—** पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वाय्वभ्रच्छायोष्णतादयस्तदन्तभागे वायुमेघचारस्वल्पच्छिन्नवृष्टयः।

# चैत्रकृष्णपक्षः

शकाब्द:१९२३, संवत् २०५८, सन्१४०९ साल, दि. २९।३।२००२ई. त:१२।४।२००२ई. या., दक्षिणे काल:। मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, शुद्ध:, बसन्तर्तु:, याम्यगोल:, सौम्यायनम्।

| ति.दि. | तिथय: | | नक्षत्राणि | | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: | | स्पष्टसूर्य: | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादि: | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ शु. | ४०।१८ | रा.१०।०१ | ह.२५।२३ | दि.४।०३ | ध्रु.३३।२७ | बा.१३।१४ | कं.५३।३० | रा.३।१८ | ११।१४।५७।३३ | ३०।३० | ५।५४ | ६।०६ | ८ | १६ | २९ | होलिकाभस्मधारणं, सचैलस्नानं, होलिकोत्सव: (होली) सप्तडोरकबन्धनं, पूर्वदक्षिणयात्रा प्रतिपदि, द० ति. ४०।१८ उ., चैत्रे **लक्ष्मणास्नानं** महापुण्यप्रदम्। |
| २ श. | ३४।४६ | रा.७।४७ | चि.२१।३६ | दि.२।३१ | व्या.२६।०४ | तै.७।३२ | तुला | अहो. | ११।१५।५६।४४ | ३०।३४ | ५।५३ | ६।०७ | ९ | १७ | ३० | **वृश्चिके केतुर्वृषे राहुश्च** १।५९, द. ति. ३४।४६ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा तृतीयायाम्। |
| ३ र. | २९।४९ | सा.५।४८ | स्वा.१८।१९ | दि.१।१२ | ह.१९।०४ | व.२।१८ | तुला | अहो. | ११।१६।५५।५५ | ३०।३८ | ५।५२ | ६।०८ | १० | १८ | ३१ | **रेवत्यां रवि:** २९।११, **श्रीगणेश ४ व्रतं**, दक्षिणयात्रा स्वात्याम्। |
| ४ च. | २५।३५ | दि.४।०६ | वि.१५।४२ | दि.१२।०९ | व.१२।४० | बा.२५।३५ | तु.१।२२ | दि.६।२५ | ११।१७।५५।०६ | ३०।४२ | ५।५२ | ६।०८ | ११ | १९ | १ | अप्रील ४, पश्चिमोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्। |
| ५ मं. | २२।१० | दि.२।४३ | अनु.१३।५६ | दि.११।२५ | सि.६।५६ | तै.२२।१० | वृश्चिक | अहो. | ११।१८।५४।१७ | ३०।४६ | ५।५१ | ६।०९ | १२ | २० | २ | पश्चिमयात्रा पञ्चम्याम्। |
| ६ बु. | १९।४९ | दि.१।४६ | ज्ये.१३।११ | दि.११।०६ | व्य.२।०२ | व.१९।४९ | वृ.१३।११ | दि.११।०६ | ११।१९।५३।२७ | ३०।५० | ५।५० | ६।१० | १३ | २१ | ३ | **वरीयानयोगमानं** ५५।५९, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां तत: पूर्वयात्रा मूले, गं. ७।११ उ. २२।११ या.। |
| ७ बृ. | १८।४१ | दि.१।१७ | मू.१३।३७ | दि.११।१६ | प.५५।०० | ब.१८।४१ | धनु | अहो. | ११।२०।५२।३७ | ३०।५४ | ५।४९ | ६।११ | १४ | २२ | ४ | पूर्वोत्तरयात्रा। |
| ८ शु. | १८।४८ | दि.१।१९ | पूषा.१५।१८ | दि.११।५५ | शि.५३।०० | कौ.१८।४८ | ध.३१।०२ | सा.६।१३ | ११।२१।५१।४७ | ३०।५८ | ५।४८ | ६।१२ | १५ | २३ | ५ | पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे। |
| ९ श. | २०।१३ | दि.१।५३ | उषा.१८।१४ | दि.१।०६ | सि.५२।०२ | ग.२०।१३ | मकर | अहो. | ११।२२।५०।४२ | ३१।०२ | ५।४८ | ६।१२ | १६ | २४ | ६ | **वृषे कुज:** ३१।५३, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां नवम्याम्। |
| १० र. | २२।५१ | दि.२।५५ | श्र.२२।१८ | दि.२।४२ | सा.५१।५६ | वि.२२।५१ | म.५४।५४ | रा.३।४५ | ११।२३।४९।३७ | ३१।०६ | ५।४७ | ६।१३ | १७ | २५ | ७ | पञ्चकान्तो दिवा घं २ मि. ४२ उ., पश्चिमां विना यात्रा दशम्याम्। |
| ११ चं. | २६।३८ | दि.४।२५ | ध.२७।३० | दि.४।४६ | शु.५२।३९ | बा.२६।२८ | कुंभ | अहो. | ११।२४।४८।३२ | ३१।१० | ५।४६ | ६।१४ | १८ | २६ | ८ | **पापमोचिनी ११** व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रैकादश्यां, अश्विन्यां मेषे बुध: ३८।०२ । |
| १२ मं. | ३१।१३ | सा.६।१४ | श.३३।३१ | सा..७।०९ | शु.५३।५२ | तै.३१।१३ | कुंभ | अहो. | ११।२५।४७।२७ | ३१।१४ | ५।४५ | ६।१५ | १९ | २७ | ९ | गोघृतेन पारणं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| १३ बु. | ३६।२१ | रा.८।१६ | पूभा.४०।०० | रा.९।४४ | ब्र.५५।२३ | ग.३।४७ | कुं.२३।२३ | दि.३।५ | ११।२६।४६।२२ | ३१।१८ | ५।४४ | ६।१६ | २० | २८ | १० | प्रदोष १३ व्रतम्। |
| १४ बृ. | ४१।३७ | रा.१०।२३ | उभा.४६।३४ | रा.१२।२२ | ऐ.५६।५५ | वि.८।५९ | मीन | अहो. | ११।२७।४५।१६ | ३१।२२ | ५।४४ | ६।१६ | २१ | २९ | ११ | पश्चिमोदितो बुध: ३२।५१, **प्रदोष १४ व्रतम्।** ❖पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम्। |
| ३० शु. | ४६।३१ | रा.१२।१९ | रे.५२।४९ | रा.२।५१ | वै.५८।०६ | च.१४।०४ | मी.५२।४९ | रा.२।५१ | ११।२८।४४।१० | ३१।२६ | ५।४३ | ६।१७ | २२ | ३० | १२ | चैत्री ३० स्नानदानादि:, संवत् २०५९ प्रारंभोऽमान्तात्, गं. ४०।४९ उ. ५५।४९ या., **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. २ मि. ५१ उ., उत्तर यात्रा प्रतिपदि रेवत्यां तत: ❖ |

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ०।२४।३८।२४ | ११।११।५७।०७ | २।१३।११।४१ | ०।०४।२३।०२ | १।१५।५३।०२ | ८।००।००।५३ | ४५।१५ | ८।१७ | १०।१३ | १२।२६ | १४।४४ | १७।०० | १९।१५ | २१।३३ | २३।५१ | १।५६ | ३।४२ | ५।१३ | ६।४० |
| २ श. | ०।२५।१९।४७ | ११।१३।४७।४५ | २।१३।१७।३८ | ०।०५।३६।४८ | १।१५।५८।४२ | ७।२९।५७।४२ | ४५।१७ | ८।१४ | १०।१० | १२।२३ | १४।४१ | १६।५७ | १९।१२ | २१।३० | २३।४८ | १।५३ | ३।३९ | ५।१० | ६।३७ |
| ३ र. | ०।२६।०१।१० | ११।१५।३८।२३ | २।१३।२३।३५ | ०।०६।५०।३४ | १।१६।०४।२२ | ७।२९।५४।३२ | ४५।१९ | ८।१० | १०।०६ | १२।१९ | १४।३७ | १६।५३ | १९।०८ | २१।२६ | २३।४४ | १।४९ | ३।३५ | ५।०६ | ६।३३ |
| ४ च. | ०।२६।४२।३३ | ११।१७।२९।०१ | २।१३।२९।३२ | ०।०८।०४।२० | १।१६।१०।०२ | ७।२९।५१।२१ | ४५।२१ | ८।०६ | १०।०२ | १२।१५ | १४।३३ | १६।४९ | १९।०४ | २१।२२ | २३।४० | १।४५ | ३।३१ | ५।०२ | ६।२९ |
| ५ मं. | ०।२७।२३।५५ | ११।१९।१९।३९ | २।१३।३५।१९ | ०।०९।१८।०६ | १।१६।१५।४२ | ७।२९।४८।१० | ४५।२३ | ८।०३ | ९।५९ | १२।१२ | १४।३० | १६।४६ | १९।०१ | २१।१९ | २३।३७ | १।४२ | ३।२८ | ४।५९ | ६।२६ |
| ६ बु. | ०।२८।०५।१७ | ११।२१।१०।१७ | २।१३।४१।२६ | ०।१०।३१।५२ | १।१६।२१।२१ | ७।२९।४४।५९ | ४५।२५ | ७।५९ | ९।५५ | १२।०८ | १४।२६ | १६।४२ | १८।५७ | २१।१५ | २३।३३ | १।३८ | ३।२४ | ४।५५ | ६।२२ |
| ७ बृ. | ०।२८।४६।३९ | ११।२३।००।५५ | २।१३।४७।२३ | ०।११।४५।३७ | १।१६।२७।०० | ७।२९।४१।४८ | ४५।२७ | ७।५५ | ९।५१ | १२।०४ | १४।२२ | १६।३८ | १८।५३ | २१।११ | २३।२९ | १।३४ | ३।२० | ४।५१ | ६।१८ |
| ८ शु. | ०।२९।२८।०१ | ११।२४।५१।३३ | २।१३।५३।२० | ०।१२।५९।२२ | १।१६।३२।३९ | ७।२९।३८।३८ | ४५।२९ | ७।५२ | ९।४८ | १२।०१ | १४।१९ | १६।३५ | १८।५० | २१।०८ | २३।२६ | १।३१ | ३।१७ | ४।४८ | ६।१५ |
| ९ श. | १।००।०९।२४ | ११।२६।३८।५३ | २।१४।००।०२ | ०।१४।१२।५९ | १।१६।३८।१७ | ७।२९।३५।२७ | ४५।३१ | ७।४८ | ९।४४ | ११।५७ | १४।१५ | १६।३१ | १८।४६ | २१।०४ | २३।२२ | १।२७ | ३।१३ | ४।४४ | ६।११ |
| १० र. | १।००।५०।४७ | ११।२८।२६।१२ | २।१४।०६।४४ | ०।१५।२६।३६ | १।१६।४३।५५ | ७।२९।३२।१६ | ४५।३३ | ७।४४ | ९।४० | ११।५३ | १४।११ | १६।२७ | १८।४२ | २१।०० | २३।१८ | १।२३ | ३।०९ | ४।४० | ६।०७ |
| ११ चं. | १।०१।३२।१० | ००।००।१३।३१ | २।१४।१३।२६ | ०।१६।४०।१३ | १।१६।४९।३३ | ७।२९।२९।०५ | ४५।३५ | ७।४१ | ९।३७ | ११।५० | १४।०८ | १६।२४ | १८।३९ | २०।५७ | २३।१५ | १।२० | ३।०६ | ४।३७ | ६।०४ |
| १२ मं. | १।०२।१३।२३ | ००।०२।००।५० | २।१४।२०।०८ | ०।१७।५३।५० | १।१६।५५।११ | ७।२९।२५।५४ | ४५।३७ | ७।३७ | ९।३३ | ११।४६ | १४।०४ | १६।२० | १८।३५ | २०।५३ | २३।११ | १।१६ | ३।०२ | ४।३३ | ६।०० |
| १३ बु. | १।०२।५४।५६ | ००।०३।४८।०९ | २।१४।२६।५० | ०।१९।०७।२७ | १।१७।००।४८ | ७।२९।२२।४३ | ४५।३९ | ७।३३ | ९।२९ | ११।४२ | १४।०० | १६।१६ | १८।३१ | २०।४९ | २३।०७ | १।१२ | २।५८ | ४।२९ | ५।५६ |
| १४ बृ. | १।०३।३६।१८ | ००।०५।३५।२८ | २।१४।३३।३१ | ०।२०।२१।०४ | १।१७।०६।२५ | ७।२९।१९।३२ | ४५।४१ | ७।२९ | ९।२५ | ११।३८ | १३।५६ | १६।१२ | १८।२७ | २०।४५ | २३।०३ | १।०८ | २।५४ | ४।२५ | ५।५२ |
| ३० शु. | १।०४।१७।४० | ००।०७।२२।४७ | २।१४।४०।१२ | ०।२१।३४।४० | १।१७।१२।०२ | ७।२९।१६।२२ | ४५।४३ | ७।२६ | ९।२२ | ११।३५ | १३।५३ | १६।०९ | १८।२४ | २०।४२ | २३।०० | १।०५ | २।५१ | ४।२२ | ५।४९ |

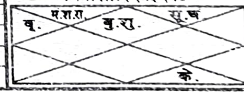
१ शुक्रे वल्ली ८।३७।४४।५८
अयनांशा: २२।३२।३८




८ शुक्रे वल्ली ८।३७।४५।०५
अयनांशा: २२।३२।३९




३० शुक्रे वल्ली ८।३७।४५।१२
अयनांशा:२२।३२।४०




**अथ विविधविषया:—** दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च छिक्काफलं मुहूर्तगणपतौ— मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागम: सुखम्। क्लेशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्। गोक्षुतस्य **दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन—** सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमश्वपीनस— केतव:। केतव:— कपट:, पीनसो मुहुर्नासास्रावी। **रत्नावलीरत्नकलापयो:—** प्रागन्यपुंस: पुरतोऽपरस्तात् पुन: पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतमवश्य वर्जनीयम् यथा **रत्नकलापे—** अग्रे क्षुतं चेच्छकुनै: किमन्यै: पश्चात्क्षुतं चेच्छकुनै: किमन्यै:। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञा:। **शुभक्षुतम्, सर्वशाकुने—** औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सत्सु शोभनम्।

**ग्रहस्थिति:—** मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशनय:, मार्गी पूर्वास्तो बुध: १४ त: पश्चिमोदित:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:।

**वातावरणम्:—** पक्षस्य पूर्वार्द्धे तापवायुमेघचारादयस्तदन्तभागे मेघवायुधाराझंझावातादय:।

# चैत्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२३, रतः १९२४, संवत् २०५९, सन् १४०९ साल, दि.१३।४।२००२ ई.तः २७।४।२००२ ई.या., दक्षिणे कालः मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यंगोलः, सौम्यायनम्, रतः सौम्यगोलः।



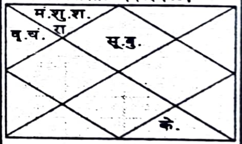
| ति.दि. | तिथयः द.प. | तिथयः घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | चन्द्रराशयः घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | दिनाङ्काः सौ. | दिनाङ्काः अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | ५०।४९ | रा.२।०२ | अ.५८।२१ | रा.५।०२ | वि.५८।३८ | कि.१८।४० | मेष | अहो. | ११।२९।४२।५० | ३१।३० | ५।४२ | ६।१८ | २३ | ३१ | १३ |
| २ र. | ५४।०० | रा.३।१७ | भ.६०।०० | अहो. | प्री.५८।२९ | बा.२२।२५ | मेष | अहो. | ००।००।४१।२९ | ३१।३४ | ५।४१ | ६।१९ | २४ | १ | १४ |
| ३ चं. | ५६।०८ | रा.४।०७ | भ.२।५३ | दि.६।४९ | आ.५७।२९ | तै.२५।०४ | मे.१८।४५ | दि.१।१० | ००।०१।४०।०८ | ३१।३८ | ५।४० | ६।२० | २५ | २ | १५ |
| ४ मं. | ५६।५२ | रा.४।२५ | कृ.६।२१ | दि.८।१२ | सौ.५५।२८ | व.२६।३० | वृष | अहो. | ००।०२।३८।४७ | ३१।४२ | ५।४० | ६।२० | २६ | ३ | १६ |
| ५ बु. | ५६।१८ | रा.४।१० | रो.८।२९ | दि.९।०३ | शो.५२।५४ | ब.२६।३५ | वृ.३८।५६ | रा.९।१३ | ००।०३।३७।२६ | ३१।४६ | ५।३९ | ६।२१ | २७ | ४ | १७ |
| ६ वृ. | ५४।३१ | रा.३।२६ | मृ.९।२२ | दि.९।२३ | अगं.४८।२२ | कौ.२५।२६ | मिथुन | अहो. | ००।०४।३६।०५ | ३१।४९ | ५।३८ | ६।२२ | २८ | ५ | १८ |
| ७ शु. | ५१।३८ | रा.२।१७ | आ.९।०५ | दि.९।१६ | सु.४३।२८ | ग.२३।०५ | मि.५३।०१ | रा.२।५० | ००।०५।३४।४४ | ३१।५२ | ५।३८ | ६।२२ | २९ | ६ | १९ |
| ८ श. | ४७।४६ | रा.१२।४३ | पुन.७।३९ | दि.८।४१ | धृ.३७।४४ | वि.१९।४२ | कर्क | अहो. | ००।०६।३३।०९ | ३१।५६ | ५।३७ | ६।२३ | ३० | ७ | २० |
| ९ र. | ४३।०४ | रा.१०।५० | पु.५।२८ | दि.७।४७ | शू.३१।२१ | बा.१५।२४ | कर्क | अहो. | ००।०७।३१।३३ | ३२।०० | ५।३६ | ६।२४ | १ | ८ | २१ |
| १० च. | ३७।४६ | रा.८।४१ | आश्ले.२।२५ | दि.६।३३ | गं.२४।२१ | तै.१०।२५ | क.२।२५ | दि.६।३३ | ००।०८।२९।५७ | ३२।०४ | ५।३५ | ६।२५ | २ | ९ | २२ |
| ११ मं | ३२।०१ | सा.६।२३ | पूफ.५४।५० | रा.३।३१ | वृ.१७।०० | व.४।५४ | सिंह | अहो. | ००।०९।२८।२१ | ३२।०७ | ५।३५ | ६।२५ | ३ | १० | २३ |
| १२ बु. | २६।०० | दि.३।५८ | उफ.५०।४० | रा.१।५० | ध्रु.९।२५ | बा.२६।०० | सिं.८।४७ | दि.९।०५ | ००।१०।२६।४५ | ३२।१० | ५।३४ | ६।२६ | ४ | ११ | २४ |
| १३ वृ. | १९।५४ | दि.१।३१ | ह.४६।३६ | रा.१२।११ | व्या.१।४२ | तै.१९।५४ | कन्या | अहो. | ००।११।२५।०९ | ३२।१३ | ५।३३ | ६।२७ | ५ | १२ | २५ |
| १४ शु. | १४।०१ | दि.११।०९ | चि.४२।४३ | रा.१०।३८ | व.५६।३८ | व.१४।०१ | कं.१४।४० | दि.११।१५ | ००।१२।२३।३३ | ३२।१६ | ५।३३ | ६।२७ | ६ | १३ | २६ |
| १५ श. | ०८।२६ | दि.८।५४ | स्वा.३९।१९ | रा.९।१६ | सि.३९।३६ | व.८।२६ | तुला | अहो. | ००।१३।२१।४२ | ३२।२० | ५।३२ | ६।२८ | ७ | १४ | २७ |

**वासन्तनवरात्रारंभः**, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, द.ति. ५०।४९ उ., मासान्तः। ✦ प्रपागलन्तिकादानं, **नववर्षारंभः**, **वैशाखस्नानारंभः**, सौम्यगोलारंभः १९२४ !
**अश्विन्यां मेषे रविः** ३।१८ मु.१५ फलं महार्घं **यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं.७ मि.०० उ. घं.१ मि.२४ यावद्दिने (सतुआइन) सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, ✦
मासादिः, **श्रीगौरीतृतीयाव्रतं**, स्वायंभुवमन्वादिः, **जूडिशीतल**, पर्युषितान्नपानादिकं, **तुलस्यश्वत्थाम्रादिवृक्षसिञ्चनम्**। ! शकाब्दारंभश्च ३।१८३ उ., **आर्यभटजयन्ती**. ✔
**श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा** रोहिण्याम्। **ग्रहचतुष्टययोगफलं**—एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च वा ग्रहाः। प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा।
द.ति. ५६।१८ उ., **मीनावतारः**, रामराज्याभिषेकः श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरना), **उपनयनं**, मुण्डनं कर्णवेधश्च मृगशिरसि, **विवाहः द्विरागमनं** च पञ्चम्यां. ●
द.ति.५४।३१ या., **श्रीसूर्यषष्ठीव्रतं** सायंकालिकार्घदानं, गजपूजा **विल्वाभिमन्त्रणम्**। ● पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्याम्।
वृषेशुक्रः३९।२२, **प्रातःकालिकार्घदानंपारणंच, पत्रिकाप्रवेशः**, द्विरागमनमष्टम्यां, मुण्डनं कर्णवेधः गृहप्रवेशश्च पुनर्वसौ. दक्षिणयात्राष्टम्यां मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा।
**महाष्टमीव्रतं, महारात्रिर्निशापूजा**, अशोकाष्टमी **अशोककलिकापानं** ब्रह्मपुत्रस्नानं च. पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ तत पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
**महानवमीव्रतं** त्रिशूलिनीपूजा, रामावतारः, **श्रीरामनवमीव्रतं**, हनुमद्ध्वजदानं श्रीसीतारामदर्शनं च, **षाण्मासिकरविव्रतविसर्गः** गं.५१।२५ उ.।
मघानक्षत्रमानं ५६।२३, गं.६।२५,या., **विजया १० अपराजिता पूजा**, देवीविसर्जनं, **जयन्तीधारणं**, नीलकण्ठदर्शनं यात्रा च, **विवाहो** मघायाम्।
**कामदा ११व्रतं सर्वेषां, छन्दोगानामुपनयनं**, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, पूर्वयात्रा द्वादश्यां पूर्वफल्गुन्याम्। ✔ श्रीरमन्तपूजा चन्द्रदर्शनं मु.१५ फलं महार्घं, द.ति.३।१८या.।
श्रीविष्णु १२ गोघृतेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, चैत्रावली मदनपूजनं, गोष्ठे सत्सङ्गः, गृहप्रवेशः. **विवाहो** दिवारात्रौ, द्विरागमनं द्वादश्याम्।
**हर्षणयोगमानं** ५२।२२, प्रदोष १४ व्रतं, मदनभञ्जिका १४, **श्रीमहावीरजयन्ती, विवाहस्त्रयोदश्यां**, मुण्डनं कर्णवेधः गृहारंभः गृहप्रवेशः पूर्वयात्रा च त्रयोदश्याम्।
**विवाहः गृहारंभः द्विरागमनञ्च** पूर्णिमायां, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा, (१४–१५) एकोद्दिष्टम्।
**चैत्री** १५ स्नानदानादिः स्वारोचिषमन्वादिः, **भरण्यां रविः** ४४।२५, वृषे बुधः ६।३४, **गृहारंभः** पूर्णिमायां, पश्चिमदक्षिणयात्रा प्रतिपदि स्वात्याम्।

**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** — **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | १।०४।५८।३० | ०।०९।०३।२० | २।१४।४७।५७ | ०।२२।४८।०१ | १।१७।१९।१६ | ७।२९।१३।११ | ४५।४५ | ७।२२ | ९।१८ | ११।३१ | १३।४९ | १६।०५ | १८।२० | २०।३८ | २२।५६ | १।०१ | २।४७ | ४।१८ | ५।४५ |
| २ र. | १।०५।३९।१९ | ०।१०।४३।५३ | २।१४।५५।४२ | ०।२४।०१।२१ | १।१७।२६।२९ | ७।२९।१०।०० | ४५।४७ | ७।१८ | ९।१४ | ११।२७ | १३।४५ | १६।०१ | १८।१६ | २०।३४ | २२।५२ | ०।५७ | २।४३ | ४।१४ | ५।४१ |
| ३ च. | १।०६।२०।०८ | ०।१२।२४।२६ | २।१५।०३।२७ | ०।२५।१४।४१ | १।१७।३३।४२ | ७।२९।०६।४९ | ४५।४९ | ७।१४ | ९।१० | ११।२३ | १३।४१ | १५।५७ | १८।१२ | २०।३० | २२।४८ | ०।५३ | २।३९ | ४।१० | ५।३७ |
| ४ म. | १।०७।००।५७ | ०।१४।०४।५९ | २।१५।११।१२ | ०।२६।२८।०१ | १।१७।४०।१५ | ७।२९।०३।३८ | ४५।५१ | ७।११ | ९।०७ | ११।२० | १३।३८ | १५।५४ | १८।०९ | २०।२७ | २२।४५ | ०।५० | २।३६ | ४।०७ | ५।३४ |
| ५ बु. | १।०७।४१।४६ | ०।१५।४५।३२ | २।१५।१८।५७ | ०।२७।४१।२१ | १।१७।४८।०८ | ७।२९।००।२७ | ४५।५३ | ७।०७ | ९।०३ | ११।१६ | १३।३४ | १५।५० | १८।०५ | २०।२३ | २२।४१ | ०।४६ | २।३२ | ४।०३ | ५।३० |
| ६ वृ. | १।०८।२२।३५ | ०।१७।२६।०४ | २।१५।२६।४१ | ०।२८।५४।४१ | १।१७।५५।२१ | ७।२८।५७।१७ | ४५।५५ | ७।०३ | ८।५९ | ११।१२ | १३।३० | १५।४६ | १८।०१ | २०।१९ | २२।३७ | ०।४२ | २।२८ | ३।५९ | ५।२६ |
| ७ शु. | १।०९।०३।२४ | ०।१९।०६।३६ | २।१५।३४।२५ | १।००।०८।०१ | १।१८।०२।३४ | ७।२८।५४।०७ | ४५।५६ | ६।५९ | ८।५५ | ११।०८ | १३।२६ | १५।४२ | १७।५७ | २०।१५ | २२।३३ | ०।३८ | २।२४ | ३।५५ | ५।२२ |
| ८ श. | १।०९।४४।११ | ०।२०।३५।३७ | २।१५।४३।१३ | १।०१।२०।५७ | १।१८।०९।३३ | ७।२८।५०।५६ | ४५।५८ | ६।५६ | ८।५२ | ११।०५ | १३।२३ | १५।३९ | १७।५४ | २०।१२ | २२।३० | ०।३५ | २।२१ | ३।५२ | ५।१९ |
| ९ र. | १।१०।२४।५८ | ०।२२।०४।३८ | २।१५।५२।०१ | १।०२।३३।५३ | १।१८।१६।३१ | ७।२८।४७।४५ | ४६।०० | ६।५२ | ८।४८ | ११।०१ | १३।१९ | १५।३५ | १७।५० | २०।०८ | २२।२६ | ०।३१ | २।१७ | ३।४८ | ५।१५ |
| १० च. | १।११।०५।४५ | ०।२३।३३।३९ | २।१६।००।४९ | १।०३।४६।४९ | १।१८।२३।२९ | ७।२८।४४।३४ | ४६।०२ | ६।४८ | ८।४४ | १०।५७ | १३।१५ | १५।३१ | १७।४६ | २०।०४ | २२।२२ | [illegible] | २।१३ | ३।४४ | ५।११ |
| ११ म | १।११।४६।३१ | ०।२५।०२।४० | २।१६।०९।३७ | १।०४।५९।४५ | १।१८।३०।२७ | ७।२८।४१।२३ | ४६।०४ | ६।४४ | ८।४० | १०।५३ | १३।११ | १५।२७ | १७।४२ | २०।०० | २२।१८ | ०।२३ | २।०९ | ३।४० | ५।०७ |
| १२ बु. | १।१२।२७।१७ | ०।२६।३१।४१ | २।१६।१८।२५ | १।०६।१२।४१ | १।१८।३७।२५ | ७।२८।३८।१२ | ४६।०६ | ६।४१ | ८।३७ | १०।५० | १३।०८ | १५।२४ | १७।३९ | १९।५७ | २२।१५ | ०।२० | २।०६ | ३।३७ | ५।०४ |
| १३ वृ. | १।१३।०८।०३ | ०।२८।००।४२ | २।१६।२७।१३ | १।०७।२५।३६ | १।१८।४४।२३ | ७।२८।३५।०२ | ४६।०७ | ६।३७ | ८।३३ | १०।४६ | १३।०४ | १५।२० | १७।३५ | १९।५३ | २२।११ | ०।१६ | २।०२ | ३।३३ | ५।०० |
| १४ शु. | १।१३।४८।४९ | ०।२९।२९।४२ | २।१६।३६।०१ | १।०८।३८।३१ | १।१८।५१।२१ | ७।२८।३१।५२ | ४६।०८ | ६।३३ | ८।२९ | १०।४२ | १३।०० | १५।१६ | १७।३१ | १९।४९ | २२।०७ | ०।१२ | १।५८ | ३।२९ | ४।५६ |
| १५ श. | १।१४।२९।२७ | १।००।३९।३२ | २।१६।४५।३६ | १।०९।५१।१३ | १।१८।५८।३७ | ७।२८।२८।४१ | ४६।१० | ६।२९ | ८।२५ | १०।३८ | १२।५६ | १५।१२ | १७।२७ | १९।४५ | २२।०३ | ०।०८ | १।५४ | ३।२५ | ४।५२ |

**६ शुक्रे वल्ली ८।३७।४५।१९**
**अयनांशाः २२।३२।४१**




**१४ शुक्रे वल्ली ८।३७।४५।२६**
**अयनांशाः २२।३२।४२**




**अथ विविधविषयाः** —चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र देवीप्रतिमां निर्माय पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। **चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः**— त्वामशोकवराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु। **एतत्पानफलं लिंगपुराणे**— अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः। **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रश्च**— ब्रह्मपुत्र महाभाग शन्तनोः कुलसम्भव। अमोघागर्भसंभूत पापं लौहित्य मे हर। चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतन्तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं सम्पूज्यार्घ्यं **दद्यात्तन्मन्त्रः**— दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ। ततः परदिने **इदं विष्णुरिति** मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं**, वृहद्विष्णुपुराणे—मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।

**ग्रहस्थितिः**— मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ **बुधशुक्रौ**।

**वातावरणम्**— पश्चाद्यन्तभागयोर्मेघच्छायावायुच्छिन्नवृष्ट्यंरतन्मध्यभागे तापझंझावातमेघचारादयः।

# वैशाखकृष्णपक्षः

शकाब्दः१९२४, संवत् २०५९, सन् १४०९ साल, दि.२८।४।२००२ ई.तः १२।५।२००२ ई.या., दक्षिणे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसुर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्काः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ र. | ०३।२१ | दि.६।५१ | वि.३६।३४ | रा.८।०९ | व्य.३३।६ | कौ.०३।२१ | तु.२२।१६ | दि.२।२५ | ००।१४।१९।५१ | ३२।२३ | ५।३१ | ६।२९ | ८ | १५ | २८ | द्वितीयामानं ५५।५०, द्विरागमनमुत्तरयात्रा चानुराधायां, वैशाखे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदं, वैशाखे तैलं त्यजेत्। |
| ३ चं. | ५५।३१ | रा.३।४३ | अनु.३४।४१ | रा.७।२३ | व.२७।१७ | व.२७।१६ | वृश्चिक | अहो. | ००।१५।१८।०० | ३२।२६ | ५।३१ | ६।२९ | ९ | १६ | २९ | कर्णवेधः, पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां, **गृहारंभो** द्विरागमनश्चानुराधायां, सूर्यविधाद्विवाहो नैवानुराधायाम्। |
| ४ मं. | ५३।०५ | रा.२।४४ | ज्ये.३३।४० | सा.६।५८ | प.२२।१५ | ब.२४।१८ | वृ.३३।४० | सा.६।५८ | ००।१६।१६।०९ | ३२।२९ | ५।३० | ६।३० | १० | १७ | ३० | श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले, गं. २७।४० उ. ४२।४० यावत्। |
| ५ बु. | ५१।५३ | रा.२।१५ | मू.३३।५० | सा.७।०२ | शिव.१८।३ | कौ.२२।२९ | धनु | अहो. | ००।१७।१४।१८ | ३२।३२ | ५।३० | ६।३० | ११ | १८ | १ | मई ५, पूर्वयात्रा पञ्चम्यां, **विवाहो** गृहारंभो द्विरागमनञ्च मूले, द.ति. ५१।५३ उपरि। |
| ६ वृ. | ५१।५५ | रा.२।१५ | पूषा.३५।१३ | रा.७।३४ | सि.१४।५२ | ग.२१।५४ | ध.५०।५३ | रा.१।५० | ००।१८।२२।२७ | ३२।३५ | ५।२९ | ६।३१ | १२ | १९ | २ | कोकिलाषष्ठी **राहुवेधाद्विवाहो मध्यमः सप्तम्यां**, द.ति. ५१।५५ यावत्। |
| ७ शु. | ५३।१७ | रा.२।४७ | उषा.३७।५४ | रा.८।३८ | सा.१२।३६ | वि.२२।३६ | मकर | अहो. | ००।१९।१०।३६ | ३२।३८ | ५।२८ | ६।३२ | १३ | २० | ३ | शर्करासप्तमी, **राहुवेधाद्विवाहो मध्यम उत्तराषाढ़े**, **विवाहः** श्रवणायां, पश्चिमां विना यात्राष्टम्याम्। |
| ८ श. | ५५।४९ | रा.३।४८ | श्र.४१।४५ | रा.१०।१० | शुभ.११।३३ | बा.२४।३३ | मकर | अहो. | ००।२०।०८।३१ | ३२।४२ | ५।२८ | ६।३२ | १४ | २१ | ४ | **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं.१० मि.१० उ., पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, शीतलाष्टमी, **श्रीशीतलापूजनम्।** |
| ९ र. | ५९।३१ | रा.५।१५ | ध.४६।४४ | रा.१२।०९ | शुक्ल.११।५ | तै.२७।४० | म.१४।१५ | दि.११।०९ | ००।२१।०६।२६ | ३२।४५ | ५।२७ | ६।३३ | १५ | २२ | ५ | ॥००॥ ● खलु पुत्रं च जननी प्रजानां नाशः स्याच्चलति वसुधा शुष्यति नदी॥ तस्माल्लोककल्याणाय धर्माचरणीयम्। |
| १० चं. | ६०।०० | अहो. | श.५२।३२ | रा.२।२७ | ब्र.११।५१ | व.३१।४६ | कुंभ | अहो. | ००।२२।०४।२१ | ३२।४८ | ५।२६ | ६।३४ | १६ | २३ | ६ | पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| १० मं | ०४।०१ | दि.७।०२ | पूभा.५८।५८ | रा.५।०१ | ऐ.१३।२ | वि.०४।०१ | कु.४२।२२ | रा.१०।२३ | ००।२३।०२।१६ | ३२।५१ | ५।२६ | ६।३४ | १७ | २४ | ७ | पश्चिमयात्रा दशम्याम्। |
| ११ बु. | ०९।०६ | दि.९।०३ | उभा.६०।०० | अहो. | वै.१४।३३ | बा.०९।०६ | मीन | अहो. | ००।२४।००।११ | ३२।५४ | ५।२५ | ६।३५ | १८ | २५ | ८ | **वरुथिनी ११ व्रतं सर्वेषां, विवाहो दिवारात्रौ,** (१२) एकोद्दिष्टम्। |
| १२ वृ. | १४।१५ | दि.११।०७ | उभा.५।३३ | दि.७।३८ | वि.१६।१० | तै.१४।१५ | मीन | अहो. | ००।२४।५८।०६ | ३२।५७ | ५।२५ | ६।३५ | १९ | २६ | ९ | कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, गं. ५९।५३उ., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, **विवाहो दिवारात्रौ**, (१३) एकोद्दिष्टम्। |
| १३ शु. | १९।०८ | दि.१।०३ | रे.११।५३ | दि.१०।०९ | प्री.१७।३२ | व.१९।०८ | मी.११।५३ | दि.१०।०९ | ००।२५।५६।०१ | ३३।०० | ५।२४ | ६।३६ | २० | २७ | १० | **विवाहस्त्रयोदश्यां**, प्रदोष १४ व्रतं, उत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्राश्विन्यां, पञ्चकान्तो दिवा घं.१० मि.९ उ०, गं.१४।५३ या.। |
| १४ श. | २३।१८ | दि.२।४२ | अ.१७।३३ | दि.१२।२४ | आ.१८।२६ | श.२३।१८ | मेष | अहो. | ००।२६।५३।४४ | ३३।०३ | ५।२३ | ६।३७ | २१ | २८ | ११ | **कृत्तिकायां रविः** ३०।१६, पूर्वां विना यात्राश्विन्यां, (१४) एकोद्दिष्टम्। |
| ३० र. | २६।२७ | दि.३।५८ | भ.२२।२१ | दि.२।१९ | सौ.१८।३३ | ना.२६।२७ | मे.३८।१६ | रा. ८।४१ | ००।२७।५१।२६ | ३३।०६ | ५।२३ | ६।३७ | २२ | २९ | १२ | **वैशाखी** ३० स्नानदानादिः। **षड्ग्रहयोगफलम्**— ग्रहाणामेकस्मिन् यदि भवति षण्णां निवसतिस्तदा गोलो योगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते। भवेल्लोको रङ्कस्त्यजति ● |

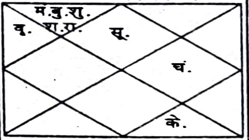
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | १।१५।१०।०४ | १।०१।४९।२२ | २।१६।५५।२१ | १।११।०३।५५ | १।१९।०५।५३ | ७।२८।२५।३० | ४६।१२ |
| ३ चं. | १।१५।५०।४१ | १।०२।५९।१२ | २।१७।०४।४६ | १।१२।१६।३७ | १।१९।१३।०८ | ७।२८।२२।१९ | ४६।१४ |
| ४ मं. | १।१६।३१।१८ | १।०४।०९।०२ | २।१७।१४।२१ | १।१३।२९।१८ | १।१९।२०।२३ | ७।२८।१९।०५ | ४६।१६ |
| ५ बु. | १।१७।११।५५ | १।०५।१८।५२ | २।१७।२३।५६ | १।१४।४१।५९ | १।१९।२७।३८ | ७।२८।१५।५७ | ४६।१७ |
| ६ वृ. | १।१७।५२।३२ | १।०६।२८।४२ | २।१७।३३।३० | १।१५।५४।४० | १।१९।३४।५३ | ७।२८।१२।४७ | ४६।१८ |
| ७ शु. | १।१८।३३।०९ | १।०७।३८।३१ | २।१७।४३।०४ | १।१७।०७।२१ | १।१९।४२।०८ | ७।२८।०९।३७ | ४६।१९ |
| ८ श. | १।१९।१३।३२ | १।०८।१७।३२ | २।१७।५३।२८ | १।१८।१९।२० | १।१९।४९।३६ | ७।२८।०६।२६ | ४६।२१ |
| ९ र. | १।१९।५३।५५ | १।०८।५६।३३ | २।१८।०३।५१ | १।१९।३१।१९ | १।१९।५७।०४ | ७।२८।०३।१५ | ४६।२३ |
| १० चं. | १।२०।३४।१८ | १।०९।३५।३४ | २।१८।१४।१४ | १।२०।४३।१९ | १।२०।०४।३१ | ७।२८।००।०४ | ४६।२५ |
| १० म | १।२१।१४।४१ | १।१०।१४।३४ | २।१८।२४।३७ | १।२१।५५।१९ | १।२०।११।५८ | ७।२७।५६।५३ | ४६।२७ |
| ११ बु. | १।२१।५५।०४ | १।१०।५३।३४ | २।१८।३५।०० | १।२३।०७।१९ | १।२०।१९।२५ | ७।२७।५३।४२ | ४६।२८ |
| १२ वृ. | १।२२।३५।२७ | १।११।३२।३४ | २।१८।४५।२३ | १।२४।१९।१९ | १।२०।२६।५३ | ७।२७।५०।३१ | ४६।२९ |
| १३ शु. | १।२३।१५।५० | १।१२।११।३४ | २।१८।५५।४६ | १।२५।३१।१९ | १।२०।३४।१९ | ७।२७।४७।२१ | ४६।३० |
| १४ श. | १।२३।५६।०१ | १।१२।२७।५९ | २।१९।०६।४८ | १।२६।४३।१९ | १।२०।४१।३८ | ७।२७।४४।१० | ४६।३२ |
| ३० र. | १।२४।३६।१२ | १।१२।३४।०६ | २।१९।१७।४१ | १।२७।५५।१९ | १।२०।४८।५७ | ७।२७।४०।५९ | ४६।३४ |

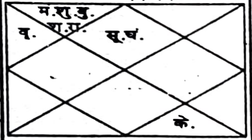
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ६।२५ | ८।२१ | १०।३४ | १२।५२ | १५।०८ | १७।२३ | १९।४१ | २१।५९ | ०।०४ | १।५० | ३।२१ | ४।४८ |
| ३ चं. | ६।२२ | ८।१८ | १०।३१ | १२।४९ | १५।०५ | १७।२० | १९।३८ | २१।५६ | ०।०१ | १।४७ | ३।१८ | ४।४५ |
| ४ मं. | ६।१८ | ८।१४ | १०।२७ | १२।४५ | १५।०१ | १७।१६ | १९।३४ | २१।५२ | २३।५७ | १।४३ | ३।१४ | ४।४१ |
| ५ बु. | ६।१४ | ८।१० | १०।२३ | १२।४१ | १४।५७ | १७।१२ | १९।३० | २१।४८ | २३।५३ | १।३९ | ३।१० | ४।३७ |
| ६ वृ. | ६।१० | ८।०६ | १०।१९ | १२।३७ | १४।५३ | १७।०८ | १९।२६ | २१।४४ | २३।४९ | १।३५ | ३।०६ | ४।३३ |
| ७ शु. | ६।०७ | ८।०३ | १०।१६ | १२।३४ | १४।५० | १७।०५ | १९।२३ | २१।४१ | २३।४६ | १।३२ | ३।०३ | ४।३० |
| ८ श. | ६।०३ | ७।५९ | १०।१२ | १२।३० | १४।४६ | १७।०१ | १९।१९ | २१।३७ | २३।४२ | १।२८ | २।५९ | ४।२६ |
| ९ र. | ५।५९ | ७।५५ | १०।०८ | १२।२६ | १४।४२ | १६।५७ | १९।१५ | २१।३३ | २३।३८ | १।२४ | २।५५ | ४।२२ |
| १० चं. | ५।५५ | ७।५१ | १०।०४ | १२।२२ | १४।३८ | १६।५३ | १९।११ | २१।२९ | २३।३४ | १।२० | २।५१ | ४।१८ |
| १० म | ५।५१ | ७।४७ | १०।०० | १२।१८ | १४।३४ | १६।४९ | १९।०७ | २१।२५ | २३।३० | १।१६ | २।४७ | ४।१४ |
| ११ बु. | ५।४८ | ७।४४ | ९।५७ | १२।१५ | १४।३१ | १६।४६ | १९।०४ | २१।२२ | २३।२७ | १।१३ | २।४४ | ४।११ |
| १२ वृ. | ५।४४ | ७।४० | ९।५३ | १२।११ | १४।२७ | १६।४२ | १९।०० | २१।१८ | २३।२३ | १।०९ | २।४० | ४।०७ |
| १३ शु. | ५।४० | ७।३६ | ९।४९ | १२।०७ | १४।२३ | १६।३८ | १८।५६ | २१।१४ | २३।१९ | १।०५ | २।३६ | ४।०३ |
| १४ श. | ५।३६ | ७।३२ | ९।४५ | १२।०३ | १४।१९ | १६।३४ | १८।५२ | २१।१० | २३।१५ | १।०१ | २।३२ | ३।५९ |
| ३० र. | ५।३३ | ७।२९ | ९।४२ | १२।०० | १४।१६ | १६।३१ | १८।४९ | २१।०७ | २३।१२ | ०।५८ | २।२९ | ३।५६ |

७ शुक्रे वल्ली ८।३७।४५।३३
अयनांशाः २२।३२।४३




१३ शुक्रे वल्ली ८।३७।४५।४०
अयनांशाः २२।३२।४४




अथ विविधविषयाः— वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः— वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणें रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु से पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्। **प्रातः स्नानस्य समयः**— उत्तमं तु सनक्षत्र मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्त्तितम्। **वैशाखे त्याज्यवस्तुति**— कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुनम्। **वैशाखे दानवस्तुनि, स्कान्दे**— प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च। **तिथितत्त्वे**— ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **मासविशेषे नदीविशेषस्नानम्**— कौशिकीं माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्त्तिके यामुनीं तथा। भूयसी गैरिका चैत्र आश्विने फलदा मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्त्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी। गंगा तु सर्वदेति।

**ग्रहस्थितिः**— मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ बुधशुक्रौ।

**वातावरणम्**— पक्षाद्यन्तभागयोः तापवृद्धिवायुमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वाय्वभ्रचार—खण्डवृष्टिझंझावातादयः।

# वैशाखशुक्लपक्षः

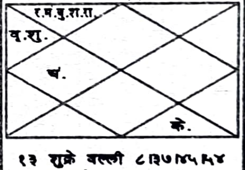
शकाब्दः१९२४, संवत् २०५९, सन् १४०९ साल दि.१३।५।२००२ ई.तः२६।५।२००२ई.या., दक्षिणे कालः,३तः पश्चिमे कालः मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने, ३ तो ग्रीष्मर्तुः।

| ति.दि. | तिथयः द.प. | घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | घं.मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः रा.द.प. | घं.मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्काः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | २८।२८ | दि.४।४५ | कृ.२६।०२ | दि.३।४७ | शो.१७।४७ | ब.२८।२८ | वृष | अहो. | ०।२८।४९।०८ | ३३।०९ | ५।२२ | ६।३८ | २३ | ३० | १३ | वक्रे बुधः ४६।५०, विवाहो रोहिण्यां, द्विरागमनं दक्षिणयात्रा च प्रतिपदि रोहिण्यां, श्रीशिवाजीजयन्ती। |
| २ मं. | २९।०९ | दि.५।०२ | रो.२८।२८ | दि.४।४५ | अग.१६।०२ | कौ.२९।०९ | वृ.५९।०२ | रा.०४।५९ | ०।२९।४६।५० | ३३।१२ | ५।२२ | ६।३८ | २४ | ३१ | १४ | मिथुने शुक्रः ३०।३३, चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्यं, मासान्तः। |
| ३ बु. | २८।३१ | दि.४।४५ | मृ.२९।३६ | दि.५।११ | सु.१३।१७ | ग.२८।३१ | मिथुन | अहो. | १।००।४४।३२ | ३३।१५ | ५।२१ | ६।३९ | २५ | १ | १५ | अक्षयतृतीया त्रेतायुगादिः श्रीपरशुरामावतारः, श्रीपरशुरामजयन्ती, श्रीगणेश ४ व्रतं, वृषे रविः०।२० मु ३० फलं साम्यं विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो ● |
| ४ बृ. | २६।४२ | दि.४।०० | आर्द्रा.२९।३३ | दि.५।०९ | धृ.९।३१ | वि.२६।४१ | मिथुन | अहो. | १।०१।४२।१४ | ३३।१८ | ५।२० | ६।४० | २६ | २ | १६ | पश्चिमास्तो बुधः ९।१४, मासादिः, द.ति. २६।४१ या.। ● घं.५मि.२९ उ. घं. ८मि.४१ यावद्दिने, द. ति. २८।३१ उपरि। |
| ५ शु. | २३।४३ | दि.२।४९ | पुन.२८।२२ | दि.४।४१ | शू.४।५१ | बा.२३।४३ | मि.१३।४० | दि.१०।४८ | १।०२।३९।५६ | ३३।२० | ५।२० | ६।४० | २७ | ३ | १७ | श्रीशङ्कराचार्यजयन्ती, क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं, मुण्डनं, कर्णवेधः, गण्डयोगमानं ५३।२६, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थेचन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये। |
| ६ श. | १९।४८ | दि.१।१४ | पुष्य.२६।२२ | दि.३।५२ | वृ.५३।१० | तै.१९।४८ | कर्क | अहो. | १।०३।३७।२७ | ३३।२३ | ५।१९ | ६।४१ | २८ | ४ | १८ | श्रीरामानुजाचार्यजयन्ती, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये। ❖ मैथिलीदिवसः, हनुमद्ध्वजदानं, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, छन्दोगानामुपनयनं दशम्याम्। |
| ७ र. | १५।०४ | दि.११।२१ | आश्ले.२३।२७ | दि.२।४२ | ध्रु.४६।२३ | व.१५।०४ | क.२३।२७ | दि.२।४२ | १।०४।३४।५८ | ३३।२६ | ५।१९ | ६।४१ | २९ | ५ | १९ | जाह्नवीसप्तमी, जह्नुमनेर्जानुतो गङ्गायाः प्रादुर्भावः, गंगास्नानदानादिः, विवाहो मघायां, गं. १७।२७ उ.३२।२७ या., (७–८) एकोद्दिष्टम्। |
| ८ चं. | ०९।४२ | दि.९।११ | म.१९।५७ | दि.१।१७ | व्या.३९।०७ | ब.०९।४२ | सिंह | अहो. | १।०५।३२।५९ | ३३।२९ | ५।१८ | ६।४२ | ३० | ६ | २० | मिथुने कुजः ४९।२, पश्चिमास्तः शनिः ३०।००, विवाहः अष्टम्याम्। |
| ९ मं. | ०३।५२ | दि.६।५१ | पूफ.१६।०२ | दि.११।४३ | ह.३१।३६ | कौ.०३।५२ | सि.३०।०० | सा.५।१८ | १।०६।३०।०० | ३३।३२ | ५।१८ | ६।४२ | ३१ | ७ | २१ | दशमीमानं ५३।५६, श्रीजानकीनवमीव्रतं, धरणितो जगज्जनन्याः जानक्याः प्रादुर्भावः, सीतामढ्यां तत्प्रादुर्भावस्थले पुण्यारण्ये (पुनौराधां) श्रीसीतारामदर्शनं, ❖ |
| ११ बु. | ५१।३८ | रा.१।५६ | उफ.११।५४ | दि.१०।०३ | वज्र.२३।५८ | व.२४।४३ | कन्या | अहो. | १।०७।२७।३१ | ३३।३४ | ५।१७ | ६।४३ | १ | ८ | २२ | विजया ११ व्रतं स्मार्त्तानां, उपनयनं, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, विवाहो दिवारात्रौ, मुण्डनं कर्णवेधः पूर्वदक्षिणयात्रा च हस्ते। |
| १२ बृ. | ४५।३९ | रा.११।३३ | ह.०७।४६ | दि.८।२३ | सि.१६।२२ | ब.१८।३८ | क.३५।४८ | रा.७।३६ | १।०८।२५।०२ | ३३।३६ | ५।१७ | ६।४३ | २ | ९ | २३ | मधुसूदन १२ कुशोदकेन पारणं, विजया ११ व्रतं वैष्णवानां, विवाहो दिवारात्रौ, कर्णवेधः, पूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा। |
| १३ शु. | ३९।५८ | रा.९।१५ | चि.०३।५० | दि.६।४८ | व्य.०८।५८ | कौ.१२।४९ | तुला | अहो. | १।०९।२२।३२ | ३३।३८ | ५।१६ | ६।४४ | ३ | १० | २४ | विवाहस्त्रयोदश्यां, प्रदोष १३ व्रतं, मुण्डनं, दक्षिणयात्रा, कर्णवेधश्चित्रायाम्। |
| १४ श. | ३४।५१ | सा.७।१२ | स्वा.००।२१ | प्रा.५।२४ | व.०१।५४ | ग.०७।२५ | तु.४३।०९ | रा.१०।३२ | १।१०।१९।५१ | ३३।४० | ५।१६ | ६।४४ | ४ | ११ | २५ | विशाखामानं ५७।३, परिघयोगमानं ५३।३९, रोहिण्यां रविः २६।३, नरसिंह १४ व्रतं प्रदोषः घं.८ मि.२० यावद्रात्रौ, श्रीनरसिंहावतारः, श्रीनरहरिपूजनदर्शनादिकं, ◆ |
| १५ र. | ३०।२९ | दि.५।२८ | अनु.५५।२२ | रा.३।२५ | शि.४९।२७ | वि.०२।४० | वृश्चिक | अहो. | १।११।१७।१० | ३३।४२ | ५।१६ | ६।४४ | ५ | १२ | २६ | वैशाखी १५ स्नानदानादिः कूर्मावतारः बुद्धावतारः, श्रीबुद्धजयन्ती, विवाहोऽनुराधायां, उत्तरयात्रा पूर्णिमायाम्। ◆ प्रदोष १४ व्रतम्। |

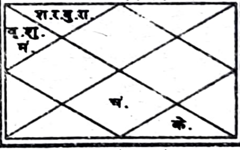
**मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्चै — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | १।२५।१६।२२ | १।१२।३८।३० | २।१९।२८।५० | १।२९।०७।१९ | १।२०।५६।१६ | ७।२७।३७।४८ | ४६।३६ | ५।२९ | ७।२५ | ९।३८ | ११।५६ | १४।१२ | १६।२७ | १८।४५ | २१।०३ | २३।०८ | ०।५४ | २।२५ | ३।५२ |
| २ मं. | १।२५।५६।३२ | १।१२।३४।०६ | २।१९।३९।५१ | २।००।१९।१८ | १।२१।०३।३५ | ७।२७।३४।३७ | ४६।३७ | ५।२५ | ७।२१ | ९।३४ | ११।५२ | १४।०८ | १६।२३ | १८।४१ | २०।५९ | २३।०४ | ०।५० | २।२१ | ३।४८ |
| ३ बु. | १।२६।३६।४२ | १।१२।२०।४१ | २।१९।५०।५२ | २।०१।३१।१७ | १।२१।१०।५४ | ७।२७।३१।२६ | ४६।३८ | ५।२१ | ७।१७ | ९।३० | ११।४८ | १४।०४ | १६।१९ | १८।३७ | २०।५५ | २३।०० | ०।४६ | २।१७ | ३।४४ |
| ४ बृ. | १।२७।१६।५२ | १।१२।०३।२५ | २।२०।०१।५३ | २।०२।४३।१६ | १।२१।१८।१२ | ७।२७।२८।१६ | ४६।३९ | ५।१७ | ७।१३ | ९।२६ | ११।४४ | १४।०० | १६।१५ | १८।३३ | २०।५१ | २२।५६ | ०।४२ | २।१३ | ३।४० |
| ५ शु. | १।२७।५७।०२ | १।११।४३।२० | २।२०।१२।१४ | २।०३।५५।१५ | १।२१।२५।२९ | ७।२७।२५।०६ | ४६।४१ | ५।१३ | ७।०९ | ९।२२ | ११।४० | १३।५६ | १६।११ | १८।२९ | २०।४७ | २२।५२ | ०।३८ | २।०९ | ३।३६ |
| ६ श. | १।२८।३७।०१ | १।११।०२।०७ | २।२०।२४।४० | २।०५।०६।३१ | १।२१।३३।४३ | ७।२७।२१।५५ | ४६।४२ | ५।०९ | ७।०५ | ९।१८ | ११।३६ | १३।५२ | १६।०७ | १८।२५ | २०।४३ | २२।४८ | ०।३४ | २।०५ | ३।३२ |
| ७ र. | १।२९।१७।०० | १।१०।२०।५४ | २।२०।३६।२६ | २।०६।१७।४७ | १।२१।४१।५७ | ७।२७।१८।४४ | ४६।४४ | ५।०५ | ७।०१ | ९।१४ | ११।३२ | १३।४८ | १६।०३ | १८।२१ | २०।३९ | २२।४४ | ०।३० | २।०१ | ३।२८ |
| ८ चं. | १।२९।५६।५९ | १।०९।३९।४१ | २।२०।४८।१२ | २।०७।२९।०२ | १।२१।५०।११ | ७।२७।१५।३३ | ४६।४५ | ५।०१ | ६।५७ | ९।१० | ११।२८ | १३।४४ | १५।५९ | १८।१७ | २०।३५ | २२।४० | ०।२६ | १।५७ | ३।२४ |
| ९ मं. | २।००।३६।५८ | १।०८।५८।२८ | २।२०।५९।५० | २।०८।४०।१७ | १।२१।५८।२५ | ७।२७।१२।२२ | ४६।४६ | ४।५७ | ६।५३ | ९।०६ | ११।२४ | १३।४० | १५।५५ | १८।१३ | २०।३१ | २२।३६ | ०।२२ | १।५३ | ३।२० |
| ११ बु. | २।०१।१६।५७ | १।०८।१७।१५ | २।२१।११।४४ | २।०९।५१।३२ | १।२२।०६।३९ | ७।२७।०९।११ | ४६।४७ | ४।५३ | ६।४९ | ९।०२ | ११।२० | १३।३६ | १५।५१ | १८।०९ | २०।२७ | २२।३२ | ०।१८ | १।४९ | ३।१६ |
| १२ बृ. | २।०१।५६।५६ | १।०७।३६।०२ | २।२१।२३।२९ | २।११।०२।४७ | १।२२।१४।५२ | ७।२७।०६।०१ | ४६।४८ | ४।४९ | ६।४५ | ८।५८ | ११।१६ | १३।३२ | १५।४७ | १८।०५ | २०।२३ | २२।२८ | ०।१४ | १।४५ | ३।१२ |
| १३ शु. | २।०२।३६।५५ | १।०६।५४।४९ | २।२१।३५।१४ | २।१२।१४।०२ | १।२२।२३।०५ | ७।२७।०२।५१ | ४६।४९ | ४।४५ | ६।४१ | ८।५४ | ११।१२ | १३।२८ | १५।४३ | १८।०१ | २०।१९ | २२।२४ | ०।१० | १।४१ | ३।०८ |
| १४ श. | २।०३।१६।४५ | १।०६।१५।५४ | २।२१।४७।२४ | २।१३।२५।१० | १।२२।३१।४५ | ७।२६।५९।४० | ४६।५० | ४।४० | ६।३६ | ८।४९ | ११।०७ | १३।२३ | १५।३८ | १७।५६ | २०।१४ | २२।१९ | ०।०५ | १।३६ | ३।०३ |
| १५ र. | २।०३।५६।३५ | १।०५।३६।५९ | २।२१।५९।३४ | २।१४।३६।१८ | १।२२।४०।२५ | ७।२६।५९।२९ | ४६।५१ | ४।३६ | ६।३२ | ८।४५ | ११।०३ | १३।१९ | १५।३४ | १७।५२ | २०।१० | २२।१५ | ०।०१ | १।३२ | २।५९ |

५ शुक्रे बल्ली ८।३७।४५।४७
अयनांशाः २२।३२।४५




१३ शुक्रे बल्ली ८।३७।४५।५४
अयनांशाः २२।३२।४६




**अथ विविधविषयाः—** वैशाखशुक्लतृतीयायां परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः— जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। वैशाखशुक्लनवम्यां जानकीनवमीव्रतं— वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां सोमवासरे। प्रादुर्भभूवलोकानां हिताय जनकात्मजा। **मूलवासः—** स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। **अभुक्तमूलविचारः—** अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्। तस्मादेपूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषण, यतो हि—मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः। सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्निममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः—** मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। श्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्वीतरः।

**ग्रहस्थितिः—** मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १ तो वक्रः ४ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ८तः पश्चिमास्तः।

**वातावरणम्—** पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वायुतापखण्डवृष्टयस्तदन्तभागे तापझंझावात—मेघचारादयः।

# ज्येष्ठकृष्णपक्षः

शकाब्दः१९२४, संवत् २०५९, सन् १४०९ साल, दि.२७।५।२००२ ई.त:१०।६।२००२ ई.या., पश्चिमे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।



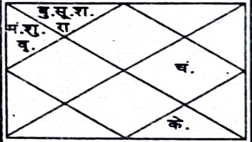
| ति.दि. | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्काः | | | ज्येष्ठकृष्णपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादिः | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ चं. | २६।५३ | दि.४।०० | ज्ये.५४।०९ | रा.२।५५ | सि.४४।१८ | कौ.२६।५३ | वृ.५४।०९ | रा.२।५५ | १।१२।१४।२९ | ३३।४४ | ५।१५ | ६।४५ | ६ | १३ | २७ | गं.४८।०९उ., गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमो मूले, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि, **वैवाहिकसभारंभः** (सौराठससौलयोः), ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्। |
| २ मं. | २४।२१ | दि.२।५९ | मू.५४।०२ | रा.२।५२ | सा.३९।५९ | ग.२४।२१ | धनुः | अहो. | १।१३।११।४८ | ३३।४५ | ५।१५ | ६।४५ | ७ | १४ | २८ | पूर्वयात्रा, गं. ३।९या.। |
| ३ बु. | २३।०१ | दि.२।२७ | पूषा.५५।०७ | रा.३।१८ | शुभ३६।४० | वि.२३।०१ | धनुः | अहो. | १।१४।०९।०७ | ३३।४६ | ५।१५ | ६।४५ | ८ | १५ | २९ | श्रीगणेश ४ व्रतं, द.ति.२३।०१उ., **नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः**। |
| ४ बृ. | २२।५५ | दि.२।२५ | उषा.५७।३१ | रा.४।१५ | शुक्ल३४।१२ | बा.२२।५५ | ध.१०।४३ | दि.९।३२ | १।१५।०६।२६ | ३३।४७ | ५।१५ | ६।४५ | ९ | १६ | ३० | द. ति. २२।५५ या., कुजवेधाद्विवाहो नैव पञ्चम्याम्। |
| ५ शु. | २४।१० | दि.२।५४ | श्र.६०।०० | अहो. | ब्र.३३।०५ | तै.२४।१० | मकरः | अहो. | १।१६।०३।४५ | ३३।४८ | ५।१४ | ६।४६ | १० | १७ | ३१ | मुण्डनं, कर्णवेधः, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, **विवाहो** दिवारात्रौ। |
| ६ श. | २६।३३ | दि.३।५१ | श्र.१।०८ | प्रा.५।४१ | ऐ.३२।४१ | व.२६।३३ | म.३३।३० | सा.६।२८ | १।१७।००।५६ | ३३।५० | ५।१४ | ६।४६ | ११ | १८ | १ | जून ६, पूर्वोदितो बुधः २२।४९, **पञ्चकारंभो** प्रातः घं.५ मि.४१ उपरि। |
| ७ र. | ३०।०६ | सा.५।१६ | ध.५।५२ | दि.७।३५ | वै.३३।१० | ब.३०।०६ | कुम्भः | अहो. | १।१७।५८।०७ | ३३।५१ | ५।१४ | ६।४६ | १२ | १९ | २ | **शुक्रवेधाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायाम्।** |
| ८ चं. | ३४।३२ | सा.७।०३ | श.११।३२ | दि.९।५१ | वि.३४।१६ | बा.०२।१९ | कुम्भः | अहो. | १।१८।५५।१७ | ३३।५२ | ५।१४ | ६।४६ | १३ | २० | ३ | मार्गी बुधः ४७।११, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रेऽष्टम्याम्। |
| ९ मं | ३९।२७ | रा.९।०० | पूभा.१७।५० | दि.१२।२१ | प्री.३५।५० | तै.०७।०० | कुं.१।१६ | दि.५।४३ | १।१९।५२।२७ | ३३।५३ | ५।१३ | ६।४७ | १४ | २१ | ४ | पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| १० बु. | ४४।३३ | रा.११।०२ | उभा.२४।२५ | दि.२।५९ | आ.३७।३० | व.१२।०० | मीन | अहो. | १।२०।४९।३७ | ३३।५४ | ५।१३ | ६।४७ | १५ | २२ | ५ | **विवाहो** दिवारात्रौ, पश्चिमयात्रा रेवत्याम्। |
| ११ बृ. | ४९।२१ | रा.१२।५७ | रे.३०।५१ | सा.५।३३ | सौ.३८।५८ | ब.१६।५७ | मी.३०।५१ | सा.५।३३ | १।२१।४६।४७ | ३३।५५ | ५।१३ | ६।४७ | १६ | २३ | ६ | अपरा ११ व्रतं सर्वेषां, गं.१८।५१ उ. ३३।५१ या., **विवाहो** दिवारात्रौ, पञ्चकान्तः सायं घं.५ मि.३३ उपरि, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम्। |
| १२ शु. | ५३।२८ | रा.२।३६ | अ.३६।४२ | रा.७।५४ | शो.४०।०१ | कौ.२१।२५ | मेष | अहो. | १।२२।४३।५७ | ३३।५६ | ५।१३ | ६।४७ | १७ | २४ | ७ | तिलेन पारणं, **विवाह** अश्विन्यां, **वैवाहिकसभासमाप्तिः** (सौराठससौलयोः)। |
| १३ श. | ५६।३५ | रा.३।५० | भ.४१।४१ | रा.९।५२ | अगं.४०।२० | ग.२५।०२ | मे.५७।३९ | रा.४।१६ | १।२३।४१।०० | ३३।५८ | ५।१२ | ६।४८ | १८ | २५ | ८ | **मृगशिरसि रविः** २४।५४, कर्के **शुक्रः** ५०।३१, **प्रदोष** १३ व्रतम्। |
| १४ र. | ५७।३८ | रा.४।१५ | कृ.४५।३४ | रा.११।२६ | सु.३९।४५ | वि.२७।०७ | वृष | अहो. | १।२४।३८।०३ | ३४।०० | ५।१२ | ६।४८ | १९ | २६ | ९ | **प्रदोष** १४ व्रतम्। |
| ३० चं. | ५९।२३ | रा.४।५७ | रो.४८।१७ | रा.१२।३१ | धृ.३८।१४ | च.२८।३१ | वृष | अहो. | १।२५।३५।०६ | ३४।०२ | ५।१२ | ६।४८ | २० | २७ | १० | ज्यैष्ठी ३० स्नानदानादिः, **सोमवती३०** व्रतं, **वटसावित्रीव्रतम्**, पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि। |

**पञ्चग्रहयोगफलं**— *एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च वा ग्रहाः। प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा।*

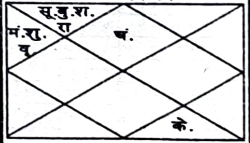
## मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | २।०४।३६।२५ | १।०४।५८।०५ | २।२२।११।४३ | २।१५।४७।२६ | १।२२।४९।०५ | ७।२६।५३।१८ | ४६।५२ | ४।३२ | ६।२८ | ८।४१ | १०।५९ | १३।१५ | १५।३० | १७।४८ | २०।०६ | २२।११ | २३।५७ | १।२८ | २।५५ |
| २ मं. | २।०५।१६।१४ | १।०४।१९।११ | २।२२।२३।५२ | २।१६।५८।३४ | १।२२।५७।४५ | ७।२६।५०।०७ | ४६।५३ | ४।२८ | ६।२४ | ८।३७ | १०।५५ | १३।११ | १५।२६ | १७।४४ | २०।०२ | २२।०७ | २३।५३ | १।२४ | २।५१ |
| ३ बु. | २।०५।५६।०३ | १।०३।४०।१७ | २।२२।३६।०१ | २।१८।०९।४२ | १।२३।०६।२५ | ७।२६।४६।५६ | ४६।५४ | ४।२४ | ६।२० | ८।३३ | १०।५१ | १३।०७ | १५।२२ | १७।४० | १९।५८ | २२।०३ | २३।४९ | १।२० | २।४७ |
| ४ बृ. | २।०६।३५।५२ | १।०३।०१।२३ | २।२२।४८।१० | २।१९।२०।५० | १।२३।१५।०४ | ७।२६।४३।४६ | ४६।५४ | ४।२० | ६।[illegible] | ८।२९ | १०।४७ | १३।०३ | १५।१८ | १७।३६ | १९।५४ | २१।५९ | २३।४५ | १।१६ | २।४३ |
| ५ शु. | २।०७।१५।४१ | १।०२।२२।२९ | २।२३।००।१९ | २।२०।३१।५८ | १।२३।२३।४३ | ७।२६।४०।३६ | ४६।५४ | ४।१६ | ६।१२ | ८।२५ | १०।४३ | १२।५९ | १५।१४ | १७।३२ | १९।५० | २१।५५ | २३।४१ | १।१२ | २।३९ |
| ६ श. | २।०७।५५।२० | १।०२।०२।२६ | २।२३।१३।०० | २।२१।४२।३५ | १।२३।३२।०८ | ७।२६।३७।२५ | ४६।५५ | ४।१२ | ६।०८ | ८।२१ | १०।३९ | १२।५५ | १५।१० | १७।२८ | १९।४६ | २१।५१ | २३।३७ | १।०८ | २।३५ |
| ७ र. | २।०८।३४।५९ | १।०१।५४।२३ | २।२३।२५।४१ | २।२२।५३।१२ | १।२३।४०।२३ | ७।२६।३४।१४ | ४६।५६ | ४।०८ | ६।०४ | ८।१७ | १०।३५ | १२।५१ | १५।०६ | १७।२४ | १९।४२ | २१।४७ | २३।३३ | १।०४ | २।३१ |
| ८ चं. | २।०९।१४।३८ | १।०१।५०।०२ | २।२३।३८।२२ | २।२४।०३।४९ | १।२३।४८।५७ | ७।२६।३१।०३ | ४६।५७ | ४।०४ | ६।०० | ८।१३ | १०।३१ | १२।४७ | १५।०२ | १७।२० | १९।३८ | २१।४३ | २३।२९ | १।०० | २।२७ |
| ९ मं | २।०९।५४।१६ | १।०१।५२।१५ | २।२३।५१।०२ | २।२५।१४।२६ | १।२३।५७।२१ | ७।२६।२७।५२ | ४६।५८ | ४।०० | ५।५६ | ८।०९ | १०।२७ | १२।४३ | १४।५८ | १७।१६ | १९।३४ | २१।३९ | २३।२५ | ०।५६ | २।२३ |
| १० बु. | २।१०।३३।५४ | १।०२।००।२७ | २।२४।०३।४२ | २।२६।२५।०३ | १।२४।०५।४५ | ७।२६।२४।४१ | ४६।५८ | ३।५६ | ५।५२ | ८।०५ | १०।२३ | १२।३९ | १४।५४ | १७।१२ | १९।३० | २१।३५ | २३।२१ | ०।५२ | २।१९ |
| ११ बृ. | २।११।१३।३२ | १।०२।१६।२५ | २।२४।१६।२२ | २।२७।३५।४० | १।२४।१४।०९ | ७।२६।२१।३० | ४६।५८ | ३।५१ | ५।४७ | ८।०० | १०।१८ | १२।३४ | १४।४९ | १७।०७ | १९।२५ | २१।३० | २३।१६ | ०।४७ | २।१४ |
| १२ शु. | २।११।५३।१० | १।०२।३९।२३ | २।२४।२९।०२ | २।२८।४६।१६ | १।२४।२२।३३ | ७।२६।१८।२० | ४६।५८ | ३।४७ | ५।४३ | ७।५६ | १०।१४ | १२।३० | १४।४५ | १७।०३ | १९।२१ | २१।२६ | २३।१२ | ०।४३ | २।१० |
| १३ श. | २।१२।३२।४० | १।०३।२३।३९ | २।२४।४१।५४ | २।२९।५५।५४ | १।२४।३०।३६ | ७।२६।१५।०९ | ४६।५९ | ३।४३ | ५।३९ | ७।५२ | १०।१० | १२।२६ | १४।४१ | १६।५९ | १९।१७ | २१।२२ | २३।०८ | ०।३९ | २।०६ |
| १४ र. | २।१३।१२।१० | १।०४।०७।५५ | २।२४।५४।४६ | ३।०१।०५।३२ | १।२४।३८।३९ | ७।२६।११।५८ | ४७।०० | ३।३९ | ५।३५ | ७।४८ | १०।०६ | १२।२२ | १४।३७ | १६।५५ | १९।१३ | २१।१८ | २३।०४ | ०।३५ | २।०२ |
| ३० चं. | २।१३।५१।४० | १।०४।५२।११ | २।२५।०७।३८ | ३।०२।१५।१० | १।२५।४६।४२ | ७।२६।०८।४७ | ४७।०१ | ३।३५ | ५।३१ | ७।४४ | १०।०२ | १२।१८ | १४।३३ | १६।५१ | १९।०९ | २१।१४ | २३।०० | ०।३१ | १।५८ |

५ शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।०१
अयनांशा: २२।३२।४७




१२ शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।०८
अयनांशा: २२।३२।४८




**अथ विविधविषयाः** —अमायां **वटसावित्रीव्रतम्**— अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय **दद्यात्तन्मन्त्रः**— सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्। अथ **कितिचिन्नियमाः** — समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः।। अथ **सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः**— देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण! त्वामहं शरणं गतः। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कार्यम्। **काशीमाहात्म्यं**, काशीखण्डे—कैलाशादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका। **कैलाशे** शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः।। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकराणि च। काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः।

**ग्रहस्थितिः**— मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ६तः पूर्वोदितः ८तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

**वातावरणम्**— पक्षाद्यन्तभागयोस्तापवृद्धिवायुमेघचारादयस्तन्मध्यभागे मेघच्छायातापवायवः।

# ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

शकाब्द: १९२४, संवत् २०५९, सन् १४०९ साल, दि.११।०६।२००२ ई.त:२४।०६।२००२ई या., पश्चिमे काल:।
मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, शुद्ध:, ५तो शुद्ध:, ग्रीष्मर्तु:, सौम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथय: | | नक्षत्राणि | | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: | | स्पष्टसूर्य: | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | दं.प. | घं.मि. | दं.प. | घं.मि. | दं.प. | दं.प. | रा.दं.प. | घं.मि. | राश्यादि: | दं.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ मं. | ५८।४६ | रा.४।४१ | मृ.४९।४२ | रा.१।०४ | शु.३५।४२ | कि.२९।०५ | वृ.१९।०० | दि.१२।४७ | १।२६।३२।०९ | ३४।०३ | ५।११ | ६।४९ | २१ | २८ | ११ |
| २ बु. | ५६।५७ | रा.३।५८ | आ.४९।५४ | रा.१।०९ | गं.३२।०९ | बा.२७।५२ | मिथुन | अहो. | १।२७।२९।११ | ३४।०४ | ५।११ | ६।४९ | २२ | २९ | १२ |
| ३ वृ. | ५३।५९ | रा.२।४७ | पुन.४८।५६ | रा.१२।४५ | वृ.२७।३८ | तै.२५।२८ | मि.३३।१३ | सा.६।२८ | १।२८।२६।१३ | ३४।०५ | ५।११ | ६।४९ | २३ | ३० | १३ |
| ४ शु. | ५०।०४ | रा.१।१३ | पु.४७।०४ | रा.१२।०१ | ध्रु.२२।१९ | व.२२।०२ | कर्क | अहो. | १।२९।२३।१५ | ३४।०६ | ५।११ | ६।४९ | २४ | ३१ | १४ |
| ५ श. | ४५।१९ | रा.११।१८ | आश्ले.४४।१८ | रा.१०।५३ | व्या.१६।१७ | ब.१७।४२ | क.४४।१८ | रा.१०।५३ | २।००।२०।१२ | ३४।०८ | ५।१० | ६।५० | २५ | १ | १५ |
| ६ र. | ३९।५७ | रा.९।०९ | म.४०।५४ | रा.९।३२ | ह.०९।३७ | कौ.१२।३८ | सिंह | अहो. | २।०१।१७।०९ | ३४।०९ | ५।१० | ६।५० | २६ | २ | १६ |
| ७ चं. | ३४।०१ | सा.६।४६ | पूफ.३७।०३ | रा.७।५९ | द.०२।२८ | ग.०६।५९ | सि.५१।०२ | रा.१।३५ | २।०२।१४।०६ | ३४।१० | ५।१० | ६।५० | २७ | ३ | १७ |
| ८ मं. | २७।५४ | दि.४।१० | [illegible].३२।५८ | सा.६।२१ | व्य.४७।११ | वि.०० [illegible] | कन्या | अहो. | २।०३।११।०३ | ३४।११ | ५।१० | ६।५० | २८ | ४ | १८ |
| ९ बु. | २१।४२ | दि.१।५१ | ह.२८।४३ | दि.४।३९ | व.३९।४८ | कौ.२१।४२ | कं.५६।४३ | रा.३।५१ | २।०४।०७।५९ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | २९ | ५ | १९ |
| १० वृ. | १५।३८ | दि.११।२४ | चि.२४।४२ | दि.३।०२ | प.३२।२१ | ग.१५।३८ | तुला | अहो. | २।०५।०४।५५ | ३४।१३ | ५।०९ | ६।५१ | ३० | ६ | २० |
| ११ शु. | ०९।५१ | दि.९।०५ | स्वा.२१।०४ | दि.१।३५ | शि.२५।१२ | वि.०९।५१ | तुला | अहो. | २।०६।०१।५१ | ३४।१४ | ५।०९ | ६।५१ | ३१ | ७ | २१ |
| १२ श. | ०४।३८ | दि.७।०० | वि.१७।५८ | दि.१२।२० | सि.१८।३५ | बा.०४।३८ | तु.३।४५ | प्रा.६।३९ | २।०६।५८।४४ | ३४।१४ | ५।०९ | ६।५१ | १ | ८ | २२ |
| १३ र. | ००।०८ | प्रा.५।१२ | अनु.१५।४२ | दि.११।२६ | सा.१२।३४ | तै.००।०८ | वृश्चिक | अहो. | २।०७।५५।३७ | ३४।१४ | ५।०९ | ६।५१ | २ | ९ | २३ |
| १५ चं. | ५३।५२ | रा.२।४२ | ज्ये.१४।१२ | दि.१०।५४ | शु.७।१७ | वि.२५।११ | वृ.१४।१२ | दि.१०।५० | २।०८।५२।३० | ३४।१४ | ५।०९ | ६।५१ | ३ | १० | २४ |

॥००॥

चन्द्रदर्शनं मु. १५फलं महार्घं, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ द्वितीयायाम्।

रंभातृतीया, पञ्चाग्निव्रतं, मुण्डनं, कर्णवेध:, क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं, पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत: पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा ●

मासान्त:, द.ति.५०।०४ या., श्रीगणेश ४ व्रतम्। ●पुष्ये तृतीयायां, द.ति.५३।५९३., महाराणाप्रतापजयन्ती।

मिथुने रवि: २५।४७ मु. १५ फलं महार्घं षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.३मि.२९ उ. दिने, गं.३३।१८३.४८।१८या., गुर्वादित्यारंभोऽशुद्धारंभश्च २५।४७ उपरि।

मासादि:।

सिद्धियोगमानं ५२।३०, पश्चिमास्त: कुज: ११।५७, द.ति.३४।०१ उपरि।

द.ति.२७।५४ या., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।

गृहारंभश्चित्रायां, गृहप्रवेशो दशम्यां, दक्षिणपूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे दशम्यां तत: पश्चिमदक्षिणयात्रा। ❖(१०--११)एको०।

गंगादशहरा, गंगाया: पृथिव्यामवतरणं, गंगास्नानदानादि: श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्दर्शनं पूजनञ्च, मुण्डनं, गृहारंभप्रवेशौ, पश्चिमया[illegible], क्षीणो गुरु: १३।५३३.❖

निर्जला ११व्रतं सर्वेषां, मुण्डनमेकादश्यां, गृहारंभप्रवेशौ स्वात्यां, दक्षिणयात्रैकादश्याम्।

आर्द्रायां रवि: २७।२० स्त्रीनपुंसूचयोगो वृश्चिकलग्नं मण्डूकवाहनञ्चण्डानाडी तत्पतिश्शनिस्तेन झंझावातयोग:, त्रिविक्रम १२ तिलेन पारणं, प्रदोष १३व्रतं, ✦

चतुर्दशीमानं ५६।२२, चम्पक १४, प्रदोष १४ व्रतम्। ✦गृहप्रवेशोऽनुराधायां, गृहारंभोऽनुराधायां गं.४ मि.५ यावद्दिने, पश्चिमोत्तरयात्रा[illegible]याम्।

महाज्यैष्ठी १५ स्नानदानादि:, सांप्रतिकवैवस्वतमन्वादि:, गृहारंभो मूले, उत्तरयात्रा, गं.८।१२३.२३।१२ यावत्।

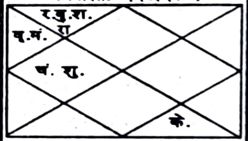
## मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

| ति.दि. | मंगल | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | २।१४।३१।१० | १।०५।३६।२७ | २।२५।२०।३० | ३।०३।२४।४८ | १।२४।५४।४५ | ७।२६।०५।३६ | ४७।०२ |
| २ बु. | २।१५।१०।३९ | १।०६।२०।४३ | २।२५।३३।२२ | ३।०४।३४।२६ | १।२५।०२।४८ | ७।२६।०२।२५ | ४७।०३ |
| ३ वृ. | २।१५।५०।०८ | १।०७।०४।५९ | २।२५।४६।१३ | ३।०५।४४।०४ | १।२५।१०।५१ | ७।२५।५९।१५ | ४७।०३ |
| ४ शु. | २।१६।२९।३७ | १।०७।४९।१५ | २।२५।५९।०४ | ३।०६।५३।४२ | १।२५।१८।५४ | ७।२५।५६।०५ | ४७।०३ |
| ५ श. | २।१७।०८।५८ | १।०८।५३।५७ | २।२६।१२।२४ | ३।०८।०३।०५ | १।२५।२७।०७ | ७।२५।५२।५४ | ४७।०४ |
| ६ र. | २।१७।४८।१९ | १।०९।५८।३९ | २।२६।२५।४४ | ३।०९।१२।२८ | १।२५।३५।२० | ७।२५।४९।४३ | ४७।०५ |
| ७ चं. | २।१८।२७।४० | १।११।०३।२१ | २।२६।३९।०४ | ३।१०।२१।५१ | १।२५।४३।३३ | ७।२५।४६।३२ | ४७।०६ |
| ८ मं. | २।१९।०७।०१ | १।१२।०८।०३ | २।२६।५२।२४ | ३।११।३१।१४ | १।२५।५१।४६ | ७।२५।४३।२१ | ४७।०७ |
| ९ बु. | २।१९।४६।२२ | १।१३।१२।४५ | २।२७।०५।४४ | ३।१२।४०।३७ | १।२५।५९।५८ | ७।२५।४०।१० | ४७।०७ |
| १० वृ. | २।२०।२५।४३ | १।१४।१७।२६ | २।२७।१९।०४ | ३।१३।४९।५९ | १।२६।०८।१० | ७।२५।३७।०० | ४७।०७ |
| ११ शु. | २।२१।०५।०४ | १।१५।२२।०७ | २।२७।३२।२४ | ३।१४।५९।२१ | १।२६।१६।२२ | ७।२५।३३।५० | ४७।०७ |
| १२ श. | २।२१।४४।१५ | १।१७।०१।५९ | २।२७।४५।५३ | ३।१६।०८।०६ | १।२६।२४।४५ | ७।२५।३०।३९ | ४७।०७ |
| १३ र. | २।२२।२३।२६ | १।१८।०२।५१ | २।२७।५९।२२ | ३।१७।१६।५१ | १।२६।३३।०८ | ७।२५।२७।२८ | ४७।०७ |
| १५ च. | २।२३।०२।३६ | १।२०।२१।४३ | २।२८।१२।५१ | ३।१८।२५।३६ | १।२६।४१।३१ | ७।२५।२४।१७ | ४७।०७ |

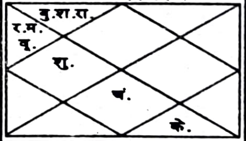
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ३।३१ | ५।२७ | ७।४० | ९।५८ | १२।१४ | १४।२९ | १६।४७ | १९।०५ | २१।१० | २२।५६ | ०।२७ | १।५४ |
| २ बु. | ३।२७ | ५।२३ | ७।३६ | ९।५४ | १२।१० | १४।२५ | १६।४३ | १९।०१ | २१।०६ | २२।५२ | ०।२३ | १।५० |
| ३ वृ. | ३।२३ | ५।१९ | ७।३२ | ९।५० | १२।०६ | १४।२१ | १६।३९ | १८।५७ | २१।०२ | २२।४८ | ०।१९ | १।४६ |
| ४ शु. | ३।१९ | ५।१५ | ७।२८ | ९।४६ | १२।०२ | १४।१७ | १६।३५ | १८।५३ | २०।५८ | २२।४४ | ०।१५ | १।४२ |
| ५ श. | ३।१५ | ५।११ | ७।२४ | ९।४२ | ११।५८ | १४।१३ | १६।३१ | १८।४९ | २०।५४ | २२।४० | ०।११ | १।३८ |
| ६ र. | ३।११ | ५।०७ | ७।२० | ९।३८ | ११।५४ | १४।०९ | १६।२७ | १८।४५ | २०।५० | २२।३६ | ०।०७ | १।३४ |
| ७ चं. | ३।०७ | ५।०३ | ७।१६ | ९।३४ | ११।५० | १४।०५ | १६।२३ | १८।४१ | २०।४६ | २२।३२ | ०।०३ | १।३० |
| ८ मं. | ३।०३ | ४।५९ | ७।१२ | ९।३० | ११।४६ | १४।०१ | १६।१९ | १८।३७ | २०।४२ | २२।२८ | २३।५९ | १।२६ |
| ९ बु. | २।५९ | ४।५५ | ७।०८ | ९।२६ | ११।४२ | १३।५७ | १६।१५ | १८।३३ | २०।३८ | २२।२४ | २३।५५ | १।२२ |
| १० वृ. | २।५५ | ४।५१ | ७।०४ | ९।२२ | ११।३८ | १३।५३ | १६।११ | १८।२९ | २०।३४ | २२।२० | २३।५१ | १।१८ |
| ११ शु. | २।५१ | ४।४७ | ७।०० | ९।१८ | ११।३४ | १३।४९ | १६।०७ | १८।२५ | २०।३० | २२।१६ | २३।४७ | १।१४ |
| १२ श. | २।४७ | ४।४३ | ६।५६ | ९।१४ | ११।३० | १३।४५ | १६।०३ | १८।२१ | २०।२६ | २२।१२ | २३।४३ | १।१० |
| १३ र. | २।४३ | ४।३९ | ६।५२ | ९।१० | ११।२६ | १३।४१ | १५।५९ | १८।१७ | २०।२२ | २२।०८ | २३।३९ | १।०६ |
| १५ च. | २।३९ | ४।३५ | ६।४८ | ९।०६ | ११।२२ | १३।३७ | १५।५५ | १८।१३ | २०।१८ | २२।०४ | २३।३५ | १।०२ |

४ शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।१५
अयनांशा: २२।३२।४९




११ शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।२२
अयनांशा: २२।३२।५०




**अथ विविधविषया:–** ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि, वामनपुराणे–उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सवन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च। **गंगादशहरा, वाराहे–** दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यत: स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा। हरति दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता। **दशहरायां दशयोगा:,** स्कान्दे–ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयो:। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नर: स्नात्वा सर्वपापै: प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाभिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या। **दशपापानि–** अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानत:। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा॥ पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वत:। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्॥ एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता॥

**ग्रहस्थिति:–** मार्गी पूर्वोदित: कुज: ७त: पश्चिमास्त:, मार्गिणौ पूर्वोदितौ बुधगुरू, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, मार्गी पश्चिमास्त: शनि:।

**वातावरणम्–** पक्षेऽस्मिन् तापोष्मवृद्धिझंझावातस्वल्पमेघचारवृष्ट्यभावादय:।

# आषाढकृष्णपक्षः

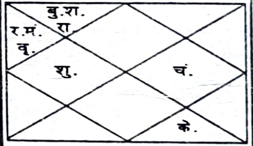
शकाब्द: १९२४, संवत् २०५९, सन् १४०९ साल, दि.२५।६।२००२ ई.त: १०।०७।२००२ ई.या., पश्चिमे काल:। मार्गी पूर्वोदितो गुरु: १०त: पश्चिमास्त:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, अशुद्ध:, ग्रीष्मर्तु:, सौम्यगोलायने।

| ति.दि. | तिथय: द.प. | तिथय: घं.मि. | नक्षत्राणि द.प. | नक्षत्राणि घं.मि. | योगा: द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशय: रा.द.प. | चन्द्रराशय: घं.मि. | स्पष्टसूर्य: राश्यादि: | दिनमानं द.प. | सू.उ. घं.मि. | सू.अ. घं.मि. | दिनाङ्का: रा. | सौ. | अं. | आषाढकृष्णपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ५२।२५ | रा.२।०७ | मू.१३।४८ | दि.१०।४० | शू.२।४९ | बा.२३।०९ | धनु. | अहो. | २।१९।४९।२३ | ३४।१३ | ५।०९ | ६।५१ | ४ | ११ | २५ | ब्रह्मयोगमानं ५६।३०, **पूर्वयात्रा द्वितीयायां**, विल्वमाषाढके त्यजेत्। |
| २ बु. | ५२।११ | रा.२।०२ | पूषा.१४।३७ | दि.११।०१ | ऐ.५६।५० | तै.२२।१८ | ध.३०।०७ | सा.५।१३ | २।२०।४६।१५ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | ५ | १२ | २६ | गृहारंभ उत्तराषाढे, पूर्वयात्रा **पूर्वाषाढे**। |
| ३ बृ. | ५३।१७ | रा.२।२९ | उषा.१६।३९ | दि.११।५० | वै.५५।२२ | व.२२।४४ | मकर | अहो. | २।२१।४३।०७ | ३४।११ | ५।१० | ६।५० | ६ | १३ | २७ | मुण्डनं श्रवणायां, गृहारंभ:, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां तृतीयायाम्। |
| ४ शु. | ५५।३२ | रा.३।२३ | श्र.२०।०१ | दि.१।१० | वि.५४।५० | ब.२४।२५ | म.५२।१५ | रा.२।०४ | २।२२।३९।५९ | ३४।१० | ५।१० | ६।५० | ७ | १४ | २८ | पञ्चकारंभो दिवा घं.१ मि.१० उ., **श्रीगणेश ४ व्रतं**, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां तत: पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे। |
| ५ श. | ५८।५९ | रा.४।४६ | ध.२४।२९ | दि.२।५८ | प्री.५५।१० | कौ.२७।२६ | कुंभ | अहो. | २।२३।३६।५० | ३४।०८ | ५।१० | ६।५० | ८ | १५ | २९ | गृहारंभो धनिष्ठायाम्। |
| ६ र. | ६०।०० | अहो. | श.२९।५७ | दि.५।१० | आ.५६।११ | ग.३१।०९ | कुभ | अहो. | २।२४।३३।४१ | ३४।०६ | ५।११ | ६।४९ | ९ | १६ | ३० | मिथुने बुध: ३२।०१। |
| ६ चं. | ०३।१८ | प्रा.६।३० | पू.भा.३६।०६ | सा.७।३७ | सौ.५७।४२ | व.०३।१८ | कु.१९।३४ | दि.१।०१ | २।२५।३०।३२ | ३४।०४ | ५।११ | ६।४९ | १० | १७ | १ | पश्चिमयात्रा षष्ठ्यायाम्, जुलाई ७। |
| ७ मं. | ८।११ | दि.८।२७ | उ.भा.४२।३८ | रा.१०।१४ | शो.५९।२१ | ब.०८।११ | मीन | अहो. | २।२६।२७।२३ | ३४।०३ | ५।११ | ६।४९ | ११ | १८ | २ | कर्के गुरु: ४३।१५, पूर्वोदित: शनि: ३।१२, द.ति. ८।११ उपरि। |
| ८ बु. | १३।१५ | दि.१०।३० | रे.४९।०७ | रा.१२।५१ | अति.६०।०० | कौ.१३।१५ | मी.४९।०७ | रा.१२।५१ | २।२७।२४।१३ | ३४।०२ | ५।१२ | ६।४८ | १२ | १९ | ३ | पञ्चकान्तो रात्रौ घं.१२मि.५१ उ., गं. ३७।०७ उ. ५२।०७ या., द.ति. १३।१५या., (९) एकोद्दिष्टम्। |
| ९ बृ. | १८।०० | दि.१२।२२ | अ.५५।०६ | रा.३।१४ | अति.००।५२ | ग.१८।०० | मेष | अहो. | २।२८।२१।०३ | ३४।०१ | ५।१२ | ६।४८ | १३ | २० | ४ | मघायां सिंहे शुक्र: ५७।१५, दक्षिणां विना यात्रा दशम्यामश्विन्याम्। |
| १० शु. | २२।११ | दि.२।०४ | भ.६०।०० | अहो. | सु.२।०० | वि.२२।११ | मेष | अहो. | २।२९।१७।५३ | ३४।०० | ५।१२ | ६।४८ | १४ | २१ | ५ | कर्के कुज: २७।५३, **पश्चिमास्तो गुरु: १३।५३**, (१०) एकोद्दिष्टम्। |
| ११ श. | २५।२१ | दि.३।२० | भ.००।१९ | प्रा.५।२० | धृ.२।२६ | बा.२५।२१ | मे.१६।२० | दि.११।४४ | २।२०।१४।४५ | ३३।५८ | ५।१२ | ६।४८ | १५ | २२ | ६ | **योगिनी ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वास्तो बुध: २।२५, पुनर्वसौ रवि: ३१।२४** पुंस्त्रीचंचयोगो धनुर्लग्नं मूषकवाहनञ्चण्डानाडी तत्पतिश्शनिस्तेन झंझावातयोग:। |
| १२ र. | २७।२५ | दि.४।११ | क.०४।२५ | दि.६।५९ | शू.१।५९ | तै.२७।२५ | वृष | अहो. | २।२१।११।३७ | ३३।५७ | ५।१३ | ६।४७ | १६ | २३ | ७ | यवचूर्णे: पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। |
| १३ चं. | २८।१२ | दि.४।३० | [illegible].०७।२४ | दि.८।११ | गं.००।४१ | व.२८।१२ | वृ.३८।१५ | रा.८।३१ | २।२२।०८।२९ | ३३।५६ | ५।१३ | ६।४७ | १७ | २४ | ८ | वृद्धियोगमानं ५७।३७, **प्रदोष १४ व्रतं**, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत: पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्याम्। |
| १४ मं. | २७।४१ | दि.४।१७ | मृ.०९।०५ | दि.८।५१ | ध्रु.५४।५६ | श.२७।४१ | मिथुन | अहो. | २।२३।०५।२१ | ३३।५५ | ५।१३ | ६।४७ | १८ | २५ | ९ | **उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।** |
| ३० बु. | २५।५६ | दि.३।३५ | आ.०९।३४ | दि.९।०३ | व्या.[illegible] | ना.२५।५६ | मि.५४।०२ | रा.२।५० | २।२४।०२।१२ | ३३।५४ | ५।१३ | ६।४७ | १९ | २६ | १० | **आषाढी ३०** स्नानदानादि:, पश्चिमदक्षिणयात्रा प्रतिपदि मिथुनस्थे चन्द्रे तत: पश्चिमयात्रा। |

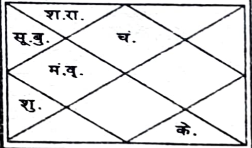
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगल | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | २।२३।४१।४६ | १।२२।०१।३५ | २।२८।२६।२० | ३।१९।३४।२१ | १।२६।४९।५३ | ७।२५।२१।०६ | ४७।०७ | २।३५ | ४।३१ | ६।४४ | ९।०२ | ११।१८ | १३।३३ | १५।५१ | १८।०९ | २०।१४ | २२।०० | २३।३१ | ०।५८ |
| २ बु. | २।२४।२०।५६ | १।२३।४१।२७ | २।२८।३९।४८ | ३।२०।४३।०६ | १।२६।५८।१५ | ७।२५।१७।५५ | ४७।०७ | २।३१ | ४।२७ | ६।४० | ८।५८ | ११।१४ | १३।२९ | १५।४७ | १८।०५ | २०।१० | २१।५६ | २३।२७ | ०।५४ |
| ३ बृ. | २।२५।००।०६ | १।२५।२१।१९ | २।२८।५३।१६ | ३।२१।५१।५१ | १।२७।०६।३७ | ७।२५।१४।४५ | ४७।०७ | २।२७ | ४।२३ | ६।३६ | ८।५४ | ११।१० | १३।२५ | १५।४३ | १८।०१ | २०।०६ | २१।५२ | २३।२३ | ०।५० |
| ४ शु. | २।२५।३९।१६ | १।२७।०१।११ | २।२९।०६।४४ | ३।२३।००।३५ | १।२७।१४।५९ | ७।२५।११।३५ | ४७।०७ | २।२३ | ४।१९ | ६।३२ | ८।५० | ११।०६ | १३।२१ | १५।३९ | १७।५७ | २०।०२ | २१।४८ | २३।१९ | ०।४६ |
| ५ श. | २।२६।१८।२६ | १।२८।४३।२४ | २।२९।२०।१२ | ३।२४।०८।३३ | १।२७।२३।१८ | ७।२५।०८।२४ | ४७।०६ | २।१९ | ४।१५ | ६।२८ | ८।४६ | ११।०२ | १३।१७ | १५।३५ | १७।५३ | १९।५८ | २१।४४ | २३।१५ | ०।४२ |
| ६ र. | २।२६।५७।२० | २।००।२५।३६ | २।२९।३३।४८ | ३।२५।१६।३१ | १।२६।३१।३६ | ७।२५।०५।१३ | ४७।०५ | २।१५ | ४।११ | ६।२४ | ८।४२ | १०।५८ | १३।१३ | १५।३१ | १७।४९ | १९।५४ | २१।४० | २३।११ | ०।३८ |
| ६ चं. | २।२७।३६।२२ | २।०२।०७।४८ | २।२९।४७।२० | ३।२६।२४।२९ | १।२७।३९।५४ | ७।२५।०२।०२ | ४७।०४ | २।१० | ४।०६ | ६।१९ | ८।३७ | १०।५३ | १३।०८ | १५।२६ | १७।४४ | १९।४९ | २१।३५ | २३।०६ | ०।३३ |
| ७ मं. | २।२८।१५।२३ | २।०३।५०।०० | ३।००।००।५१ | ३।२७।३२।२७ | १।२७।४८।१२ | ७।२४।५८।५१ | ४७।०३ | २।०६ | ४।०२ | ६।१५ | ८।३३ | १०।४९ | १३।०४ | १५।२२ | १७।४० | १९।४५ | २१।३१ | २३।०२ | ०।२९ |
| ८ बु. | २।२८।५४।२२ | २।०५।३२।१२ | ३।००।१४।२२ | ३।२८।४०।२५ | १।२७।५६।३० | ७।२४।५५।४० | ४७।०२ | २।०२ | ३।५८ | ६।११ | ८।२९ | १०।४५ | १३।०० | १५।१८ | १७।३६ | १९।४१ | २१।२७ | २२।५८ | ०।२५ |
| ९ बृ. | २।२९।३३।२५ | २।०७।१४।२४ | ३।००।२७।५३ | ३।२९।४८।२३ | १।२८।०४।४८ | ७।२४।५२।२९ | ४४।०१ | १।५८ | ३।५४ | ६।०७ | ८।२५ | १०।४१ | १२।५६ | १५।१४ | १७।३२ | १९।३७ | २१।२३ | २२।५४ | ०।२१ |
| १० शु. | ३।००।१२।२६ | २।०८।५६।३६ | ३।००।४१।२४ | ४।००।५६।२१ | १।२८।१३।०६ | ७।२४।४९।१९ | ४७।०० | १।५४ | ३।५० | ६।०३ | ८।२१ | १०।३७ | १२।५२ | १५।१० | १७।२८ | १९।३३ | २१।१९ | २२।५० | ०।१७ |
| ११ श. | ३।००।५१।२१ | २।१०।४४।५६ | ३।००।५५।०४ | ४।०२।०३।५५ | १।२८।२०।२९ | ७।२४।४६।०८ | ४६।५९ | १।५० | ३।४६ | ५।५९ | ८।१७ | १०।३३ | १२।४८ | १५।०६ | १७।२४ | १९।२९ | २१।१५ | २२।४६ | ०।१३ |
| १२ र. | ३।०१।३०।२६ | २।१२।३३।२६ | ३।०१।०८।४४ | ४।०३।११।२९ | १।२८।२७।५२ | ७।२४।४२।५७ | ४६।५८ | १।४६ | ३।४२ | ५।५५ | ८।१३ | १०।२९ | १२।४४ | १५।०२ | १७।२० | १९।२५ | २१।११ | २२।४२ | ०।०९ |
| १३ चं. | ३।०२।०९।११ | २।१४।२१।३६ | ३।०१।२२।२४ | ४।०४।१९।०३ | १।२८।३५।१४ | ७।२४।३९।४६ | ४६।५७ | १।४२ | ३।३८ | ५।५१ | ८।०९ | १०।२५ | १२।४० | १४।५८ | १७।१६ | १९।२१ | २१।०७ | २२।३८ | ०।०५ |
| १४ मं. | ३।०२।४८।०६ | २।१६।०९।५५ | ३।०१।३६।०४ | ४।०५।२६।३७ | १।२८।४२।३७ | ७।२४।३६।३५ | ४६।५६ | १।३८ | ३।३४ | ५।४७ | ८।०५ | १०।२१ | १२।३६ | १४।५४ | १७।१२ | १९।१७ | २१।०३ | २२।३४ | ०।०१ |
| ३० बु. | ३।०३।२७।०१ | २।१७।५८।१४ | ३।०१।४९।४४ | ४।०६।३४।११ | १।२८।४९।५८ | ७।२४।३३।२४ | ४६।५६ | १।३४ | ३।३० | ५।४३ | ८।०१ | १०।१७ | १२।३२ | १४।५० | १७।०८ | १९।१३ | २०।५९ | २२।३० | २३।५७ |

४ शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।२९
अयनांशा: २२।३२।५१




१० शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।३६
अयनांशा: २२।३२।५२




**अथ विविधविषया:— ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचार:—** बुध: शुक्रसमीपस्थ: करोत्येकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानु: समुद्रमपि शोषयेत्। पुरत: पृष्ठतो भानु: शुभा यदि समीपगा:। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगा:। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयन। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टि: प्रजायते। उदयास्तगत: शुक्र: बुधश्च वृष्टिकारक:। चलत्यंगारके वृष्टि: ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरु:। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते। **सूर्यनक्षत्राणि—** रोहिणीमृगशिरापूर्वोत्तरफल्गुनी—हस्त—चित्रा—स्वाती—विशाखाऽनुराधा—ज्येष्ठामूलशतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **अथैतत्फलम्—** चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टि: सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। **नक्षत्राणां पुरुषादिसंज्ञा—** मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादित्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टि:, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभाव:।

**ग्रहस्थिति:— मार्गी पश्चिमास्त:कुज:, मार्गी पूर्वोदितो बुध:११ त:पूर्वास्त:, मार्गी पूर्वोदितो गुरु:१०त: पश्चिमास्त:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, मार्गी पश्चिमास्त: शनि:७ त: पूर्वोदित:।**

**वातावरणम्—** पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे तापोष्मवृद्धिस्वल्पवायुमेघचारादय:, पक्षान्ते झंझावातयोग:।

# आषाढशुक्लपक्षः

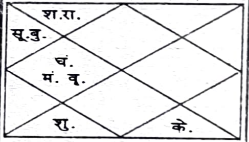
श.काब्द: १९२४, संवत् २०५९, सन्१४०९ साल, दि.११।७।२००२ ई.त:२४।७।२००२ई.या., पश्चिमे काल:।
मार्गी पश्चिमास्तो गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, अशुद्ध:, ग्रीष्मर्तु:, सौम्यगोलायने, ८ तो वर्षर्तुर्याम्यायनञ्च।

| ति.दि. | तिथय: | | नक्षत्राणि | | योगा: | करणानि | चन्द्रराशय: | | स्पष्टसूर्य: | दिनमानं | सू.उ. | सू.अ. | दिनाङ्का: | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | द.प. | घं.मि. | द.प. | घं.मि. | द.प. | द.प. | रा.द.प. | घं.मि. | राश्यादि: | द.प. | घं.मि. | घं.मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ बृ. | २३।०१ | दि.२।२५ | पुन.८।५१ | दि.८।४५ | ह.४५।२३ | ब.२३।०१ | कर्क | अहो. | २।२४।५९।०३ | ३३।५३ | ५।१३ | ६।४७ | २० | २७ | ११ | ग्रीष्मनवरात्रारम्भः कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये। |
| २ शु. | १९।०७ | दि.१२।५३ | पुष्य७।७ | दि.८।०५ | वज्र.३९।२९ | कौ.१९।०७ | कर्क | अहो. | २।२५।५५।५४ | ३३।५२ | ५।१४ | ६।४६ | २१ | २८ | १२ | चन्द्रदर्शनं मु.१५ फलं महार्घं, गं.५३।३३उ., **श्रीजगन्नाथरथयात्रा**, समुद्रस्नानं श्री जगन्नाथदर्शनं, मुण्डनं पुष्ये। |
| ३ श. | १४।२४ | दि.११।०० | आश्ले.४।३३ | दि.७।०३ | सि.३२।०३ | ग.१४।२४ | क.४।३३ | दि.७।०३ | २।२६।५२।४९ | ३३।५० | ५।१४ | ६।४६ | २२ | २९ | १३ | गं.८।३३या. **श्रीगणेश ४ व्रतं**, (३—४) एकोद्दिष्टम्। |
| ४ र. | ०९।०१ | दि.८।५० | म.१।१६ | प्रा.५।४४ | व्य.२५।४८ | वि.०९।०१ | सिंह | अहो. | २।२७।४९।४४ | ३३।४८ | ५।१४ | ६।४६ | २३ | ३० | १४ | पूर्वफल्गुनीमानं ५६।१३, पूर्वोत्तरयात्रा पंचम्यां, करमूले **पुलिकमूलबन्धनम्**। |
| ५ चं. | ०३।०९ | दि.६।३१ | उ.फ.५३।२५ | रा.२।३७ | वरी.१८।२३ | बा.०३।०९ | सि.११।२८ | दि.९।५० | २।२८।४६।३९ | ३३।४६ | ५।१५ | ६।४५ | २४ | ३१ | १५ | षष्ठीमानं.५३।५२, **गृहप्रवेश:** पंचम्यां, दक्षिणयात्रा हस्ते षष्ठ्याम्। |
| ७ मं. | ५०।४८ | रा.१।३४ | ह.४९।१२ | रा.१२।५६ | परि.१०।४६ | ग.२३।५६ | कन्या | अहो. | २।२९।४३।३४ | ३३।४५ | ५।१५ | ६।४५ | २५ | ३२ | १६ | मासान्त:, द.ति.५०।४८ उपरि। |
| ८ बु. | ४४।४२ | रा.११।०८ | चि.४५।८ | रा.११।१८ | शिव.३।८ | वि.१७।४५ | क.१७।१० | दि.१२।०७ | ३।००।४०।२९ | ३३।४४ | ५।१५ | ६।४५ | २६ | १ | १७ | **सिद्धियोगमानं**५२।३१, द.ति.४।१२या. **गुर्वादित्यारभ:** ४।१२ उपरि, **कर्केबुध**:१८।४५, **कर्केरवि**:४।१२ मु.३० फलंसाम्यं याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.५ मि.१५ उ. ६ मि.५६ यावत्पूर्वाह्णे। |
| ९ बृ. | ३८।५३ | रा.८।४८ | स्वा.४१।२३ | रा.९।४८ | सा.४८।२४ | बा.११।४८ | तुला | अहो. | ३।०१।३७।२४ | ३३।४३ | ५।१५ | ६।४५ | २७ | २ | १८ | **मासादि:**। |
| १० शु. | ३३।३७ | सा.६।४३ | वि.३८।०९ | रा.८।३२ | शुभ.४९।३७ | तै.०६।१५ | तु.२३।५८ | दि.२।५१ | ३।०२।३४।१८ | ३३।४२ | ५।१६ | ६।४४ | २८ | ३ | १९ | रैवतमन्वादि:, **गृहप्रवेशोऽनुराधायां**, उत्तरयात्रानुराधायाम्। ❖मकरलग्नमश्ववाहनं चण्डानाडी तत्पतिश्शनिस्तेन वायुवृष्टियोगौ। |
| ११ श. | २९।०३ | दि.४।५३ | अ.३५।३८ | रा.७।३१ | शुक्ल.३५।३१ | व.०१।२० | वृश्चिक | अहो. | ३।०३।३१।१८ | ३३।४० | ५।१६ | ६।४४ | २९ | ४ | २० | हरिशयन११व्रतं सर्वेषां, **चातुर्मास्यव्रतारम्भ:**, **मिथुने शनि**: १८।४९, पश्चिमोत्तरयात्रा, **गृहारंभप्रवेशावनुराधायां**, पुष्ये रवि:३४।५६ स्त्रीनपुंसूचंयोगो ❖ |
| १२ र. | २५।१८ | दि.३।२३ | ज्ये.३३।५८ | सा.६।५१ | ब्र.३०।०३ | बा.२५।१८ | वृ.३३।५८ | सा.६।५१ | ३।०४।२८।१८ | ३३।३८ | ५।१६ | ६।४४ | ३० | ५ | २१ | वासुदेव १२यवचूर्णै: पारणं, गं.२७।५८ उ.४२।५८ या., **प्रदोष** १३ व्रतं, उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत: पूर्वोत्तरयात्रा मूले, करमूले **पुलिकमूलबन्धनम्**। |
| १३ चं. | २१।३४ | दि.१।५५ | मू.३३।१७ | सा.६।३६ | ऐ.२५।२४ | तै.२१।३४ | धनु | अहो. | ३।०५।२५।१८ | ३३।३६ | ५।१७ | ६।४३ | ३१ | ६ | २२ | प्रदोष १४ व्रतं, **गृहप्रवेशस्त्रयोदश्यां**, उत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्। |
| १४ मं. | २१।०० | दि.१।४१ | पू. ३३।४९ | सा.६।४९ | वै.[illegible]।४४ | व.२१।०० | ध.४९।१५ | रा.१२।५९ | ३।०६।२२।१८ | ३३।३४ | ५।१७ | ६।४३ | १ | ७ | २३ | पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे। |
| १५ बु. | २०।४१ | दि.१।३४ | उा.३५।३४ | सा.७।३२ | वि.१९।०४ | ब.२०।४१ | मकर | अहो. | ३।०७।१९।१८ | ३३।३५ | ५।१८ | ६।४२ | २ | ८ | २४ | आषाढी१५ **गुरुपूर्णिमा** स्नानदानादि:, गुरुव्यासयो: पूजनं, चाक्षुषमन्वादि:, **गृहारम्भ:** पूर्णिमायां, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां, सन् १४१० सालसंज्ञकवर्षारम्भ: पूर्णान्तात्। |

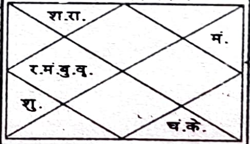
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च** | **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगल | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | केतु: | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | [illegible]४।५५।५६ | २।१९।४६।३३ | ३।०२।०३।२४ | ४।०७।४१।४५ | १।२८।५७।२० | ७।२४।३०।१४ | ४६।५६ | १।३० | ३।२६ | ५।३९ | ७।५७ | १०।१३ | १२।२८ | १४।४६ | १७।०४ | १९।०९ | २०।५५ | २२।२६ | २३।५३ |
| २ शु. | ३।०४।४४।५० | २।२१।३४।५२ | ३।०२।१७।०३ | ४।०८।४९।१९ | १।२९।०४।४२ | ७।२४।२७।०४ | ४६।५६ | १।२६ | ३।२२ | ५।३५ | ७।५३ | १०।०९ | १२।२४ | १४।४२ | १७।०० | १९।०५ | २०।५१ | २२।२२ | २३।४९ |
| ३ श. | ३।०५।२३।३९ | २।२३।२६।२० | ३।०२।३०।४६ | ४।०९।५५।१४ | १।२९।१२।०४ | ७।२४।२३।५३ | ४६।५५ | १।२२ | ३।१८ | ५।३१ | ७।४९ | १०।०५ | १२।२० | १४।३८ | १६।५६ | १९।०१ | २०।४७ | २२।१८ | २३।४५ |
| ४ र. | ३।०६।०२।२८ | २।२५।१७।४८ | ३।०२।४४।२९ | ४।११।०१।०९ | १।२९।१९।२६ | ७।२४।२०।४२ | ४६।५४ | १।१८ | ३।१४ | ५।२७ | ७।४५ | १०।०१ | १२।१६ | १४।३४ | १६।५२ | १८।५७ | २०।४३ | २२।१[illegible] | २३।४१ |
| ५ चं. | ३।०६।४१।१७ | २।२७।०९।१६ | ३।०२।५८।१२ | ४।१२।०७।०४ | १।२९।२६।४८ | ७।२४।१७।३१ | ४६।५३ | १।१४ | ३।१० | ५।२३ | ७।४१ | ९।५७ | १२।१२ | १४।३० | १६।४८ | १८।५३ | २०।३९ | २२।१० | २३।३७ |
| ७ म. | ३।०७।२०।०६ | २।२९।००।४४ | ३।०३।११।५५ | ४।१३।१२।५९ | १।२९।३४।१० | ७।२४।१४।२० | ४६।५२ | १।१० | ३।०६ | ५।१९ | ७।३७ | ९।५३ | १२।०८ | १४।२६ | १६।४४ | १८।४९ | २०।३५ | २२।०६ | २३।३३ |
| ८ बु. | ३।०७।५८।५५ | ३।००।५२।१२ | ३।०३।२५।३८ | ४।१४।१८।५४ | १।२९।४१।३२ | ७।२४।११।०९ | ४६।५१ | १।०६ | ३।०२ | ५।१५ | ७।३३ | ९।४९ | १२।०४ | १४।२२ | १६।४० | १८।४५ | २०।३१ | २२।०२ | २३।२९ |
| ९ बृ. | ३।०८।३७।४४ | ३।०२।४३।४० | ३।०३।३९।२० | ४।१५।२४।४८ | १।२९।४८।५० | ७।२४।०७।५९ | ४६।५१ | १।०२ | २।५८ | ५।११ | ७।२९ | ९।४५ | १२।०० | १४।१८ | १६।३६ | १८।४१ | २०।२७ | २१।५८ | २३।२५ |
| १० शु. | ३।०९।१६।३२ | ३।०४।३५।०७ | ३।०३।५३।०२ | ४।१६।३०।४२ | १।२९।५६।१५ | ७।२४।०४।४९ | ४६।५१ | ०।५८ | २।५४ | ५।०७ | ७।२५ | ९।४१ | ११।५६ | १४।१४ | १६।३२ | १८।३७ | २०।२३ | २१।५४ | २३।२१ |
| ११ श. | ३।०९।५५।२१ | ३।०६।२६।४३ | ३।०४।०६।३४ | ४।१७।३५।३६ | २।००।०३।१७ | ७।२४।०१।३८ | ४६।५० | ०।५४ | २।५० | ५।०३ | ७।२१ | ९।३७ | ११।५२ | १४।१० | १६।२८ | १८।३३ | २०।१९ | २१।५० | २३।१७ |
| १२ र. | ३।१०।३४।१० | ३।०८।१८।१९ | ३।०४।२०।०६ | ४।१८।४०।३० | २।००।१०।१८ | ७।२३।५८।२७ | ४६।४९ | ०।५० | २।४६ | ४।५९ | ७।१७ | ९।३३ | ११।४८ | १४।०६ | १६।२४ | १८।२९ | २०।१५ | २१।४६ | २३।१३ |
| १३ चं. | ३।११।१२।५९ | ३।१०।०९।५५ | ३।०४।३३।३८ | ४।१९।४५।२४ | २।००।१७।१९ | ७।२३।५५।१६ | ४६।४८ | ०।४५ | २।४१ | ४।५४ | ७।१२ | ९।२८ | ११।४३ | १४।०१ | १६।१९ | १८।२४ | २०।१० | २१।४१ | २३।०८ |
| १४ म. | ३।११।५१।४८ | ३।१२।०१।३१ | ३।०४।४७।१० | ४।२०।५०।१८ | २।००।२४।२० | ७।२३।५२।०५ | ४६।४७ | ०।४१ | २।३७ | ४।५० | ७।०८ | ९।२४ | ११।३९ | १३।५७ | १६।१५ | १८।२० | २०।०६ | २१।३७ | २३।०४ |
| १५ बु. | ३।१२।३०।३७ | ३।१३।५३।०७ | ३।०५।००।४२ | ४।२१।५५।१२ | २।००।३१।२१ | ७।२३।४८।५४ | ४६।४६ | ०।३७ | २।३३ | ४।४६ | ७।०४ | ९।२० | ११।३५ | १३।५३ | १६।११ | १८।१६ | २०।०२ | २१।३३ | २३।०० |

२ शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।४३
अयनांशा: २२।३२।५३




१० शुक्रे वल्ली ८।३७।४६।५०
अयनांशा: २२।३२।५४




**अथ विविधविषया:— आषाढे शकुनविचार:— आषाढकृष्णाष्टम्यां** चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टि:। आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारक: समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं, प्रजापीडा चोत्तराषाढे चेति। आषाढशुक्लद्वितीयायां **जगन्नाथरथयात्रा** तद्दिने **रथस्थरामावलोकिनो नैव विपद्यते**। **पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्—** तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्योत्पत्ति: सुवृष्टि: प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीति: दुर्भिक्षादिकञ्चेति। **आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे** करमूले **पुलिकमूलबन्धनमन्त्र:—** शुचिसितदिनकरवारे करमूले **बद्धपुलिकमूलस्य**। नागारेरिव नागा: प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य। एवं कृते **सर्पभयं न जायते**। **चातुर्मास्यव्यतीते** तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेदित्यनेन कार्त्तिकशुक्लद्वादश्यां तस्य करान्मुक्ति:। **आर्द्रानक्षत्रस्थे सूर्ये पायसभोजनमहत्त्वम्— आर्द्राया: प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नर:।** अपि रोषयुतस्तस्य तक्षक: किं करिष्यति। **क्षीरमत्र पायसमिति**।

**ग्रहस्थिति:—** मार्गिणौ पश्चिमास्तौ कुजगुरू, मार्गिणौ पूर्वास्तौ बुधशनी, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:।

**वातावरणम्** — पक्षस्यपूर्वार्द्धे वायुमेघच्छायाखण्डवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धे तापमेघचारवायुवेगच्छिन्नवृष्टय:।

## ★ अथ ग्रहकृतारिष्टशमनाय दानादिपदार्थाः ★

| सूर्यः | चन्द्रः | मङ्गलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | राहुः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माणिक्य | वंशपात्र | विद्रुम | कांस्य | पीतधान्य | श्वेततण्डुल | माषान्न तैल | गोमेद, माषान्न | माषान्न |
| गोधूम | श्वेततण्डुल | भूमि | हरितवस्त्र | पीतवस्त्र | श्वेतचित्रवस्त्र | कृष्णतिल | तुरग तिल | कम्बल, कस्तूरी |
| गुड़ ताम्र | श्वेतवस्त्र | मसूरद्विदल | हरितपुष्प | पीतपुष्प | श्वेतचन्दन | कृष्णवस्त्र | नीलवस्त्र | तिलतैल |
| रक्तपुष्प | श्वेतपुष्प | रक्तवृषभ | कर्पूर, शंख | पीतचन्दन | घी, सोना | कृष्णपुष्प | नीलपुष्प | कृष्णवस्त्रादि |
| रक्तचन्दन | श्वेतचन्दन | गुड़, ताम्र | फल, मुद्ग | सोना, घृत | रजत स्फटिक | कंबल उपानह | तिलतैल | सोना लोहा |
| रक्तवस्त्र | दधि शंख | रक्तवस्त्र | गजदन्त | पीतफल | दधि शंख | कस्तूरी सोना | सप्तधान्य | छाग खड्ग |
| सुवर्ण | सिता चांदी | रक्तचन्दन | घृत, सोना | पोखराज | गोधूम शक्कर | लौह कुल्थी | लौह सुवर्ण | कस्तूरी |
| केसर | कपूर | रक्तपुष्प | मोथा | अश्व मधु | सुगन्धद्रव्य | महिषी छत्र | कृष्णपुष्पादि | ताम्र |
| मूंगा | श्वेतवृषभ | सुवर्ण केशर | मणि | पुस्तक छत्र | श्वेताश्व | कृष्णधेनु | कम्बल | मणि वैदूर्य |
| सवत्सगौ | घृत कुम्भ | कस्तूरी | षड्रसभोजन | भूमि शक्कर | भूमि श्वेतगौ | शमी | शस्त्र छाग | कृष्णपुष्प |
| लाजा | मोती | बैल | पन्ना | हरिद्रा | हीरा नीलम | लाजावर्त | लाजावर्त | कृष्णतिल |
| जप ७००० | जप ११००० | जप १०००० | जप ८००० | जप ११००० | जप ११००० | जप २३००० | जप १८००० | जप ७००० |

ग्रहाणां दानरत्नधारणजपादिकालः—सूर्यादीनाञ्च यद्दानं जपहोमार्चनादिकम् । तेषां वारे प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि । कन्यामीनपत्यो राहुकेत्वोर्जपादिकं शनौ बुधे वा कार्यम् । अथ धर्मप्रशंसा—धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः । धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ।

## ★ अथ विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम् ★

| सूर्यदशावर्ष ६ | | | | चन्द्रदशावर्ष १० | | | | भौमदशावर्ष ७ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृ. उफ. उषा. | | | | रोहि. ह. श्रवणा | | | | मृ. चि. ध. | | | |
| अन्तर्दशा १८ | | | | अन्तर्दशा ३० | | | | अन्तर्दशा २१ | | | |
| ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. |
| सू. | ० | ३ | १८ | चं. | ० | १० | ० | मं. | ० | ४ | २७ |
| चं. | ० | ६ | ० | मं. | ० | ७ | ० | रा | १ | ० | १८ |
| मं. | ० | ४ | ६ | रा. | १ | ६ | ० | वृ. | ० | ११ | ६ |
| रा. | ० | १० | २४ | वृ. | १ | ४ | ० | श. | १ | १ | ९ |
| वृ | ० | ९ | १८ | श. | १ | ७ | ० | बु. | ० | ११ | २७ |
| श. | ० | ११ | १२ | बु. | १ | ५ | ० | के. | ० | ४ | २७ |
| बु | ० | १० | ६ | के | ० | ७ | ० | शु | १ | २ | ० |
| के | ० | ४ | ६ | शु. | १ | ८ | ० | सू. | ० | ४ | ६ |
| शु | १ | ० | ० | सू | ० | ६ | ० | चं | ० | ७ | ० |

| राहुदशावर्ष १८ | | | | गुरुदशावर्ष १६ | | | | शनिदशावर्ष १९ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर्द्रा स्वा. शत | | | | पुन. वि. पूभा | | | | पुष्य. अनु. उभा | | | |
| अन्तर्दशा ५४ | | | | अन्तर्दशा ४८ | | | | अन्तर्दशा ५७ | | | |
| ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. |
| रा | २ | ८ | १२ | वृ. | २ | १ | १८ | श. | ३ | ० | ०३ |
| वृ. | २ | ४ | २४ | श. | २ | ६ | १२ | बु. | २ | ८ | ०९ |
| श. | २ | १० | ६ | बु. | २ | ३ | ६ | के. | १ | १ | ९ |
| बु. | २ | ६ | १८ | के. | ० | ११ | ६ | शु. | ३ | २ | ० |
| के | १ | ० | १८ | शु | २ | ८ | ० | सू | ० | ११ | १२ |
| शु | ३ | ०० | ० | सू. | ० | ९ | १८ | चं. | १ | ७ | ० |
| सू. | ० | १० | २४ | च. | १ | ४ | ० | मं. | १ | १ | ९ |
| चं | १ | ६ | ० | मं. | ० | ११ | ६ | रा. | २ | १० | ६ |
| मं. | १ | ० | १८ | रा | २ | ४ | २४ | वृ. | २ | ६ | १२ |

| बुधदशावर्ष १७ | | | | केतुदशावर्ष ७ | | | | शुक्रदशावर्ष २० | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आश्ले. ज्ये. रेव. | | | | मघा. मू. अश्वि. | | | | पूफ. पूषा. भर | | | |
| अन्तर्दशा ५१ | | | | अन्तर्दशा २१ | | | | अन्तर्दशा ६० | | | |
| ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. |
| बु. | २ | ४ | २७ | के. | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ४ | ० |
| के. | ० | ११ | २७ | शु. | १ | २ | ० | सू. | १ | ० | ० |
| शु. | २ | १० | ० | सू. | ० | ४ | ६ | चं. | १ | ८ | ० |
| सू. | ० | १० | ६ | च | ० | ७ | ० | मं. | १ | २ | ० |
| चं. | १ | ५ | ० | म | ० | ४ | २७ | रा. | ३ | ० | ० |
| मं. | ० | ११ | २७ | रा. | १ | ० | १८ | वृ. | २ | ८ | ० |
| रा. | २ | ६ | १८ | वृ. | ० | ११ | ६ | श. | ३ | २ | ० |
| वृ. | २ | ३ | ६ | श. | १ | १ | ९ | बु. | २ | १० | ० |
| श. | २ | ८ | ०९ | बु | ० | ११ | २७ | के | १ | २ | ० |

## ★ अथ योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम् ★

| मंगला १ | पिंगला २ | धान्या ३ | भ्रामरी ४ | भद्रिका ५ | उल्का ६ | सिद्धा ७ | संकटा ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्र.आ.चि. | ध.पुन.स्वा. | श.पु.वि. | अ.आश्ले. अनु पूभा | भर.म.ज्ये. उभा. | कृ.पूफ मू.रे. | रो.उफ पूषा | मृ.ह.उषा |
| मा १२चं | मा. २४सू | मा. ३६वृ. | मा. ४८मं | मा. ६०बु. | मा. ७२श. | मा. ८४शु. | मा. ९६के |
| मं. ०।१०. | पिं. १।१० | धा. ३।० | भ्रा. ५।१० | भ. ८।१० | उ. १२।० | सि १६।१० | सं २१।१० |
| पिं. ०।२० | धा. २।० | भ्रा. ४।० | भ ६।२० | उ. १०।० | सि. १४।० | सं. १८।२० | मं. २।२० |
| धा. १।० | भ्रा. २।२० | भ. ५।० | [illegible] ८।० | सि ११।२० | सं १६।० | मं २।१० | पि. ५।१० |
| भ्रा. १।१० | भ. ३।१० | उ. ६।० | सि. ९।१० | सं १३।१० | मं. २।० | पि. ४।२० | धा. ८।० |
| भ. १।२० | उ. ४।० | सि. ७।० | सं. १०।२० | मं. १।२० | पि. ४।० | धा. ७।० | भ्रा. १०।२० |
| उ. २।० | सि. ४।२० | स ८।० | मं. १।१० | पि ३।१० | धा. ६।० | भ्रा ९।१० | भ. १३।१० |
| सि. २।१० | सं. ५।१० | मं. १।० | पि. २।२० | धा. ५।० | भ्रा. ८।० | भ. ११।२० | उ. १६।० |
| स. २।२० | मं ०।२० | पि. २।०० | धा. ४।० | भ्रा. ६।२० | भ. १०।० | उ. १[illegible]।० | सि १८।२० |

## ★ अथ योगिनीदशाभुक्तभोग्यानयनम् ★

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात् । मङ्गलाद्याः सङ्ख्यन्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः । ततो विंशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम् ।

### ★योगिनीशान्तिमन्त्राः★

मङ्गला—ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा । पिङ्गला—ओं ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा । धान्य.—ओं श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा । भ्रामरी—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा । भद्रिका—ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा । उल्का—ओं उल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा । सिद्धा—ओं ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा । सङ्कटा—ओं ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा ।

### गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नामग्रामदिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध बृहस्पति शुक्र शनि ग्रहाणां दशा ज्ञातव्याः । तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदा, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति ॥ स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्मादिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनाद्दिशि यद्गृहं तत्र शुभप्रदम् । अतएव स्ववर्गमित्र-वर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासे मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिप्रदः ।

## ★ अथ गरुडादिवर्गचक्रम् ★

| वर्गेशः | गरुड | मार्जार | सिंह | श्वान | सर्प | इन्दुर | गज | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शरसंख्या | ८ | ५ | ६ | ४ | ७ | १ | ३ | २ |
| वर्गनाम | स्वरवर्ण | कवर्ग | चवर्ग | टवर्ग | तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग |
| वर्गदिक् | पू. | आ. | द. | नै. | प. | वा. | उ. | ई. |
| वर्गशत्रुः | सर्प | इन्दुर | गज | मेष | गरुड | मार्जार | सिंह | श्वान |
| वर्गसमः | सिंह | श्वान | सर्प | इन्दुर | गज | मेष | गरुड | मार्जार |
| वर्गमित्रम् | श्वान | सर्प | इन्दुर | गज | मेष | गरुड | मार्जार | सिंह |



## ★ अंगस्फुरणफलम् ★

| स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|
| मस्तके | भूमिलाभः | वक्षसि | सुखम् | कण्ठे | ऐश्वर्यम् |
| ललाटे | पदलाभः | हृदये | इष्टसिद्धिः | ग्रीवायः | शत्रुभयम् |
| स्कन्धे | भोगः | कटिदेशे | प्रमोदः | पृष्ठे | पराजयः |
| भ्रूमध्ये | सुखम् | नाभौ | स्त्रीनाशः | मुखे | मधुरभोजनम् |
| भ्रुवोः | सुखम् | कटिपार्श्वे | प्रीतिः | कपोलौ | व्यभिचारः |
| कपाले | शुभम् | आन्त्रिके | कोषवृद्धिः | बाहौ | प्रियलाभः |
| नेत्रयोः | धनाप्तिः | भगे | पतिसमागमः | बाहुमध्ये | धनागमः |
| नेत्रकोणयोः | धनम् | कुक्षौ | प्रीतिः | वस्तिदेशे | उन्नतिः |
| नेत्रसमीपे | प्रियसमागमः | उदरे | धनम् | ऊरसौ | वस्त्रलाभः |
| नेत्रपक्ष्मणि | राज्याप्तिः | लिङ्गे | स्त्रीसमागमः | जानुन्योः | भयम् |
| नेत्रपक्ष्मणोः | विजयः | गुदे | वाहनाप्तिः | जंघे | स्वामिप्राप्तिः |
| नेत्रापांगे | स्त्रीलाभः | वृषणौ | पुत्रलाभः | पादयोरुपरि | स्थानलाभः |
| नासिकयोः | सुखम् | ओष्ठे | इष्टसिद्धिः | पादतले | पराक्रमः |
| हस्ते | धनलाभः | हनौ | भयम् | पादयोः | हानिः |

★ अथ नेत्रस्फुरणफलम्—नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः । नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत् संगरेऽभद्रहेतुः वामे चैतत्फलमधिकलं दक्षिणे वैपरीत्यम् । एतानि फलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि, स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि ।

# शतपदचक्रम्

| नक्षत्र वर्णाः | चु. चे चो. ल. | लि. लु. ले. लो. | अ. इ. उ. ए. | ओ. व. वि. वु. | वे. वो. क. कि. | कु. घ. ङ. छ. | के. को. ह. हि. | हु. हे. हो. ड. | डि. डु. डे. डो. | म. मि. मु. मे. | मो. ट. टि. टु. | टे. टो. प. पि. | पु. ष. ण. ठ. | पे. पो. र. रि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्रं | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू.फ. | उ.फ. | हस्त | चित्रा |
| राशिः | मेष | मेष | मेष १ वृष ३ | वृष | वृष २ मिथुन २ | मिथुन | मिथुन ३ कर्क १ | कर्क | कर्क | सिंह | सिंह | सिंह १ कन्या ३ | कन्या | कन्या २ तुला २ |
| वर्णाः | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय१ वैश्य३ | वैश्य | वैश्य २ शूद्र २ | शूद्र | शूद्र ३ विप्र १ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय १ वैश्य ३ | वैश्य | वैश्य २ शूद्र २ |
| वश्यः | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद | चतु २ मान २ | मानव | मानव ३ जल १ | जलचर | जलचर | वनचर | वनचर | वन १ मानव ३ | मानव | मानव |
| योनिः | अश्व | गज | मेष | सर्प | सर्प | श्वान | मार्जार | मेष | मार्जार | मूषक | मूषक | गो | महिष | व्याघ्र |
| योनिवैरः | महिष | सिंह | वानर | नकुल | नकुल | मृग | मूषक | वानर | मूषक | मार्जार | मार्जार | व्याघ्र | अश्व | गो |
| राशीशः | भौमः | भौमः | भौमः १ शुक्रः ३ | शुक्रः | शुक्रः २ बुधः २ | बुधः | बुधः ३ चन्द्रः १ | चन्द्रः | चन्द्रः | सूर्यः | सूर्यः | सूर्यः १ बुधः ३ | बुधः | बुधः २ शुक्रः २ |
| गण | देव | मनुष्य | राक्षस | मनुष्य | देव | मनुष्य | देव | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव | राक्षस |
| नाडी | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य |

| नक्षत्र वर्णाः | रु. रे. रो. त. | ति. तु. ते. तो. | न. नि. नु. ने. | नो. य. यि. यु. | ये. यो. भ. भि. | भु. ध. फ. ढ. | भे. भो. ज. जि. | खि. खु. खे. खो. | ग. गि. गु. गे. | गो. स. सि. सु. | से. सो. द. दि. | दु. थ. झ. ञ. | दे. दो. च. चि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्रं | स्वाती | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवणा | धनिष्ठा | शतभिषा | पू.भा. | उ.भा. | रेवती |
| राशिः | तुला | तुला ३ वृश्चिक १ | वृश्चिक | वृश्चिक | धनु | धनु | धनु १ मकर ३ | मकर | मकर २ कुम्भ २ | कुम्भ | कुम्भ ३ मीन १ | मीन | मीन |
| वर्णाः | शूद्र | शूद्र ३ विप्र १ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय १ वैश्य ३ | वैश्य | वैश्य २ शूद्र २ | शूद्र | शूद्र ३ विप्र १ | विप्र | विप्र |
| वश्यः | मानव | मानव ३ कीट १ | कीट | कीट | मानव | मानव ।। चतु ३ ।। | चतुष्पद | चतु.१ ।। जल.२ ।। | जलचर२ मानव २ | मानव | मानव ३ जल १ | जलचरः | जलचरः |
| योनिः | महिष | व्याघ्र | मृग | मृग | श्वान | वानर | नकुल | वानर | सिंह | अश्व | सिंह | गो | गज |
| योनिवैरः | अश्व | गो | श्वान | श्वान | मृग | मेष | सर्प | मेष | गज | महिष | गज | व्याघ्रः | सिंह |
| राशीशः | शुक्रः | शुक्रः ३ भौमः १ | भौमः | भौमः | गुरुः | गुरुः | गुरुः १ शनिः ३ | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः ३ गुरुः १ | गुरुः | गुरुः |
| गण | देव | राक्षस | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव |
| नाडी | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य |

## पल्लीपतनफलम्

| स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिरसि | राज्यलाभ | दक्षिणकर्णे | आयुर्वृद्ध | स्तनयोः | सौभाग्यम् | स्कन्धयोः | विजयः | मुखे | मधुरभोजनम् |
| ललाटे | बन्धुदर्शनम् | वामकर्णे | लाभः | उदरे | भूषणाप्तिः | नाभौ | धनाप्तिः | केशान्ते | कष्टम् |
| भ्रूमध्ये | सम्मानम् | नेत्रयोः | धनलाभः | पृष्ठदेशे | बुद्धिनाशः | कटिभागे | पशुलाभः | गुल्फयोः | धनम् |
| दक्षिणगण्डे | धनहानिः | द. भुजे | पराक्रमः | जानुद्वये | शुभः | द. मणिबंधे | हानिस्तापः | द. चरणे | भ्रमणम् |
| वामगण्डे | ऐश्वर्यप्राप्तिः | वामभुजे | गजभयम् | जंघयोः | शुभः | वा. मणिबंधे | कीर्तिनाशः | वा. चरणे | बन्धुनिग्रह |
| नासाग्रे | रोग | कण्ठे | शत्रुनाशः | हस्तद्वये | लाभः | हृदये | धनाप्तिः | पादान्ते मध्ये | स्त्रीनाश |

*अथ पल्लीपतनफलम्—यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां स्वजनधनवियोगौ लाभदा वामभागे। उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मत्युः करचरणहृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात्।। एतानि फलानि पुरुषाणां, स्त्रीणान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि। अनिष्टपल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादिदानं कार्यम्। शिवालये दीपं दद्यादष्टोत्तरशतसंख्यक "ॐ नमः शिवाय" इति मन्त्रस्य जपश्च कार्यः।।*

## जन्मराशेः सायुररिष्टवर्षाणि

| राशिः | अरिष्टवर्षाणि | आयु |
|---|---|---|
| मेष | १ ।१ ३ ।५ ० ।६ २ | ७५ |
| वृष | ३ ।६ ।८ ।३ ३ ।४ ६ ।५ २ ।६ ३ | ७५ |
| मिथुन | ६ ।१० ।११ ।१८ ।२४ ।५३ ।६३ | ७५ |
| कर्क | १ ।१९ ।२२ ।२७ ।३५ ।४५ ।५५ ।६१ | ७० |
| सिंह | १ ।१० ।१५ ।२५ ।४५ ।५१ ।६१ | ६५ |
| कन्या | १ ।३ ।१३ ।२६ ।३३ ।४३ | ६८ |
| तुला | २ ।४ ।१६ ।२१ ।३३ ।४२ ।५१ ।६१ | ६५ |
| वृश्चिक | ३ ।७ ।८ ।१३ ।३२ ।३५ ।४५ ।६३ | ७५ |
| धनु | ३ ।९ ।१० ।१६ ।२३ ।३६ ।४७ ।५७ ।६७ | ९५ |
| मकर | ३ ।१० ।३२ ।३३ ।४२ ।५१ ।५६ ।६१ | १०० |
| कुम्भ | १८ ।३२ | ६१ |
| मीन | १८ ।३३ | ६१ |

## जन्मलग्नात् सायुररिष्टवर्षाणि

| लग्न | अरिष्टवर्षाणि | आयु |
|---|---|---|
| मेष | ४ ।११ ।१६ ।४४ ।५८ | १०० |
| वृष | १ ।२८ ।३३ ।४४ ।६१ | ९० |
| मिथुन | ४ ।१० ।१४ ।३८ ।५८ | ६४ |
| कर्क | ५ ।२५ ।४० ।४८ ।६२ | १०० |
| सिंह | ५ ।१३ ।२८ ।३६ ।४८ | ६३ |
| कन्या | ४ ।१६ ।२३ ।३६ ।४५ | १०० |
| तुला | १५ ।३१ ।३५ ।५४ ।६२ | ७५ |
| वृश्चिक | ११ ।२८ ।३८ ।५२ ।६२ | १०० |
| धनु | २ ।८ ।१० ।१८ ।३१ ।३८ ।४२ ।६७ | ८१ |
| मकर | ५ ।१३ ।२७ ।३६ ।५७ ।६२ | ८५ |
| कुम्भ | २ ।२८ ।३३ ।४८ ।६४ | ९० |
| मीन | १ ।८ ।१३ ।३६ ।४८ | ८३ |



## अथ माहेन्द्रादियोगचक्रम्

### चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि— मा२अ८व१०शू८मा२शू२अ६शू८व६मा२व४अ२
चन्द्र— मा४शू६ब६व६मा२अ२शू४व२मा६व८ब८व६
मंगल— व४शू२मा६व४शू२अ४शू४अ६व४शू२व८अ६शू४अ४
बुध— व४अ४व६अ४शू२व४मा२व४शू४अ६शू६व८अ६
गुरु— अ६शू४व४अ६व६अ४व४मा४अ२व८अ४शू४अ४
शुक्र— शू२अ१६व८अ२शू२व४शू८अ६व८अ२शू२
शनि— शू४व४शू६अ४शू२अ४शू२अ४शू४व४अ४व४अ६व४अ२शू२

### ।।❖।। ज्येष्ठाषाढमासयोः ।।❖।।

रवि— शू४अ६मा६व६शू२व४अ२शू४मा६शू४व६शू२मा४व४
चन्द्र— व८अ४शू६अ६मा६व६अ८व४व४शू४व४
मंगल— अ४शू४व४शू२अ४व२मा८शू२व६अ४व४अ२शू२व२अ६व४
बुध— शू२व४अ८व६अ८शू२अ१०शू२व८अ६शू२अ२
गुरु— अ२शू२अ४व८अ६शू२अ६शू४अ४शू२व६अ६शू४व४
शुक्र— शू४अ१४व८अ२शू२व४शू२अ६शू६अ८मा२शू२
शनि— शू४व६अ६शू२व४अ४शू६व४अ६व४अ४शू२अ२व६

### ।।❖।। आश्विनकार्त्तिकमार्गपौषमासेषु ।।❖।।

रवि— मा६व८अ८शू२मा४शू६व४अ४व४अ६शू२अ४शू२
चन्द्र— अ४व४अ६व२२अ८व६अ४व६
मंगल— मा२व६अ१०व६शू२व१२अ२शू२अ६व४मा४व४
बुध— शू४अ४मा६शू४व६शू२व८अ४व८अ६शू८
गुरु— अ४व६अ८शू४व६शू६अ८व४अ६व६मा२
शुक्र— अ२व६शू६व६अ८व६व८शू४मा२व६मा६
शनि— मा४शू४अ८शू८अ८शू२अ११शू४व७मा२शू६

*फलम्—न वार—तिथि—नक्षत्रं न योगः करणन्तथा। शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।। माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम्।। ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया। अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।*

## १ वर्णगुणाः ॥ वरस्य ॥

| वर्णा | विप्र | क्षत्रि | वैश्य | शूद्र |
|---|---|---|---|---|
| विप्र | १ | ० | ० | ० |
| क्षत्रि | १ | १ | ० | ० |
| वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| शूद्र | १ | १ | १ | १ |

कन्यायाः

## २ वश्यगुणाः ॥ वरस्य ॥

| वश्यः | चतु. | मा. | जल | वन | कीट |
|---|---|---|---|---|---|
| चतु. | २ | १ | १ | ० | १ |
| मानव | १ | २ | ॥ | ० | १ |
| जलचर | १ | ॥ | २ | १ | १ |
| वनचर | ० | ० | १ | २ | ० |
| कीट | १ | १ | १ | ० | २ |

## ३ तारागुणाः ॥ वरस्य ॥

| ता. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| २ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ३ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ४ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ५ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ६ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ७ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ८ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ९ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |

## ५ ग्रहमैत्रीगुणाः ॥ वरस्य ॥

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ५ | ५ | ५ | ४ | ५ | ० | ० |
| च | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ॥ | ॥ |
| मं. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ३ | ॥ |
| बु. | ४ | १ | ॥ | ५ | ॥ | ५ | ४ |
| वृ | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ॥ | ३ |
| शु | ० | ॥ | ३ | ५ | ॥ | ५ | ५ |
| श. | ० | ॥ | ॥ | ४ | ३ | ५ | ५ |

कन्यायाः

## ७ राशिकूटगुणाः ॥ वरस्य ॥

| राशयः | १ मे. | २ वृ. | ३ मि. | ४ कं. | ५ सि. | ६ कं. | ७ तु. | ८ वृ. | ९ ध. | १० म. | ११ कु. | १२ मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ७ |
| वृष | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| मिथुन | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| कर्क | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० |
| सिंह | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० |
| कन्या | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ |
| तुला | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| वृश्चिक | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| धनु | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ |
| मकर | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ |
| कुम्भ | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० |
| मीन | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ |

## ४ योनिकूटगुणाः ॥ वरस्य ॥

| | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वान | मार्जार | मूषक | गौ | महिष | व्याघ्र | मृग | वानर | नकुल | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | ४ | २ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | ३ | २ | २ | १ |
| गज | २ | ४ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ० |
| मेष | ३ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | ० | ३ | ० |
| सर्प | २ | २ | ३ | ४ | २ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | ० |
| श्वान | २ | २ | २ | २ | ४ | १ | १ | २ | २ | १ | ० | २ | २ | १ |
| मार्जार | २ | २ | ३ | २ | १ | ४ | ० | २ | २ | १ | २ | २ | २ | २ |
| मूषक | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ |
| गौ | ३ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | ४ | ३ | ० | ३ | २ | ३ | १ |
| महिष | १ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ३ | ४ | १ | २ | २ | २ | ३ |
| व्याघ्र | १ | २ | १ | २ | १ | १ | २ | ० | १ | ४ | २ | १ | २ | २ |
| मृग | ३ | २ | ३ | २ | ० | २ | २ | ३ | २ | १ | ४ | २ | २ | ३ |
| वानर | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ४ | २ | ३ |
| नकुल | २ | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | ४ | ४ | २ |
| सिंह | १ | ० | १ | २ | १ | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | ४ |

कन्यायाः

## ॥ नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम् ॥

| ग्रहाः | शनिः | शुक्रः | वृहः | बुधः | मंगल | चन्द्रः | सूर्यः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्राणि | बुधः शुक्रः | बुधः शनिः | सूर्यः मं.चं | सूर्यः शुक्रः | सू.चं. वृ. | सूर्यः बुधः | चं.मं. वृ. |
| समाः | गुरुः | भौमः वृहः | शनिः | मं.वृ. शनिः | शुक्रः शनिः | मं.वृ. शु.श | बुधः |
| शत्रवः | सूर्यः चं.मं. | सूर्यः चन्द्रः | बुधः शुक्रः | चन्द्रः | बुधः | | शुक्रः शनिः |

## अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

| अवर्ग | कवर्ग | चवर्ग | टवर्ग |
|---|---|---|---|
| गरुड | मार्जार | सिंह | श्वान |
| तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग |
| सर्प | मूषक | मृग | मेष |

## ८ नाड़ीगुणाः

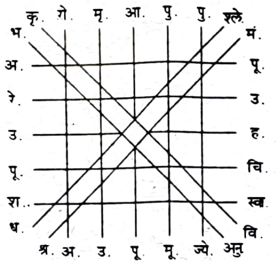
कन्यायाः

| | आ. | म. | अ. |
|---|---|---|---|
| ना. | | | |
| आ. | ० | ८ | ८ |
| म. | ८ | ० | ८ |
| अ. | ८ | ८ | ० |

## ६ गणगुणाः

| गण | दे. | मा. | रा. |
|---|---|---|---|
| दे | ६ | ५ | ० |
| मा. | ५ | ६ | ० |
| रा | ० | ० | ६ |

## ॥ विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम् ॥




## ॥ विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः ॥

| ग्रहाः | सूर्यः | चन्द्रः | गुरुः |
|---|---|---|---|
| शुभः | ३।६।१०।११ | ३।६।७।१०।११ | २।५।७।९।११ |
| पूज्यः | १।२।५।७।९ | १।२।५।९ | १।३।६।१० |
| निन्द्यः | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ |

## ॥ विवाहे रेखाप्रदग्रहाः ॥

| सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | ग्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३॥ | ५ | १॥ | २ | ३ | २ | १॥ | सं. |

राहुकेत्वोः शनिवत्। सू. श. रा. के. ३।६।८।११ चं. २।३।११ मं. ३।६।११ बु. वृ. १।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु. १।२।४।५।९।१०।११॥ उक्त स्थानस्थ– ग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहबलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

**मेषसंक्रान्ते वारिपूर्णघटदानं** – कुशादिकं गृहीत्वा ओं सोपकरणवारिपूर्णघटाय नमः ३। कुशोपरि ओं ब्राह्मणाय नमः ३। घटं सिक्त्वा–ओमद्यामुके मासि अमुकेपक्षेऽमुकतिथौ मेषार्क–संक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले वा) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथसिद्धिपूर्वक–पितृस्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय– ओमद्य कृतैतत्सोपकरणवारिपूर्णघटदान– प्रतिष्ठार्थमेतावद्–द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः–एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः। इति प्रार्थयेत्॥

## वर्षप्रवेशसारिणी। प्रतिवर्षक्षेपकदिनादि।

| गतवर्ष | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ |
| दण्ड | १५ | ३१ | ४६ | २ | १७ | ३३ | ४८ | ४ | १९ | ३५ |
| पल | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |
| गव | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० | ९० | १०० | |
| दिन | ४ | २ | १ | ६ | ५ | ४ | २ | १ | ६ | |
| दण्ड | १० | ४५ | २१ | ५६ | ३१ | ६ | ४२ | १७ | ५२ | |
| पल | ३० | ४५ | ०० | १५ | ३० | ४५ | ०० | १५ | ३० | |
| विपल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | |

## विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

| पति | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | [illegible] | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ |
| दिन | १८ | ०० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० |

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्ता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः।

**त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्**–सैका गताब्दसंख्या या विभक्तानवभिस्ततः। शेषांके जन्मनिगताच्चन्द्रराशिरिह न्यसेत्। शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत्। त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ। शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ॥

## ॥ अथ त्रिराशिपतिः ॥

| लग्न | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिवा | सू. | शु. | श. | शु. | वृ. | च. | बु. | म. | श. | म. | वृ. | च. |
| रात्रौ | वृ. | चं. | बु. | मं. | सू. | शु. | श. | शु. | श. | मं. | वृ. | च. |

**वर्षमुन्थानयम्**–(गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या) ÷ १२॥ अत्रैकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः। **वर्षेशनिर्णयः**– वर्षलग्नेशजन्मलग्नेश–मुंथेश–त्रिराशिपति–दिवारविराशीश–रात्रौचन्द्रराशीश एषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो **वर्षेशः**।

## ॥ अथ गोचरफलबोधकचक्रम् ॥

| भावाः | सूर्यः | चन्द्रः | मंगल | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | राहुः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तनुः | स्थानहानिः | सौख्यम् | बन्धनम् | भयम् | अभयम् | शत्रुनाशः | नाशः | कष्टम् | रोगः |
| धनम् | भयम् | धनम् | धननाशः | धनाप्तिः | धनाप्तिः | धनागमः | हानिः | धनम्ः | धननाशः |
| सहजः | धनम् | लाभः | धनाप्तिः | भीतिः | लाभः | शोकः | लाभः | नैरुज्यम्ः | सुखम् |
| सुहृद् | मानहानिः | रोगः | भयम् | धनम् | धनहानिः | लाभः | शत्रुवृद्धिः | शत्रुवृद्धिः | भीतिः |
| सुतः | दैन्यम् | कार्यसिद्धिः | धनक्षयः | रोगः | पुत्रसुखम् | पुत्राप्तिः | धनपुत्रनाशः | शोकः | शोकः |
| रिपुः | विजयः | शत्रुभयम् | विजयः | अलाभः | शोकः | शत्रुभयम् | द्रव्यलाभः | धनम्ः | धनाप्तिः |
| जाया | भ्रमणम् | लाभः | व्ययः | विग्रहः | मानम् | अशोकः | स्त्रीकष्टम् | हानिः | दुर्गतिः |
| मृत्युः | पीड़ा | कष्टम् | कष्टम् | लाभः | क्लेशः | विपत्तिः | शत्रुभयम् | रोगः | राजभयम् |
| धर्मः | धर्महानिः | मानम् | पीड़ा | रोगः | धर्मरतिः | लाभः | धर्महानिः | पापरतिः | बन्धनम् |
| कर्मः | कार्यसिद्धिः | सुखम् | शोकः | सुखम् | उन्नतिः | दैन्यम् | दौर्मनस्यम् | वैरम् | शोकः |
| आयः | धनम् | लाभः | धनाप्तिः | सौख्यम् | लाभः | धनाप्तिः | आयुवृद्धिः | सौख्यम् | सुयशः |
| व्ययः | कष्टम् | व्ययः | हानिः | नाशः | चिन्ता | हानिः | हानिः | शोकः | धनक्षयः |

७॥ **वर्षीय शनेः मासभेदेन फलम्**– मस्तके ७ मासाः।– सर्वांशे हानिः। नेत्रे९ मासाः–सर्वांशेहानिः। मुखे ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः–भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः– यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः–कष्टमुदरे। गुह्ये ५ मासाः सर्वांशेहानिः। जानुनि १४ मासाः राजबलेन जयः। जंघयोः ११ मासाः स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः–व्यर्थभ्रमणम्।

## ❖ अथ पूजाविधि: ❖

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करनी चाहिए। अक्षत लेकर– ॐ भुर्भुव: स्व: सूर्यादिपञ्चदेवता इहागच्छत इह तिष्ठत' इस मन्त्र से आवाहन कर 'एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ॐ भुर्भुव: स्व: सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नम:' इस मन्त्र से जल दें। इसके बाद 'इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादि पञ्चदेवताभ्यो नम:' इस मन्त्र से चन्दन तथा इसी तरह अन्य वस्तु भी समर्पित करें। रात्रि में सूर्यादि के स्थान पर गणपत्यादि पढ़ें। इसी तरह 'ॐ भुर्भुव: स्वर्विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ' से विष्णु का आवाहन करें। ॐ भूर्भुव: स्वर्विष्णवे नम: से पूजा करें। (मूर्ति या शालिग्राम हों तो आवाहन विसर्जन न करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें। इसके बाद 'ॐ भूर्भुव: स्व: कीर्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ' इस मन्त्र से मृत्तिकानिर्मित कीर्तिमुख का आवाहन कर 'ॐ भूर्भुव: स्व: कीर्तिमुखाय नम:' इस मन्त्र से पूर्ववत् पूजा आदि करें। उसके बाद 'ॐ हराय नम:' इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण करें। 'ॐ महेश्वराय नम:' इस मन्त्र से महादेव बनाकर 'शूलपाणये नम: ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव' इस मन्त्र से अक्षत लगाकर पात्र में शिव को सामने रखें। उसके बाद निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करें–

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्। तत– 'ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ' से आवाहन कर एतानि पाद्यादीनि ॐ नम: शिवाय नम:। तत इदमनुलेपनम्, एतानि पुष्पाणि, एतानि विल्वपत्राणि एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूल–यथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ पशुपतये नम:, इस मन्त्र से क्रमश: चन्दनाक्षत–पुष्पविल्वपत्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्य आदि दें। इसके बाद फूल अक्षत चन्दन से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारो ओर और अन्त में महादेव के ऊपर निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमश: अष्टमूर्त्ति की पूजा करें–

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नम: १। ॐ भवाय जलमूर्त्तये नम २। ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नम:३। ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नम: ४। ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नम: ५। ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नम: ६। ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नम: ७। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नम: ८। ॐ महादेवाय नम:। अन्त में जल पुष्पाक्षतचन्दनादि से 'ॐ ब्रह्मणे नम:' इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा एक बार ही भूमि पर करें। उसके बाद पूजा क्रम से जल लेकर विसर्जन करें। 'ॐ सूर्यादिपञ्चदेवता: पूजिता:स्थ: क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ महादेव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। 'ॐ विष्वक्सेनाय नम:' मन्त्र से भगवान् पर से तथा 'ॐ चण्डेश्वराय नम:' इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

## * देशान्तरसारिणी *

| स्थान | मिनट | स्थान | मिनट |
|---|---|---|---|
| अहल्यास्थान | + १३।३० | मधुआ | + ४।१८ |
| आरा | + ८।४० | मधुबनी | + १४।२८ |
| औरंगाबाद | + ७।३२ | मधुपुर | + १६।२८ |
| क.टिहार | + २०।४० | मधेपुरा | + १८।०० |
| किशनगंज | + २२।२० | मुंगेर | + १६।०० |
| काठमाण्डू | + ११।८ | मुजफ्फरपुर | + ११।५६ |
| खगड़िया | + १६।१० | मोकामा | + १३।४० |
| गिद्धौर | + १५।०० | मोतिहारी | + ७।८ |
| गया | + १०।०० | राँची | + ११।३२ |
| गोपालगंज | + ७।१५ | रामगढ़ | + १२।०० |
| गिरीडीह | + १५।२० | राजमहल | + २१।१० |
| चायबासा | + १३।२४ | लखीसराय | + १६।१५ |
| चितरंजन | + १६।३६ | लोहरदगा | + ८।५० |
| छपरा | + ९।६ | सहरसा | + १७।३० |
| छोटानागपुर | + १०।०० | समस्तीपुर | + १४।५५ |
| जमशेदपुर | + १४।४० | सीतामढ़ी | + १२।८ |
| जमालपुर | + १६।८ | सिवान | + ६।२८ |
| जयनगर | + १४।३६ | सासाराम | + ६।१२ |
| जनकपुर | + १३।२८ | सिंहभूमि | + १२।०० |
| झरिया | + १६।१० | सिन्दरी | + १६।४८ |
| डाल्टेनगंज | + ९।४० | सुपौल | + १७।४० |
| डुमरांव | + ६।३६ | सोनपुर | + १०।४५ |
| दरभंगा | + १३।४८ | हाजीपुर | + १०।५५ |
| दानापुर | + १०।२० | हजारीबाग | + ११।३५ |
| दुमका | + १९।२० | अयोध्या | - ००।४४ |
| देवघर | + १७।०० | आसनसोल | + १८।४ |
| धनबाद | + १६।०० | आगरा | - १७।४० |
| धरान | + १८।३६ | उड़ीसा | + १२।०० |
| धनकुटा | + १९।१५ | इलाहाबाद | - २।४० |
| नालन्दा | + १२।८ | कलकत्ता | + २३।२४ |
| पटना | + १०।४० | कानपुर | - ८।२४ |
| पलामू | + ७।८ | काश्मीर | - २४।०० |
| पूर्णिया | + २०।४ | कोटा | - २६।३२ |
| पारसनाथ | + १४।४० | गोहाटी | + ३७।४४ |
| पचगछिया | + १६।०४ | गोरखपुर | + ४।०० |
| पोखरा | + ५।५२ | जयपुर | - २६।५२ |
| फारबिसगंज | + १८।२० | दिल्ली | - २०।४८ |
| बक्सर | + ६।४ | वाराणसी | + २।८ |
| बेतिया | + ८।३२ | मुम्बई | - ३८।२५ |
| बगहा | + ७।४५ | बद्रीनाथ | - १२।२० |
| बेगूसराय | + १६।०० | बस्ती | + १।५२ |
| बोधगया | + १०।८ | बलिया | + ५।४० |
| बीरगंज | + १०।०० | बिलासपुर | - १।०० |
| विराटनगर | + १९।४ | मथुरा | - १८।४८ |
| बोकारो | + १६।३० | मद्रास | - १४।०० |
| भागलपुर | + १७।२८ | लखनऊ | - ६।४ |

## * वेलान्तरसारिणी *

| मास | जन. | फरव. | मार्च | अप्रील | मई | जून | जुला. | अग. | सित. | अक्टू. | नव. | दिस. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनांक | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | -४ | -१४ | -१२ | -४ | +३ | +२ | -४ | -६ | +० | +१० | +१६ | +१० |
| २ | ४ | १४ | १२ | ४ | ३ | २ | ४ | ६ | ० | ११ | १६ | १० |
| ३ | ५ | १४ | १२ | ३ | ३ | २ | ४ | ६ | १ | ११ | १६ | १० |
| ४ | ५ | १४ | १२ | ३ | ३ | २ | ४ | ६ | १ | ११ | १६ | १० |
| ५ | ६ | १४ | १२ | ३ | ४ | २ | ४ | ६ | १ | ११ | १६ | ९ |
| ६ | ६ | १४ | ११ | २ | ४ | २ | ४ | ६ | २ | १२ | १६ | ९ |
| ७ | ७ | १४ | ११ | २ | ४ | १ | ५ | ६ | २ | १२ | १६ | ८ |
| ८ | ७ | १४ | ११ | २ | ४ | १ | ५ | ५ | २ | १२ | १६ | ८ |
| ९ | ७ | १४ | ११ | २ | ४ | १ | ५ | ५ | ३ | १३ | १६ | ७ |
| १० | ८ | १४ | १० | १ | ४ | १ | ५ | ५ | ३ | १३ | १६ | ७ |
| ११ | ८ | १४ | १० | १ | ४ | १ | ५ | ५ | ३ | १३ | १६ | ६ |
| १२ | ९ | १४ | १० | १ | ४ | ० | ५ | ५ | ४ | १४ | १६ | ६ |
| १३ | ९ | १४ | १० | ० | ४ | ० | ५ | ५ | ४ | १४ | १६ | ६ |
| १४ | ९ | १४ | ९ | -० | ४ | ० | ५ | ४ | ५ | १४ | १५ | ५ |
| १५ | १० | १४ | ९ | +० | ४ | ० | ६ | ४ | ५ | १४ | १५ | ५ |
| १६ | १० | १४ | ९ | ० | ४ | +० | ६ | ४ | ५ | १४ | १५ | ४ |
| १७ | १० | १४ | ८ | १ | ४ | -१ | ६ | ४ | ६ | १५ | १५ | ४ |
| १८ | ११ | १४ | ८ | १ | ४ | १ | ६ | ४ | ६ | १५ | १५ | ३ |
| १९ | ११ | १४ | ८ | १ | ४ | १ | ६ | ३ | ६ | १५ | १४ | ३ |
| २० | ११ | १४ | ८ | १ | ४ | १ | ६ | ३ | ७ | १५ | १४ | २ |
| २१ | १२ | १४ | ७ | १ | ४ | २ | ६ | ३ | ७ | १५ | १४ | २ |
| २२ | १२ | १४ | ७ | २ | ४ | २ | ६ | ३ | ७ | १५ | १४ | १ |
| २३ | १२ | १४ | ७ | २ | ३ | २ | ६ | २ | ८ | १६ | १४ | १ |
| २४ | १२ | १३ | ६ | २ | ३ | २ | ६ | २ | ८ | १६ | १३ | ० |
| २५ | १३ | १३ | ६ | २ | ३ | २ | ६ | २ | ८ | १६ | १३ | +० |
| २६ | १३ | १३ | ६ | २ | ३ | ३ | ६ | २ | ९ | १६ | १३ | -१ |
| २७ | १३ | १३ | ५ | २ | ३ | ३ | ६ | १ | ९ | १६ | १२ | १ |
| २८ | १३ | १३ | ५ | ३ | ३ | ३ | ६ | १ | ९ | १६ | १२ | २ |
| २९ | १३ | -१२ | ५ | ३ | ३ | ३ | ६ | १ | १० | १६ | १२ | २ |
| ३० | १४ | X | ४ | +३ | ३ | -३ | ६ | १ | +१० | १६ | +११ | ३ |
| ३१ | -१४ | X | -४ | X | +३ | X | -६ | -० | X | +१६ | X | -३ |

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकार–सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही है। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह १० या १२ बजते हैं। परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे–१ जनवरी को देवघर के इष्टकाल में ४ मिनट वेलान्तर ऋण एवं १७ मिनट देशान्तर धन कर देंगे तो देवघर का स्थानीय समय हो जायेगा।

## * शरीरान्तकालिकवैतरणीदानम् *

हरिं स्मृत्वा कुशत्रयपुष्पाक्षतजलान्यादाय-ओं कृष्णगव्यै नमः३, कुशोपरि ओं ब्राह्मणाय नमः३। तत ओं उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्। दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता। ओं यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तुर्तं ददाम्येतां कृष्णां वैतरणीं च गाम् इति पठेत्। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय- ओमद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः यम-द्वारस्थितवैतरणी- नदीसुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये। ततो ग्रहीता स्वस्तीति वदेत्। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः स्वस्तीत्युक्त्वा ग्रहीता दक्षिणां स्वीकुर्यात्। शूद्र ओमित्यस्य स्थाने नमः, इति पठेत्॥ गोरभावे एतावद्द्रव्यमूल्यककृष्णगव्यै नमः इति पठेत्। इमां गां इत्यत्र एतावद्द्रव्यमूल्यककृष्णगवीम् इति पठेत्। शेषं यथावत्। मातृपक्षे गोत्राया मातुरमुकदेव्याः इति पठेत्।

## * अथ दाहसंस्कारविधिः *

स्नातः शुचिवस्त्रादिधरः पूर्वाभिमुख उपविष्टः कुशहस्तः कर्त्ता नूतनमृद्भाण्डे जलं कृत्वा शवञ्च दक्षिणशिरसं कृत्वा ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गंगां च यमुनां च सरिद्वराम्। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा। धेनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा। इत्यनेन तीर्थानि ध्यायन् जले आवाह्य तेन जलेन शवं संस्नाप्य नूतनवस्त्रयज्ञोपवीतपुष्पमाल्य-चन्दनादिभिरलंकृत्य दारुविरचितचितायां कुशोपरि पुरुषमधोमुखं स्त्रियञ्चोत्तानमुखीमुत्तरशिरसं शाययेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखो वामपाणिनोल्मुकं गृहीत्वा - ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु।" इति मन्त्रद्वयं पठित्वा शवं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य शिरोदेशे ज्वलदुल्मुकं दद्यात्। ततस्तृणकाष्ठघृतादिकं चितायां निःक्षिप्य कपोतावशेषं दहेत्। ततः प्रादेशमात्रकसप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणसप्तकं विधाय कुठारेण उल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं विधाय 'ॐ' क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्, इति पठित्वा एकैकां काष्ठिकां चितायां क्षिपेत्। ततः ओं अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवस्वतो न तृप्यति सुराभिरिव दुर्मतिः॥ इति यमगाथां गायन्तो बालपुरस्सराः शवानुगमनकर्त्तारः पादेन पादस्पर्शमकुर्वाणाः जलाशयं गत्वा स्नात्वा च ओमद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यनेन तिलांजलिं दद्युः। स्त्रियाःपक्षे ओमद्यामुकगोत्रे अमुकप्रेते इति पठेयुः। ततः आर्द्रवस्त्रमेव धारयन्तः कर्तृः प्राङ्गणद्वारं गत्वा तत्र ओं लोहवद् दृढकायोऽस्तु इति लौहं, ओमश्मवत् स्थिरो भूयासम् इत्यश्मानं, ओमग्निर्नः शर्म यच्छतु इत्यग्निं स्पृष्ट्वा प्रत्येकं जलस्पर्शः। ततस्तिक्तं प्राश्य समाचारात् स्वगृहं गच्छेयुरिति।

## * अशौचव्यवस्था *

ब्राह्मणों को जन्म से षण्मासाभ्यन्तर शरीरान्त होने पर सद्यः शौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। सात महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर एकाहोरात्र अशौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। तीसरे वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त तीन अहोरात्र अशौच, अग्निसंस्कार पिण्डदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन। उसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सवों को दशाहाशौच एवं श्राद्ध। क्षत्रियों को षण्मासाभ्यन्तर ब्राह्मणवत्। सात मास से लेकर दो वर्ष तक दो रात्रि अशौच एवं भूमिनिक्षेपणमात्र। तीन वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त षडहोरात्र अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया। सातवें वर्ष से ऊपर अग्निसंस्कार, द्वादशाहाशौच एवं श्राद्ध। वैश्यों को जन्म से षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्। उसके बाद दो वर्षों तक भूमि निक्षेपण एवं तीन दिन अशौच, उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त नौ दिन तक अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण पञ्चदशाहाशौच अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध। शूद्रों को षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्, उसके बाद दो वर्षों तक पाँच दिन अशौच एवं भूमिनिक्षेपण। उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त अविवाहित मृत्यु से ५ दिन तथा विवाहित मृत्यु से द्वादशाहाशौच अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण तीस दिन अशौच, अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध।

## * अथ कन्यामरणाशौचः *

सभी वर्णों को जन्म से दो वर्ष तक सद्यः शौच। उसके बाद विवाहावधि त्र्यहाशौच। विवाह के बाद पितृगृह अथवा स्वामी के घर में कन्या मृत्यु से माता-पिता को तीन अहोरात्र अशौच एवं स्वामी के घर में विहित स्वस्ववर्णानुसार अशौच एवं श्राद्ध।

## * अशौचसङ्करविचारः *

ब्राह्मणों को सम्पूर्णाशौच के बीच में ५ दिन तक, क्षत्रियों को ६ दिन तक, वैश्यों को ७ दिन तक एवं शूद्रों को १५ दिन तक यदि सजातीय द्वितीयसम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच की शुद्धि के साथ-साथ दोनों की शुद्धि तथा साथ-साथ श्राद्ध होता है। यदि सम्पूर्णाशौच के मध्य ब्राह्मणादि को क्रमशः ६, ७, ८, १६ दिनों से लेकर क्रमशः ९, ११, १४, २९वें अहोरात्र के बीच में सजातीय द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीयाशौचान्त होने पर दोनों की शुद्धि होती है तथा श्राद्ध साथ-साथ होते हैं।

यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड रात्रि के अन्दर सजातीयाशौचान्तर प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के तीसरे दिन दोनों का क्षौर तथा चौथे दिन श्राद्ध होता है।

यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड के बाद द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के चौथे दिन दोनों का क्षौर तथा पाँचवें दिन श्राद्ध होता है।

आद्यश्राद्धसंकल्पानन्तर द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त हो तो आद्य श्राद्ध हो जाता है पश्च सपिण्डन, द्वितीय के आद्य श्राद्ध दिन होता है। सपिण्डनदिन, संकल्प से पूर्व द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त होने पर द्वितीय के आद्य श्राद्ध दिन सपिण्डन होना चाहिए। सम्पूर्णाशौच के मध्य त्रिरात्राशौच तथा मरणाशौच के मध्य जननाशौच की मान्यता नहीं होती है। त्रिरात्राशौच के मध्य द्वितीय त्रिरात्राशौच हो जाय तो द्वितीय त्रिरात्राशौचानुसार दोनों की शुद्धि होती है।

## ❖ दूर्वाक्षतदानमन्त्रः ❖

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यःशूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिःपुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

## ❖ यज्ञोपवीतधारणमन्त्रः ❖

वाजसनेयिनां—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। छन्दोगानां—ॐयज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि। **जीर्णयज्ञोपवीतत्यागमन्त्र** :— एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया। जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।

## ❖ ग्रहाणां यजुर्वेदीयशान्तिमन्त्राः ❖

**सूर्यस्य**—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। **चन्द्रस्य**—ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाग्वं राजा। **कुजस्य**—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपाग्वं रेताग्वंसि जिन्वति। **बुधस्य**—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सग्वं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्ते अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। **गुरोः**—ॐवृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्। **भृगोः**—ॐअन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु। **शनेः**—ॐशन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः। **राहोः**—ॐकयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। **केतोः**—ॐकेतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

## ❖ ग्रहाणां सामवेदीयशान्तिमन्त्राः ❖

**सूर्यस्य**—ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। **चन्द्रस्य**—ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुव जाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व। **कुजस्य**—ॐअग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिः पृथिव्या अयमपां रेतांसि जिन्वति। **बुधस्य**—ॐ अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य आदाशुषे। जातवेदो वहात्वमद्या देवो उषर्बुधः। **गुरोः**—ॐवृहस्पते परिदीयारथेन रक्षाहामित्रां अपबाधमानः। प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकं मेध्यविता रथानाम्। **शुक्रस्य**— शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया। अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु। शनेः —ॐशन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः। **राहोः**—ॐ कयानश्चित्र आभुवद्दूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। **केतोः**—ॐकेतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। सुमषद्भिरजायथाः।

## ◆ सौराठससौलासभा ◆

ज्येष्ठकृष्णप्रतिपच्चन्द्रतः
द्वादशीं शुक्रवासरं यावत्
(दि.२७।०५।२००२ ई.तः
७।६।२००२ ई.यावत)

## ◆ उपनयनदिनानि ◆

मार्च— २४,२५
अप्रील— १७,२३
मई— १७,२१,२२
जून— १३

## ◆ विवाहदिनानि ◆

॥ फरवरी ॥
२८
॥ मार्च ॥
१,३,७,१०,११
॥ अप्रील ॥
१७,२२,२४,२५,२६
॥ मई ॥
१,२,३,८,९,१०,१३,१९,२०,
२२,२३,२४,२६,२७,३१
॥ जून ॥
२,५,६,७

## विशिष्टपर्वसूची

| मौनापञ्चमी | १० जुलाई | धन्वन्तरिजयन्ती | १३ नवम्बर | गणेशावतार | १ फरवरी |
|---|---|---|---|---|---|
| मधुश्रावणी | २३ जुलाई | हनुमज्जयन्ती | १३ नवम्बर | नरकनिवारण १४ | १० फरवरी |
| नागपञ्चमी | २५ जुलाई | दीपावली | १४ नवम्बर | सोमवती अमावास्या | ११ फरवरी |
| तुलसीजयन्ती | २७ जुलाई | लक्ष्मीपूजा | १४ नवम्बर | मौनीअमावास्या | १२ फरवरी |
| संस्कृतदिवस | ४ अगस्त | कालीपूजा | १४ नवम्बर | वसन्तपञ्चमी | १७ फरवरी |
| रक्षाबन्धन | ४ अगस्त | अन्नकूट | १५ नवम्बर | सरस्वतीपूजा | १७ फरवरी |
| कृष्णाष्टमी | १२ अगस्त | गोवर्द्धनपूजा | १५ नवम्बर | अचलासप्तमी | १९ फरवरी |
| स्वतन्त्रतादिवस | १५ अगस्त | गोक्रीडा | १५ नवम्बर | भीष्माष्टमी | २० फरवरी |
| कुशोत्पाटन | १९ अगस्त | भ्रातृद्वितीया | १७ नवम्बर | माघीपूर्णिमा | २७ फरवरी |
| हरितालिका | २१ अगस्त | चित्रगुप्तपूजा | १७ नवम्बर | महाशिवरात्रि | १२ मार्च |
| चौठचन्द्र | २२ अगस्त | प्रतिहारषष्ठीव्रत | २१ नवम्बर | साम्बशिवदर्शन | १२ मार्च |
| राधाष्टमी | २६ अगस्त | गोपाष्टमी | २३ नवम्बर | होलिकादाह | २८ मार्च |
| इन्द्रपूजारंभ | ३० अगस्त | अक्षयनवमी | २४ नवम्बर | होली | २९ मार्च |
| वामनद्वादशी | ३० अगस्त | देवोत्थान११ | २६ नवम्बर | सप्ताडोरा | २९ मार्च |
| अनन्तपूजा | १ सितम्बर | विद्यापतिपर्व | २८ नवम्बर | मेषसंक्रान्ति | १४ अप्रैल |
| पितृपक्षारंभ | ३ सितम्बर | सामापूजा | ३० नवम्बर | नववर्षारंभ | १४ अप्रैल |
| जितिया | १० सितम्बर | कार्त्तिकेयपूजा | ३० नवम्बर | जूडिशीतल | १५ अप्रैल |
| मातृनवमी | ११ सितम्बर | हरिहरक्षेत्रस्नान | ३० नवम्बर | रामनवमीव्रत | २१ अप्रैल |
| पितृपक्षान्त | १७ सितम्बर | कार्त्तिकी१५ | ३० नवम्बर | रविव्रतान्त | २१ अप्रैल |
| विश्वकर्मापूजा | १७ सितम्बर | रविव्रतारंभ | २ दिसम्बर | महावीरजयन्ती | २५ अप्रैल |
| सोमवतीअमावास्या | १७ सितम्बर | नवान्नपार्वण | २ दिसम्बर | शीतलाष्टमी | ४ मई |
| मलमासारंभ | १७ सितम्बर | चौडपञ्चमी | ५ दिसम्बर | अक्षयतृतीया | १५ मई |
| मलमासान्त | १६ अक्टूबर | नवान्नपार्वण | ५ दिसम्बर | जानकीनवमीव्रत | २१ मई |
| कलशस्थापन | १७ अक्टूबर | विवाहपञ्चमी | १९ दिसम्बर | नरसिंह १४ | २५ मई |
| विल्वाभिमन्त्रण | २२ अक्टूबर | स्कन्दषष्ठी | २० दिसम्बर | बुद्धजयन्ती | २६ मई |
| पत्रिकाप्रवेश | २३ अक्टूबर | गीताजयन्ती | २६ दिसम्बर | वटसावित्री | १० जून |
| निशापूजा | २३ अक्टूबर | हरिहरक्षेत्रस्नान | ३१ दिसम्बर | सोमवती अमावास्या | १० जून |
| महाष्टमीव्रत | २४ अक्टूबर | दशातारकारंभ | ११ जनवरी | गंगादशहरा | २० जून |
| महानवमीव्रत | २५ अक्टूबर | मकरसंक्रान्ति | १४ जनवरी | रथयात्रा | १२ जुलाई |
| विजयादशमी | २६ अक्टूबर | दशातारकान्त | २२ जनवरी | हरिशयन ११ | २० जुलाई |
| कोजागरा | ३१ अक्टूबर | गणतन्त्रदिवस | २६ जनवरी | गुरुपूर्णिमा | २४ जुलाई |
| लक्ष्मीपूजा | ३१ अक्टूबर | कौशिकीस्नान | २८ जनवरी | | |

**धर्मः सनातनो नित्यं जनैः सम्यगनुष्ठितः।**
**राष्ट्रं विधत्ते सबलं समृद्धं निरुपद्रवम्॥**

आस्तिक्यभावनावशंवदानां श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठानतत्पराणां शिष्टानां तदनुशिष्टानामितरेषाञ्च जनानां धर्मोपार्जनौपयिकवर्षव्यापि—कृत्यजातसम्पादनोचितकाल—विशेषप्रबोधनप्रयोजनं निर्वोढुं दैवज्ञवर्यश्रीरामचन्द्रझाशर्म्मणा विनिर्मितं पण्डितमण्डलीसमनुमोदितं पारम्पर्यक्रमागतं पञ्चाङ्गमिदं नूनमलङ्कर्मीणतां कलयिष्यतीत्याशास्ते—

**श्रीजानकीनवमी** — ***श्रीकाशीनाथ मिश्रः***
**शकाब्दः १९२३** — **कुलपतिः**

अथैतच्चतुर्विंशतितमे नूतनतिथिपत्रे मैथिलनिबन्धसम्मत—समयशुद्धिव्रतपर्वविशिष्टयोग—प्रभृतिविषयान् सरंक्ष्य समयशुद्धौ विहित—मुहूर्त्तानुसारं विवाहोपनयनदेवादि—प्रतिष्ठाद्विरागमन—मुण्डनकर्णवेधयात्रावास्तुगृहप्रवेश प्रभृतिदिनानि सन्निवेशितानि। तानि चाखिल—भारतीय—मैथिलमहासभा—समायोजितवैशाख— कृष्णचतुर्थी गुरु—१२।४।२००१ ईस्वी—दिवसीय—पण्डित— परिषदाऽनुमोदितानि।

अपि च पञ्चाङ्गेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमाधातुं स्वकीयाः सम्मतीः संस्कारप्रकारांश्च सहर्षं प्रेषयन्तु सुधीवराः।

अन्ते चात्र कण्टकजन्यदोषाद् बुद्धिभ्रमदोषाद्वा या अशुद्धयस्ताः पूर्वापरसन्दर्भमवलम्ब्य स्वयमेव संशोध्य व्यवहरन्तु गुणैकपक्षपातिनो विद्वांस इति।

**श्रीपरशुरामजयन्ती** — **निवेदयति**
**सौर दि. १३।१।१९२३** — **पं. श्रीरामचन्द्र झाः**